जल्द ही फ़िल्म/वेब-सीरीज़ में भी

विनीत बाजपेयी

NATIONAL BEST SELLER

विनाशकारी

प्रलय

बेस्टसेलर 'हड़प्पा' श्रृंखला का भाग 2

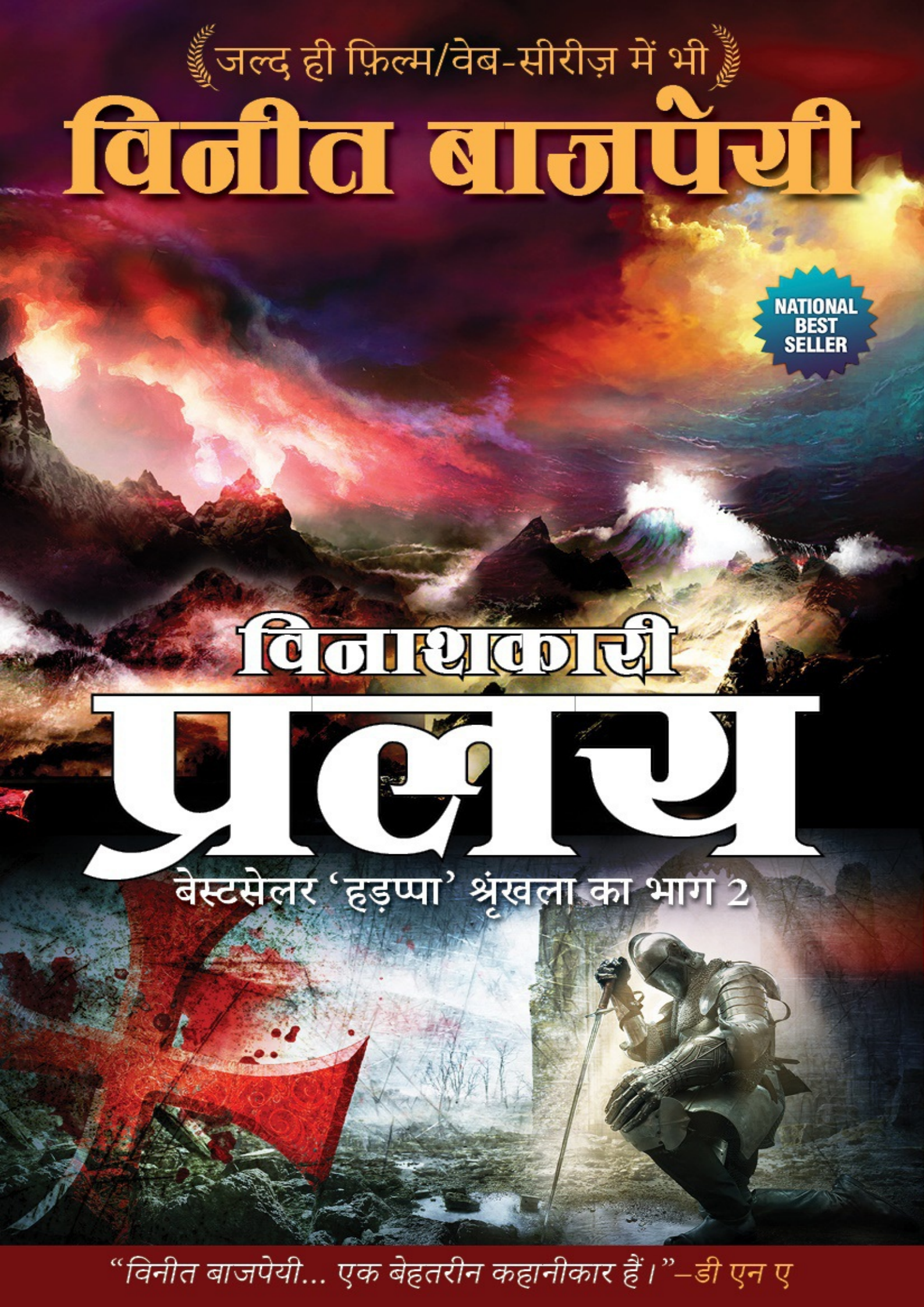

"विनीत बाजपेयी... एक बेहतरीन कहानीकार हैं।"—डी एन ए

विनीत बाजपेयी

विनाशकारी प्रलय

TreeShade Books

विनीत बाजपेयी

विनाशकारी प्रलय

www.treeshadebooks.com

First published in English as *Pralay: The Great Deluge* by Tree Shade Books in 2018
First published in Hindi as *Vinaashkaari Pralay* by Tree Shade Books in 2019

Copyright © Vineet Bajpai, 2019
All Rights Reserved

Vineet Bajpai asserts the moral right to be identified as the author of this book.

This is a work of pure fiction. Names, characters, places, institutions and events are either the product of the author's imagination or are used fictitiously. Any resemblance of any kind to any actual person living or dead, events and places is entirely coincidental. The publisher and the author will not be responsible for any action taken by a reader based on the content of this book. This work does not aim to hurt the sentiment of any religion, class, sect, region, nationality or gender.

Hindi Translation by Urmila Gupta
Cover Design by Munisha Nanda
ISBN: 9789389237023
Printed by Gopsons Papers Ltd., A-2 Sector 64, Noida - 201307, India

This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise be lent, resold, hired out or otherwise circulated without the publisher's prior consent in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition, including this condition, being imposed on the subsequent purchaser and without limiting the rights under copyright reserved above, no part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted in any form or by any means (electronic, mechanical, photocopying, physical, scanned, recording or otherwise), without the prior written permission of the copyright owner, except in the case of brief quotations (not exceeding 200 words) embodied in critical articles or reviews with appropriate citations.

TreeShade Books
N-block, Greater Kailash - I,
New Delhi, South Delhi,
Delhi, 110048

वेदिका, अदिति और
वंदिता के लिए

चेतावनी

यह उपन्यास, कल्पना और किस्सों पर आधारित है, जिसे महज मनोरंजन के दृष्टिकोण से लिखा गया है। यद्यपि विषय के साथ विविध धर्मों, इतिहास, संस्थान, आस्थाओं और मिथकों का संदर्भ दिया गया है, लेकिन इसका उद्देश्य सिर्फ कहानी को अधिक समृद्ध और दिलचस्प बनाना था। लेखक सर्वधर्म में विश्वास रखता है, और सभी को बराबर मान और सम्मान देता है। कहानी में इस्तेमाल किए गए किसी ऐतिहासिक या पौराणिक तथ्यों की पुष्टि का वो दावा नहीं करता।

लेखक की ओर से

दलाई लामा ने एक बार कहा था, 'उदात्त प्रेम और महान उपलब्धियों में बड़ा जोखिम भी शामिल रहता है।' उपलब्धियों के बारे में तो नहीं कह सकता, लेकिन उदात्त प्यार के लिए कही गई उनकी बात अब मुझे समझ आने लगी है। और वो भी हड़प्पा के हजारों पाठकों के प्यार की वजह से।

मैंने अपनी रचनात्मक प्रचुरता के अधीन होकर, अपने दिल की बात को हड़प्पा के रूप में लेखनीबद्ध किया। जबकि मैं उससे पहले तीन बिजनेस बुक लिख चुका था, लेकिन हड़प्पा मेरा पहला उपन्यास था। मैं समझ नहीं पा रहा था कि उससे क्या उम्मीद करूं इसलिए मैंने पूरे जोश, साहस और आजादी से उसे लिख दिया। ज्ञान की देवी, मां सरस्वती के आशीर्वाद से, उस किताब ने पाठकों के दिल में जगह बना ली।

हड़प्पा तुरंत ही लोकप्रिय होकर, सबसे ज्यादा बिकने वाली किताबों में शामिल हो गई। मेरे पास पाठकों की बहुत सी मेल आईं, फेसबुक और ट्विटर पर मैसेज मिले, और लिटरेचर फेस्टिवल में लोगों ने मुझ पर अपना प्यार लुटाया—हजारों पाठकों ने किताब, इसके किरदारों और इसकी घटनाओं के प्रति अपना स्नेह दर्शाया। उनका स्नेह और सम्मान मेरे जीवन की पूंजी बन गई।

हालांकि, जैसा कि ब्रूस स्प्रिंगस्टीन ने एक बार कहा था, 'श्रोताओं को बरक़रार रख पाना बहुत मुश्किल है। इसके लिए विचारों, उद्देश्य और कार्य की निरंतरता जरूरी है...' जब मैंने इसके अगले भाग प्रलय को लिखना शुरू किया, तो प्यार की उस श्रृंखला ने मुझे बांधे रखा। मेरे पाठकों ने मुझ पर अपने स्नेह की बरसात की। तब मुझे स्पष्ट हो गया कि प्रलय को भी उन लोगों की उम्मीदों पर खरा उतरना ही होगा। यही मेरा लक्ष्य है, यही वो एवरेस्ट है, जिसकी चोटी तक मुझे पहुंचना होगा।

प्रिय पाठक, जो किताब आपने अपने हाथ में पकड़ी है, वो आपके प्रति प्रेम और जिम्मेदारी की भावना से लिखी गई है। मुझे पूरी उम्मीद है कि इसमें भी आपको हड़प्पा जैसा रोमांच मिलेगा, और आप इसे भी वैसे ही सराहेंगे।

और कृपया अपने ईमेल, ट्वीट, ऑनलाइन रिव्यू, फेसबुक मैसेज भेजते रहिएगा। उससे मुझे ऊर्जा मिलती है।

उत्थिष्ठा!

उदय हो!

विनीत बाजपेयी

अब तक की कहानी...

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व—हड़प्पा के देवता, शक्तिशाली विवास्वन पुजारी, जिसे दशकों तक हड़प्पा के सूर्य के तौर पर पूजा जाता रहा, पर एक निर्मम छल से घात लगाया गया। उसका विश्वस्त मित्र और उसकी पत्नी का भाई, बुद्धिमान पंडित चंद्रधर, अपनी पत्नी प्रियम्वदा की ईर्ष्यालु महत्वाकांक्षा के आगे घुटने टेक देता है। चंद्रधर की रूपवान पत्नी मोहन जोदड़ो की राजकुमारी थी। तीन अंधे, काले जादूगरों, गुन, शा और अप को प्रियम्वदा और उसके दुष्ट सेनाध्यक्ष, रंगा के निमंत्रण पर हड़प्पा बुलाया जाता है। काले जादूगर नगर के जल स्रोत को अपने जहर से दूषित कर, वहां के समस्त नागरिकों को पागल और हिंसक बना देते हैं।

इस सब गहमागहमी में, विवास्वन पुजारी को नयनतारा, हड़प्पा की आकर्षक नृत्यांगना की हत्या के झूठे आरोप में फंसाया जाता है। हड़प्पा के देवता को मृत कारावास की सजा सुनाई जाती है। उसका शूरवीर पुत्र, युवा मनु, विवास्वन पुजारी के अंतिम मित्र और हड़प्पा के मुख्य अभियंता, पंडित सोमदत्त के साथ मिलकर शत्रु का सामना करता है। उस जंग में मनु बड़ी ही वीरता से दुष्ट रंगा का वध कर देता है। इसी बीच, ज्ञान की देवी सरस्वती, एक असामान्य और अशुभ वेग से हलचल उत्पन्न करती है, जिससे समस्त हड़प्पा सभ्यता के अस्तित्व पर संकट खड़ा हो उठता है। ज्योतिषी भीषण प्रलय की भविष्यवाणी करते हैं। देवता की स्वरूपवान पत्नी और मनु की मां, संजना हड़प्पा के पागल सैनिकों के तीरों का निशाना बन, युद्धभूमि में ही अंतिम सांस लेते हुए, अपने बेटे की बांहों में दम तोड़ देती है। सोमदत्त और अपनी करीबी मित्र, सुंदर तारा के आदेश पर मनु घोड़े पर सवार हो, अपनी मां के मृत शरीर को गोद में लिए, वहां से निकलता है। लेकिन जैसे ही वो मूसलाधार बरसात के बीच आगे बढ़ता है, तो जहर बुझे बाण मनु की कमर और गले में आ धंसते हैं।

हड़प्पा के देवता को वहां के विशाल स्नानागार में पशुओं की तरह खींचकर, प्रताड़ित किया जाता है। विक्षिप्त सैनिकों के वार, हिंसक भीड़ के पत्थरों और थूक से उसकी खाल उतार दी जाती है। देवता, हड़प्पा का सूर्य—विवास्वन पुजारी—प्रतिशोध की शपथ लेता है। वो आदमी जो कभी अपने तेज में स्वयं ईश्वर के समान दिखता था, अब किसी प्रेत या शैतान से कम नहीं दिखाई दे रहा था। वो ऊपर आसमान को देखता है और खून को जमा देने वाली भीषण चीत्कार में घोषणा करता है—

'पहले से ही मृत लोगों सुनो। मुर्दों की सभा, मेरी बात सुनो। मूर्खों सुन लो।

मैं आधा-मनुष्य, आधा-भगवान हूं!'

बनारस, 2017 (वर्तमान)—प्राचीन नगरी बनारस में स्थित, देव-राक्षस मठ के 108 वर्षीय वृद्ध, रहस्यमयी प्रधान, द्वारका शास्त्री अपनी मृत शय्या पर हैं। वो अपने बेहद कामयाब, आकर्षक और प्रतिभाशाली परपोते, विद्युत को बुलवाते हैं। गुड़गांव से निकलने से पहले, विद्युत अपनी प्यारी साथी दामिनी और विश्वस्त मित्र बाला को बताता है कि वो प्राचीन और रहस्यमयी, देवताओं के वंश से है। बनारस पहुंचने पर विद्युत पाता है कि वहां सदियों से उसकी प्रतीक्षा की जा रही थी। पुरोहित जी, बलवंत (मठ का युद्ध प्रमुख) और गोवर्धन (उसके वंश के चिकित्सक) से मिलने के साथ ही वो अपने बचपन की दोस्त नैना से भी मिलता है। नैना एक बहुत ही आकर्षक युवती बन चुकी है और विद्युत उसके प्रति एक चुंबकीय आकर्षण महसूस करता है।

महान मठाधीश द्वारका शास्त्री विद्युत को बताते हैं कि उनका वंश एक घातक श्राप ढो रहा है। और कि विद्युत आखरी देवता था, जिसका जिक्र भविष्यवाणी में किया गया था—सिर्फ अपने वंश का ही नहीं, न ही सिर्फ मठ या बनारस का—बल्कि वो पूरी मानवजाति का आखरी देवता था। जैसे ही विद्युत ने बनारस में अपने कदम रखे, एक रहस्यमयी इंसान रेग मारिअनी पेरिस में एक आदमी से मिलता है, जिसे उसके नाम नहीं, बल्कि ओहदे की वजह से जाना जाता है—मास्केरा बिआंका। रेग अपने बॉस, बिग मैन का लेटर मास्केरा को देता है। उस लेटर में लिखा था—'उस कमबख्त आर्य-पुत्र को मार दो।'मास्केरा बिआंका या व्हाइट मास्क यूरोप का सबसे खूंखार सरगना था। एक मासूम सा दिखने वाला, लेकिन प्रशिक्षित हत्यारा, रोमी परेरा बनारस पहुंचता है।

महान द्वारका शास्त्री विद्युत को हड़प्पा की भयानक कहानी सुनाते हैं और बताते हैं किस स्याह षड्यंत्र के तहत महानगर का सच हमेशा के लिए भारतीयों से छिपाया गया। वो बताते हैं कि कैसे ईस्ट इंडिया कंपनी ने प्राचीन सभ्यता के सबसे मूल्यवान अवशेषों को जला दिया और उपमहाद्वीप को उसके पुराने वैभव के सच से वंचित कर दिया। लेकिन इससे भी अधिक अनपेक्षित था कि वो विद्युत को बताते हैं, वो और कोई नहीं बल्कि स्वयं विवास्वन पुजारी था—3700 बाद हुआ उसका पुनर्जन्म... जो इस नियति को पूरा करने आया था।

घटनाएं बड़ी तेजी से आगे बढ़ती हैं, जिसमें विद्युत की जिंदगी लेने का एक साहसपूर्ण लेकिन असफल प्रयास; नैना और विद्युत के बीच बीता एक जादुई पल, जब पल भर के लिए वो अपने होंठ विद्युत के होंठों पर रख देती है; मठ में दामिनी का खुशियों भरा आगमन; रोमी देवता को खुला निमंत्रण देते हुए उसे दशाश्वमेध घाट आने की चुनौती देता है। नैना के प्रति किसी संदेह के साथ विद्युत उन किराए के हत्यारों का मुकाबला करता है, जिन्हें उसी ने भेजा था, जिसने रोमी को नियुक्त किया था। विद्युत सारे हमलावरों का अकेले ही

सामना करता है, लेकिन अपने सबसे विश्वस्त मित्र, बाला की गोली का शिकार बनता है। बाला पकड़ा जा चुका था, और देवता रात के अंधेरे में घाट पर रोमी का पीछा करता है। वो शातिर हत्यारा विद्युत की पकड़ में आ जाता है और पोटेशियम सायनाईट का कैप्सूल खाकर अपनी जान दे देता है। अपने आखरी समय में वो विद्युत को बताता है कि एक ताकत, जिसे न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के नाम से जाना जाता है, उसके... और समस्त मानवजाति के विनाश के लिए आ रही थी।

दशावतार

दशावतार भगवान विष्णु के दस अवतारों का प्रतिनिधित्व करता है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान विष्णु ने कई बार, अनेक रूपों में इस धरती पर अवतार लिया, जिससे बुराई पर अच्छाई की विजय के साथ, सृष्टि का संतुलन बना रह सके।

मत्स्य

(शक्तिशाली मछली जिसने सृष्टि की रक्षा की)

कूर्म

(कछुआ जिसने सागर मंथन में अमृत बाहर लाने में सहायता की)

वराह

(जंगली सूअर जिसने धरती को डूबने से बचाया)

नरसिम्हा

(आधा-मनुष्य, आधा-सिंह जिसने एक अपराजेय शैतान का अंत किया)

वामन

(बौना जिसने दोनों संसार पर अधिकार जताया)

परशुराम

(अनश्वर मुनि)

राम

(अयोध्या के राजकुमार, आदर्श पुरुष)

कृष्ण

(योद्धा, प्रेमी, संगीतज्ञ, राजनेता, रचयिता, संरक्षक व विनाशक)

बुद्ध

(सर्वज्ञानी)

कल्कि

(आखरी अवतार, चमकती तलवार धारण करने वाला, जिसका इंतजार अभी बाकी है...

जो सबसे विकराल है...)

आमुख

‘वो सब मरने वाले हैं...’ मनु स्वयं से बुदबुदाया। ‘और मैं भी उनके साथ मर जाऊंगा।’

ये बेचैन आत्माएं, ये युवा पुरुष और महिलाएं, शिशु, वृद्ध और निराश्रित, ये समस्त प्रजाति जिनकी सुरक्षा का मैंने वचन लिया था, चींटियों की तरह मसल जाएंगे।

मनु को अब पहली बार उस कठोर वास्तविकता का अहसास हुआ था, जिसका उसके कंधे पर भार था। सच के इस भयानक पल से पहले तक, वो समुद्री-प्रजाति के रहस्यमयी प्रमुख के विचित्र किंतु दुर्भाग्यपूर्ण आदेश को पूरा करने में डूब गया था।

इस अव्यवस्थित, जुगाड़ू शिल्पकारिता का तेजस्वी युवा नेता विशाल जहाज को एक तरफ झुकता देख जड़ रह गया। उसे जूट और वृक्षों की लताओं से निर्मित बीस हजार मजबूत रस्सियों से बांधा गया था, लेकिन ये भी उसे पकड़ पाने में सक्षम नहीं थीं। समुद्र रूपी नदी की हिंसक, दानवीय लहर मानवजाति के बनाए सबसे बड़े जहाज पर भारी पड़ रही थीं। और भयानक बाढ़ इसे भी डुबोने वाली थी।

क्या यह घातक बाढ़ जानती है कि इस अंतिम नाव में क्या महत्वपूर्ण सामग्री रखी है?

यह कोई छिपी हुई बात नहीं थी कि ब्रह्मांड को खत्म कर देने वाली, विनाशकारी बाढ़ आने वाली थी। धरती पर छाए स्याह, लाल-बैंगनी बादल ऐसे लग रहे थे मानो किसी उन्मादी दिव्य चित्रकार ने पुराने रक्त से आसमान को रंग दिया हो। इंद्र के बादलों की पागल कर देने वाली दहाड़ और हिंसक बरसात ने प्रलय, दुनिया के अंत की घोषणा कर दी थी। बाघ के दांत की तरह नुकीली बूंदें आसमान से गिर रही थीं, जो मनु और उसके समर्पित अनुयायियों पर बाणों की वर्षा के समान बरस रही थीं। मनु-शिष्यों या मनुष्यों की त्वचा पर पड़ती प्रत्येक बूंद अदृश्य भाले की तरह उन्हें भेद रही थी। वीर पुरुषों और महिलाओं की यह सेना कोलाहल भरे जल में जिस चीज पर संतुलन बनाने की कोशिश कर रही थी, वो कोई सामान्य नाव नहीं थी।

यह अंतिम नाव थी। किसी बंदरगाह की अंतिम नाव नहीं। न ही किसी सेना की अंतिम नाव। न ही उस विशेष ऋतु में तट से निकलने वाला अंतिम जहाज और न ही उस रात किसी जहाज का अंतिम फेरा।

यह स्वयं सृष्टि की अंतिम नाव थी। यह वो नौका थी, जहां स्वयं पृथ्वी शरण लेने जा रही थी। अपने साथ अपने समुदाय के बीज लिए।

यह महान योद्धा, पुजारी, मुनि, दार्शनिक और राजा मनु का पराक्रम था।

यह उसकी नाव थी।

मनु की नाव।

एक जहाज के विरुद्ध सौ हजार पुरुषों और महिलाओं का यह निर्भीक संघर्ष इतना बहुमूल्य था कि ईश्वर तक इसकी कल्पना नहीं कर सकता था। यह ऐसा दृश्य था जो इससे पहले कभी इस ग्रह पर नहीं देखा गया था। और न ही फिर कभी देखा जाएगा, समय के अंत तक भी नहीं। मनु की विशाल नौका का आकार किसी भव्य नगर के समान था। लेकिन इसका उद्देश्य इतना महान था कि मानवजाति कभी इसकी थाह भी नहीं ले पाएगी।

यह एक प्रवेश मार्ग था। निरंतरता का इकलौता पुल। एक पतनशील पुराने संसार से... पुनर्निर्माण के नए सवेरे में। यह महायुद्ध प्रकृति के साहस और मनुष्य के अस्तित्व बचा पाने की कोशिश के बीच था। मानवता बिना संघर्ष किए हार नहीं मानने वाली थी—ऐसा संघर्ष जिसे स्वर्ग भी याद रखेगा। लेकिन इस साहसिक प्रयास के बावजूद बहुत कुछ तबाह हो जाने वाला था। मानवजाति द्वारा युगों में प्राप्त किया गया बहुमूल्य और अचल ज्ञान इस नौका के माध्यम से आगे नहीं जाने वाला था। प्राचीन रसायन, औषधि, विमानन, तंत्र-विज्ञान, शिल्प, औजार और आध्यात्मिकता, सब हमेशा के लिए लुप्त हो जाने वाले थे, महान बाढ़ के परिणामस्वरूप, वो सब समुद्र की तली में दब जाने वाले थे।

और फिर भी यह नाव, जैसा कि आर्यवर्त इसे जानता था, जीवन की अंतिम आशा थी। मनुष्य चाहे जितना ही भगवान के बनाए हुए अद्भुत तारों, आकाशगंगा और ज्योतिपुंजों को देखकर हैरान हो ले, लेकिन वास्तव में भगवान की बनाई सर्वश्रेष्ठ कृति जिंदगी ही है। शानदार, लचीली... जिंदगी। जीव जो दर्द महसूस करते हैं, जन्म देते हैं, आंसू बहाते हैं और असीमित प्रेम करते हैं। जीव जो स्वयं ईश्वर का प्रतिबिंब होते हैं। और इस कृति को बचाया जाना आवश्यक था।

सबसे बढ़कर।

मोटी, गुथी हुई, भीगी रस्सियां और लताएं अब मनु की सेना की बांहें, गले और मांस काट रही थीं। नगर जैसी बड़ी नाव को संतुलित रखने के लिए बांधी गई मजबूत रस्सियों का बल अब उनकी उंगलियों को काट रहा था, कंधे तोड़ रहा था और बांहों की मांसपेशियां फट रही थीं। पुरुष, महिलाएं और बच्चे सब मिलकर अपने अदृश्य, अकल्पनीय, अपराजित शत्रु से संघर्ष कर रहे थे। वे सब नश्वर हाड़-मांस के बने थे, जबकि नौका भारी लकड़ी, प्रबलित कांसे और चट्टानी पत्थर की बनी थी—यह इतनी विशाल थी कि रस्सी खींचने वाले लोग भी इस विशाल जहाज की पूरी झलक नहीं देख पाए थे, भले ही वो अपना सिर उठाकर आसमान में कितना ही देखने का प्रयास क्यों न करें।

नौका सुमेरु पर्वत से ऊंची और उस मैदान से भी अधिक चौड़ी थी, जहां दसराजन का प्राचीन युद्ध हुआ था।

मनु लगातार अधीर हो रहा था। उसने शंख बजाकर खतरे का संकेत दिया। यह शंख तभी बजाया जाना था, जब कोई भीषण आपदा हो। और वो समय आ पहुंचा था। अपने समर्पित अनुयायियों की मौत से अधिक पीड़ादायक और कुछ नहीं हो सकता था। मनु ने अपना चेहरा, अपनी कलाई पर बंधे चमड़े से पोंछा, गहरी सांस ली और फिर से शंख बजाया, जिसकी तेज आवाज तूफानी आसमान में दबकर रह गई।

एक सुनसान और डरावनी चट्टान, जो लाल आसमान के सम्मुख कोयले सी स्याह दिख रही थी, पर खड़ा मनु अपनी आंखों पर खुली हथेलियों से ओट बनाते हुए दूर क्षितिज में देखने की कोशिश कर रहा था। उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। हर गुजरते पल के साथ उसकी हताशा बढ़ती जा रही थी। वह पराजय के अपने आंसू रोकने की बहुत कोशिश कर रहा था, और एक बार फिर से, अपना पूरा दम लगाते हुए उसने शंख बजा दिया। चीखते शंख की ध्वनि क्रोधित अजगर का क्रंदन सुनाई पड़ रही थी, और मनु के दसियों हजार साथियों को लगा मानो उनके कानों में पिघलता हुआ लोहा उतर गया हो।

मनु आंखें सिकोड़कर, ऊंची लहरों के पार, क्षितिज में देखने का प्रयास कर रहा था। उसे उम्मीद थी कि उसे उसकी परछाईं दिखाई देगी, जिसे उसने सच्चा मसीहा माना था।

उसे कुछ नहीं दिखाई दिया।

‘मत्स्य!’ आगे को निकली हुई चट्टान पर बेचैनी से चक्कर लगाते हुए मनु चिल्लाया। यह चट्टान उसका नियंत्रण स्थल थी, जहां से वो विशाल नौका के निर्माण का निरीक्षण करता था। उसके क्लांत, भयभीत और आशावान नेत्र भीषण प्रलय के परे क्षितिज पर टिके थे। बारिश उसके मनोहर किंतु युद्ध-चिह्न से सुशोभित चेहरे पर वार कर रही थी। अपने महत्वाकांक्षी प्रयास पर मंडराते खतरे को देखकर वो संभवत: रोने वाला था। हताशा का एक भाव इस अप्राकृतिक तूफान से लड़ने के उसके जज्बे को तोड़ रहा था।

क्या उस इकलौते इंसान ने उसे धोखा दिया था, जिस पर वो अपने प्रिय पिता —महान विवास्वन पुजारी, जितना ही भरोसा करता था? क्या उसके मित्र, मार्गदर्शक, सलाहकार, उपचारक... ने उसका साथ छोड़ दिया था?

क्या उसके प्यारे मत्स्य ने उसके साथ छल किया था?

‘मत्स्य...!’ ऊपर कड़कती बिजली को देखते हुए मनु चिल्लाया, उसकी बांहें फैली हुई थीं और फेफड़े फटने को तैयार थे, मानो वो आसमान तक अपनी अधीर विनती पहुंचाना चाहता था!

और फिर उसे वो दिखाई दिया। सब खत्म कर देने वाली बाढ़ में, समुद्र को चलाता हुआ, वो उसे दिखाई दिया।

लोक-नास, सबसे बड़ा समुद्री दैत्य, जिसका जिक्र कभी शक्तिशाली ब्रह्मा ने किया था, दूर लहर के साथ अपना सिर आगे निकाले बढ़ रहा था। मनु ने पहली बार उस विकराल पशु की धुंधली सी छवि देखी थी।

और वो वहीं था, अनेकों फण वाले सर्प की चमकती आंखों के बीच, निर्भीकता से खड़ा हुआ।

मत्स्य।

Contents

चेतावनी
लेखक की ओर से
अब तक की कहानी...
दशावतार
पआमुख

कहीं रोम के करीब, 2017: ‘क्या तुम्हें भरोसा है, वो सच में वही है?’
हड़प्पा , 1700 ईसापूर्व: रक्त-वर्षा
बनारस, 2017: मृत्युंजय
हड़प्पा के पूर्व में, 1700 ईसापूर्व: ‘पा नी की ये बूंदें... उधार हैं मुझ पर’
बनारस, 2017: तंत्र-मंत्र की जंग
सिंधु का कि नारा, हड़प्पा के पश् चिम में, 1700 ईसापूर्व: अ-सुरा
बनारस 2017: ब्रह्म राक्षस
बिथिनिया ई नगर(वर्त र्तमान का तुर् की),325 ईस्वी: नाइसिया की परिष द
हड़प्पा के पूर्व में, 1700 ईसापूर्व: मां...
बनारस, 2017: सफेद पोशाक वाले आदमी
सिंधु का किनारा,पश् चिमी हड़प्पा , 1700 ईसापूर्व: प्रत्येक पुत्र की मौत
बनारस 2017: त्रिजट कपालिक
हड़प्पा के पूर्व में, 1700 ईसापूर्व: महान राजा
बनारस, 2017: कपा ल अर्प र्पण
हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व: पहाड़ पर कोहराम
बनारस, 2017: ‘हमने उसे दानव बना दिया दिया ’
हड़प्पा के पूर्व में, 1700 ईसापूर्व: काला मंदिर
बनारस, 2017: कांस्टेंटाइन
हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व: उसका जघन्य पाप
बनारस 2017: न्यू वर्ल्ड ऑर्ड र्डर

हड़प्पा के पूर्व में, 1700 ईसापूर्व: प्रलय
बनारस, 2017: स्याह भ्रातृ-संघ
मैनहटन, न्यूयॉर्क र्क सिटी, 2017: ‘मौत भी व्हा इट मास्क से भय खाती है’
हड़प्पा , 1700 ईसापूर्व: नीली अग्नि का अनुष्ठान
बनारस, 2017: विधुत
हड़प्पा के पूर्व में, 1700 ईसापूर्व: ऋण
बनारस, 2017: स्याह भ्रातृसंघ – भाग 2
हड़प्पा , 1700 ईसापूर्व: रक्त-धारा का श्राप
बनारस, 2017: प्रतिशोध
हड़प्पा के पूर्व में, 1700 ईसापूर्व: ‘इसकी कहानी सदियों तक या या द की जाएगी’
बनारस, 2017: लुप्त सभ्यता
हड़प्पा , 1700 ईसापूर्व: पुत्र दर पुत्र, पीढ़ी दर पीढ़ी
बनारस, 2017: स्याह भ्रा तृसंघ – भाग III
हड़प्पा , 1700 ईसापूर्व: मोहन जोदड़ो की अंतिम राजकुमारी
बनारस, 2017: ‘त्रिजट मृतकों को जगा देगा’
हड़प्पा के पूर्व में, 1700 ईसापूर्व: सतरूपा
बनारस, 2017: रक्तबीज अनुष्ठान
हड़प्पा , 1700 ईसापूर्व: वीराने का सम्राट
बनारस, 2017: महान दुरका शास्त्री
हड़प्पा के पूर्व में, 1700 ईसापूर्व: ‘तुमने परीक्षा उत्तीर्ण तीर्ण की’
बनारस, 2017: ‘वो उनके अनुयायी थे’
हड़प्पा , 1700 ईसापूर्व: अंतिंति म सप्तऋषि
बनारस की बाह्य सीमा, 2017: कालचक्र
हड़प्पा के पूर्व में, 1700 ईसापूर्व: सत्यव्रत मनु
बनारस की बाह्य सीमा, 2017: सैकड़ों हवन कुंड
हड़प्पा , 1700 ईसापूर्व: हड़प्पा का देवता
बनारस की बाह्य सीमा, 2017: पाताल
हड़प्पा के पूर्व में, 1700 ईसापूर्व: मनु की नाव
हड़प्पा , 1700 ईसापूर्व: विवास्वन पुजारी
बनारस की बाहरी सीमा, 2017: देव-बलि

क्रमशः...
लेखक के बारे में

कहीं रोम के करीब, **2017**

‘क्या तुम्हें भरोसा है, वो सच में वही है?’

उसे अपनी औपचारिक जनसभा के लिए देर हो रही थी। रोम में ही कहीं रहने वाला बिग मैन आज सुबह असामान्य रूप से क्रोधित था। जल्दी सुबह आए एक फोन ने उसकी नसों में तनाव उत्पन्न कर दिया था। चाय के प्याले को अपने पवित्र होंठों तक लाते हुए उसके हाथ कांप रहे थे।

पृथ्वी के सबसे बड़े पुजारी के रूप में लाखों लोगों के लिए पूजनीय, वह आदमी दुनिया की सबसे बड़ी धन-संपत्ति का स्वामी था। इस ग्रह के सबसे ताकतवर पुरुषों और महिलाओं के लिए वो आध्यात्मिक देव-पुरुष था। वो न सिर्फ किसी एक आदमी या समुदाय की, बल्कि पूरे महाद्वीप की किस्मत बदल सकता था। उसके द्वारा दिया गया एक संदेश परमाणु युद्ध छिड़वा सकता था, तो दशकों से चले आ रहे रक्त-संघर्ष को बंद भी करवा सकता था। बिग मैन किसी भी रूप में सामान्य इंसान नहीं था। वह पूर्ण सत्ता, निर्विवादित साम्राज्य, श्रेष्ठता और वैश्विक नियंत्रण का चमकता हुआ प्रतीक था। लेकिन फिर भी धुर पूर्व के एक 34 वर्षीय युवक ने इस बिग मैन को परेशान कर दिया था।

सच में परेशान।

इस बेचैनी की बिग मैन को आदत नहीं थी। उसने क्रोध से कनिष्ठ पादरी को घूरा, जो विनम्रता से बिग मैन को याद दिलाने अंदर आया था कि उसके सार्वजानिक दर्शन का समय निकला जा रहा था, कि हजारों लोग उसकी बालकनी के नीचे उसकी एक झलक पाने के लिए खड़े थे। बिग मैन को इस तनाव से बचने के लिए कुछ तंबाकू की तलब महसूस हुई।

उस प्राचीन और भयानक भविष्यवाणी के 1,600 साल बाद, वो पावन देवता शायद आ पहुंचा था। और बिग मैन की कुर्सी के लिए यह सबसे भयानक खबर थी।

मुझे रेग को फोन करना चाहिए।

‘गुड मॉर्निंग, योर होलीनेस,’ दूसरी तरफ से किसी सभ्य इतालवी आवाज ने कहा। ‘आपको मुझे फोन करने की जरूरत नहीं थी, सर। मैं आप ही के पास आ रहा था।’ रेग मारिअनी पसीने से तर हो रहा था।

बहुत कम लोग बिग मैन को उतने करीब से जानते थे, जितना रेग। इसलिए वो जानता था कि वो दुनिया के सबसे ताकतवर और सबसे खतरनाक धार्मिक नेता से बात कर रहा था।

‘क्या तुम्हारा काम हो गया, रेग?’ बिग मैन ने शांति से पूछा।

‘नहीं... नहीं, योर होलीनेस, अभी नहीं हुआ।’

‘तो तुम यहां क्यों आना चाहते हो, माय सन?’

वहां कुछ पल खामोशी रही।

‘जैसा आप कहें, सर,’ रेग ने अपना गला साफ करते हुए कहा। अभी के लिए, वो उसके साम्राज्य में ‘बिन बुलाया मेहमान’ था।

‘मेरे आशीर्वाद के लिए तभी उपस्थित होना, रेग, जब पहले तुम दिया हुआ काम पूरा कर लो।’

‘जी, योर होलीनेस।’

बिग मैन अब उस लहजे में बात कर रहा था, जिससे रेग परिचित भी था और डरता भी था। वो ऐसे लहजे में दिए आदेशों के क्रूर और हिंसक परिणामों का साक्षी रहा था।

‘मेरी तरफ से मास्केरा बिआंका को याद दिला दोगे न, रेग? उसे याद दिला देना कि वो उसके लिए की गई मेरी प्रार्थनाओं की वजह से ही जीवित है।’

‘मैं उसे बता दूंगा, योर होलीनेस।’

‘उसे याद दिला देना कि उसके बुरे कामों को ईश्वर इसीलिए माफ करता रहा है क्योंकि उसने बड़े उद्देश्य के लिए काम आने का वादा किया था। अगर वो उस दिव्य लक्ष्य में असफल रहता है, तो दुनिया में उसके रहने के लिए कोई जगह नहीं बचेगी।’

रेग जड़ हो गया। केवल बिग मैन ही यूरोप के क्रूर माफिया सरगना को ऐसी

भयानक धमकी दे सकता था।

फोन कटने की आवाज सुनकर रेग को राहत महसूस हुई। वो बहुत से शक्तिशाली आदमियों का भयानक अंजाम देख चुका था, जो बिग मैन के कार्य में असफल रहे थे। हालांकि वह स्वयं बिग मैन की सेवा में सालों लगा चुका था, लेकिन रेग आज भी वहां उतना ही असुरक्षित महसूस करता था, जितना वो पहले दिन था।

इससे पहले कि वो राहत की सांस ले पाता, उसके फोन की घंटी दोबारा से बजी। दोबारा से बिग मैन की आवाज सुनकर रेग तनाव में आ गया। लेकिन इस बार आवाज रूखी नहीं थी, बल्कि बिग मैन कुछ हिसाब लगा रहा था। उसकी आवाज में अनिश्चितता और कंपन था।

'बताओ मुझे रेग, क्या तुम्हें सच में लगता है, वो वही है? क्या तुम्हें सच में लगता है कि यह लड़का वही भविष्यवाणी वाला देवता है?'

वहां कुछ पल फिर से खामोशी रही। रेग जानता था कि बिग मैन से कम से कम शब्दों में बात की जानी चाहिए।

'जी, योर होलीनेस। मैं मानता हूं कि यह वही है।'

रेग वो सच बोलने से पहले रुका, जो बिग मैन का सबसे बड़ा डर था।

'देवता वापस आ चुका है।'

हड़प्पा, **1700** ईसापूर्व

रक्त-वर्षा

हड़प्पा सेना के दो सौ घुड़सवार तेज चाल से चल रहे थे। बरछी लिए पचास सैनिक आगे थे। पचास तलवारबाज बाहरी घेरे में थे और सौ धनुर्धर दोनों तरफ से सुरक्षा प्रदान करते हुए चल रहे थे। उनके मध्य में एक भारी, पहियों वाला लोहे का पिंजरा सरक रहा था, जिसे सोलह घोड़े खींच रहे थे। मजबूत लकड़ी और मोटे कांसे की छड़ वाला यह पिंजरा विशेष रूप से शेरों को रखने के लिए बनाया गया था। लेकिन आज उसमें कोई बड़ी बिल्ली कैद नहीं थी। अपने वर्तमान रूप में, वो कैदी शेरों से भी अधिक बर्बर था।

उस उन्मादी सेना को देखकर ही डर लग रहा था। हड़प्पा के ये योद्धा अब विक्षिप्त और अनियंत्रित रूप से रक्त-पिपासु थे। उनकी आंखें लाल और चौड़ी थीं, और वो लगभग बिलकुल भी पलक नहीं झपका रहे थे। उनके मुंह से मतांध भेड़ियों की तरह लार टपक रही थी। वो अपने घोड़ों के समान ही गुर्रा रहे थे, उनका सम्मिलित स्वर लाल आसमान की हिंसक गरज की प्रतिक्रिया लग रहा था।

भारी शस्त्रों से सुसज्जित, प्रत्येक हड़प्पा घुड़सवार की कमर में, हड्डियों को काट देने वाली भारी तलवार बंधी थी। आगे चलने वाले प्रहरी अपने सिरों के ऊपर बड़ा भाला गोल-गोल घुमा रहे थे, उनका भाला दूर पूर्व में रहने वाले एक-सींग के गेंडे की खाल तक चीर सकता था। धनुर्धरों के बाण हड़प्पा के रसायन-शास्त्रियों द्वारा बनाए नीले जहर में डूबे थे। यह हड़प्पा सिपाहियों की चयनित

टुकड़ी थी, जिनका चयन स्वयं नई रानी ने किया था। मृत-कारावास में जाने वाले ताकतवर कैदी की सुरक्षा में वो कोई ढील नहीं छोड़ना चाहती थी। अंतिम बार। वो वहां अंतिम बार जा रहा था, दोबारा न लौटने के लिए।

लेकिन प्रियम्वदा भी पागलपन के ऐसे ही उन्माद में थी, जैसा अधिकांश महत्वाकांक्षी सम्राटों को होता है। जब भगवान तक सूर्य को नहीं पकड़ पाए, तो वो कैसे उसे बंदी बनाकर रख सकती थी?

उसका सिर उसके बदन से कटकर, बहुत दूर आगे लाल मिट्टी पर जाकर गिरा। वो बाण न जाने कहां से आया था, जिसने इतनी सफाई से अपना काम किया था। आगे चलने वाले दस्ते के नेता का सिररहित धड़ लड़खड़ाकर गिरा। उसके कटे सिर से रक्त का छोटा सा फव्वारा फूट पड़ा।

पल भर में ही दूसरा सिर भी कट गया। और फिर एक और। और फिर एक और। घबराए और डरे हुए सिपाही अपनी श्रृंखला तोड़ने लगे, उनकी आंखें अदृश्य हमलावर को खोज रही थीं। एक काबिल धनुर्धर इस सशस्त्र दल पर यूं टूट रहा था, मानो मुर्गियों के समूह में बिल्ली घुस आई हो।

भले ही वो हड़प्पा की फौज के श्रेष्ठ सिपाही हों, लेकिन उनका पुजारी परिवार के अपने प्रशिक्षित योद्धाओं से कोई मुकाबला नहीं था।

उनकी अपनी शिष्या। मनु की करीबी मित्र और उसकी महान सैन्य अध्यक्ष।

सुंदर। शूरवीर।

तारा।

गुन, शा और अप के दिए नशे से धुत्त होने के बावजूद हड़प्पा की सेना किसी छिपे हुए धनुर्धर से बिना संघर्ष किए भागने को तैयार नहीं थी, भले ही वो धनुर्धर कितना ही दक्ष क्यों न हो, या इस मामले में कहें तो, कितनी ही दक्ष क्यों न हो। एक प्रशिक्षित और उद्दंड टुकड़ी, सौ घुड़सवार धनुर्धर, सब उस दिशा में देख रहे थे, जहां से छिपे हुए हमलावर ने उनके दल पर वार किया था। अपने चलते घोड़ों को रोके बिना ही, इन समर्थ धनुर्धरों ने अपने रकाब पर खड़े होकर हमलावर की दिशा में बाणों की वर्षा कर दी। तारा के पास अब चट्टान के पीछे शरण लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

लेकिन हमला शुरू हो चुका था। महान विवास्वन पुजारी को बचाने का साहसिक उपक्रम।

‘जैसे कि हमने योजना बनाई थी, हमारा पहला लक्ष्य होगा देवता को आजाद कराना,’ सोमदत्त ने अपने मुट्ठी भर साथियों को आगे बढ़कर आक्रमण करने से पल भर पहले याद दिलाया। ‘एक बार उनके आजाद होने पर, इनमें से कोई भी सिपाही टिक नहीं पाएगा। देवता स्वयं इन सबका सफाया कर देंगे।’

‘लेकिन स्वामी, मेरी धृष्टता के लिए क्षमा करें... देवता मांस के एक टुकड़े से अधिक कुछ नहीं लग रहे हैं!’ एक युवा योद्धा ने कहा।

वो लोग कांसे और लकड़ी की मजबूत सलाखों के पीछे देख पा रहे थे। देवता का बेजान शरीर पिंजरे की तली पर पड़ा था, और वो रास्ते में आने वाले हर गड्ढे पर उछल जाता। उसके परितप्त बदन पर नाममात्र को भी खाल नहीं थी। उसके पिंजरे की लकड़ी की दीवार उसी के रक्त से सनी थी। वह सिर्फ कच्चे मांस का ढेर था।

‘मेरा भरोसा करो, मेरे साहसी मित्रों। मैंने ताकतवर विवास्वन पुजारी को बुरे से बुरे हालात में देखा है,’ सोमदत्त ने जवाब दिया। ‘मैं मानता हूं कि उनकी वर्तमान स्थिति शायद मनुष्य की पीड़ा सहने या उसकी कल्पना तक करने से परे हैं, लेकिन फिर भी मुझे उनके अदम्य बल पर भरोसा है। उन्हें तब तक नहीं हराया जा सकता, जब तक वो स्वयं न चाहें। उन्हें तब तक नहीं मारा जा सकता, जब तक वो स्वयं मरने का निर्णय न कर लें। उन्हें तब तक युद्ध में नहीं हराया जा सकता, जब तक कि शत्रु उनका स्नेहिल न हो।’

उसके मुट्ठी भर अनुयायी सुन रहे थे। वह जानता था कि उसके पास अधिक समय नहीं था। और सोमदत्त जानता था कि उन्हें यहां तलवार से लड़ने का बहुत कम समय मिलेगा।

‘हड़प्पा के सबसे शूरवीर सिपाहियों से मेरा यही कहना है कि देवता के पिंजरे का ताला तोड़ दो। उनकी जंजीरें काट दो। और हमारा मसीहा स्वयं उदित हो जाएगा। वो हम सबको आजाद करवाएगा। और हड़प्पा को भी इसके अभिशाप से मुक्त करवाएगा।’

हड़प्पा के सैनिक अब विवास्वन पुजारी के भारी पिंजरे के आसपास फैले हुए थे। तारा की टुकड़ी के सुनियोजित स्थान पर बैठे धनुर्धर भी अब उसके पास आ

गए थे और वो सब मिलकर हड़प्पा के घुड़सवारों को तितर-बितर कर रहे थे। तारा के शुरुआती हमले के पल भर बाद ही, दो दर्जन से अधिक घुड़सवार धराशायी हो चुके थे—बेरहम बाणों ने या तो उनका सिर धड़ से अलग कर दिया था या उनका सीना ही चीर दिया था। उनकी पाशविक उत्तेजना बढ़ रही थी। हालांकि उनकी प्रभावकारिता कम होती जा रही थी।

दिशा और लक्ष्य भटककर, अदृश्य शत्रु से घबराए वो चारों तरफ से मनुष्यों और घोड़ों के बहते रक्त के मध्य घिरे थे। पगलाए हुए वो घुड़सवार अब आपस में ही एक-दूसरे से टकरा रहे थे। एक घुड़सवार ने अपना संतुलन खोया, वो दूसरे के रकाब में उछलकर, गुलेल से निकले पत्थर की तरह दूर जाकर गिरा। और पीछे से आते घुड़सवारों के नीचे कुचला गया। एक क्रोधित सिपाही अपना बचा-खुचा होश भी खोकर, अपना भाला अपने ही साथी को मार बैठा, जो उसके अधिक करीब आ गया था। असाधारण निशानेबाजों ने अपना लक्ष्य हासिल कर लिया था। हड़प्पा की सेना में भय और कोलाहल था।

और इस अपराजित दिखती सेना का बड़ा भाग अब भागने की तैयारी करता दिखाई दे रहा था।

ये जानते हुए कि यह उनका एकमात्र अवसर था, सोमदत्त की टुकड़ी के पंद्रह घुड़सवारों ने हड़प्पा की फौज पर सामने से हमला बोल दिया। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था मानो भेड़ों के झुंड में भेड़िया घुस आया हो। अपनी तलवारें भांजते हुए, सोमदत्त के युवा योद्धा अपने रास्ते में आने वाले दुश्मन सिपाहियों को मारते काटते हुए आगे बढ़ रहे थे। उन्हें अपने स्नेही देवता के पिंजरे तक पहुंचना था।

तारा के धनुर्धर भी अब अपना स्थान छोड़कर, अपने साथी योद्धाओं की सहायता के लिए घोड़ों पर सवार होकर युद्ध क्षेत्र की तरफ बढ़ रहे थे।

लेकिन यह आसान नहीं होने वाला था। साहसी और धृष्ट बचाव अभियान के एक-तरफा आक्रमण के बीच भी, हड़प्पा का एक वरिष्ठ सेनाध्यक्ष वापस से अपने बल को एकत्र कर रहा था। एक विशाल आदमी, जिसका चेहरा लाल और काले रंग से पुता हुआ था, उसकी आंखों में पागलपन और क्रूरता की चमक थी।

'वापस लड़ो...!' अपनी बिखरती सेना को उसने चिल्लाकर आदेश दिया। वो अपने बड़े से भाले को तेजी से घुमा रहा था, जिससे कोई भी हमलावर उस तक न पहुंच सके। 'वापस लड़ो, कायरों...!' वो पहिये वाले पिंजरे की तरफ बढ़ रहा था। उसके बहुत से जुझारू योद्धाओं ने अब अपने घोड़े वापस मोड़ लिए

थे, और वो नए जोश के साथ अपने सेनाध्यक्ष के पीछे दौड़ रहे थे।

अभी के लिए, हार-जीत का अनुमान लगाना मुश्किल था।

सोमदत्त ने दूर से इस अपराजेय और गंभीर खतरे को देखा। उसके दो युवा योद्धा पिंजरे के काफी करीब थे, और वो किसी भी पल पतित देवता को आजाद कराने ही वाले थे। लेकिन हड़प्पा का भीमकाय सेनाध्यक्ष केंद्र की तरफ ही बढ़ रहा था, और सोमदत्त जानता था कि उसके वीर योद्धा इस अनुभवी दैत्य और इसके प्रशिक्षित दल का सामना नहीं कर पाएंगे। वो उनसे बहुत दूर था, और चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता था। वो अपने श्रेष्ठ दांव की ओर मुड़ा।

'तारा...!' सोमदत्त चिल्लाया।

तारा ने अपने घोड़े की काठी पर पीठ के बल गिरते हुए आते हुए भाले से स्वयं को बचाया, और उसी मुद्रा से उसने अपने बाएं हाथ से अपने हमलावर के पेट में कृपाण भी घोंप दी। उसके दाहिने हाथ में फरसा था। तारा उभयहस्त थी और दोनों हाथों से एक ही साथ लड़ाई कर सकती थी। वो सोमदत्त की तरफ मुड़ी और युद्ध के कोलाहल के बीच भी, उसकी नजरों ने वो देख लिया, जिसे दिखाने की कोशिश सोमदत्त कर रहा था। तारा को तुरंत ही हालात की गंभीरता का अहसास हो गया। दानवीय सेनाध्यक्ष और उसके आदमियों को रोका जाना जरूरी था!

पागल सेनाध्यक्ष तक पहुंचने के लिए तारा ने छोटा रास्ता लिया, हालांकि फिर भी उसे शत्रुओं, रक्त और संघर्ष के भारी मार्ग से गुजरना पड़ा। एक शानदार घुड़सवार और स्वयं विवास्वन पुजारी की सक्षम शिष्या, तारा युद्ध-देवी थी। उसने शत्रुओं के कंधों पर से यूं अपना रास्ता बनाया जैसे पानी में से शार्क निकलती है।

'ईईइययययआआअ...' तारा अपने घोड़े की जीन पर खड़ी होती हुई चिल्लाई और फिर वो हड़प्पा के भीमकाय सेनाध्यक्ष पर लपकी। कुछ पल के लिए तारा हवा में ही थी, उसका लंबा फरसा शत्रु के गले पर निशाना लेने के लिए तैयार था, उसके सुंदर, रक्त में भीगे केश हवा में उड़ रहे थे।

लेकिन यह शत्रु बाकी सबकी अपेक्षा अधिक मजबूत और दक्ष था। भीमकाय सेनाध्यक्ष अपने घोड़े से उछला और तारा के मध्यपट पर अपनी बलिष्ठ लात से वार किया। तारा बीच रास्ते में ही जमीन पर गिर गई, वो हांफ रही थी।

लाल और काले रंग से पुता हुआ दानव क्रोध से कांप रहा था। हवा में रक्त की दुर्गंध और मरते आदमियों की कराह उसकी पाशविकता को और हवा दे रही थीं। उसने अपने सिर का मुकुट उतार फेंका और अपना कवच फाड़ कर अपना बलिष्ठ शरीर दिखाया। वो वास्तव में एक पिशाच था। वो स्वयं अपने चेहरे पर हिंसक तरीके से थप्पड़ मारने लगा। वो शैतान की तरह गुर्रा रहा था और उसने जंजीर से बंधी नोंकदार छड़ निकाली। वो हिंसक तरह से उसे हिलाते हुए तारा का सिर फोड़ने की कोशिश करने लगा।

छड़ की जंजीर तारा की कनपटी से बाल भर की दूरी पर आकर लगी, जब वो मिट्टी पर पलटी मारकर वार से बचने की कोशिश कर रही थी। छड़ रक्त से गीली मिट्टी में गढ़ गई, और उसे वहां से निकालने में पल भर लगा। इतना समय शेरनी के पलटवार के लिए पर्याप्त था। उसने अपने बालों में से दो घातक जहर बुझी सुइयां निकालीं। वो नागिन की तरह अपने शिकार पर लपकी, लेकिन उस दैत्य ने तारा का गला पकड़ लिया। उसकी बांह बहुत लंबी थी और उसने पूरी बांह पर तांबे का मोटा कवच पहना हुआ था, और तारा बहुत प्रयास करके भी उसकी नग्न त्वचा तक नहीं पहुंच पा रही थी। उसकी पकड़ मजबूत होती जा रही थी और तारा को महसूस हुआ कि उसकी जिंदगी खत्म होने वाली थी।

तभी कुछ ऐसा घटा जिसकी तारा ने कल्पना तक नहीं की थी।

दानव का मुंह दम घुटने की पीड़ा से खुल गया। अविश्वास से, तारा को रक्त में भीगा हुआ इंसानी पंजा दिखाई दिया और फिर देखते-देखते ही पूरी बांह भीमकाय सेनाध्यक्ष के पेट से निकल आई। किसी ने उस दानव को अपने हाथों से भेदकर, चीर दिया था।

मरते हुए दानव की पकड़ तारा के गले से ढीली हुई, और वो उस जीव की झलक देख पाई जिसने ऐसी वीभत्स हत्या को अंजाम दिया था। उसकी आधी बांह अभी भी मृत हड़प्पा सेनाध्यक्ष के उदर में धंसी हुई थी। यह सर्वाधिक अमानवीय हत्या थी, जो तारा या किसी अन्य ने देखी थी।

रक्त में डूबा हुआ एक आदमी, उसकी खाल इस तरह उतरी हुई थी कि वो पहचान में भी नहीं आ रहा था, उसकी एक आंख पिघल गई थी और दूसरी आदिकालीन ब्रह्म-राक्षस की तरह चमक रही थी। वह सेनाध्यक्ष की लाश के पीछे खड़ा था। उस आदमी को पहचानने में तारा को कुछ पल लगे।

उसकी आंखें पहिये वाले पिंजरे की तरफ मुड़ीं।

उसका भारी-भरकम दरवाजा खुला हुआ था। उसके बड़े ताले टूट चुके थे।

विवास्वन पुजारी अब देवता नहीं था। वो प्राचीन ग्रंथों में वर्णित किसी घिनौने और स्याह राक्षस से भी अधिक बुरा दिखाई दे रहा था।

अपने सेनाध्यक्ष की जघन्य हत्या से भयभीत, एक और सिपाही ने अपनी तलवार से विवास्वन पर वार किया। किसी माहिर योद्धा की तरह, विवास्वन वार से बचा, और हमलावर की कलाई पकड़कर उसकी कोहनी, उसी के चेहरे में घुसाते हुए तोड़ दी। हड़प्पा का सिपाही तड़पकर जमीन पर गिर गया। लेकिन संहार अभी रुका नहीं था। विवास्वन पुजारी ने धीरे से अपना घुटना गिरे हुए सिपाही की कमर पर रखा, उसकी तलवार उठाई और किसी मंजे हुए शल्य चिकित्सक की तरह उस आदमी का माथा उसकी एक कनपटी से दूसरी कनपटी तक चीर दिया। वो आदमी दर्द से चिल्लाया और उसके माथे से उबलता रक्त उसकी भवों से होते हुए चेहरे पर गिरने लगा। और फिर, सबको अविश्वास और सदमे में डालते हुए, विवास्वन पुजारी ने सिपाही के बाल पकड़कर उसकी खोपड़ी को, उसके कंधों तक उतार दिया। सिपाही मरने से पहले बदहवासी से चिल्लाया—वो अपने घाव से नहीं बल्कि उस दर्द से चिल्ला रहा था, जिसे सहन करने की उसके शरीर को आदत नहीं थी।

पल भर में ही तारा को अपने किए पर पछतावा हुआ। उसने जल्दी से सोमदत्त से नजर मिलाई, और वो भी शायद यही सोच रहा था।

वो, जिसे आजाद नहीं होना था, आजाद हो गया था।

हड़प्पा का सूर्य हमेशा के लिए अस्त हो चुका था।

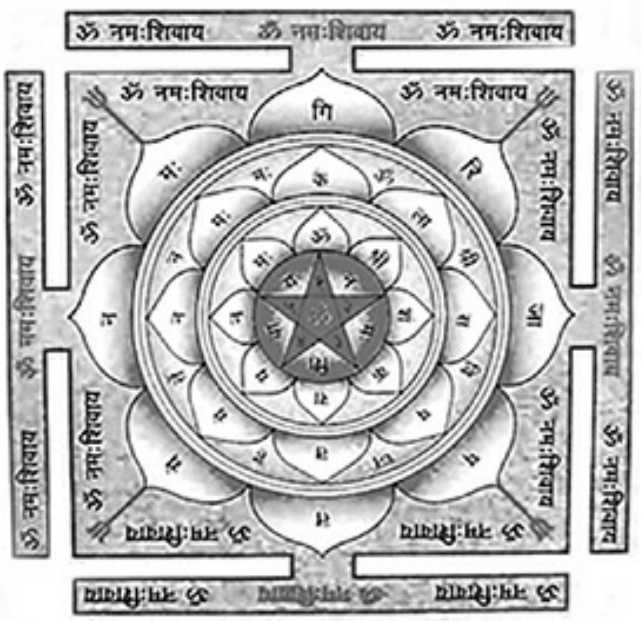

बनारस, **2017**

मृत्युंजय

देव-राक्षस मठ की सफेद महिंद्रा एसयूवी, रात के समय, बनारस की तंग गलियों से कुलांचे मारते हुए, तेज गति से भागे जा रही थी। स्वयं मठ का सैन्य-प्रमुख, बलवंत ही गाड़ी दौड़ा रहा था। वह जानता था कि समय तेजी से भाग रहा था।

रात के इस पहर में भी गलियों और सड़कों पर बनी दुकानों में चहल-पहल थी। इन तंग गलियों में साइकिल भी बमुश्किल ही अपना रास्ता ढूंढ पाती थीं। यही तो बनारस था, सुस्त और अपने में खोया हुआ। लेकिन इस नगर और इसके वासियों को किसी तात्कालिकता में भागती गाड़ी या एम्बुलेंस को रास्ता देने में कोई परेशानी नहीं होती थी। जबकि कोई नहीं जानता था कि उस आलीशान गाड़ी में कौन था, लेकिन उसे आसानी से रास्ता मिल गया।

उस गाड़ी में विद्युत था।

उसका सिर घबराई हुई नैना की गोद में था, विद्युत के मुंह से जब-तब, खांसी के साथ खून निकल रहा था। दो गोलियां, एक गहरा घाव जिसने उसके छाती का मांस चीर दिया था, और घंटों के संघर्ष के बाद, अब ये घाव इस वैभवशाली मनुष्य के लिए भी घातक जान पड़ रहे थे।

विद्युत, भविष्यवाणी में व्यक्त संरक्षक, आखरी देवता... मर रहा था।

'तेज चलाओ...!' विद्युत की उखड़ती सांसों को देखकर नैना चिल्लाई। जब तक वो उन्हें घाट पर मिला, तब तक मठ में कोई नहीं जानता था कि वो हत्यारे रोमी की गोली का शिकार बन चुका था। मठ के चिकित्सक गोवर्धन आश्रम में ही घायल सोनू और दूसरे योद्धाओं का इलाज कर रहे थे। यह एक बड़ी गलती थी। विद्युत अब हर सांस के लिए तड़प रहा था, वो जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहा था। अपनी बांहों में उसका सिर भरे नैना, आंसू और तड़प भरी नजरों से उसे देख रही थी। वो उसे खो नहीं सकती थी। वो उसे फिर से खोना नहीं चाहती थी।

'वो हमारा साथ छोड़ रहे हैं,' जीप में नैना और बलवंत के साथ बैठा, मठ का एक अन्य योद्धा बुदबुदाया।

'नहीं, ऐसा नहीं हो सकता!' नैना गुस्से और बेचैनी से चिल्लाई। 'ये विद्युत है! क्या तुम्हें याद नहीं? यह मर नहीं सकता!'

गाड़ी में बैठे हुए व्यक्ति जानते थे कि नैना गलत थी।

विद्युत अपनी अंतिम सांसें ले रहा था।

नैना ने अपना मोबाइल फोन निकाला और देव-राक्षस मठ के चमत्कारी चिकित्सक, गोवर्धन का नंबर मिलाया।

'गोवर्धन दादा, हम अभी भी मठ से कुछ मिनट दूर हैं। लेकिन शायद विद्युत के पास इतना समय नहीं है। वो जा रहा है, दादा... वो हमेशा के लिए जा रहा है...!' फोन पर इन शब्दों को कहते हुए नैना फूट-फूटकर रोने लगी।

'तुम्हें उन्हें मेरे पास लाना ही होगा, नैना। शांत रहो और उन्हें जल्द से जल्द यहां लाने की कोशिश करो,' गोवर्धन ने शांत लेकिन गंभीर आवाज में कहा। वो जानते थे कि क्या दांव पर लगा था।

'लेकिन वो बच नहीं पाएंगे, दादा!' नैना फोन पर चिल्लाई। दर्द से वो पागल होने वाली थी।

गोवर्धन शांत रहे।

‘मुझे बताओ कि उनकी हालत क्या है, नैना।’

बलवंत नैना की तरफ मुड़ा, आगे भीड़ की वजह से जीप की गति कुछ धीमी हुई थी।

‘हम सभी उन्हें उतना ही प्यार करते हैं, नैना जितना तुम करती हो। हम सब जानते हैं कि विद्युत की नियति क्या है। वो न सिर्फ इस मठ के लिए हैं, न ही सिर्फ बनारस के लिए... बल्कि पूरी मानवजाति के लिए हैं।’

नैना सुन रही थी। कोई विद्युत से उतना प्यार नहीं कर सकता, जितना मैं करती हूं।

बलवंत ने आगे कहा, ‘सुनो कि गोवर्धन क्या कह रहे हैं, और अपना श्रेष्ठ दो मेरी बच्ची।’

सुंदर और साहसी नैना ने हां में सिर हिलाया। वो जानती थी कि वो हार नहीं मान सकती थी। इस समय तो बिल्कुल भी नहीं।

गोवर्धन ने अपना सवाल दोहराया, ‘मुझे बताओ कि उनके लक्षण क्या हैं, नैना।’

नैना ने अपने आंसू पोंछे और विद्युत को ध्यान से देखा।

‘दादा, वो ठीक से सांस नहीं ले पा रहे हैं और उनका पूरा बदन तेज बुखार से तप रहा है।’

‘उनके माथे पर पानी छिड़कती रहो, नैना,’ गोवर्धन ने जवाब दिया। ‘उन्हें ट्रानेक्सामिक एसिड का एक और इंजेक्शन ठीक उसी तरह दो, जैसे मैंने तुम्हें बताया था। उन्हें पूरी तरह बेहोश मत होने देना। उनसे कुछ भी बात करती रहो। और क्या...?’

‘उनके होंठ पपड़ा गए हैं और वो...’

एक पल को खामोशी रही।

‘हां नैना, क्या? आगे बोलो...’ गोवर्धन ने जोर डाला।

‘वो... वो कुछ बुदबुदा रहे हैं, गोवर्धन दादा,’ नैना ने कुछ पल बाद घबराते हुए कहा।

‘क्या बुदबुदा रहे हैं? तुम्हें सुनना होगा कि वो क्या कहने की कोशिश कर रहे हैं!’

नैना आगे की तरफ झुकी और अपने कान विद्युत के फड़फड़ाते होंठों पर लगाए। वो नहीं समझ पाई कि वो क्या कह रहा था।

‘मुझे... मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा...’ उसने कहा, इतनी तेज कि जीप में बैठे दोनों व्यक्ति उसकी आवाज साफ सुन पाएं।

‘वो क्या कह रहे हैं, नैना?’ बलवंत ने घबराकर पूछा। वो लोग मठ से महज पांच मिनट की दूरी पर थे। लेकिन ये दूरी भी अभी अंतहीन लग रही थी।

नैना फिर से झुकी और अपने कानों पर जोर डाला। विद्युत की बात में से वो कुछेक शब्द पकड़ पाई।

‘...त्रयंबकं ...पुष्टिवर्धनः... मामृतात...’

कुछ पल की दुविधा के बाद, उसने बलवंत को देखा। उसके चेहरे पर अविश्वास था। कोई कैसे ऐसी तकलीफ और आधी बेहोशी की हालत में ये कर सकता है?

‘नैना, तुम्हें हमें बताना होगा... विद्युत ऐसी हालत में क्या बुदबुदा रहे हैं?’ गोवर्धन ने पूछा।

‘दादा...’ नैना ने कहा।

बलवंत, फोन पर गोवर्धन, और जीप में बैठा मठ का दूसरा योद्धा, सभी के कान पूरी तरह से नैना की बात पर थे।

‘गोवर्धन दादा... आप विश्वास नहीं करेंगे,’ नैना ने बताया। ‘विद्युत लगातार, सबसे शक्तिशाली महा मृत्युंजय मंत्र का उच्चारण कर रहा है।’

बात सुनकर हर कोई जम गया। अपनी मृत्यु शय्या पर बैठे, यूं बेहोशी की अवस्था में कोई कैसे ऐसे शक्तिशाली मंत्र का उच्चारण कर सकता था?

महा मृत्युंजय को मृत्यु से लड़ने वाला अंतिम संरक्षक माना गया था। यह यम के खिलाफ साक्षात भगवान शिव का आह्वान था।

मौत से कुछ पल की दूरी पर भी, देवता संघर्ष कर रहा था। प्राचीन शहर की तंग गलियों में, इस दुनिया से दूसरी दुनिया में जाने वाले पुल के किनारे खड़ा हो, विद्युत साक्षात काशी के ईश्वर का आह्वान कर रहा था। वो मदद के लिए भगवान शिव को बुला रहा था।

विद्युत ने ठान लिया था कि वो मरेगा नहीं।

आज तो बिल्कुल नहीं।

हड़प्पा के पूर्व में, **1700** ईसापूर्व

‘पानी की ये बूंदें... उधार हैं मुझ पर’

गिद्ध शोर मचाते हुए लगातार अपने शिकार के गिर्द मंडरा रहे थे। उन्हें अहसास था कि शीघ्र ही उन्हें दावत मिलने वाली थी।

पिछले अट्ठाईस घंटों से, बुरी तरह से घायल, बिना खाने और थोड़े से पानी के साथ वह युवक, अपने मार्ग पर आगे बढ़ रहा था। उसके गहरे घावों से मवाद बह रहा था। बहुत खून बह जाने की वजह से वो किसी भी पल बेहोश हो सकता था। उसका मुंह सूख चुका था और होंठ पपड़ा गए थे। उसे तो शायद पहले ही मर जाना चाहिए था।

लेकिन कुछ था जो उसे जीवित रखे हुए था।

अपनी मां का अंतिम संस्कार किए बिना, मनु अपना शरीर नहीं त्याग सकता था। वो मां जिसका शव, पूरे रास्ते वो अपनी गोद में लिए आ रहा था।

ये मनु का अपनी मां के प्रति फर्ज था। ये उस पर संजना का ऋण था।

‘पूर्व की तरफ जाओ... काले मंदिर की तलाश करो...’

ये वो आखरी शब्द थे जो मनु ने अपने पिता के वफादार मित्र, सोमदत्त के मुंह से सुने थे। तब से, पूरा दिन और पूरी रात वो पूर्व की तरफ बढ़ता रहा था। लेकिन वो किसी गांव या झोपड़ी में रुकने का जोखिम नहीं ले सकता था। वो किसी से मदद नहीं मांग सकता था, न ही किसी से दिशा पूछ सकता था। वह जानता था कि हड़प्पा की नई रानी, प्रियम्वदा हर कीमत पर उसे ढूंढने में जुटी होगी।

लेकिन अब वो सफ़र आशाहीन लगने लगा था। मनु जानता था कि न तो वो स्वयं और न ही उसका घोड़ा, और अधिक देर तक टिक पाएंगे। उसकी सुंदर मां के शव पर भी अब नश्वर, प्राकृतिक क्षरण के निशान दिखने लगे थे। ‘पूर्व की

तरफ जाओ...' बहुत ही अस्पष्ट सलाह थी। फिर भी मनु को भरोसा था कि बुद्धिमान सोमदत्त बिना किसी स्पष्ट ध्येय के उसे यह सलाह नहीं देते। लेकिन अभी तक कुछ दिखाई नहीं पड़ा था। न तो काला मंदिर। न ही कोई मदद। न ही कोई उम्मीद।

रक्त और धूल से सने मनु की हालत अब बहुत दयनीय हो चली थी। उसने चमड़े की थैली निकाली। पानी की अंतिम कुछ बूंदें बची थीं, बस आखरी बार उसके होंठों को गीला करने लायक। उसने उम्मीद की कि शायद इन कुछ बूंदों के सहारे वो कुछ और घंटे निकाल पाए।

गिद्धों को अभी और इंतजार करना होगा।

जहां तक नजर जाती वो जगह बंजर नजर आ रही थी। मीलों दूर तक मनु शायद अकेला ही यात्री था। वहां लगातार गर्म और धूल भरी हवा चल रही थी। मनु ने अपनी उंगलियों के पोर गिले किए और अपनी मां की आंखों, होंठों और माथे पर उसी स्नेह से लगाए, जैसे कोई मां अपने नवजात को प्यार से सहलाती है। जैसे ही वो उस थैली की बूंदों को अपने प्यासे मुंह में खाली करने वाला था, उसे दूर क्षितिज में कुछ दिखाई दिया। वो छोटे से स्लेटी धब्बे जैसा दिखाई पड़ रहा था, लेकिन मनु को लगा कि वो कोई इंसानी आकृति थी। उस सूखी धरती पर बेजान पड़ी हुई।

युवा योद्धा-मुनि ने अपना घोड़ा उसी बेजान शरीर की तरफ हांक दिया। एक दिन पहले, हड़प्पा की बाहरी सीमा पर हो रही लड़ाई में उसने अपनी मां को निराश किया था। वो अब किसी और को निराश नहीं करने वाला था।

मनु को अब भरोसा हो चला था कि अपने गहरे घाव और पानी की कमी की वजह से उसे भ्रम हो चला था। जितना वो उस आकृति के करीब आ रहा था, उतना ही वो अपनी आंखें मल रहा था। जो वो देख रहा था, वो किसी इंसान सा कम, बल्कि एक बड़ी मछली जैसा अधिक नजर आ रहा था! अपने तीस घंटे के सफर में, जितना मनु देख पाया था, उससे साफ था कि यहां आस पास कोई जलाशय नहीं था। तो फिर इतनी बड़ी मछली ऐसे सूखे प्रदेश में कैसे आ सकती थी?

लेकिन जब मनु मछली के समीप आया, वो हैरान रह गया। वो वास्तव में इंसान था, जो बेहोश पड़ा था। उसने अजीब से वस्त्र पहने हुए थे, जिनसे वो मछली की तरह लग रहा था, उसके शरीर पर मछली की सूखी खाल लिपटी हुई थी। उसने कुछ अपरिचित से आभूषण पहने हुए थे, जो शंख और मछली की हड्डियों से बने थे। और अपने कपड़ों और आभूषण की वजह से, कुछ दूरी पर

होने के बावजूद भी, उसमें से सागर की गंध आ रही थी!

मछलीनुमा आदमी मुंह के बल जमीन पर पड़ा था। वो बिल्कुल बेजान लग रहा था। मनु ने ध्यान दिया कि उसकी त्वचा में कुछ नीली सी रंगत थी। इसका मतलब हो सकता था कि या तो उसे जहर दिया गया था, या उसे मरे हुए कुछ समय बीत चुका था।

मनु को वहां से तुरंत निकलने का ख्याल आया। उसके पास पहले ही कम परेशानी नहीं थीं। वो पहले ही एक अमूल्य शव को लेकर जा रहा था, जिसका दाह संस्कार बहुत जरूरी था। अगले कुछ घंटों में, वो शायद स्वयं भी शव हो जाने वाला था। ऐसे में एक तीसरे शव का भार वो नहीं उठा सकता था।

लेकिन फिर, वो मनु था। महान विवास्वन पुजारी का पुत्र। वो किसी को भी अनादर से यूं पीछे नहीं छोड़ सकता था, फिर वो चाहे इंसान हो या शव।

जब मनु अपने विकल्पों को तलाश रहा था, तो मछली के लबादे में वो इंसान कुछ हिला। वो जीवित था! अपनी मां को नरमाई से घोड़े की काठ पर रखते हुए, मनु तुरंत अपने घोड़े से उतरा। उसने झुककर, धीमे से उस आदमी को सीधा किया। जैसे ही मनु ने उस आदमी के धूल से सने और सूर्य की गर्मी से झुलसाए चेहरे को देखा, वो अपनी नजरें उससे हटा नहीं पाया। इस मृतप्राय अवस्था में भी, वो मनु की जिंदगी का सबसे भव्य चेहरा था। इस आदमी में कुछ असाधारण था, जिसे मनु भांप नहीं पा रहा था। पल भर में ही, उसे अहसास हुआ कि उसके घाव की तकलीफ कम हो चली थी। उसे स्वयं में एक राहत महसूस हुई और उसे वैसी ही शांति का अनुभव हुआ, जो उसे सप्तऋषि के चरण छूते हुए होता था। बल्कि यह अहसास कुछ अधिक गहरा था। अधिक दिव्य।

मनु अभी भी अचंभे में था, लेकिन वो जानता था कि इस मनुष्य की जिंदगी बचाने के लिए उसे जल्दी ही कुछ करना होगा। मत्स्य-मनुष्य की नीली त्वचा पर चोट का कोई निशान नहीं था। वो यकीनन सूखे का शिकार हो गया था। मनु ने अपनी थैली के पानी में अपने कपड़े का एक सिरा गीला किया। उसने फिर वो गीला कपड़ा उस आदमी के पपड़ाए होंठों से लगा दिया।

‘जल...’ मत्स्य-मनुष्य कुछ होश में आते हुए बुदबुदाया।

‘जल... कृपया जल...!’ मनु के जवाब देने से पहले ही उसने दोहराया।

अब मनु के सामने दो रास्ते थे। अपनी थैली में बचे नाम-मात्र के पानी को

पीकर वो कुछ घंटों की अपनी जिंदगी बचा सकता था। और शायद उस काले मंदिर तक भी पहुंच सकता था। या वो ये पानी इस आदमी को देकर इसकी जान बचा सकता था। लेकिन ऐसा करने से यकीनन मनु तो मर जाता।

बिना हिचकिचाए, संजना और विवास्वन पुजारी के बेटे ने उस आदमी का सिर उठाया और अपनी थैली की आखरी कुछ बूंदें उसके मुंह में उंडेल दीं।

नीली रंगत वाले उस आदमी ने संजना का माथा छुआ और उसे स्नेही पिता की तरह थपथपाया।

मनु अपने घोड़े के पास जड़ खड़ा था। जैसे उस मत्स्य-मनुष्य ने अपनी आंखें खोलीं और मुस्कुराया, मनु का सारा जीवन उसकी आंखों के सामने घूम गया। अपने प्यारे पिता के साथ बचपन की वो हंसी, ममतामयी मां से जुड़ी वो खुशनुमा यादें, तारा के साथ गुजारे कुछ सुनहरी पल, बदमाश रंगा के साथ उसकी साहसी जंग... सबकुछ। और उससे अधिक भी। उसे उन जगहों और समय की भी बातें याद आ रही थीं, जिन्हें वो पहचानता भी नहीं था। वो शायद इससे पहले के जन्म की बातें थीं। मनु को अपना सारा दर्द, प्यास, भूख, गुस्सा... सब कुछ उस नीली रंगत वाले इंसान के सामने, उसकी एक नजर पड़ते ही, पिघलता हुआ महसूस हुआ।

वो कौन है?

मत्स्य-मनुष्य उस थोड़े से पानी से ही पूरी तरह तरोताजा हो उठा था। बिना कुछ कहे वो उठा और संजना के शरीर की तरफ बढ़ा। उसने संजना को इतने प्यार से देखा कि मनु की अब तक की रोकी हुई रुलाई फूट पड़ी। उसने कोमलता से संजना का माथा छुआ और प्यार से उसे थपथपाया। मनु समझ नहीं पा रहा था कि यह सपना था या वास्तव में घटित हो रहा था, लेकिन उसकी हर थपथपाहट से संजना का शरीर वापस से वैसा ही हो गया, जैसे अपनी मृत्यु के समय था। उसके चेहरे की कोमल मुस्कान, त्वचा का तेज और मद्धम महक वापस आ गई थी। ये मां की वो छवि थी, जिसे मनु पहचानता था।

‘अब यह अपने अंतिम संस्कार के लिए तैयार है,’ मत्स्य-मनुष्य ने मनु को देखते हुए, गहरी, स्नेही आवाज में कहा।

मनु अभिभूत था। उसे अब विश्वास हो चला था कि यह कोई साधारण मनुष्य नहीं था। उसने अपनी एक ही दृष्टी से मनु को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ कर दिया था। अपनी हथेली की एक हरकत से उसकी प्यारी मां के नश्वर शरीर को तरोताजा कर दिया था। या कम से कम मनु को तो यही लग

रहा था। या ये सब सिर्फ एक थके हुए आदमी का भ्रम था, कौन जाने?

‘आप कौन हैं?’ मनु ने मत्स्य-मनुष्य से पूछा, जिसके सुंदर, लंबे, भूरे बाल दिव्यता का अहसास करा रहे थे।

वो मनुष्य मुस्कुराया। तभी मनु को अहसास हुआ कि वहां चल रही गर्म हवा, ठंडे झोंके में बदल गयी थी। उसके आसपास की बंजर जमीन बादलों से भर गई थी। इससे पहले कि मनु मौसम में आए बदलाव पर कुछ कह पाता, उसे अपने चेहरे पर हल्की-हल्की बूंदें गिरती महसूस हुईं।

वो जान गया था कि ये सब उस नीली रंगत वाले इंसान का ही किया धरा था। मनु उसकी तरफ मुड़ा, तो देखा कि वो दूर बादलों की तरफ बढ़े चला जा रहा था।

‘हे रहस्यमयी, आप कौन हैं?’ मनु ने जोर से चिल्लाकर पूछा।

बिना रुके ही वो मनु की तरफ मुड़कर हंसा।

‘याद रखना, महान देवता, तुम्हें काले मंदिर तक पहुंचना है। उगते सूरज की दिशा में बढ़ते जाओ, तुम्हें वो मंदिर वहीं मिलेगा,’ उस आदमी ने नर्म आवाज में कहा।

उसे काले मंदिर के बारे में कैसे पता? मैंने तो उसे कुछ नहीं बताया।

‘लेकिन आप हैं कौन, आर्य?’

‘मुझे आर्य मत कहो, राजन। मैं आपका ऋणी हूं। पानी की ये बूंदें... उधार हैं मुझ पर। अब से लेकर समय खत्म होने तक, मैं आपका मित्र रहूंगा। और मेरा एक नाम भी है।’

‘और वो नाम क्या है, प्रिय मित्र?’ मनु ने तेज आवाज में पूछा, क्योंकि वो आदमी लगातार चलता जा रहा था।

नीली रंगत वाला इंसान धीमे से मुड़ा, मुस्कुराया और हाथ हिलाते हुए मनु की बात का जवाब दिया।

‘तुम मुझे वही पुकारना, जो इस धरती के बाकी लोग पुकारते हैं।

तुम मुझे मत्स्य बुला सकते हो।’

बनारस, 2017

तंत्र-मंत्र की जंग

विद्युत के बिस्तर के पास रखी कुर्सी पर ही बैठे-बैठे दामिनी की आंख लग गई थी।

विद्युत को दो रात पहले मठ में बेहोश हालत में लाया गया था। गोवर्धन ने अपने देवता की जान बचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने तो जाने-माने सर्जन और मठ के मित्र डॉक्टर शशि दीक्षित तक को बुलवा लिया था। ये आयुर्वेद, आधुनिक चिकित्सा, प्रार्थना और सक्षम यज्ञों का प्रभावशाली असर था, जिसने देवता की जान बचा ली थी।

डॉक्टर दीक्षित और महान द्वारका शास्त्री की धीमी बातचीत से दामिनी की आंख खुल गई थी।

'द्वारका शास्त्री जी, ये बड़ी राहत की बात है। विद्युत उस जानलेवा हमले के खतरे से बाहर आ गए हैं,' डॉक्टर दीक्षित ने कहा। 'दरअसल... दरअसल... मैं थोड़ा हैरान हूं।'

दामिनी ने अपनी सुंदर आंखें बंद कर भगवान का आभार जताया। उसका विद्युत उसे छोड़कर नहीं जाने वाला था।

'क्या बात आपको परेशान कर रही है, डॉक्टर साहब?' द्वारका शास्त्री ने जानना चाहा। वो शायद जानते थे कि डॉक्टर के मन में क्या चल रहा था। लेकिन हमेशा की तरह, वो चुप लगा गए।

'गुरुजी, विद्युत असामान्य रूप से स्वस्थ हो रहे हैं। चिकित्सा में गुजारे अपने पच्चीस सालों में, मैंने किसी को भी इतना जल्दी स्वस्थ होते नहीं देखा है।'

द्वारका शास्त्री सुन रहे थे, उनके चेहरे पर मद्धम मुस्कान थी।

'उनकी कोशिकाएं उल्लेखनीय गति से सही हो रही हैं। हर्बल और एलोपैथिक, दोनों दवाइयों का उन पर तेजी से असर हो रहा है। मैं समझ सकता हूं कि वो

पूरी तरह से स्वस्थ नौजवान हैं, लेकिन फिर भी उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता इतनी तेज है, जो मैंने कभी नहीं देखी। मानो वो कोई दैवीय मनुष्य हो!'

'वो है,' द्वारका शास्त्री ने सहजता से जवाब दिया।

ग्रैंडमास्टर ने आभार व्यक्त करते हुए डॉक्टर के सामने हाथ जोड़े और वहां से चले गए। सर्जन कुछ और पल उसी अचंभे में वहां खड़े रह गए।

'वो है,' दामिनी ने मन ही मन फुसफुसाते हुए कहा।

'मेरा विद्युत दैवीय मनुष्य है।'

'क्या आप जानते हैं विद्युत कि आपके परदादा क्यों और कैसे इस तरह बीमार हुए?' पुरोहित जी ने अपने चहेते देवता के लिए संतरा छीलते हुए पूछा।

पुरोहित जी का बेटा, सोनू भी अब स्वस्थ हो रहा था। वो न सिर्फ तन से स्वस्थ हो रहा था, बल्कि उसकी शरारत भरी मासूमियत भी वापस लौट आई थी। इससे पुरोहित जी अब वापस से अपना पूरा ध्यान शास्त्री वंश पर लगा पा रहे थे।

'नहीं, पुरोहित जी,' विद्युत ने जवाब दिया। 'मुझे लगा ये वृद्धावस्था के कारण है। ईश्वर उन्हें और भी दीर्घ आयु प्रदान करें, लेकिन वो अब अपनी उम्र के सौ साल पार कर चुके हैं।'

विद्युत की हालत में तेजी से सुधार हो रहा था। हालांकि वो अभी भी बिस्तर से उठ नहीं पाया था, लेकिन वो अपने आप में पूरी तरह सजग था।

'विद्युत आपको जल्दी से स्वस्थ होकर, हमारे ग्रैंडमास्टर, महान द्वारका शास्त्री जी के साथ अधिक से अधिक समय बिताना चाहिए। अभी आप दोनों को, एक-दूसरे से, बहुत सी बातें करनी हैं।'

'पुरोहित जी, मैं भी बाबा के साथ समय बिताने के अलावा और अधिक कुछ नहीं चाहता,' विद्युत ने जवाब दिया। 'लेकिन क्या आप नहीं जानते कि उनसे कुछ भी बुलवा पाना बहुत कठिन है? वो अपनी इच्छा से ही बात करते हैं। वो उतना ही बताते हैं, जितना बताना चाहते हैं। कोई भी उनसे जल्दबाजी नहीं कर सकता। कम से कम मैं तो नहीं!'

'आप ही हो विद्युत, जो उनसे जिद कर सकते हो,' पुरोहित जी ने थकी मुस्कान से कहा। 'कम से कम उनसे उस तांत्रिक संघर्ष के बारे में तो पूछो, जो उन्होंने

आपकी जान बचाने के लिए किया था।'

विद्युत ने जो सुना, उसे समझने में उसे कुछ पल लगे।

'क्षमा कीजिए... पुरोहित जी, आपने क्या कहा, तांत्रिक संघर्ष?'

पुरोहित जी ने संतरे की फांकों को सफाई से प्लेट पर रख दिया।

'हां, विद्युत। आपके परदादा किसी प्राकृतिक बीमारी या उम्र संबंधी कमजोरी के शिकार नहीं हुए हैं,' पुरोहित जी ने सचाई बताते हुए कहा।

'दुनिया के सबसे बड़े काले जादूगर से लड़ते हुए उनकी जान जाने वाली थी।'

'एक बहुत ही खतरनाक और सक्षम साधक ने आधी दुनिया दूर से, तुम पर हमले के लिए दो काली शक्तियां भेजी थीं, जब तुम गुड़गांव में ही थे। ये शक्तियां तुम्हें मारकर, तुम्हारी आत्मा को काले साम्राज्य में कैद कर देतीं अगर हमारे ग्रैंडमास्टर ने उनका सामना नहीं किया होता तो। द्वारका शास्त्री जी ने तुम्हें दूर-देश के तांत्रिक प्रहार से बचाया। तुम्हारी रक्षा में उन्होंने अपनी जान की भी बाजी लगा दी थी।'

विद्युत यह सुनकर जितना क्रोधित था, उतना ही सकते में भी। वो जानता था कि उसके परदादा उसे बहुत प्यार करते थे, ऊपर से भले ही वो स्वयं को कितना ही अनासक्त क्यों न दिखा लें। लेकिन अभी तक, विद्युत नहीं जानता था कि देव-राक्षस मठ के ग्रैंडमास्टर ने उसे बचाने के लिए अपनी जान तक दांव पर लगा दी थी।

'ये सब कौन कर रहा है, पुरोहित जी?' विद्युत ने क्रोध से पूछा। 'कौन मुझे मारने की कोशिश कर रहा है? उस दिन मेरे दशाश्वमेध घाट पर जाने से पहले, बाबा ने किसी न्यू वर्ल्ड ऑर्डर का जिक्र तो किया था। वो क्या है और वो हमारे दुश्मन क्यों हैं?'

'क्यों तो बहुत ही जटिल सवाल है, विद्युत। इसका जवाब सिर्फ तुम्हारे परदादा ही दे सकते हैं, और उन्हें ही देना चाहिए। लेकिन मैं तुम्हें बता सकता हूं कि तंत्र के इस भीषण संघर्ष के पीछे कौन था।'

'ठीक है...?' विद्युत चाहता था कि पुरोहित जी अपनी बात आगे बढ़ाते रहें।

पुरोहित जी ने विद्युत की आंखों में झांका और सपाट लहजे में कहा।

‘द्वारका शास्त्री इस धरती पर आए सबसे सक्षम तांत्रिकों में से एक हैं। तो कल्पना करो कि उन्हें लगभग पराजित कर देने वाली वो शक्ति किस स्तर की रही होगी। यह कोई साधारण आत्मा नहीं है। वह अध्यात्मिक रूप से सक्षम है और हमारे मठाधीश की दक्षता और अलौकिक शक्ति से दूसरे स्थान पर है।’

विद्युत ध्यान से सुन रहा था। पुरोहित जी ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

‘वह भयानक रात थी। हमारे गुरुदेव द्वारका शास्त्री जी शाम से ही बेचैन दिखाई दे रहे थे, जब मठ में हिंसक हवाएं चलने लगी थीं। हममें से किसी को भी अशुभ का अहसास नहीं हुआ लेकिन जैसे हवा का वेग बढ़ा, हमारे मठाधीश ने भांप लिया कि यह सामान्य नहीं था। उन्होंने मुझे बताया कि तारों की गणना के हिसाब से यह विद्युत के लिए संकट का समय है। कोई इंसान जिसे पाश्चात्य और पूर्व के ज्योतिष का पूर्ण ज्ञान था, उसने तुम्हें जिंदा कठपुतली बनाने के लिए इस समय का चयन किया था।’

उस अशुभ रात की घटना के बारे में बताते हुए, पुरोहित जी अब मानो शून्य में पहुंच गए थे।

‘जब उन हवाओं ने तूफान का रूप अपना लिया तो धीरे-धीरे चंद्रमा भी भूतिया लाल रंग का होने लगा। दसियों हजार पक्षी उस रक्त-रंजित आसमान में चिल्लाते हुए इधर-उधर उड़ने लगे। जैसे-जैसे रात गहराने लगी, कुत्ते भी गुस्साए भड़मानस की तरह भौंकने लगे। और फिर, हमने वो सुना। बनारस के सारे मंदिरों के घंटे एक साथ बजने लगे। प्राचीन मंदिरों के रहस्यमयी साधुओं ने इस खतरे को वैसे ही भांप लिया था, जैसे द्वारका शास्त्री ने। उन लोगों ने मंदिरों के घंटे बजाकर, अपने संरक्षक को बचाने की गुहार लगाई। उन सबने पवित्र आत्माओं की फौज का आह्वान किया। वो अंधियारा समय, जिसके लिए बनारस और देव-राक्षस मठ की आध्यात्मिक रूप से संरचना की गई थी, आ पहुंचा था। तब तक इस प्राचीन नगरी का आसमान दुनिया की सबसे बड़ी तांत्रिक जंग के लिए तैयार हो चुका था।

वो पल जिसका सदियों से इंतजार था, आ पहुंचा था।’

विद्युत को अपनी रीढ़ में सिहरन महसूस हुई। लेकिन वो किसी भी तुरंत प्रक्रिया से पुरोहित जी को बीच में टोकना नहीं चाहता था। उसने अभी के लिए अपने सवाल स्वयं तक रखे, और चुपचाप सुनता रहा।

‘पलभर में महान मठाधीश अपनी कुटी की तरफ बढ़ गए। वो लगातार अथर्ववेद में शामिल, काली आत्माओं से लड़ने वाले मंत्रों का उच्चारण कर रहे

थे। संभवतः वो अपनी अलौकिक सेना को बुला रहे थे। ग्रैंडमास्टर की कुटीर में उनके सबसे शक्तिशाली साथी रहते हैं, और वो अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी लड़ाई में उनकी मदद मांग रहे थे। लेकिन उन्होंने देर कर दी थी। इससे पहले कि वो अपनी आध्यात्मिक शरण में पहुंच पाते, बिजली की एक तेज धार सीधा आसमान से हमारे ग्रैंडमास्टर पर आकर गिरी। मानो साक्षात आसमान से आग बरसी हो। एक पल के लिए हम सब जड़ रह गए, हमें लगा था कि हम अपने प्यारे नेता के अंत के साक्षी हो गए थे। लेकिन, हमने क्या देखा... जैसे ही धुआं छटा हमने देखा कि ताकतवर द्वारका शास्त्री अपनी जगह पर डटे खड़े थे, उनकी टांगे मजबूत स्तंभों की तरह जमीन पर जमी हुई थीं और लंबे सफेद बाल हवा में लहरा रहे थे। उनका विशाल त्रिशूल अलौकिक शक्ति के प्रकोप से जलकर लाल पड़ चुका था।

महान युद्ध छिड़ चुका था।'

सिंधु का किनारा, हड़प्पा के पश्चिम में, **1700** ईसापूर्व

अ-सुरा

रात के अंधेरे में, उसका घोड़ा तूफान की मार झेलते हुए आगे बढ़ रहा था। वो सिर से पैर तक तुलसी, लोबान और दूसरी आयुर्वेदिक बूटियों के हरे लेप से पुता हुआ था। सिर्फ उसकी इकलौती आंख ही काले अंधेरे में चमक रही थी।

उसके कमरबंद पर एक बड़ा सा कृपाण लटका हुआ था। उसकी अपनी, भयावह तलवार—रत्न-मारू। उसके घोड़े की काठी पर अनेकों तीर लगे थे और धड़ पर एक शक्तिशाली धनुष लटका हुआ था। उसकी एक खत्म को चुकी आंख पर चमड़े का पल्ला लगा था, जिससे उस खाली घेरे को रास्ते की तेज हवा और धूल से बचाया जा सके।

विवास्वन पुजारी अपने पुराने दुश्मन के दल में आया था। वो शैतान-राजा, सुरा के दल में आया था।

उसे अपने कानों पर भरोसा नहीं हुआ। जो नाम उसके दरबान ने लिया था, उस नाम की सुरा जहां सराहना करता था, वहीं वो उससे डरता भी था।

ऐसा कैसे हो सकता है?

‘तुम्हें पूरा विश्वास है...? क्या तुम्हें यकीन है कि आने वाले ने अपना यही नाम बताया था?’ सुरा ने फिर से पूछा।

सिपाही अब घबरा गया। इस विशाल सेना का एक कड़ा नियम यह था कि महान सुरा को किसी भी हालत में नाराज नहीं किया जाना चाहिए। कभी भी नहीं।

सुरा से मिलकर लोग विश्वास नहीं कर पाते थे कि इतने छोटे कद का आदमी, इतना भयानक कैसे हो सकता था। सुरा की रंगत गोरी थी लेकिन वो उस पर अपने दुश्मनों की अस्थियों की राख मलकर उसे काला बनाए रखता था। वो

कभी भी हथियारों के बिना नहीं सोता था, वो नियमित रूप से तेंदुए की खोपड़ी में शराब पीता था, जिसे उसने बिना हथियारों के सिर्फ अपने हाथों से ही मारा था। वो हमेशा खूबसूरत महिलाओं की संगति में रहता, खासकर अपने दुश्मनों की विधवाओं के साथ, लेकिन वो कभी भी जबरन उन्हें अपना नहीं बनाता था। वो उनकी हां का इंतजार करता, या दिखावे की हां का। जो उसे स्वयं हां नहीं करती थीं, उन्हें वो सार्वजानिक रूप से अपने पालतू भेड़ियों के सामने डाल देता था। इस वजह से दूसरी विधवाएं स्वयं उसके चरणों में आ गिरती थीं। वो हर सुबह एक विशालकाय पशु का सिर काट कर, उसका ताजा गोश्त अपने वफादार सिपाहियों को खिलाया करता। उनमें से कोई भी तब तक सुबह खाना नहीं खाता था, जब तक कि उनका आहार, उनके स्वामी की तलवार की बलि न हो। उसके दरबार के नियम बड़े साधारण थे। कोई भी अपराधी, जिसे मौत की सजा मिली हो वो उसे चुनौती दे सकता था। लेकिन उसे स्वयं राजा को चुनौती देकर उससे तब तक लड़ना होता था, जब तक कि वो राजा को मौत के घाट न उतार दे। लेकिन अगर वो इसमें हार गया तो उसे इतनी बेरहम मौत दी जाती थी कि आने वाली कई पीढ़ियों में उसकी चर्चा होती।

सुरा की नजरों को इतना तेज माना जाता था कि जिस पर पड़ें उसमें छेद कर दें। सुरा को उसके अपने लोग ईश्वर की तरह पूजते थे।

लेकिन पूर्व के लोगों के लिए वो शैतान था।

इस कुख्यात शैतान-राजा ने अपने जीवन की शुरुआत मोहन जोदड़ो के महान नगर में चर्मकार के बेटे के रूप में की थी। उसने बचपन में एक उच्चवर्गीय आदमी का पैर इसीलिए काट दिया था, क्योंकि उस आदमी ने जूता गलत सिलने की वजह से सुरा के पिता के मुंह पर लात मारी थी। इस वजह से सुरा को नगर छोड़कर जाना पड़ा था, उसके साथ उसके सात वफादार दोस्त भी चले गए थे। उसने सोचा था कि उसके जाने के बाद मामला ठंडा पड़ जाएगा। लेकिन जब उसने सुना कि उसके माता-पिता को मृत-कारावास में डाल दिया गया था, तभी वो जान गया था कि अब वो वहां से जीवित बाहर नहीं आएंगे। और उस समय उसके पास इतनी ताकत नहीं थी कि अपने मां-बाप को उस खौफनाक सजा से बचा पाता।

उसने प्रतिशोध की कसम खाई। सिर्फ उस नगर के खिलाफ ही नहीं जिसने उसके मां-बाप के साथ ऐसा किया था, बल्कि पूरे आर्यवर्त से। सुरा ने प्रतिज्ञा की कि वो प्रबलता की इस व्यवस्था को हमेशा के लिए खत्म कर देगा। उसके सातों अनुयायियों ने उसका साथ दिया। महीने और साल गुजरने के साथ, सुरा सड़क छाप गुंडे से बढ़कर पहाड़ों का कुख्यात योद्धा बन गया था। उसका समूह

धीरे-धीरे दल और फिर कबीले में बदल गया। उसकी सेना दुनिया में सबसे बेरहम और असाध्य मानी जाने लगी। और हड़प्पा की प्रतिष्ठित जीवन शैली से विपरीत, सुरा की सेना जंगली थी। वो पुरुष कैदियों को अपने साथ सिर्फ इसलिए ही ले जाते थे ताकि हर दिन उन्हें जिंदा जलाकर उनकी राख को अपने बदन पर मल सकें। समग्र हिंदू कुश में, सुरा एक अकेली जीवित किंवदंती था।

आर्यवर्त की जीवन शैली के विरोध स्वरूप, सुरा ने अपने विशाल कबीले को शपथ दिलाई थी कि उनमें से कोई भी आर्यवर्त वासियों और उनकी वस्तुओं के नाम उनके वास्तविक स्वरूप में नहीं पुकारेगा। उनके द्वारा बोले गए हर शब्द में वो घृणा दिखती। वो भाषा को अ-भाषा कहते। वो सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा को अ-ब्रह्मा कहते। यद्यपि वो भी आर्यवर्त के लोगों की तरह ही ब्रह्मा को श्रेष्ठ मानकर पूजते, लेकिन वो उन्हें कभी उस नाम से नहीं पुकारते, जिस नाम से हड़प्पा वासी पुकारते थे। उनका भगवान अब अब्रह्मा था।

एक ही नाम अब दो भिन्न संस्कृतियों में, भिन्न नामों से पूजा जा रहा था। लेकिन वो था एक ही। हमेशा से था। हमेशा रहेगा।

और अब उस अ-भाषा में, सालों गुजरने के बाद, सुरा और उसके अनुयायी अब स्वयं को भी अलग नाम से पुकारने लगे थे। उनके अपने लोग उन्हें भगवान की तरह पूजते थे जबकि उनके पड़ोसी नगर शैतान की तरह उन्हें नफरत से देखते थे...

वो अब अ-सुरा बन चुके थे!

‘जी, स्वामी। उन्होंने मुझसे यही नाम आपको बताने के लिए कहा था,’ दरबान ने कहा, उसने एक बार भी अपनी आंखें उठाकर उस ताकतवर राजा को देखने का साहस नहीं किया था। ‘और महाराज, मुझे आपको ये भी बताना चाहिए कि... वो बुरी तरह से विकृत है।’

सुरा की चमकदार आंखें अब जमीन पर, एक बिंदु से दूसरे पर घूम रही थीं। उसने शराब वाली वो खोपड़ी, अपने अस्थायी सिंहासन के साथ लगी चौकी पर रखी और अपने मित्र व सेनापति, प्रचंड की तरफ मुड़ा। प्रचंड ने आगंतुक का नाम सुनते ही ऊंट की भुनी टांग को चबाना बंद कर दिया था।

‘बिना एक पल गंवाए, उसे मार दो सुरा,’ प्रचंड ने सलाह दी। ‘आपको याद है न कि उसने पिछली बार हमारे साथ क्या किया था...’

सिर्फ प्रचंड ही विकराल राजा को उसके नाम से पुकार सकता था। और सिर्फ प्रचंड ही सुरा को उस अपमानित हार की याद दिला सकता था।

'मुझे अच्छी तरह याद है, प्रचंड...' सुरा ने कड़कते हुए कहा। 'मुझे याद है कि उसने अपने मुट्ठी भर योद्धाओं के साथ हमारी सेना को धूल चटा दी थी। मुझे याद है कि वो पहाड़ से मेरे श्रेष्ठ घोड़ों को ले गया था। मुझे याद है कि उसने अपनी तलवार से तुम्हें और मुझे बुरी तरह पछाड़ दिया था!'

सुरा ने अपनी खोपड़ी से नशीले पराग का बड़ा सा घूंट भरा।

'लेकिन मुझे ये भी याद है... कि उसने मेरे बेटे की जान बख्श दी थी,' सुरा ने फिर से कहा। 'मुझे ये भी याद है कि उसने हमारी किसी भी महिला को हाथ तक नहीं लगाया था और उनसे सम्मानपूर्वक व्यवहार किया था।'

प्रचंड सुन रहा था। वो इससे असहमत नहीं हो सकता था। वो जानता था कि सुरा सही कह रहा था।

'मुझे याद है कि हमारे युगल संग्राम में जब भी मेरी तलवार गिर जाती तो वो दोबारा उसे उठाने का मुझे मौका देता। मैं ये नहीं भूल सकता कि जब उसके पास मेरा सिर कलम करने का मौका था, तब वो चुपचाप मुझे मेरे हाल पर छोड़कर चला गया।'

सुरा अपने बचपन के मित्र और अपनी सेना के अध्यक्ष की तरफ मुड़ा।

'वो साधारण मनुष्य नहीं है, प्रचंड। कोई भी साधारण मनुष्य तुम्हें और मुझे इतनी आसानी से नहीं हरा सकता है। वो देवता है! ये मैंने उसकी आंखों में देखा है। उनमें स्नेह की एक चमक है, और वो स्नेह उसके शत्रुओं के लिए भी है।'

'आप सही कह रहे हैं, राजन,' प्रचंड ने वो सब याद करते हुए कहा। 'लेकिन फिर भी वो हमारा शत्रु है, सुरा। विश्व पर शासन करने की आपकी राह में वो इकलौता रोड़ा है!'

'हां वो है। हां वो है...' सुरा बुदबुदाया। वो अचानक दरबान की तरफ मुड़ा और आदेश दिया।

'मेहमान को अंदर ले आओ। और ध्यान रहे उनके सम्मान में कोई कमी न रहे।'

'जी, स्वामी,' सिपाही सिर झुकाकर उस रहस्यमयी और घृणास्पद अतिथि को लाने के लिए चला गया।

सुरा और प्रचंड को अपनी आंखों पर भरोसा नहीं हो पा रहा था। उनके सामने जो खड़ा था वो, वही देवता नहीं था जिसे वो भय और आकर्षण से याद करते थे। हरे लेप से ढंका, जो उसके खून की वजह से अब तक भूरा हो गया था, वो आदमी किसी भी तरह उस वैभवशाली योद्धा-मुनि जैसा नहीं था, जिसे उन्होंने पिछली बार युद्ध-भूमि में देखा था।

सुरा ने मेहमान की आंख में नजदीकी से झांका। वो आंख उसे बेचैन करने वाली निर्दयता से घूर रही थी। ये आदमी वही था। लेकिन कुछ तो बदल गया था। वो बदलाव भयानक था।

उसे क्या हो गया था?

'ओ महान अ-देवता, मेरे तुच्छ निवास पर आपका स्वागत है,' अपने आश्चर्य और सदमे पर काबू पाकर, सुरा ने उसके स्वागत में कहा।

'स्वागत है, महान अविवास्वन पुजारी।'

बनारस **2017**

ब्रह्म राक्षस

‘विद्युत, क्या आप जानते हैं कि ब्रह्म राक्षस क्या है?’ पुरोहित जी ने पूछा।

‘पूरा तो नहीं पता पुरोहित जी, लेकिन मैं मानता हूं कि वह विकृत प्राणी है, जो किसी शाप वश सदियों तक पीड़ा झेलता है,’ विद्युत ने जवाब दिया।

‘काफी सही है। ब्रह्म राक्षस एक विकराल प्राणी है जो न तो इधर है, न उधर। ब्रह्म राक्षस न तो पूरी तरह से मृत है और न जीवित। वो न इस लोक का वासी है, न उस लोक का। यह एक शापित आत्मा की चलायमान स्थिति है, जो अपने सारे ज्ञान और समझ के बावजूद जीवन भर पीड़ा भोगती है। अदृश्य रूप में रहते हुए उसे सदियों तक तकलीफ झेलनी पड़ती है।’

ये शब्द बोलते हुए, पुरोहित जी की नजरें खिड़की से बाहर किसी चीज पर टिक गई थीं। विद्युत को अहसास हुआ कि वो महान मठाधीश की कुटीर को देख रहे थे।

उस रहस्यमयी कुटीर से नजरें हटाए बिना, पुरोहित जी ने कहा।

‘आप जानते हो विद्युत, हमारे ग्रैंडमास्टर की कुटीर में सच में ब्रह्म राक्षस रहता है। उस रात मैंने उसे देखा था। सालों से हमने उसकी उपस्थिति को महसूस किया है। लेकिन उस रात, द्वारका शास्त्री ने अपने अलौकिक मित्र को मदद के लिए बुलाया था। मैंने... देखा उसे...’ अब तक पुरोहित जी आंशिक रूप से जड़ हो चले थे।

विद्युत ने अपना हाथ पुरोहित जी के कंधे पर रखा और उस बुजुर्ग पुजारी को शांत करने की कोशिश की। पुरोहित जी को इससे कुछ राहत महसूस हुई और वो तुरंत विद्युत के हाथ को थपथपाते हुए मद्धम से मुस्कुराए।

उन्होंने अपना गला साफ करते हुए एक गिलास पानी पिया और फिर वापस अपनी बात कहनी शुरू की। विद्युत के लिए वो जानना जरूरी था।

‘उनके कुटीर से आती सैकड़ों ओझाओं के मंत्रोच्चार की आवाज खून को जमा देने वाली थी। वो जमा देने वाला समय था, मठ में मौजूद, हममें से हर किसी ने गुरुदेव को उनके कुटीर में अपने आप जाते हुए देखा था,’ पुरोहित जी ने कहा।

‘हमने द्वारका शास्त्री जी को अकेले कुटीर में जाते हुए देखा, लेकिन पल भर में ही वो जगह एक खास, विचित्र प्रकाश से जगमगा उठी। ऐसा लग रहा था मानो सैकड़ों अग्नियां एक साथ प्रज्वलित हो उठी हों। और फिर एक ही झटके से, पूरे बनारस में अंधेरा छा गया। हर बल्ब, गली की लाइट, टीवी... और तो और खाना पकाने की आग भी तुरंत बुझ गई। मानो किसी शैतान, जिन्न ने दसियों मील तक की रौशनी को एक फूंक मारकर बुझा दिया हो। उसके बाद सिर्फ दो ही चीजें दिखाई दे रही थीं—ग्रैंडमास्टर के कुटीर से उठती तांत्रिक अग्नि की दिल दहला देने वाली चौंध, और आसमान में कड़कती बिजली का लाल वार।’

मठ के उस शांत से चिकित्सा कक्ष में कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। विद्युत स्तब्ध था। पुरोहित जी उस भयानक रात की वीभत्स याद में खो गए थे। मठ की एक उपचारिका ने विद्युत के खाने के साथ चिकित्सीय कक्ष में प्रवेश किया, लेकिन देवता के विनम्र लेकिन दृढ़ इंकार से तुरंत वो वापस चली गई।

‘लेकिन पुरोहित जी, अगर वो मेरे पीछे पड़े थे, तो ये सब, यहां बनारस में क्यों शुरू हुआ? मैं तो यहां से सैकड़ों मील दूर था!’

‘दूर से की जाने वाली तांत्रिक क्रिया बहुत प्राचीन और स्वीकृत अभ्यास है, विद्युत। कुछ लोगों का मानना है कि पश्चिमी पादरी, पोप पायस XII ने, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, स्वयं अडोल्फ हिटलर पर इसे आजमाया था। उनका मानना था कि हिटलर शैतान का अवतार था, और उसे खत्म करने के लिए उन्होंने गहन तंत्र का सहारा लिया। कोई नहीं कह सकता कि उसका परिणाम क्या रहा था; सिवाय इस कहावत के कि उस अनुष्ठान के दौरान वैटिकन का एक उच्च पुजारी तुरंत मर गया था। उनका मानना था, हिटलर के अंदर का शैतान इतना ताकतवर था कि उसे हटाया नहीं जा सकता था।’

‘वाह! हिटलर? कौन इसकी कल्पना करेगा?’ विद्युत ने अविश्वास से कहा।

‘हिटलर, विश्व युद्ध और चर्च से संबंधित अनेकों पाठों में इसे दर्ज किया गया है। बाद में वैटिकन के ओझाओं, जिनमें गैब्रियल अमोर्थ भी शामिल थे, ने कहा था कि दूरस्थ तंत्र इसलिए असफल रहा क्योंकि शिकार पायस XII के सम्मुख मौजूद नहीं था। ये, यकीनन पश्चिमी मान्यता है। हमारी प्राचीन काली-कला में

ऐसी कोई बाध्यता नहीं है।'

'ये सब बहुत हैरानी भरा और भयानक है, पुरोहित जी। लेकिन मेरा सवाल अभी भी बरकरार है। अगर आप कह रहे हैं कि वो हमला मेरे लिए था, तो वो सब बनारस में क्यों हुआ? वहां क्यों नहीं, जहां मैं था? और क्योंकि अपने परदादा की तुलना में मैं सामान्य हूं, तो मैं तो आसानी से उनका शिकार बन गया होता।'

पुरोहित जी ने विद्युत की आखरी बात पर सहमत होते हुए, तेजी से सिर हिलाया।

'हां, आप उनसे बराबर की टक्कर लेते, विद्युत। लेकिन आप उन्हें हरा नहीं पाते। याद रखें कि द्वारका शास्त्री जी कौन हैं। निसंदेह आप एक समर्थ तांत्रिक हो, लेकिन अपने परदादा की तुलना में नहीं। और वैसे भी, हमारे मठाधीश ने वो संग्राम अकेले नहीं लड़ा था। उन्होंने बनारस के सैकड़ों गहन तांत्रिकों और ऋषियों से मदद ली थी, जिन्होंने अपने मंदिरों, घरों, घाटों और श्मशान भूमि से ही उनका साथ दिया था। वो अच्छाई और बुराई के बीच की जंग का अद्भुत दृश्य था। वो अपने जीवन भर की तपस्या से द्वारका शास्त्री जी को बल दे रहे थे। वे सब जानते थे कि मानवजाति इस हार को बर्दाश्त नहीं कर सकती थी।'

विद्युत अब उस जोखिम भरी रात की कल्पना कर सकता था। देव-राक्षस मठ और ग्रैंडमास्टर द्वारका शास्त्री की कुटीर उस अध्यात्मिक हमले के जवाब का केंद्र थी, जबकि इस प्राचीन नगर के बहुत से तपस्वी, पीढ़ियों से प्राप्त मंत्रों के सहारे ढाल बना रहे थे।

बनारस के पुजारियों की अनेकों पीढ़ियां, जाने कब से इस काली रात के लिए तैयारी कर रही थीं। वो जानते थे कि इस निष्ठुर संघर्ष में उनके प्राण भी जा सकते थे। और फिर भी वो निडरता से लड़ते रहे। सैकड़ों सालों में वो अपनी सामाजिक चमक खो चुके थे। जिन्हें एक समय में जीवन का नैतिक आदर्श समझा जाता था, इस पवित्र गुरुओं के सम्मान में राजा तक अपना सिंहासन छोड़ देते थे, वो साधू और ऋषि तृतीय श्रेणी के नागरिकों की तरह, दया पर जीने के लिए मजबूर थे। भौतिकतावाद, पश्चिमीवाद से प्रभावित असंगत समाज इन मार्गदर्शकों को अब महज गृह-प्रवेश, जन्म और मृत्यु संबंधी समारोह तक सीमित कर चुका था। महानगरीय हिंदू परिवार इन्हें एक अवांछित जरूरत की तरह महज रिवाज पूर्ति के लिए बुलाता है। वो नहीं जानते कि आज भी यही हाशिये पर बैठे भगवान के आदमी, काली ताकतों के खिलाफ हमारी सबसे बड़ी सुरक्षा बनते हैं। वो लोग उस दिन अपनी जान तक गंवाने को तैयार थे।

वो क्या बचाने की कोशिश कर रहे थे?

‘जिस समय गुरुदेव अपनी कुटीर से बाहर आए, वो स्वयं एक दैत्य लग रहे थे। वो अपने वास्तविक आकार से बहुत बड़े लग रहे थे और किसी प्रेत के जैसे चल रहे थे। उनके बालों की लटें हवा में सफेद सांपों के जैसे उड़ रही थीं। लेकिन सबसे अधिक... सबसे अधिक हमें जिस चीज ने डराया, वो थी उनकी आंखों से निकलती नीली रौशनी। हम जानते थे कि हम अपने ग्रैंडमास्टर को नहीं देख रहे थे। उनके अंदर कोई और था।’

‘वो कौन था, पुरोहित जी?’ विद्युत ने सीधे-सीधे पूछा। उसका मुंह सूख रहा था।

‘वो हमारे ग्रैंडमास्टर में ब्रह्म राक्षस था, विद्युत। और वो स्वयं गुरुदेव के शरीर में नहीं घुस आया था। द्वारका शास्त्री जी ने उसे अपने शरीर में बुलाया था, जिससे वो उन दो काली शक्तियों का मुकाबला कर सकें।’

कमरे में कुछ पल सन्नाटा रहा। फिर पुरोहित जी ने अपनी बात कही।

‘आसमान के अचानक से साफ होने और द्वारका शास्त्री जी के बेजान होकर जमीन पर गिरने से पहले, हमने उन्हें अपना त्रिशूल उठाकर, अपनी नीली आंखों से सुर्ख चांद को देखकर, ये कहते हुए सुना...’

पुरोहित जी अब जोश से प्रलय के उन पलों को फिर से साकार करने की कोशिश कर रहे थे। आंखों से झलकते डर के साथ, उन्होंने अपने दोनों हाथ ऊपर की तरफ उठाए, अपना सिर पीछे फेंका और किसी ऐसी भाषा में बोला, जो विद्युत ने कभी उनके मुंह से नहीं सुनी थी।

‘इउ ओ बानी दा सिदादे सग्रादा, अगोस्तिन्हो!’

‘इउ ओ बानो देसा तेर्र सग्रादा, क्रिस्तोवा!’

विद्युत इन पंक्तियों का मतलब नहीं जानता था, लेकिन वो जानता था कि इसका मतलब कुछ अशुभ है। और वो समझ सकता था कि ये भाषा पुर्तगाली थी।

‘पुरोहित जी, इन लाइनों का क्या मतलब है?’ विद्युत ने बेचैनी से पूछा।

पुरोहित जी ने सहजता से कहा। ‘इसका ये मतलब है, विद्युत—

‘इस पवित्र नगरी से मैं तुम्हें निष्कासित करता हूं, अगोस्तिन्हो!

इस पावन नगरी से मैं तुम्हें बाहर निकालता हूं, क्रिस्तावो!’

16वीं सदी के गोवा के पुर्तगाली कातिल वापस आए थे। वो ही निर्मम हत्यारे, जिन्हें विद्युत और द्वारका शास्त्री के पूर्वज, महान मार्कंडेय शास्त्री ने मारा था। उन्हें ही इस काम के लिए वापस बुलाया गया था।

वास्तव में, वो कभी पूरी तरह गए ही नहीं थे।

बिथिनियाई नगर (वर्तमान का तुर्की), 325 ईस्वी

नाइसिया की परिषद

‘नॉन लासारे के कुएस्तो एक्कादा, इम्पेरातोर!’ नकाबपोश महंत फुसफुसाया।

‘ऐसा मत होने दो, सम्राट!’

धरती के सबसे शक्तिशाली राजा के सुसज्जित घोड़े के साथ चलते हुए, अद्वैत शास्त्री ने सम्राट से विनती की। वो जानता था कि तीन सौ से अधिक ईसाई बिशप की मुख्य परिषद के बाद आयोजित गुप्त सभा में जो निर्णय लिया गया था, उसके लंबे अरसे में पड़ने वाले प्रभाव को सारे शक्तिशाली राजा नहीं समझ पाए होंगे।

‘चले जाओ, इससे पहले कि मैं तुम्हें गिरफ्तार कर लूं,’ सम्राट ने उपहास करते हुए कहा, वो हाथ हिलाकर उस भीड़ का अभिवादन कर रहा था, जिस पर उसने अभी कुछ समय पहले ही विजय हासिल की थी। वो इंसानों की ढुलमुल और समूह में रहने वाली मानसिकता पर हंसने से स्वयं को रोक नहीं पा रहा था।

ये बने ही किसी एक शासक के अंतर्गत शासित होने के लिए हैं। एक ही कानून के तहत। एक ही आदेश के तहत। अद्वैत एक मित्र था, और ऐसा इंसान जिसकी

सम्राट बहुत प्रशंसा करता था। 'मेरे शिविर में आकर मुझसे मिलना, ढीठ बालक,' उसने हिंदुकुश की पहाड़ी से परे, समतल से आए अपने युवा मित्र की तरफ व्यंग्य से मुस्कुराते हुए कहा। सम्राट देखने में अपराजेय था।

महान कांस्टेंटाइन अपने समय से आगे का व्यक्ति था।

यकीनन वो ऐसा दिखता था मानो उसे इस धरती पर शासन करने के लिए ही भेजा गया हो। कांस्टेंटाइन अपने सुसज्जित आसन पर पालथी मारकर बैठा था, उसने अभी भी अपना सुनहरा कवच पहन रखा था। अपने मजबूत जबड़े, तीखी नाक और घुंघराले बालों की वजह से वो मेसेडोनिया के सिकंदर का ही पुनर्जन्म प्रतीत होता था।

वो शायद था भी।

अद्वैत ने शाही मंडप में प्रवेश किया। कांस्टेंटाइन के अस्थायी शाही निवास की समृद्धि कल्पना से परे थे। माणिक, हीरे और पन्नों जड़ित, सम्राट का शिविर संपन्नता का प्रतीक था। कांस्टेंटाइन वहां अपने ताकतवर हाथों में मदिरा का सुनहरा प्याला उठाए बैठा था। उसमें प्रकृति का ओज था।

सम्राट ने खड़े होकर अद्वैत का स्वागत किया और उसके साथ ही समग्र शाही परिषद भी खड़ी हो गई। सम्राट ने उन्हें अपनी दो उंगलियां हिलाकर बैठने का संकेत दिया। उसके परिषद सदस्य जानते थे कि कांस्टेंटाइन अपने विशाल साम्राज्य के सभी कोनों से आए रहस्यवादियों, पुजारियों, योद्धाओं, नाविकों और बुद्धिजीवियों से नियमित संपर्क रखता था। और सिर्फ अपने साम्राज्य से ही नहीं, उससे भी आगे से। लेकिन वो सभी चकित रह गए जब उन्होंने देखा कि वो महान विजेता उस रहस्यमयी युवा को किसी पुराने मित्र की तरह अपनी बांहों में भर रहा था।

सम्राट और नकाबपोश आगंतुक में स्नेही संबंध देखकर, शाही साकी ने मेहमान के लिए भी सुनहरे प्याले में वही श्रेष्ठ मदिरा प्रस्तुत की, जो कांस्टेंटाइन और उसकी परिषद सदस्य पी रहे थे।

'मेरे शक्तिशाली किंतु उदासीन मित्र मदिरा का सेवन नहीं करते,' सम्राट ने साकी को दूर रहने का संकेत करते हुए, शरारती मुस्कान और एक भौंह उठाकर घोषणा की। सम्राट की हर मुद्रा में एक निर्विवादित अधिकार भाव था।

'और यह मांस भी नहीं खाते हैं!' सम्राट ने अपनी परिषद सदस्यों की तरफ

मुड़ते हुए कहा। 'लेकिन मैं आपको भरोसा दिलाता हूं, ये एक क्रोधित बैल को उसके सींग पकड़कर धकिया सकते हैं और दो मील के लक्ष्य पर भी तीर से निशाना लगा सकते हैं।'

वह वापस अद्वैत की तरफ मुड़ा। अपने दोनों हाथ अपने मित्र के कंधे पर रखकर, कांस्टेंटाइन ने कहा, 'एक और बात। यह हममें से किसी की भी अपेक्षा ईश्वर के अधिक करीब हैं।' राजा की आवाज प्रशंसा और स्नेह से नर्म हो गई थी।

'आप महान और दयालु हैं, शक्तिशाली कांस्टेंटाइन,' आगंतुक ने महान शासक के सम्मान में अपना नकाब उतारकर कहा। शिविर में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति दो बातों से हैरान रह गया—युवा आगंतुक का खास मनोहर चेहरा, और उसने महान कांस्टेंटाइन को उसके नाम से पुकारने की हिम्मत की थी!

अब वो राजा के निजी कक्ष में थे। जिस बारे में वो बात कर रहे थे, उससे दुनिया की किस्मत हमेशा के लिए बदल जाने वाली थी।

कांस्टेंटाइन ने नाइसिया की परिषद में अपने विशाल साम्राज्य के ईसाई बिशपों को बुलाया था। पिछले तीन सौ सालों से रोमन साम्राज्य में धार्मिक दरार और हिंसा का बोलबाला था। संप्रदाय के निर्मम उत्पीड़न और शासक द्वारा नियंत्रित देवदूतों ने ईसाइयत को और मजबूत ही किया था। अपने उपनिवेशों को मिलाने के लिए सम्राट ने अनेकों युद्ध लड़े थे, और अब वो धार्मिक मतभेद को खत्म करना चाहता था—जिसकी शुरुआत उसने ईसाइयत में ही विपक्षी समूह के साथ की थी। आस्था और दर्शन में वो सबको समान स्तर पर लाना चाहता था।

लेकिन कांस्टेंटाइन की एक गहरी योजना भी थी। मुख्य परिषद के बाद ही, बंद दरवाजों के पीछे एक गुप्त सभा का आयोजन किया गया था। यहां कांस्टेंटाइन ने अपने विचार उच्च पुजारियों, अध्यक्षों, खजांची और सलाहकारों के साथ साझा किया। ऐसा नजरिया जो उसके जाने के बाद भी कायम रहेगा।

वो अपने जाने के बाद भी इस धरती को सुरक्षित करना चाहता था, अनंतकाल तक शासन और सामाजिक व्यवस्था के माध्यम से। उसका मानना था कि आस्थाओं और सिद्धांतों में विभिन्नता ही मानवजाति के लिए सबसे बड़ा खतरा थे। दशकों के युद्ध, रक्तपात और विजय, विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं के लोगों पर शासन करके, लोगों की हिंसक प्रवृति का नजदीकी से निरीक्षण करके, कांस्टेंटाइन ने दृढ़ विचार बना लिया था। दुनिया को एक ही ताकत के माध्यम से नियंत्रित करने की आवश्यकता है, एक सर्वोच्च शक्ति—जो झगड़ालू

समुदायों और महत्वाकांक्षी व्यक्तियों द्वारा बनाई सीमाओं और ईश्वर को एक में मिला देगी। उन सबका शासन एक अनूठे और सार्वकालिक ऑर्डर के माध्यम से किया जाएगा।

एक न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के माध्यम से।

‘लेकिन यह इस सभा का लक्ष्य नहीं था, ओ राजन!’ अद्वैत ने जोर दिया। ‘आपने मुझे यह संदेश देकर बुलवाया था कि आप पुजारियों के आपसी मतभेद खत्म करके, उन्हें एक साथ लाना चाहते हैं।’

‘तो तुम क्या सोचते हो कि मैं इस महत्वाकांक्षी योजना को एक संदेश के माध्यम से भेज देता, अद्वैत?’ कांस्टेंटाइन ने जवाब दिया। वो हाथी दांत और स्वर्ण से बनी मेज से टिककर खड़ा था, और अपनी उंगलियों में पकड़े हुए, हीरे-जड़ित खाली प्याले को उलट-पलट रहा था।

अद्वैत ने आह भरी। ‘मुझे फिर से बताइए सम्राट, आपकी महान योजना से हासिल क्या होगा?’

कांस्टेंटाइन एक-दो पल शांत रहा, लेकिन उसके चेहरे पर आशा की लहर देखी जा सकती थी। उसने प्याला एक तरफ रख दिया और शानदार चौकी खींचकर, अद्वैत के सामने बैठ गया।

‘तुम समझ नहीं रहे, मित्र... मानवजाति अब पहले से अधिक निर्मम तरीके से एक-दूसरे को मार रही है। हर दूसरे दिन इंसान एक-दूसरे से नफरत करने या उसे मारने का कोई नया कारण तलाश लेता है। वो भगवान के नाम पर, आस्था के नाम पर, देशभक्ति के नाम पर, संप्रदाय के नाम पर, जमीन के लिए, स्वर्ण के लिए एक-दूसरे को मार रहे हैं... ये रक्त-पिपासु अपनी महत्वाकांक्षा के लिए कोई भी वजह ढूंढ़ लेते हैं। किसी एक इंसान के स्वर्ण आसन पर बैठने के लिए लाखों मासूमों का रक्त बहा दिया जाता है।’

‘क्या आपने सालों तक युद्ध नहीं किया है, हजारों लोगों को मारकर, पराजित कर क्या आज आप सम्राट नहीं बने हो?’ अद्वैत ने बेबाकी से पूछा। वह कांस्टेंटाइन का सम्मान करता था। लेकिन वो ऐसे राजा को, जो स्वयं तलवार के दम पर शासन करता है, मानव की क्रूरता पर शांति का उपदेश देने नहीं दे सकता था।

‘मैं जानता था कि तुम ये बात उठाओगे,’ कांस्टेंटाइन ने बिना किसी खीझ के कहा। ‘हां, मैंने सालों तक युद्ध करके, शत्रुओं को परास्त किया है। इसीलिए

हिंसा और विजय की क्षणभंगुरता मुझसे अधिक और कोई नहीं समझ सकता। और मैं ऐसी व्यवस्था करना चाहता हूं, जिससे यह दुनिया पहले से बेहतर बन पाए। अगर हमने हर चीज को ऐसे ही चलने दिया जैसी वो है, तो वो दिन दूर नहीं जब हम अपने ही हाथों अपना विनाश कर लेंगे। और मैं, कांस्टेंटाइन प्रथम, ऐसा नहीं होने दूंगा।'

'आपका उद्देश्य महान है, सम्राट। लेकिन जो अध्यादेश आप पारित कर रहे हैं, उनसे यह लक्ष्य हासिल नहीं होगा। मानवजाति कोई भेड़-बकरी नहीं है। उनकी आजादी छीन लेना संभव नहीं होगा। आप उनकी निर्बाध इच्छा को बाधित नहीं कर सकते। आप उनके अंतर्मन की भावना को नहीं दबा सकते।'

'बिलकुल मैं कर सकता हूं!' कांस्टेंटाइन ने अपने अवास्तविक आत्मविश्वास को दर्शाते हुए कहा। 'क्या तुमने उन हजारों लोगों को मुझ पर फूल बरसाते नहीं देखा? ये वहीं लोग हैं जिनके घर और नगर मैंने कुछ ही दिन पहले जलाये थे। और आज, वो मेरे सामने सिर झुका रहे हैं। वो मेरे आने का उत्सव मना रहे हैं। क्या तुम्हें नहीं लगता अद्वैत, कि इंसानों को परिस्थिति के अनुसार ढाला जा सकता है? उन पर शासन किया जा सकता है?'

राजा उठकर अपने शिविर में, कुछ सोचते हुए चक्कर लगाने लगा। अद्वैत ने कांस्टेंटाइन की ताकतवर मुट्ठी को तलवार के हत्थे पर कसते हुए देखा। विजेता का दिमाग उत्तेजित हो चुका था। कुछ पल बाद, सम्राट फिर से आर्यवर्त से आए युवा योद्धा-पुजारी के सम्मुख बैठ गया।

'कल्पना करो अद्वैत... बिना युद्ध की एक दुनिया। बिना हिंसा की दुनिया। एक भूमंडलीय, एकीकृत संप्रदाय, जो धर्म की सीमाओं से आजाद होगा, राष्ट्रों के भेदभाव से परे होगा...'

सम्राट की नजरें अब अद्वैत से परे देख रही थीं। वो एक स्वप्नदृष्टा की आंखें थीं, जो मानता था कि वो ये दुनिया बदल सकता था।

लेकिन इस बार, राजा बड़ी गलती करने जा रहा था। बहुत बड़ी गलती।

शाही शिविर में पड़ती सूर्य की पहली रौशनी ने अद्वैत को उसके घर वापसी के लंबे सफर की याद दिलाई।

पूरी रात चली बहस के बाद, अद्वैत मान गया था कि किसी भी तरह कांस्टेंटाइन को मानवजाति के लिए बनाई गई उसकी विशाल योजना लागू करने से नहीं रोका जा सकता। ऐसे आदमी को रोक पाना असंभव है, जो स्वयं

को ईश्वर के समान ही सर्वशक्तिमान मानता हो।

‘आपकी योजना बहुत खतरनाक है, सम्राट। ये कुछ लोगों के हाथ में अभूतपूर्व शक्ति दे देगी, और अगर वो लोग भ्रष्ट निकले, तो यह धरती की सबसे हिंसक बुराई बनकर उभरेगी।’

कांस्टेंटाइन ने सहमति में सिर हिलाया। वो अपने मित्र के पास गया और उसके कंधे पर अपना हाथ रखा।

‘इसीलिए मैंने तुम्हें यहां बुलाया है, मेरे भले मित्र। अगर न्यू वर्ल्ड ऑर्डर अपने महान उद्देश्य से भटकता है, तो सिर्फ तुम्हारा वंश ही उसे रोक पाएगा। तुम सदियों तक दुनिया के सबसे बहुमूल्य रहस्य के संरक्षक रहोगे। मैं जानता हूं कि तुम व्यवस्था को पुनर्स्थापित कर दोगे।’

अद्वैत ने महान सम्राट से विदा ली। जैसे ही वह सम्राट के शिविर से बाहर कदम रखने को हुआ, उसने वापस मुड़कर देखा।

‘आप उन कुछ चुनिंदा लोगों में से हो जो काले मंदिर के रहस्य को जानते होंगे, सम्राट। आप जानते हैं कि वहां क्या संरक्षित है। फिर क्यों...?’

‘हां, मैं जानता हूं,’ कांस्टेंटाइन ने जवाब दिया। ‘इसीलिए मैं वही कर रहा हूं जो किसी भी समर्पित सेवक को करना चाहिए।’

हड़प्पा के पूर्व में, **1700** ईसापूर्व

मां...

स्वयं को मत्स्य कहने वाले आदमी के निर्देशों के अनुसार, मनु अपनी मां के शरीर को प्यार और सावधानी से लिए, पूर्व दिशा की ओर सफर करता रहा। वीराने में उस दिव्य पुरुष के संपर्क में आने पर मनु स्वयं को ताजा दम महसूस कर रहा था। इससे मनु को एक बात का अहसास तो हो गया था।

वो आज तो नहीं मरने वाला था।

और इसका मतलब था कि उसे बदला लेने का मौका मिलेगा। अपने वर्तमान कर्तव्य को भुलाए बिना, मनु के मन में बदला लेने की इच्छा घर किए हुए थी।

मैं पंडित चंद्रधर और प्रियम्वदा का अस्तित्व उसी तरह मिटा दूंगा जैसे मैंने उस दुष्ट रंगा को खत्म किया था।

वो दोबारा से घंटों का सफर तय कर चुका था, लेकिन इस रेतीली जमीन पर उसे दूर तक कुछ दिखाई नहीं पड़ा था। लेकिन इस बार वो बिलकुल भी निराश नहीं था। उसे अहसास था कि अगर मत्स्य ने उसे दिशा दिखाई थी, तो वो सही ही होगी।

एक और घंटा गुजरा और मनु को दूर क्षितिज पर स्लेटी पहाड़ की धुंधली से रेखा दिखाई दी। वो कुछ मील के फासले से अधिक दूर नहीं थे। पहाड़ों का मतलब था आहार, पानी और इससे भी बढ़कर... मंदिर।

पहाड़ के समीप पहुंचने पर, मनु को अहसास हुआ कि वो पहाड़ उससे कहीं ऊंचा था, जितना ऐसी जगहों में पाया जाता है। इस पहाड़ की ऊंचाई इतनी थी कि ये उससे कही अधिक दूर से दिखाई पड़ती होगी, जितनी दूर से मनु ने इसे देखा था। मनु को समझ आया कि ताजा गिरी बरसात से साफ हुए वातावरण में ही इस पहाड़ को दूर से देखा जा सकता था। और सामान्य दिनों में ये पहाड़, रेतीली हवा के बीच अदृश्य ही बने रहते हैं। मानो प्रकृति के पर्दे में छिपे हुए हों।

वो उसी की दिशा में दौड़े आ रहे थे। दूरी से ही मनु ने अपनी तरफ आते हुए आदमी और औरतों को देख लिया था। समीप आने पर मनु ने देखा कि उनमें से चार आदमी एक पालना लिए आ रहे थे, जो यकीनन शव के लिए था।

उन सबके पास हथियार थे। महिला और पुरुष, दोनों ही पूरी तरह से चुस्त और युद्ध में प्रशिक्षित जान पड़ रहे थे। मनु उनकी कद-काठी से ये भांप सकता था। लेकिन उन सबके सांवले-सलोने चेहरे पर एक सादगी और प्रेम था।

ये लोग कौन थे?

मनु को सरपट भागते अपने घोड़े की एक जगह पर आकर चाल धीमी करनी पड़ी, जब उसने देखा कि काले परिधान पहने इन लोगों ने धीरे-धीरे उसे घेरना शुरू कर दिया था। उसे उनसे किसी तरह के खतरे का अनुभव नहीं हुआ। स्वयं एक सक्षम योद्धा होने की वजह से, मनु में सिपाही का सा सहज-ज्ञान भी था। वो दूर से ही विरोध को भांप सकता था। यहां, उसे ऐसा कुछ अनुभव नहीं हुआ था।

एक वृद्ध महिला, जिसका चेहरा उसकी अपनी मां के चेहरे की तरह ही सुंदर था, उसकी तरफ आई। उसके बाल पूरी तरह सफेद थे, आंखें नीली, तीखी नाक और एक असामान्य आत्मविश्वास था। उसके काले कपड़े नर्म हवा में लहरा रहे थे, उसकी उम्र अस्सी या उससे कुछ अधिक ही रही होगी। लेकिन वो अपने से आधी उम्र की महिला की तरह चल और बोल रही थी।

‘आपका स्वागत है, मनु,’ उसने सुकून भरी आवाज में कहा। ‘अब संजना की देखभाल हमें करने दें।’

मनु किसी ऐसे इंसान से मिलकर बहुत भावुक हो गया था, जिस पर वो भरोसा कर सकता था। वो थका हुआ था, घायल था, भावनात्मक रूप से हिल चुका था और अंदर ही अंदर नफरत लिए घूम रहा था। उसने आभार में सिर हिला दिया, और फूट-फूटकर रोने लगा। वो तब तक रोता रहा, जब तक उन लोगों ने

उसकी मां को उठाकर पालने पर नहीं सुला दिया।

घोड़े से उतरकर, उसने झुककर बार-बार संजना के चेहरे को चूमा। 'मां... मेरी मां... मेरी प्यारी, मां... मैं आपसे जल्दी मिलूंगा, मां... आप डरना मत, मां... मैं जल्दी आपके पास आऊंगा, मां... मां... मेरी मां...' वो बस यही कहता रहा।

जब उन्होंने उसे उठाया, तो उसे अहसास हुआ कि वो आखरी बार अपनी मां का चेहरा देख रहा था। 'मांआआ...!' मनु चिल्लाते हुए अपने घुटनों पर ढह गया, उसने अपना माथा नीचे की सख्त जमीन पर टिका दिया। दुखी पुत्र बार-बार अपने दोनों हाथों से जमीन पीट रहा था। वो लोग संजना को अंतिम संस्कार के लिए दूर ले गए।

मरते समय भी संजना ने अपने बेटे का साथ नहीं छोड़ा था।

लेकिन अब वो हमेशा के लिए जा रही थी।

दो दिन पहले, सोमदत्त के दल के साथ चावल का निवाला खाने के बाद से, अब पहली बार उसके मुंह में अनाज का दाना गया था। उस समय जब मुंह में निवाला लेते ही उसने अपने सामने बैठे सिपाही के सिर में तीर धंसते देखा था। अब मनु धीरे से अपनी उंगलियों में चावल और सब्जी का निवाला लिए उसे अपने मुंह की ओर ले जा रहा था। वो बस जीवित रहने के लिए खा रहा था।

उस दयालु और सफेद बालों वाली महिला ने स्लेटी पहाड़ों वाली उस गुफा में प्रवेश किया, जिसमें मनु ठहरा हुआ था। इस रेतीले प्रदेश में रातें बहुत ठंडी हुआ करती थीं, जबकि दिन खासे गर्म थे। मनु को गर्मी देने के लिए वहां थोड़ी सी आग जली हुई थी। इस रहस्यमयी जगह के चिकित्सकों ने पूरे दिन उसकी देखभाल की थी।

मनु का जीवित बचना किसी चमत्कार से कम नहीं था। जिस रणभूमि से वो निकला था, वहां कोई कल्पना नहीं कर सकता था कि तीन तीर और तलवार के घातक वार से कोई बच सकता था। ऐसा प्रतीत होता था मानो कोई अनजानी शक्ति विवास्वन और संजना के पुत्र को जीवित रखे हुए थी।

वो उसे बिलकुल वैसे ही अपने हाथ से खाना खिला रही थी, जैसे उसकी मां खिलाया करती थी। उसके अठारह वर्ष का होने तक उसकी मां ने उसे अपने हाथ से खाना खिलाया था। उसने उसके सिर को थपथपाया, जिस पर अब

थोड़े बाल उग आए थे। उस महिला की आंखों में वही कोमलता थी, जो उसकी मां की आंखों में हुआ करती थी। जब मनु ने धीरे से इशारा किया कि अभी के लिए वो पर्याप्त ले चुका था, तो उस महिला ने धीरे से चावल का कटोरा पीछे सरका दिया।

'अब आपको आराम करना चाहिए, पुत्र,' उस वृद्ध महिला ने जाने के लिए उठते हुए, प्यार से कहा। 'कल मैं आपको काले मंदिर ले जाऊंगी।'

'बहुत धन्यवाद, देवी... आपकी दी हर सहायता के लिए...' मनु ने कहा। उसने अपने जीवन में कभी किसी का इतना आभार महसूस नहीं किया था। उसकी मां का अंतिम संस्कार सनातन धर्म के पूरे रीति-रिवाजों से कर दिया गया था। अभी तो यही उसके लिए सब कुछ था।

महिला मुस्कुराई। 'अब आराम करें, मनु,' ये कहकर वो गुफा के दरवाजे से बाहर जाने को मुड़ी।

'देवी...' मनु ने पुकारा।

वो मुड़ी। 'हां, पुत्र...?'

'आप मेरा नाम कैसे जानती हैं? और आपको ये कैसे पता कि मेरी मां का नाम संजना था? मैंने तो आपको नहीं बताया...' मनु ने जानना चाहा।

महिला सौम्यता से मुस्कुराई।

'हमारे मित्र मत्स्य ने हमें बताया,' उसने सादगी से कहा।

मनु दुविधा में था। 'हां, मैं उनसे मिला था। लेकिन कैसे... वो यहां मुझसे पहले कैसे पहुंचे?' उसने पूछा। 'मैं घोड़े पर था और वो पैदल। मैं सीधा इन धूसर पर्वतों की तरफ आया हूं। वो किसी भी तरह यहां मुझसे पहले नहीं पहुंच सकते थे!'

महिला मुस्कुराकर मनु की तरफ आई और स्नेह से उसके गालों को छुआ।

'मत्स्य को कहीं भी पहुंचने की जरूरत नहीं है, मनु।'

'क्षमा कीजिएगा, मैं समझा नहीं देवी...' मनु ने उसके पावन मुख को देखते हुए कहा।

वो नरमी से मुस्कुराई और वापस से जाने के लिए मुड़ी। गुफा के दरवाजे के पास पहुंचकर उसने मुड़कर मनु को देखा।

‘मत्स्य को कहीं जाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि वो हर जगह हैं, मनु।’

बनारस, 2017

सफेद पोशाक वाले आदमी

‘मैं उसे मार डालूंगा,’ सोनू ने गुस्से से कहा।

इस पल का विद्युत कब से इंतजार कर रहा था। पहले अपनी मौत से लड़ते हुए और फिर उपचार के लिए बिस्तर पर लेटे हुए, हर समय उसके दिमाग में यही घूम रहा था कि उसके भरोसे के दोस्त ने उसे धोखा क्यों दिया। वो जानना चाहता था कि बाला ने उसकी पीठ में छुरा क्यों घोंपा। वो जानना चाहता था कि बाला उसके आसपास की गतिविधियों से कैसे जुड़ा था।

इन सवालों का जवाब नहीं मिल पाने से वो अंदर ही अंदर घुट रहा था और वो बाला से सब कुछ जानना चाहता था। धोखे का दर्द उस गोली से भी ज्यादा था, जिसने विद्युत को चीर दिया था।

बलवंत ने मठ की जेल के भारी दरवाजे को लात मारकर खोला।

विद्युत अभी भी अपने गहरे जख्मों से जूझ रहा था, इसलिए उसने धीरे-धीरे कोठरी में कदम रखा।

सोनू ने सिर के ऊपर लटकने वाले लैंप का स्विच ऑन किया। झटके के साथ उस अंधियारी कोठरी का कुछ खास हिस्सा तेज रौशनी से जगमगा उठा। चौंधिया देने वाली उस रौशनी के नीचे एक बलिष्ठ आदमी, मैटल की कुर्सी से बंधा बैठा था। इस कोठरी में, बंधे होने के बावजूद वो गहरे ध्यान की अवस्था में मालूम पड़ रहा था। योगी की परिचित मुद्रा में नहीं, बल्कि ऐसे मानो वो वेदी पर खड़ा हो, उसकी उंगलियां आपस में गुथी हुई थीं। उसका सिर सम्मान में झुका हुआ था।

विद्युत ने पहले कभी ऐसा नहीं देखा था। सालों तक वे एक-दूसरे के साथ भाइयों की तरह हंसते और रहते आए थे, लेकिन विद्युत ने पहले कभी बाला

को ध्यान लगाते हुए नहीं देखा था।

ये आदमी कौन है?

‘मैं इसका चेहरा कुचल दूंगा!’ सोनू कहते हुए, बंधे हुए आदमी पर वार करने के लिए बढ़ा। लेकिन वो बीच में ही रुक गया। बाला ने अपनी आंखें खोलकर सोनू को घूरा। उसकी आंखों से चिंगारियां बरस रही थीं। ये उस युवक का जोश ठंडा करने के लिए काफी था। उस बंधे शेर की आंखों में मैं-तुम्हें-देख-लूंगा से अधिक कुछ भयावह था।

विद्युत बाला की तरफ बढ़ा और उस स्टील की मेज के सामने रखी कुर्सी पर बैठ गया। अब बाला और विद्युत के बीच वो मेज ही थी। दोनों भाई समान दोस्त, आज यूं आमने-सामने थे मानो वो दुनिया के दो सिरों से एक-दूसरे को घूर रहे हों।

‘क्यों, बाला?’ विद्युत ने पूछा।

बाला ने कुछ पल विद्युत की ईमानदार आंखों में देखा, और फिर जोर से हंसने लगा। ये वही परिचित, मोहक हंसी थी, जिसे विद्युत सालों तक चाहता रहा था। लेकिन इस बार, वो हंसी दिल तक नहीं पहुंच पा रही थी।

स्वयं को शांत करने में बाला को एक मिनट लगा। वह उन्माद की सीमा पर था, इसलिए वो यूं पागलों सा व्यवहार कर रहा था, बेवजह ही। या शायद यही उसका वास्तविक रूप था।

‘क्यों, बाला? तुमने मुझे मारने की कोशिश क्यों की?’ विद्युत ने फिर से पूछा, उस पर उसके पागलपन का कोई असर नहीं हुआ था।

‘सॉरी...? तुमने क्या कहा, मारने की कोशिश?’ बाला ने दोहराया, उसकी भंवें हैरानी से चढ़ी हुई थीं।

विद्युत शांत रहा। वो जानता था की उसे इस आदमी को बात करने का मौका देना था।

‘कौन हो तुम, विद्युत? क्या तुम भगवान हो? क्या तुम देवता हो? क्या तुम कोई भोले बच्चे हो या कोई चालाक जादूगर?’ बाला नाटकीय अंदाज में अपना सिर एक तरफ को झुकाते हुए फुफकारा। नैना के उस पर हावी हो जाने पर जो बेरहम नफरत विद्युत ने उसकी आंखों में देखी थी, वो वापस लौट आई थी।

‘मैंने तुम्हें मारने की कोशिश की, विद्युत? मैंने तुम्हें मारने की कोशिश की? एक शातिर निशानेबाज जो दो सौ मीटर की दूरी से एक कबूतर पर निशाना लगा सकता है; जो एक मील की दूरी से दुश्मन सिपाही का सिर कलम कर सकता है; जो आंख बंद करके भी अपना लक्ष्य नहीं छोड़ता... वो 8 फुट की दूरी से तुम्हारे दिल पर गोली नहीं चला पाया? और तुम कह रहे हो, मैंने तुम्हें मारने की कोशिश की?’

वो सही था। और विद्युत ये बात जानता था। बाला उनमें से नहीं था, जो इतने पास का निशाना चूक जाता। वो एक प्रशिक्षित कमांडो था, एक सटीक निशानेबाज। तुरंत ही, एक भयानक अहसास विद्युत पर हावी हो गया। बाला ने किसी उद्देश्य से विद्युत को जीवित रखा था!

‘और सिर्फ मैं ही नहीं, विद्युत,’ बाला दहाड़ा। ‘यहां तक कि रोमी भी तुम्हें निश्चित समय से पहले मारने नहीं वाला था। उसने उस जिप्पो लाइटर में उतना ही पारा भरा था, जिससे तुम घायल हो पाते। वो किराए के हत्यारे, जो तुम्हें मारने आए थे और मार नहीं पाए, उन्हें भी तुम्हें जिंदा छोड़ने के सख्त निर्देश दिए गए थे, देवता!’

‘मुझे थोड़ी रम दो, विडियो...’

अंधेरी कोठरी में मौजूद, मठ के सदस्य, उस वाहियात मांग को सुन थोड़ा अचकचा गए।

‘मुझे थोड़ी रम दो, और मेरे हाथों को खोल दो,’ बाला ने जोर दिया। ‘तुम जानते हो कि तुम्हारे सामने मेरा कोई मुकाबला नहीं है, भले ही तुम अभी पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो।’

विद्युत धीमे से मुस्कुराया। बाला फिर से हंसा। ‘छोड़ो न, यार। तुम जानते हो कि मुझे मेरे ड्रिंक की जरूरत है!’

विद्युत ने सोनू की तरफ सिर हिलाया। युवक ने विरोध में थोड़ा गुर्राकर, असहमति से कैदी को घूरा। लेकिन अपने देवता का आदेश मानने के लिए चला गया।

एक मिनट से भी कम समय में, उसने रम के दो डबल शॉट गटक लिए। राहत की सांस लेते हुए, बाला ने अपने लिए तीसरा डाला।

‘मैं उन्हें तुम्हें मारने नहीं देने वाला था, विडियो,’ बाला ने कहा। ‘ये मैंने पहले से ही तय कर रखा था।’ वो सीधे विद्युत की आंखों में देख रहा था, उसी ईमानदारी से जिस पर विद्युत हमेशा भरोसा करता आया था। लेकिन अब इसकी कोई जगह नहीं थी।

‘ओ, चुप करो, बाला!’ विद्युत भड़का।

‘तुम जानते थे कि वो सब क्या चल रहा था! तुम जानते थे कि एक कुख्यात हत्यारा मेरी जान के पीछे पड़ा था। तुम जानते थे कि घाट पर प्रशिक्षित हत्यारे घात लगाए बैठे थे। तुम जानते थे कि वो लोग किसी कीमत पर मुझे बनारस से जिंदा नहीं निकलने देने वाले थे!’

‘नहीं, मैं नहीं जानता था!’ बाला भी वापस से चिल्लाया। ‘यकीनन रोमी को तुम्हें मारने के लिए भेजा गया था, लेकिन वो सही समय से पहले तुम्हें नहीं मारता। मुझे बताया गया था कि प्रशिक्षित हत्यारे तुम्हें काबू करने के लिए थे। उन्होंने मुझे भरोसा दिलाया था कि उस सारी घटना के बाद भी तुम जिंदा रहोगे। तुम्हारा उस निश्चित समय तक जिंदा रहना जरूरी है!’

विद्युत सिर पर लटकती उस तेज, गर्म रौशनी में, बाला की नम आंखें देख सकता था।

‘मैंने तुम पर गोली चलाई, विद्युत, क्योंकि और कोई रास्ता ही नहीं बचा था। तुम रुक ही नहीं रहे थे, और तुम ये बात जानते हो। तुमने मिनट भर में ही दर्जन भर प्रशिक्षित हत्यारों को धूल चटा दी थी। मेरे पास और क्या विकल्प था? वो देख रहे थे...’

मद्धम रौशनी वाली उस कोठरी में अब सन्नाटा था। वहां सिर्फ रम की तेज गंध फैली हुई थी।

आखिरकार विद्युत बोला। ‘वो लोग कौन हैं, जिनका अभी तुमने जिक्र किया, बाला? तुम किसके लिए काम करते हो?’

बाला ने विद्युत को देखा। देवता को अपने विश्वस्त मित्र की आंखों में जहां हैरानी दिखी, वहीं नश्वरता का भय भी।

‘क्या तुम सच में कुछ नहीं जानते हो, विद्युत?’ बाला ने पूछा। उसकी साहसी आंखें अब डर से फैल रही थीं।

‘तुम मेरे बारे में कुछ नहीं जानते हो, विद्युत,’ बाला ने कहा, अपना पांचवां

ड्रिंक खत्म करते हुए। विद्युत बाला को इतनी शराब इसलिए पीने दे रहा था, क्योंकि वह चाहता था कि बाला सब बता दे।

‘मैं सालों से तुम्हें जानता हूं, बाला। तुम मेरे लिए परिवार की तरह थे,’ देवता ने जवाब दिया।

‘बकवास! तुम तो यह भी नहीं जानते कि मैं कहां से आया हूं। मैं तुम्हारे जैसे किसी ताकतवर परिवार से नहीं था, जिनका रुतबा समाज में ईश्वर के समान है, विद्युत। मेरा जन्म ऐसे परिवार में हुआ था, जो किसी के लिए कोई मायने नहीं रखता!’

विद्युत सुन रहा था। बलवंत और गोवर्धन भी।

‘नारियल के पेड़ पर चढ़ने वाले। मेरे पिता ये थे—गरीब, भूख से बेजार, केरल के दूर गांव में, नारियल के पेड़ पर चढ़कर, नारियल तोड़ने वाले। हम कबायली थे, विद्युत। जमीन पर जीने वाले। या मुझे कहना चाहिए, जमीन पर मरने वाले...’

बाला ने अपने गिलास से बड़ा घूंट भरा और फिर आगे बोला।

‘बहुत सी रातों को हमें भूखा ही सोना पड़ता। या रात भर पानी में भीगे बीजों का वाहियात सा मांड पीकर काम चलाना पड़ता। हमारे पास ऐसे कपड़े हुआ करते थे, जिनमें बड़ी मुश्किल से मेरी मां का तन ढंक पाता था। रहने के नाम पर टपकती छत वाली झोपड़ी थी और मीट वो ही मिलता था, जो हम मरे हुए जानवर के शव से चुरा पाते थे। वो गरीबी कल्पना से बाहर थी। वो हालात इंसानों जैसे नहीं थे। हम पूजा करने के लिए किसी मंदिर में नहीं जा सकते थे। हमें तो दाह संस्कार के भोजन से भी भगा दिया जाता था। बीमार पड़ने पर हमारे लिए कोई दवा नहीं थी। मेरी छोटी बहन ने मेरे सामने ही, डिप्थीरिया से तड़प-तड़प कर जान दे दी। और कोई भी हमारी मदद के लिए नहीं आया। हम जानवरों से भी बदतर हालात में जी और मर रहे थे।’

कोठरी में सन्नाटा था। बाला की नजरें कहीं गहराई से उसके गिलास पर थीं, मानो वो उस भयानक समय के पल-पल को जी रहा था। भीषण गरीबी और अपनों के खोने के घाव को छिपाया ही जा सकता है। वो कभी भी पूरी तरह भरे नहीं जा सकते।

‘और फिर एक दिन, वो आए। सफेद कपड़ों वाले वो आदमी, सीधे हमारी दयनीय झोपड़ी में चले आए और हमें इस तरह गले लगाया, जैसे पहले कभी किसी ने नहीं लगाया था। उन्होंने हमें खाना खिलाया, हमें कपड़े दिए, हमारी शुद्धि की। तुम जानते हो विद्युत कि जब पूरी दुनिया तुम्हारा अपमान करे, तुम्हें भूखा मरने के लिए छोड़ दे, ऐसे समय में किसी की दी हुई उम्मीद और

स्वीकृति का क्या मतलब होता है? यकीनन तुम नहीं जानते! तुम तो यह भी नहीं जानते कि तीन दिन तक भूखे रहने का क्या मतलब होता है। तुम इसे क्या समझोगे?!'

विद्युत नहीं जानता था कि वो क्या प्रतिक्रिया दे। बाला सही कह रहा था। विद्युत बाला के बचपन के बारे में कुछ नहीं जानता था, सिवाय यहां-वहां की उन कुछ घटनाओं के, जिनके बारे में स्वयं बाला ने बताया था। न ही विद्युत को अंदाजा था कि उसके दुश्मन बन चुके दोस्त की पृष्ठभूमि इतनी खौफनाक थी।

'मैं ये सब नहीं जानता था, बाला। और मैं तुम्हारे दर्द की सिर्फ कल्पना ही कर सकता हूं। लेकिन फिर भी इससे तुम्हारे कातिलों और षड्यंत्रकारियों के साथ मिल जाने की वजह नहीं पता चलती।'

'क्योंकि जिंदगी में एक बार मैं जीत की तरफ होना चाहता था!' अपनी मुट्ठी जोर से मेज पर मारते हुए, बाला चिल्लाया।

'तुम्हें अभी तक समझ नहीं आया, दिव्य आत्मा—एक बार मैं जीतना चाहता था!'

भूतपूर्व सैनिक अब गुस्से और भावनाओं से बिफर रहा था।

'जिस दिन वो मुझे और मेरे पेरेंट्स को अपनी पूजा की जगह ले गए, जिस दिन उन्होंने मुझे बताया कि भगवान मुझे भी प्यार करता है, जिस पल उन्होंने हमारे नाम बदलकर, हमारा अपने समुदाय में स्वागत किया, मैंने कसम खाई कि मैं उनके लिए कुछ भी करूंगा। उनके लिए ही जिऊंगा और मरूंगा। पूरी तरह से। अकेले वही थे, जिन्होंने मुझमें प्रतिभा देखी थी। उन्होंने ही पहली बार मुझ पर भरोसा किया था, मुझे अपने रहस्य में शामिल किया था, फिर भले ही वो मेरा इस्तेमाल अपने हिंसक उद्देश्य के लिए करते। उनके बीच बढ़ते हुए मुझे महसूस हो रहा था कि उनका कोई अकल्पनीय लक्ष्य था, लेकिन फिर भी मैंने अपनी कसम नहीं तोड़ी।'

अचानक सोनू दौड़ता हुआ कोठरी में आया। वो हांफ रहा था। और वो घबराया हुआ भी दिख रहा था।

'विद्युत दादा, हमें चलना होगा। अभी। ग्रैंडमास्टर ने हम सब को, पूरे दल बल के साथ, मठ के बाहरी घेरे में बुलाया है।'

बलवंत, जो अभी तक एक कोने में खड़ा था, ने सोनू की तरफ मुड़कर पूछा। 'क्या बात है, बेटा?'

सोनू को देखकर ऐसा लग रहा था मानो उसे कभी भी घबराहट का दौरा पड़ने वाला था। वो अब बुरी तरह हकला रहा था।

'वो यहां आ पहुंचा है, बलवंत दादा...' सोनू बड़ी मुश्किल से कह पाया।

बलवंत और गोवर्धन ने एक-दूसरे से नजर मिलाई थी कि उन्हें अपने पैरों के नीचे की जमीन में एक कंपन महसूस हुआ। यह दूर से आती, आसमान को दहलाने वाली कोई आवाज थी।

ढाआआकक! ढाआआकक!

थ्वाआआनंग! थ्वाआआनंग!

ढाआआकक! ढाआआकक!

थ्वाआआनंग! थ्वाआआनंग!

विद्युत पूरी तरह दुविधा में था। उसने जवाब जानने के लिए बलवंत और सोनू को देखा। ठीक इसी समय, बाला पागलों की तरह हंसने लगा। 'वो यहां आ गया है! वो यहां आ गया है!' उसने पागलों की तरह मंत्रोच्चार शुरू कर दिया।

ढाआआकक! ढाआआकक! थ्वाआआनंग! थ्वाआआनंग!

ढाआआकक! ढाआआकक! थ्वाआआनंग! थ्वाआआनंग!

आवाज और तेज होती जा रही थी, विद्युत ने देखा कि भय और क्रोध से बलवंत और सोनू के चेहरे विकृत हो रहे थे। वो जानता था कि कुछ तो गड़बड़ थी। अगर उसके परदादा ने सारे आध्यात्मिक और शारीरिक बल को, मठ की बाहरी परिधि में एकत्र होने को कहा था, तो यकीनन कोई तो बड़ी समस्या थी।

'ये क्या है, बलवंत दादा?' जोर से आती आवाज के बीच विद्युत ने चिल्लाकर पूछा।

बलवंत तेजी से आगे विद्युत की मदद के लिए बढ़ा। विद्युत अपने पैरों पर खड़ा होने का संघर्ष कर रहा था, विद्युत ने देखा कि बाला फिर से ध्यानावस्था में चला गया था। आंखें चौंधिया देने वाली रौशनी में उसका गंजा सिर पसीने से तर हो गया था और आंखें पूरी तरह से ऊपर चढ़ गई थीं। वह साधना में बैठा शैतान लग रहा था।

‘ये वो है, विद्युत। बनारस का सबसे खतरनाक प्राणी। वास्तव में सबसे खतरनाक शैतान।’

जब सोनू ने दोबारा से बाला के हाथ बांध दिए, और वो लोग महान मठाधीश के पास जाने को तैयार हो गए, तो विद्युत ने फिर से पलटकर बलवंत से पूछा।

‘वो कौन है, बलवंत दादा? आप इतने भय और सम्मोहन से किसके बारे में बात कर रहे हैं?’

बलवंत ने विद्युत को देखा और एक वाक्य में अपनी बात पूरी की।

‘ये वो है, जिसे द्वारका शास्त्री जी धरती का आखरी राक्षस मानते हैं।’

विद्युत बलवंत का कहा हुआ हर शब्द समझने की कोशिश कर रहा था। उसने स्वयं के लिए आखरी देवता सुना था। लेकिन आखरी राक्षस??

‘वह अपने छह सौ छियासठ उन्मादी अनुयायियों के साथ आ पहुंचा है,’ बलवंत ने आगे बताया।

‘वह श्मशान का राजा है; मृतकों का नाथ; महा-तांत्रिक—त्रिजट कपालिक!’

सिंधु का किनारा, पश्चिमी हड़प्पा, **1700** ईसापूर्व

प्रत्येक पुत्र की मौत

‘फिर से सोच लो, ओ महान अ-देवता,’ सुरा ने दोबारा पूछा। ‘क्या आप सच में यही चाहते हो?’

‘हां, मैं निश्चित हूं,’ रूखी, बेरहम आवाज ने जवाब दिया। ‘मैंने ईंट और कांसे के उस पर्वत का मानचित्र स्वयं अपने हाथों से बनाया था। संरचना में हल्के से बदलाव से सरस्वती के प्रवाह को पूरी तरह मोड़ा जा सकता है। और हड़प्पा का वैभवशाली नगर हमेशा-हमेशा के लिए बह जाएगा, और धरती से उसके नीच निवासियों का खात्मा हो जाएगा।’

प्रचंड ने जो सुना, उसे लेकर वो संदेह में था। वो उनका सबसे बड़ा प्रतिद्वंद्वी था, हड़प्पा की फौज का सबसे ताकतवर सेनाध्यक्ष, भगवान का स्वरूप, जिसने युद्ध में उन्हें पराजित किया था—वो आज उनके परिसर में बैठा हुआ, अपने ही लोगों के खात्मे के लिए, उनकी मदद मांग रहा था। उसकी बात पर यकीन कर पाने की सिर्फ एक ही वजह थी, और वो थी विवास्वन पुजारी की अमानवीय स्थिति। कोई भी साधारण मनुष्य अपने शरीर पर इतने दंड नहीं झेल सकता था।

‘एक पल को मान लीजिए हम आपकी मदद को तैयार हैं, और अपनी सेना और पशु आपके काम में झोंक दें। फिर क्या? इससे हमें क्या मिलेगा?’ प्रचंड ने पूछा। ‘इतना बड़ा श्मशान हमारे किस काम आएगा?’

विवास्वन पुजारी ने अपनी नाराजगी छिपाए बिना प्रचंड को देखा। वो आदमी जिसे हड़प्पा का सूर्य माना जाता था, उसे अपने से कमतर लोगों से बहस पसंद नहीं थी। सुरा ने इस तनाव को भांप लिया। बिना एक पल गंवाए उसने बीच-बचाव किया।

‘प्रचंड बस यही जानना चाहता है, ओ महान अविवास्वन पुजारी कि जब आर्यवर्त का अधिकांश भाग बाढ़ में बह जाएगा, तो मेरे पास शासन के लिए क्या बचेगा? जब वहां प्रजा ही नहीं होगी तो ऐसे में साम्राज्य का क्या लाभ?’

पतित देवता एक पल के लिए शांत रहा। फिर उसने व्यवस्थित ढंग और स्पष्टता से जवाब दिया। वह जानता था कि असुरा क्या सुनना चाहता था।

‘तुम उसे बिना प्रजा का साम्राज्य कह सकते हो, या तुम इस तरह भी समझ सकते हो कि तुम दुनिया की सबसे उर्वर जमीन के बेताज बादशाह होगे। ऐसी जमीन, जिस पर तुम अपने पसंद की जनसंख्या बसा सकते हो, मनचाहा नगर बना सकते हो और अपने नियमों की स्थापना से शासन कर सकते हो। क्या हमेशा से तुम्हें यही नहीं चाहिए था, सुरा?’

शैतान राजा ये सुनकर खुश हुआ। यही तो उसे वास्तव में चाहिए था।

वो हड्डी पकड़कर, भुनी हुई बकरी का मांस खा रहा था और कई नरकंकाल खोपड़ियां-भर सुरा की नशीली मदिरा पी चुका था। विवास्वन पुजारी ने इससे पहले कभी जीवन में मांस और मदिरा का सेवन नहीं किया था। अब वह अपने पुराने स्वरूप को भूलने की कोशिश कर रहा था। धीरे-धीरे वो अपने अंदर के देवता को मार रहा था। और अंदर के जानवर का पोषण कर रहा था।

‘हमें आपसे एक और भेंट चाहिए, ओ अ-देवता,’ प्रचंड ने संभलते हुए कहा। वो लोग साथ में बैठकर मांस-मदिरा की दावत उड़ा रहे थे।

विवास्वन ने अपनी लाल आंख उठाकर, सुरा और उसके सैन्य प्रमुख को देखा।

‘वैसे भी तो तुम्हें सब कुछ मिल रहा है। जमीन, नदी, अवशेष, संपत्ति... और तुम्हें क्या चाहिए?’ उसने पूछा।

‘अ-सप्तऋषि,’ सुरा ने अचानक से, पवित्र सात मुनियों का संदर्भ छेड़ते हुए कहा।

और फिर उसने कुछ ऐसा कहा, जिसे सुनने की कभी विवास्वन पुजारी ने उम्मीद तक नहीं की थी।

‘हमें अ-सप्तऋषियों के सिर चाहिए।’

‘हमारी जीत तब तक पूरी नहीं होगी, जब तक अ-सप्तऋषियों की भी वही नियति न हो, जो समस्त हड़प्पावासियों की होने वाली है,’ सुरा ने विवास्वन को सकते में डालते हुए कहा।

‘यह नहीं हो सकता,’ घायल देवता ने जवाब दिया। ‘तुम्हारे पास तुम्हारा साम्राज्य होगा। तुम्हारा राज पूरे आर्यवर्त में होगा। लगभग पूरी दुनिया पर तुम्हारा राज होगा, सुरा। सप्तऋषि को अकेला छोड़ दो।’

‘हम दोनों जानते हैं कि जब तक वो चालबाज जिंदा रहेंगे, हड़प्पा पर मेरा शासन कभी सुनिश्चित नहीं हो पाएगा। इन मुनियों का नदी पर शासन है, वो हवाओं को निर्देश देते हैं, वो पशुओं से बात करते हैं और यहां तक कि पर्वत भी उनकी इच्छा से अपना आकार बदल लेते हैं। नहीं, अविवास्वन, हमें उन्हें मारना ही होगा।’

‘बहुत हो गया, सुरा! मैं इस बारे में कोई बात नहीं करना चाहता। सप्तऋषि योद्धा नहीं हैं। वो तुम्हारी विशाल सेना को पराजित नहीं कर सकते। वो बस साधारण मुनि हैं, जिनकी लौकिक संपत्ति में कोई भी दिलचस्पी नहीं है। और इस सबसे बढ़कर, वो सरस्वती के सर्व-विदित पुत्र हैं। अगर हमने उन्हें नुकसान पहुंचाने की कोशिश भी की तो समग्र आर्यवर्त को दैवीय कोप झेलना पड़ेगा,’ विवास्वन पुजारी ने उसे सख्ती और तार्किक रूप से समझाया। सच यह था कि वो दिल से सप्तऋषि को प्रेम करता था। उस सर्जक से उसे जोड़ने की वो आखरी कड़ी थे।

प्रचंड सुरा को अच्छी तरह जानता था, वो भांप गया था कि इस समय उसका राजा उससे सख्त मध्यस्थ की भूमिका चाह रहा था। उसने कमान अपने हाथ में लेने का निर्णय लिया।

‘और आप इन मुनियों का इतना संरक्षण क्यों कर रहे हैं, ओ महान अ-देवता? उन्होंने आपके लिए किया ही क्या है?’ असुर सेना के अध्यक्ष ने व्यंग्य किया।

‘संभलकर, प्रचंड,’ विवास्वन ने अपनी थाली से नजर हटाए बिना कहा।

‘नहीं सच में, आपके मन में उनके लिए कौन सा स्नेह है? अगर वो आपका साथ देते तो क्या आज आप ऐसी दयनीय स्थिति में होते? अगर सप्तऋषि ने जरा भी परवाह दिखाई होती, तो आपका परिवार यूं कुत्ते की मौत...’

इससे पहले कि प्रचंड अपनी बात पूरी कर पाता, देवता भोजन की उस शाही मेज से लपककर उठ गया, और अपनी खूंखार कटार निकालकर सुरा के सेनाध्यक्ष के गले पर रख दी। उसकी कटार का नीले रंग का हत्था, स्वयं उसके रक्त से तर हो रहा था।

‘सप्तऋषि के बारे में एक भी शब्द नहीं! मेरे परिवार के बारे में नहीं!’ विवास्वन पुजारी ने प्रचंड के कानों में फुफकारते हुए कहा।

‘क्षमा कीजिए, ओ ताकतवर अ-देवता। प्रचंड तो मूर्ख है,’ सुरा ने विनम्रता से कहा, और उसने धीरे से विवास्वन पुजारी की बांह थामकर, उसे प्रचंड की गर्दन से दूर हटाया।

यह कोई साधारण मनुष्य नहीं है, जैसा कि मैं हमेशा से जानता था। मेरे हजारों सैनिकों से घिरे होने के बावजूद, वो एक सिंह की तरह निडर है।

आदमी वापस से अपने आसन पर बैठ गए और विवास्वन पुजारी ने अपनी मजबूत कटार वापस म्यान में डाल ली। प्रचंड ने अपने सितारों का आभार जताया। वो जानता था कि वो अपनी मौत से बस जरा दूरी पर रह गया था।

‘हमारी सलाह का गलत मतलब मत निकालो, हड़प्पा के अ-सूर्य,’ सुरा ने कहा, उसने अपने मेहमान के लिए खोपड़ी में और मदिरा डाल दी।

जब उसने देखा कि विवास्वन पुजारी का क्रोध शांत हो गया था, तब सुरा ने अपना अगला दांव चला। वो जानता था कि इस समय देवता अतिसंवेदनशील था। यह संसार टूटे हुए दिल से छल और पराजित इंसान को और तोड़ने से बाज नहीं आता। यह टूटे हुए इंसान की जिंदगी और उम्मीद की आखरी बूंद तक निचोड़कर, अपनी महत्वाकांक्षा के किले में सजा लेता है। लेकिन सुरा गलती कर रहा था। हां, विवास्वन पुजारी का दिल टूट गया था। लेकिन वो कहीं से भी पराजित नहीं हुआ था।

‘जैसा कि हमने सुना था, अ-सप्तऋषि तो नदियों का प्रवाह भी बदल सकते हैं। वो बादलों को बरसने का आदेश दे सकते हैं और इंसान का मन पढ़ सकते हैं,’ सुरा ने सावधानी से कहा। अब तक उसने सुनिश्चित कर लिया था कि देवता तादाद से अधिक उस नशीली मदिरा का सेवन कर चुका था।

‘तो बस हम कह रहे हैं कि हम मदद नहीं कर सकते लेकिन हमें हैरानी है कि वो आपके बचाव के लिए क्यों नहीं आए, ओ ताकतवर अ-देवता...’

ऐसा नहीं था कि यह सवाल पहली बार विवास्वन के मन में आया था। उसने हर बार स्वयं को यह कहकर समझा लिया था कि सप्तऋषि के पास इसकी जरूर कोई सही वजह होगी। लेकिन बार-बार यह कड़वा सवाल उसके मन में सिर उठा लेता था। और अब सुरा भी यही सवाल कर रहा था।

‘वो आपकी मदद के लिए नहीं आए जब हत्या का झूठा आरोप आप पर लगाया

गया था। उन्होंने तब भी दखल नहीं दिया, जब आपको मृत कारावास की सजा दी गई। उन्होंने तब भी आना जरूरी नहीं समझा, जब भरी अदालत में आपको अपमानित किया गया,' सुरा बोलता रहा, अब यह धीमा जहर अपना असर दिखा रहा था।

आर्यवर्त के आखरी देवता ने खाना बंद कर दिया। खाने की उस मेज पर उसने गुस्से से सिर झुका लिया था और उसकी मुट्ठियां सख्ती से भिंच रही थीं। सुरा की जुबान का जहर अब असर दिखाने लगा था।

'चलिए इसे रहने दें, लेकिन वो आपके प्रिय परिवार को बचाने के लिए क्यों नहीं आए, जबकि वो जानते थे कि आप अपने परिवार के साथ नहीं हैं? मैंने सुना है कि वो समय के ज्ञाता हैं। उनसे तो कुछ भी छिपा नहीं है,' प्रचंड ने इस बार बड़ा ही संभलकर अपनी बात रखी।

'और आपकी पत्नी, ओ अ-देवता... उनकी दयालुता के बारे में हमने इतना सुना था कि वो अकेली ऐसी थीं, जिनके लिए हमने कभी अपनी अ-भाषा का इस्तेमाल नहीं किया। उन्हीं को हम उनके वास्तविक नाम से पुकारते थे— संजना।'

शैतान राजा के लिए झूठ बोलना आसान था।

'उनकी मौत जहरीले तीर के घाव से हुई। ऐसी पवित्र और समर्पित महिला का अंत ऐसा नहीं होना चाहिए था!' सुरा ने सुबकते हुए देवता के कानों में फुसफुसाया।

विवास्वन पुजारी को न चाहते हुए भी सुरा और प्रचंड की बात से सहमत होना पड़ा। वो भी अब सातों मुनियों के प्रति अपना क्रोध और असंतोष दबा नहीं पा रहा था, उसे लगा था कि वो उसकी सहायता के लिए आएंगे। उसकी मुट्ठी अब मेज पर एक के ऊपर एक रखी थीं, देवता ने उन पर अपना सिर टिका रखा था। वो बेतहाशा रो रहा था। उसने मान लिया था कि उसे धोखा दिया गया था। उसे उन लोगों ने धोखा दिया था, जिन्हें वो सबसे अधिक प्यार करता था। जिन पर उसे सबसे अधिक भरोसा था।

'और हमने सुना कि आपका पुत्र, सुदर्शन युवक मनु, बहुत बहादुरी से लड़ा,' प्रचंड ने कहा, अब वो बड़े नाटकीय ढंग से, मेज के गिर्द चक्कर लगा रहा था। उसकी आंखों में शैतानी चमक थी। वो जानता था कि उसने अपने शिकार को झांसे में ले लिया था।

‘उसे तीन तीर मारे गए, आपने कहा... तीन तीर!’ सुरा ने कहा। ‘कितना साहसी युवक था! उसने जरूर अपने आखरी पलों में आपको याद किया होगा, जब वो मरता हुआ अपने घोड़े से गिरा था। उसकी मौत का बदला, हड़प्पा के प्रत्येक बेटे की मौत से लिया जाना चाहिए!’

विवास्वन पुजारी अब नफरत से कांप रहा था। उसकी जीवनसाथी, उसकी प्यारी पत्नी युद्ध में मर गई थी, उसके साथ कभी ऐसा नहीं होना चाहिए था। उसका पुत्र बुरी तरह से घायल होकर वहां से निकला था, इतनी बुरी हालत में कि विवास्वन के मित्र सोमदत्त अश्रुपूर्ण सांत्वना ही दे सका। कुछ ही घंटों में उसकी पूरी जिंदगी बिखर गई थी।

जब मेरी दुनिया खत्म हो रही थी, तब सप्तऋषि कहां थे?

बनारस **2017**

त्रिजट कपालिक

वो अपने आप में शैतान की फौज नजर आ रही थी। जो देव-राक्षस मठ में इसके धनुषाकार द्वार से होते हुए, सीधे राक्षस खंड तक घुस आई थी। वहां के चप्पे-चप्पे पर त्रिजट कपालिक के अघोरी तांत्रिकों ने कब्जा कर लिया था। जहां से भी त्रिजट और उसका हिंसक दल गुजरता था, वहां से स्थानीय प्रशासन, पुलिस और जनता, सब जगह खाली कर देते थे। दुनिया के नक्शे में ऐसे बहुत से नगर और बस्तियां थीं, जहां का कानून इन धार्मिक और अध्यात्मिक संप्रदायों के मुखिया से सामने से भिड़ने से बचता था। अक्सर यह बड़ी राजनैतिक हस्तियों के इशारे पर होता था। लेकिन कभी-कभी, ये वास्तविक सम्मान का भी परिणाम होता था।

वस्त्रों के नाम पर उन्होंने पशुओं की खाल लपेटी हुई थी, उनके लंबे बाल मोटी चोटियों में गुथे थे, जो वर्षों के रक्त-पात और अस्वच्छता से रहने की वजह से नारंगी और भूरे रंग के हो चले थे। भयावह महा-तांत्रिक के सभी 666 अनुयायियों की आंखें चढ़ी हुई थीं, जो सालों से अफीम और चरस लेने का परिणाम था। उनके बदन और चेहरों पर, श्मशान में जलती चिता की सफेद राख मली हुई थी। उनके मुंह ऐसे लग रहे थे मानो वो अभी रक्त पीकर आए

हों। तंबाकू और पान चबाने की वजह से उनके होंठ लाल हो गए थे। उनमें से काफी लोगों के पास भारी भाले, त्रिशूल और सख्त चमड़े की बनी ढालें थीं। उनके आभूषण इंसान और पशुओं की हड्डियों से बने थे। लेकिन इससे भी खतरनाक था, उनमें से हरेक का अद्‌भुत और अकथनीय सम्मोहन।

त्रिजट की फौज को एक नजर देखने भर से, साहसी लोगों का रक्त भी जम जाया करता था।

अघोर तंत्र का एक अग्रिम और सम्मानित रूप है। इसकी प्राचीन जड़ें प्रभु रुद्र की उपासना में मिलती हैं। इसके साधक इसे अनियंत्रित आध्यात्मिक शक्ति और ज्ञान का संक्षिप्त मार्ग मानते रहे हैं, इसी वजह से ये हजारों सालों से भारतीय आध्यात्मिक क्षेत्र में गहराई से अपनी जड़ें जमाए हुए है। जटिल धार्मिक अनुष्ठानों, कर्म-कांड और प्रेत-आत्माओं से संवाद के साथ ही, इसमें मरणोपरांत संस्कार की वजह से कोई भी साधारण व्यक्ति इनकी रहस्यमयी दुनिया में प्रवेश नहीं कर सकता। अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए अघोरी नर मांस का सेवन करते हैं और यहां तक कि मुर्दों के साथ भी शारीरिक संबंध बनाते हैं। फिर भी लाखों भारतीय अप्रत्यक्ष रूप से इस रहस्यमयी संप्रदाय का सम्मान करते हैं।

हालांकि, शक्ति के दूसरे रूपों की तरह, अघोरा ने भी अपने सबसे मेधावी रहस्यों को भ्रष्ट कर दिया है। कोई अघोरी तांत्रिक एक बार अपनी सर्वोच्च सिद्धियों को हासिल करने के बाद, आत्माओं और अलौकिक शक्तियों पर असीमित नियंत्रण हासिल कर, उन्हें अपना सेवक बना लेता है। पिशाच, चुड़ैल और डाकिनी के रूप में क्रोधित आत्माएं बड़ी आसानी और बेरहमी से शत्रु का विनाश कर सकती हैं। इसी वजह से ये अघोरी अनैतिक नेताओं, उद्यमियों, फिल्मी सितारों और दूसरे ताकतवर लोगों के लिए बहुत मायने रखते हैं।

त्रिजट कपालिक निर्विवादित रूप से अघोरी तांत्रिकों का बादशाह था, जिसने भौतिक सुख और साम्राज्य के लिए ईश्वर का मार्ग त्याग दिया था। वो इतना शक्तिशाली माना जाता था कि श्मशान में उसका एक कदम पड़ने भर से मुर्दे जाग जाते थे। अपनी कड़ी साधना के बल पर वो हिमालय की ठंडी गुफाओं से लेकर बंगाल और असम की सबसे स्याह तांत्रिक मठों तक में धुनी रमा चुका था। वह श्मशान घाट में महीनों बिताकर, रहस्यमयी मंत्रों के उच्चारण से मृतकों का आह्वान करता था। दशक बीतने के साथ, त्रिजट या 'तीन जटाओं वाला' त्रिजट कपालिक बन गया। उसके नाम में बाद का शब्द, उसके त्रिशूल पर छड़ी के सहारे बंधे कपाल या इंसानी खोपड़ी की वजह से जुड़ा। उसके विकराल अनुयायी भारतीय नदियों के किनारे बहुत बड़ी धार्मिक सभाओं का आयोजन किया करते। और सालों पहले, ऐसे ही किसी मेले में एक इटली वासी

त्रिजट से मिला था।

तांत्रिकों, पुजारियों और साधारण लोगों में खतरनाक माने जाने वाले, त्रिजट कपालिक ने जल्द ही मसान-राजा की उपाधि प्राप्त कर ली। उसके अनुयायियों ने बात फैला दी कि त्रिजट के पास अलौकिक शक्तियों की सेना थी, और उसकी पूजा तो मृतक भी करते थे। इसी से वह मृतक-नाथ कहलाया जाने लगा।

और फिर भी ये मसान-राजा, मृतक-नाथ, महा-तांत्रिक त्रिजट कपालिक, धरती पर एक ही आदमी से डरता था।

वो धरती के सबसे बड़े तांत्रिक से डरता था। वो महान मठाधीश, द्वारका शास्त्री से डरता था।

विद्युत ने अपने परदादा को राक्षस खंड के केंद्र में खड़े देखा। उनके लहराते सफेद और केसरिया कपड़े, घने लंबे बाल और राजसी तेज से मेल खाता ही ताकतवर त्रिशूल, उन्होंने अपने दाहिने हाथ में पकड़ा हुआ था। इस अतियथार्थवादी दृश्य में, मठाधीश अपनी विजेता सेना के प्रमुख की तरह खड़े, अपने दुर्जय शत्रु की आंखों में देख रहे थे।

बैसाखियों के साथ विद्युत जितना तेज चल सकता था, चल रहा था। वो जल्द से जल्द अपने बाबा तक पहुंच जाना चाहता था। वहां सामान्य बातचीत से भी हालात बिगड़ सकते थे। दूर से ही, जब उसने ग्रैंडमास्टर के साथ खड़ी नैना को देखा, तो उसे कुछ राहत महसूस हुई। अब तक मठ के हथियारबद्ध योद्धाओं ने रणनीति के तहत, चतुष्कोणीय खंड को घेर रखा था और राइफलमेन पवित्र परिसर की ऊंची मीनारों पर खड़े थे। अब तक मठ के शीर्ष पुजारी भी, अपने कमंडल लिए परिसर में आ गए थे। बलवंत विद्युत से कंधे से कंधा मिलाकर चल रहा था, उसकी सदमे की शुरुआती प्रतिक्रिया अब पूरी तरह से युद्धस्थिति में बदल चुकी थी।

ढाआआकक! ढाआआकक!

थ्वाआआनंग! थ्वाआआनंग!

भयानक, धरती को हिला देने और कानों को बहरा कर देने वाली उनकी गर्जना जारी थी। विद्युत ने देखा कि ये आवाज कहां से आ रही थी। त्रिजट के सैकड़ों उन्मादी अनुयायी अपने त्रिशूल की लाठी को एक साथ जमीन पर मार रहे थे, और साथ ही अपने कवच पर त्रिशूल के सिरे के धातु वाले भाग की थाप दे रहे थे। इसका प्रभाव किसी तरह की रणभेदी से कम नहीं था।

‘प्रणाम, बाबा,’ तनाव भरे माहौल में, केंद्र के बीच पहुंचकर, विद्युत ने अपने परदादा के पैर छूते हुए कहा।

‘त्रिजट...’ द्वारका शास्त्री चिल्लाए, उनकी आवाज त्रिशुलों और ढालों के कोलाहल के परे गूंजी।

‘बस, बहुत हो गया!’ वो बोले।

पल भर में ही, पूरी सभा में सन्नाटा छा गया। यहां तक कि मसान-राजा के सैनिक भी वृद्ध मठाधीश के आदेश की अवहेलना नहीं कर सके।

कुछ पल बाद, खामोशी भरी सभा में, सिर्फ किसी के दृढ़ कदमों की आहट सुनाई दी। उन कदमों के साथ भारी घुंघरू की छमछम और हड्डी के आभूषणों की रगड़ भी सुनाई दी। राख मले हुए अघोरी अब अपने इष्ट के लिए रास्ता बनाने लगे।

और फिर वो सामने आया। अपने पूरे वैभव के साथ।

मसान-राजा!

हड़प्पा के पूर्व में, **1700** ईसापूर्व

महान राजा

भोर की पहली किरण के साथ ही, उसका घोड़ा अपनी काठी और उन नए हथियारों के साथ तैयार था, जो उसने काले कपड़ों वाले उन महिला-पुरुषों से लिए थे, जो इस रहस्यमयी पर्वत पर रहते थे। हथियारों में कृपाण, छुरी, दो सौ तीर, कुल्हाड़ी और दो भाले, जो खास दूरी से मारने के लिए तैयार किए गए थे। नफरत से झुलसता हुआ, वो हैरान था कि किस प्रकार तीन रक्तरंजित दिनों ने उससे उसका सबकुछ छीन लिया था। अब मनु आखरी हमले के लिए तैयार था। वो हड़प्पा जा रहा था। अकेला।

वो अपने प्रिय पिता को बचाने जा रहा था। और वो मोहन जोदड़ो की राजकुमारी को खत्म करने जा रहा था। और उसके साथ उसके पति और अपने इकलौते मामा को भी।

जो भाले उसने लिए थे, उन पर, रक्त से दो नाम लिखे थे।

पहला नाम था, महत्वाकांक्षी प्रियम्वदा का—हड़प्पा की पहली रानी—जिसकी नियति हमेशा के लिए अंधेरों में खो जाने की थी। यही उसकी अंतिम परिणति होने वाली थी।

और दूसरा नाम था, बुद्धिमान पंडित चंद्रधर का—वो आदमी, जिसे इतिहास में ऐसे मूर्ख के रूप में याद किया जाएगा, जिसने एक बुरी औरत की चालों के सामने विवेक और अच्छाई को ताक पर रख दिया... और जिसने पूरी सभ्यता को असमय मौत के लिए छोड़ दिया।

मनु पुजारी की युवा बांहें जिन भालों को थामती थीं, वो अपने निशाने तक पहुंचते थे।

‘और, क्या मैं पूछ सकता हूं, आप कहां जा रहे हैं?’

इस आवाज को सुनकर मनु रुक गया। वो अपने घोड़े को ऐंड़ लगाने ही वाला था कि इन शब्दों ने उसे रोक लिया। वो तुरंत जान गया था कि यह मोहक आवाज किसकी थी। ये वो आवाज थी, जिसे दोबारा सुनने का वो कब से इंतजार कर रहा था।

उसने धीरे-धीरे अपना घोड़ा मोड़ा, वो किसी योद्धा-राजकुमार की तरह ही वैभवशाली लग रहा था। उसकी आंखें उसके समर्पण से नम थीं, जिसे देखने की उम्मीद में वो मुड़ा था।

और उसका अनुमान सही था। यह आवाज उसी की थी।

मत्स्य।

उसने मनु की थैली से पूरा पानी पी लिया।

हड़प्पा के सूर्य का पुत्र वहां स्तब्ध खड़ा था; उसकी नजरें उस आदमी पर टिकी थीं, जो उसे उसकी मां, पिता और ईश्वर की अनुभूति देता था—एक ही बार में तीनों रूपों की। मत्स्य से दूसरी मुलाकात में ही, मनु को लग रहा था कि उसे एक मित्र, भाई, शिक्षक, हमराज, आलोचक, देवता, जादूगर, योद्धा, उपदेशक, मसीहा... सबकुछ मिल गया था!

जो आज मनु ने मत्स्य के लिए महसूस किया, उसकी साक्षी यह पृथ्वी पहली बार नहीं बनने जा रही थी। भक्त और भगवान के इस समर्पित प्रेम की अनेकों कहानियां दुनिया भर के मिथकों और लोककथाओं में सुनाई जाएंगी—एक जंगल में रहने वाला, सर्वशक्तिसंपन्न 'वानर' की ऐसे राजकुमार से मुलाकात, जिसे मानवजाति ने मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में याद किया; एक विख्यात धनुर्धर, जो रणक्षेत्र में अपने ही परिजनों को देखकर विचलित हो गया था, उसे उसके आध्यात्मिक मार्गदर्शक ने ऐसा उपदेश दिया, जिससे सदियों तक लोग ज्ञान लेंगे; एक देवदूत, जिसने अमानवीय यातनाओं को सहा, जिसने प्रेम का संदेश देने के लिए अपने प्राणों तक को त्याग दिया; और एक आस्तिक, जिसने अपने इष्ट के लिए अपने पुत्र की बलि दे दी।

भक्त और भगवान के बीच ऐसा ही अलौकिक संबंध रहा है; इंसान और दिव्य के बीच; पूजक और निर्माता के बीच—समय की शुरुआत के साथ, इसी से ये संसार चला है।

मनु धीरे-धीरे घोड़े से उतरा, वो खुश था कि आज दूसरी बार मत्स्य ने उसका पानी पिया था। वो अपने हाथ जोड़कर, सम्मान से इस दिव्य मत्स्य-पुरुष के सामने झुका।

'ओ महान राजा, आप कहां कूच करने वाले थे?' मत्स्य ने फिर से पूछा।

मत्स्य के संबोधन पर, मनु एक बार फिर से चौंक गया।

'मत्स्य, शायद आप मुझे कोई और समझ रहे हैं,' मनु ने जवाब दिया। 'मैं राजा नहीं हूं।'

'ओह, लेकिन आप तो हैं! बस अभी तक आपको ये पता नहीं है।' मत्स्य फिर से अपने रहस्यमयी अंदाज में मुस्कुरा रहा था। उसने आगे अपनी बात कही, 'हम वही होते हैं, जो हमारी नियति में लिखा होता है—हर समय, समग्र ब्रह्मांड में, इंसानी समझ और कल्पना की सीमाओं से परे। आप पहले से ही इस पृथ्वी के महान राजा हैं, मनु।'

मनु खीझ से मुस्कुरा दिया। शायद मत्स्य उतना दैवीय नहीं था।

'आप जो कह रहे हैं, वो कभी सच नहीं होगा, मत्स्य। मैं अपने पिता को बचाने जा रहा हूं, अपने परिवार का बदला लेने... और फिर तपस्वी रूप में, हमेशा के लिए इस भूमि को छोड़ दूंगा।'

'हम्म... रुचिकर। और आप किसे खोजेंगे, जब आप वो... वो क्या कहा था आपने... तपस्वी बन जाएंगे?'

'यकीनन, मैं उस सर्वशक्तिमान, उस ईश्वर की ही खोज करूंगा...'

'अभी भी तो आप उसे ही खोज रहे हैं, मनु?' मत्स्य की आंखों में जहां बच्चों की सी शरारत थी, तो वहीं अपार शक्ति भी। 'शायद वो भी आपको ही खोज रहा हो!'

मनु नीली रंगत वाले, इस रहस्यमयी के गूढ़ शब्दों का अर्थ समझने की कोशिश कर रहा था। सुबह की ठंडी हवा ने आसपास के माहौल में ताजगी ला दी थी। मनु के पीछे का पर्वत ऐसा लग रहा था, मानो धरती से ही उदित हुआ हो, मानो प्रात: के गुलाबी आसमान में काला दैत्य।

'ओ संजना पुत्र, जो चीज हमारे समीप होती है, हम उसका मूल्य क्यों नहीं समझते? कभी-कभी हम जिसकी तलाश में होते हैं, वो हमसे दूर नहीं होता।'

‘हड़प्पा का सूर्य हमेशा के लिए अस्त हो चुका है।’

मत्स्य के मुंह से ये शब्द सुनकर मनु का मुंह सूख गया। लेकिन कोई बात थी, जो उसे इस पर यकीन करने से रोक रही थी।

‘ऐसा नहीं हो सकता। मेरे महान पिता... शक्तिशाली विवास्वन पुजारी, मारे नहीं जा सकते। किसी साधारण शत्रु के द्वारा नहीं... किसी भी शत्रु से नहीं!’ मनु ने विरोध किया।

अंदर से, हालांकि वो जानता था कि उसके पिता के खिलाफ कौन-कौन सी ताकतें खड़ी थीं। विवास्वन पुजारी को बचाना मनु की आखरी उम्मीद थी। लेकिन अपने साथियों के आग्रह पर, स्वयं रणक्षेत्र से उसके बच निकलने के बाद, सोमदत्त, तारा और उसके बचे-खुचे साथी भी नहीं बच पाए होंगे। तो फिर विवास्वन पुजारी को बचाने के लिए कोई नहीं बचा होगा।

मरते समय, मेरे पिता के साथ, पूरे हड़प्पा में एक भी मित्र नहीं था।

‘कैसे... मेरे पिता, महान विवास्वन पुजारी ने अपनी अंतिम सांस कैसे ली?’ मनु ने पूछा। अब तक उसके आंसू सूख चुके थे। पिछले कुछ दिनों में वो इतनी शारीरिक और मानसिक पीड़ा झेल चुका था कि अब दर्द उसे और सख्त ही बना रहा था।

‘हड़प्पा के सूर्य ने अपने घावों... और नफरत के आगे दम तोड़ दिया,’ मत्स्य ने जवाब दिया।

मनु अपने बाएं घुटने पर बैठ गया, अपनी बांह अपने दाहिने पैर पर रख, सिर नीचे झुकाए, अपने पिता की दिवंगत आत्मा के लिए शांति प्रार्थना में।

उसने ध्यान नहीं दिया था कि मत्स्य ने एक बार भी विवास्वन पुजारी का नाम नहीं लिया था। उसने कभी नहीं कहा था कि विवास्वन पुजारी मर गया था। उसने मनु को सिर्फ यह बताया था कि ‘हड़प्पा का सूर्य’ अस्त हो गया था।

और वो सही था।

सिर्फ मत्स्य जानता था कि वो क्या कर रहा था। और अधर्म पर धर्म, बुराई पर अच्छाई की विजय के लिए, वो बार-बार ये करने वाला था। इस दिन के सदियों बाद, वो एक युद्धरत पिता को बताएगा कि उसका इकलौता पुत्र युद्धक्षेत्र में मारा गया था, जबकि वास्तव में वो एक हाथी था, जिसकी मौत हुई थी। और आज वो एक चिंतित पुत्र को बता रहा था कि उसका पिता मर

गया था, जबकि, वास्तव में, विवास्वन पुजारी की अच्छाई थी, जो हमेशा के लिए खत्म हो गई थी।

सिर्फ मत्स्य ही समय की सीमाओं से पार देख सकता था। वो इस ब्रह्मांड की महान कृति—मनुष्य के संरक्षण का अभियंता था।

मनु की जरूरत अधिक बड़े कार्यों के लिए थी, बजाय उसके व्यक्तिगत प्रतिशोध के।

बनारस, 2017

कपाल अर्पण

‘भक्त त्रिजट का प्रणाम स्वीकार करें, गुरुदेव!’

ये शब्द कहते हुए, त्रिजट कपालिक ने अपनी बांहों से अर्धगोला बनाते हुए, हाथों को मठाधीश के सम्मान में नमस्कार की मुद्रा में जोड़ा। नाटकीयता त्रिजट का अभिन्न साथी थी, लेकिन उससे उसके अस्तित्व का भय कुछ कम नहीं होता था।

‘तुम्हारा यहां आना कैसे हुआ, मसान-राजा?’ द्वारका शास्त्री ने पूछा।

‘आपके दर्शन की चाह खींच लाई, गुरुदेव,’ त्रिजट ने कुटिलता से जवाब दिया। ‘लेकिन कृपया मुझे इस नाम से मत पुकारिए। कम से कम, जब तक आप काशी में हैं, तब तक आपके सिवाय कौन पाताल का स्वामी हो सकता है?’

अचानक त्रिजट की नजर विद्युत पर जा टिकी। उसने गहराई से विद्युत की आंखों में झांका, उसका सिर कुटिलता से एक ओर झुक गया। इसी समय देवता को पूरी तरह महा-तांत्रिक को देखने का मौका मिला।

त्रिजट देखने में भयावह था। वो उतना लंबा नहीं था, जितना भव्य दिखाई देता था। उसके कद में लगभग 10 इंच तो उसके मोटे-भूरे बालों का जुड़ा जुड़ जाता था, जो उसके सिर पर बना था—अधिकांश तांत्रिकों के बाल इसी अंदाज में सिर पर बंधे होते थे। उसके बाकी के बाल, दो मोटी जटाओं में बंधे थे, वो इतने लंबे थे कि आसानी से उसकी कमर तक पहुंच जाते थे। उसकी आंखों पर गहरे सिंदूरी रंग का लेप लगा था, जो उसके राख से सफेद हुए चेहरे पर दूर से नजर आती थीं। उसकी लंबी दाढ़ी में सफेद बाल दिखाई दे रहे थे, जो उसकी बढ़ती उम्र के अकेले सूचक थे। उसने इंसानी दांतों, हड्डियों और नाखूनों की अनेकों मालाएं पहनी हुई थीं, जिनमें जानवरों की हड्डियां और ज्योतिषीय रत्न जड़े हुए थे। उसने अपने हाथों के अंगूठों और उंगलियों में बीस से अधिक अंगूठियां पहनी हुई थीं, जिनमें उसने अपना लंबा और काला त्रिशूल थामा हुआ था। लेकिन त्रिजट के विकराल व्यक्तित्व का सबसे भयावह पहलू वो इंसानी खोपड़ी थी, जो उसने अपनी छड़ी पर बांध रखी थी। उस खोपड़ी के

पूरे दांत थे, और उसका मुंह यूं खुला हुआ था मानो वो विकरालता से ठहाका लगा रही हो।

‘अपने पर-पोते को वहीं भेज दीजिए गुरुदेव, जहां से वो आया है,’ त्रिजट ने नरमाई से कहा। उसकी तेज आंखों से उसकी इस झूठी विनम्रता का पता चल रहा था।

द्वारका शास्त्री इन शब्दों को सुनकर स्तब्ध रह गए। उन्होंने उम्मीद नहीं की थी कि त्रिजट कपालिक विद्युत का नाम लेने की हिम्मत करेगा। इससे पहले कि मठाधीश कोई प्रतिक्रिया दे पाते, बलवंत महा-तांत्रिक की तरफ, अपना हथियार निकालते हुए लपका। विद्युत ने उसकी बांह पकड़कर उसे रोका, लेकिन इससे पहले कि वो ऐसा कर पाता, त्रिजट की सेना ने अनपेक्षित रूप से प्रतिक्रिया दी। दो भयानक सी दिखने वाली महिलाएं, जिनके बड़े बाल उलझे हुए मालूम पड़ रहे थे, तुरंत आगे आकर, मृतक-नाथ के इर्द-गिर्द खड़ी हो गईं। चेतना शून्य कर देने वाली, जुड़वां दिखती उन महिलाओं के चेहरे लाश की तरह पथराए हुए थे, लेकिन खून से भरी उनकी आंखें बलवंत को सामने से ललकार रही थीं।

विद्युत कसम खा सकता था कि इनसे भयानक जीव उसने अपने वास्तविक जीवन में नहीं देखा था। जबकि त्रिजट का पूरा समूह पिशाचों की तरह दिखता था, जो अपनी झलक मात्र से किसी को भी जमा दें, लेकिन इन दोनों के सामने तो वो भी कुछ नहीं थे। ऐसा लग रहा था कि इस भूतिया अवतार में परिवर्तित होने से पहले वो कभी सुंदर लड़कियां रही होंगी। उन्हें देखकर विद्युत, नैना, पुरोहित जी और द्वारका शास्त्री को ग्रंथों में पढ़ा हुआ, पिशाचनी का वर्णन याद हो आया। उनकी सांसें भारी थीं, मानो किसी शक्तिशाली काली ताकत के बस में हों। उनकी आंखें चढ़ी और मुंह खुले हुए थे। उनके स्तन और टांगें चमड़े के गंदे टुकड़े से ढंके थे, जबकि बाकी बदन पर श्मशान की राख लिपटी हुई थी। पल भर में ही विद्युत जान गया था कि उनकी बांहों और गर्दन पर जो मुड़ा-तुड़ा सा गोदना दिखाई दे रहा था, वो कुछ और नहीं बल्कि ‘गरुड़ पुराण’ की सबसे भयावह पंक्तियां थीं। गरुड़ पुराण वो प्राचीन ग्रंथ है, जिसमें उन भयानक यातनाओं का वर्णन है, जो मृतकों को नर्क में दी जाती हैं। दोनों भयानक प्राणियों की कमर पर बंधी दरातियों के दांत अभी भी खून से सने हुए थे।

‘कपालिक तुमने अपने नीच मुख से मेरे पर-पोते विद्युत का नाम लेकर, अपनी सारी सीमाएं पार कर दी हैं। अगर तुम रुद्र के भक्त नहीं होते तो, आज तुम भी

अपनी मृत सेना का हिस्सा बन गए होते।'

द्वारका शास्त्री क्रोध से उबल रहे थे।

'क्षमा कीजिए, गुरुदेव। मैं तो उनकी सुरक्षा के बारे में बोल रहा था। विद्युत ही तो मसीहा है न? उसे यूं मठ में बुलाकर उसकी जान खतरे में नहीं डालनी चाहिए।'

त्रिजट एक बार फिर से सीधे विद्युत को देख रहा था। मानो वो आंक रहा था कि यह वास्तव में वही है कि नहीं। अपनी स्याह और बुरी ताकतों से, मसान-राजा ने ऐसी ताकतों को गुलाम बना रखा था जिनके बारे में कोई आम जन जान भी नहीं सकता। कुछ पल बाद, उसने अपनी नजरें हटा लीं। विद्युत के चेहरे का अभूतपूर्व तेज और ईमानदारी उसे बेचैन कर रही थी। वो सहमत हो चुका था।

यह वही है।

'चले जाओ, त्रिजट,' बलवंत गुर्राया।

त्रिजट बलवंत को देखने के लिए मुड़ा, और फिर पागलों की तरह हंसने लगा। उसके आदमी भी अपने तरीके से गुस्सा दिखाने लगे।

ढाआआकक! ढाआआकक!

थ्वाआआनंग! थ्वाआआनंग!

अचानक से त्रिजट ने हंसना बंद करके, अपना हाथ उठाया। उसके अनुयायियों ने तुरंत अपने स्वामी के आदेश का पालन किया। पागल कर देने वाला वो शोर एकदम बंद हो गया।

त्रिजट द्वारका शास्त्री की ओर मुड़ा, उसने अपना काला त्रिशूल अपने और महान मठाधीश के बीच रखकर, उस अशुभ खोपड़ी को खींचा। उसने खोपड़ी को द्वारका शास्त्री की आंखों के स्तर पर उठाकर, सिर झुकाकर, उसे ग्रैंडमास्टर की तरफ बढ़ाया।

'कपाल अर्पण स्वीकार करें, गुरुदेव,' उसने कहा।

द्वारका शास्त्री ने पलक नहीं झपकाईं।

'निकल जाओ, त्रिजट,' उन्होंने कहा।

त्रिजट कपालिक ने मासूमियत से देखा, वो दुखी लग रहा था। यह महा-तांत्रिक

की नाटकीयता का दूसरा रूप था।

‘आपने मेरा प्रसाद ठुकरा दिया, गुरुदेव?’ उसने ऐसे पूछा, मानो वो कितना निराश था। ‘आपने मेरा कपाल-अर्पण ठुकरा दिया?’

‘चले जाओ!’ मठाधीश दहाड़े। विद्युत ने अपने बाबा के कंधे पर अपनी बांह रखकर, उन्हें शांत कराने की कोशिश की। उसने ध्यान दिया कि दोनों शैतान बहनें, चुपचाप निकलकर अघोरी की भीड़ में खो गई थीं। इससे उसने राहत की सांस ली।

त्रिजट ने द्वारका शास्त्री को घूरा, उसके चेहरे पर घृणा और अवमानना पसरी हुई थी। देव-राक्षस मठ में घुसने के बाद, अब उसने अपना वास्तविक चेहरा दिखाया था।

‘कपाल अर्पण तो होगा आज, प्रभु,’ त्रिजट फुंफकारा। ‘कपाल अर्पण तो होगा...’

विद्युत त्रिजट की बात का मतलब नहीं समझ पा रहा था। यहां तक कि महान द्वारका शास्त्री भी हैरान थे। लेकिन वो जानते थे कि इस बात को हल्के में नहीं लिया जा सकता था। त्रिजट को कभी भी हल्के में नहीं लिया जा सकता था।

मसान-राजा, मृतक-नाथ, महा-तांत्रिक, त्रिजट कपालिक ने सम्मान से द्वारका शास्त्री के सामने सिर झुकाया और जाने के लिए मुड़ गया।

‘हमें बात करनी होगी,’ अघोरियों के परिसर से बाहर जाते ही, द्वारका शास्त्री ने विद्युत से कहा।

‘जी बाबा, मैं भी इस पल का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। मुझे आपसे बहुत कुछ जानना है।’

मठाधीश ने हां में सिर हिलाया। ‘शाम के बाद, मेरी कुटीर में आकर मुझसे मिलो, पुत्र।’

‘जी बाबा, मैं पहुंच जाऊंगा,’ विद्युत ने जवाब दिया। ‘लेकिन अभी के लिए मुझे एक सवाल पूछना है...’

द्वारका शास्त्री सुनने के लिए खड़े रहे।

‘ये त्रिजट क्या कह रहा था कि कपाल अर्पण होकर रहेगा? इसका क्या मतलब

था?’

जवाब देते हुए, मठाधीश कुछ चिंतित नजर आए, ‘इसका मतलब है, विद्युत कि कुछ भयानक घटित होने वाला है। त्रिजट कपालिक बहुत खतरनाक इंसान है। हमें सावधान रहना चाहिए।’

विद्युत और बलवंत ने बाला के साथ अपनी बात जारी रखने का निर्णय लिया। सोनू को पहले कोठरी की तरफ भेजकर, वो शांति से उस ओर जा रहे थे। त्रिजट कपालिक से हुई मुलाकात हर किसी को परेशान कर रही थी। इस समय बस विद्युत एक ही चीज से राहत में था कि बाला खुलकर बात कर रहा था। इतना कुछ हो जाने के बाद भी, उसे कहीं न कहीं अहसास था कि वो अपने पुराने मित्र को बुराई के रास्ते से निकालकर, अच्छाई के मार्ग तक ले आएगा।

जैसे ही वो कोठरी के सामने के बरामदे में पहुंचे, तो उनकी नजर कांपते हुए सोनू पर पड़ी। ऐसा लग रहा था मानो उसने भूत देख लिया हो! इससे पहले कि विद्युत और बलवंत उससे कुछ पूछ पाते, सोनू कोने में जाकर उल्टियां करने लगा।

कोठरी का दरवाजा आधा खुला हुआ था, ऊपर लटकते बल्ब की रौशनी बरामदे के एक हिस्से तक पहुंच रही थी। विद्युत चिंता से सोनू को देख रहा था, तभी उसे अपने कंधे पर बलवंत के हाथ का अहसास हुआ। विद्युत के मुड़ने पर, बलवंत ने खामोशी से दरवाजे के ताले की तरफ इशारा किया। वो चाबी से खुला नहीं था। वो टूटा हुआ था।

क्या बाला भाग गया था?

अब विद्युत और बलवंत दोनों कोठरी की तरफ भागे और बलवंत ने उस भारी मैटल के दरवाजे को लात मारकर खोला। उसने हमले के लिए अपना छुरा भी निकाल लिया था।

उन्होंने जो देखा, उसने उनकी सांस रोक दी।

कोठरी के फर्श और दीवार पर खून फैला था, जो वहां हुए रक्तपात का प्रमाण था।

ऊपर लटकते हुए बल्ब के नीचे रखी, स्टील की मेज से खून टपक रहा था, जहां कुछ देर पहले बाला ने रम का गिलास रखा हुआ था। उसी मेज पर, दराती के किए गए काम का नमूना भी रखा था।

बाला का कटा हुआ सिर।

उसकी आंखें पूरी तरह चढ़ी हुई थीं और उसका मुंह वैसे ही खुला हुआ था, जैसे त्रिजट के त्रिशूल पर लगी खोपड़ी का मुंह था।

विद्युत अब समझ गया था। वो शब्द उसके दिमाग में गूंज रहे थे।

‘कपाल अर्पण तो होगा आज, प्रभु...’

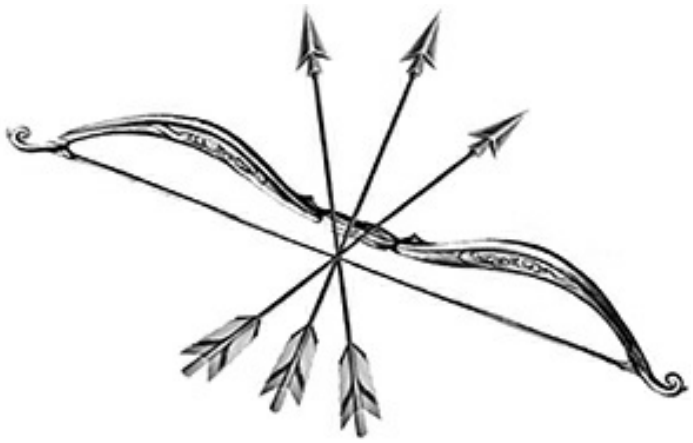

हड़प्पा, **1700** ईसापूर्व

पहाड़ पर कोहराम

वह ईंट और कांसे के सबसे ऊंचे टीले पर खड़ा, हड़प्पा के सिपाहियों और कर्मियों को किसी भूखे गिद्ध की तरह देख रहा था। रात अंधियारी थी, और विवास्वन पुजारी अपने प्रतिशोध का पहला पासा चलने वाला था—रक्तरंजित पासा।

समग्र हड़प्पा में मौसम तेजी से बद से बदतर होता जा रहा था। मौसम में यह बदलाव तब से ही था जब धरती के पहले कंपन और सरस्वती की पहली हिंसक लहर ने हड़प्पा वासियों को अपने दर्शन दिए थे। दिन का उजियारा कुछ ही समय के लिए होता था, और नियमित चक्र में रात के अंधेरे ने अधिक स्थान घेर लिया था। हर गुजरते प्रहर के साथ, सरस्वती का आकार अवर्णनीय रूप से बढ़ रहा था, इसके समुद्र जैसे विकराल जल ने, कई किनारों को तोड़कर गांवों में घुसकर, हजारों किसानों और मवेशियों को डुबो दिया था। अब शायद ही कोई ज्ञान की नदी, सरस्वती को उसके वास्तविक नाम से पुकार पा रहा था। उसका नाम अब बदल गया था। अब वह रक्त-धारा थी! गरजते बादल, मूसलाधार वर्षा और धूल की अटूट आंधी ने समग्र आर्यवर्त के जनजीवन को अपंग बना दिया था। प्रत्येक को यकीन था कि उन्हीं में से किसी के जघन्य अपराध की वजह से, सबको ईश्वर के क्रोध का भागी बनना पड़ रहा था। लेकिन वो नहीं जानते थे कि देवता की यातना के साक्षी और सहभागी बनकर

वो सभी अक्षम्य अपराध के साझेदार बन चुके थे।

मैसोपोटामिया के काले जादूगरों, गुन, अप और शा के द्वारा मिलाए गए नशे का असर अब उतरने लगा था। यद्यपि वे पूरी तरह अपने शांत और सभ्य व्यवहार में नहीं आ पाए थे, लेकिन फिर भी हड़प्पा वासियों को पिछले तीन दिन की क्रूरता का कुछ-कुछ अहसास था। कई कोनों से अब अपने सूर्य के प्रति हुए अन्याय की बातें भी सुनाई पड़ रही थीं। कुछ आंखों से तो पछतावे के आंसू भी बहे थे। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। संजना अब जीवित नहीं थी। मनु भी संभवतया मर चुका था। और सूर्य भी अब विनाश और मौत का घिनौना दूत बन चुका था।

बेबस हड़प्पा वासियों की हालत अब दर्दनाक थी। एक तरफ तो उन्हें अपना अंत आता दिखाई दे रहा था, और दूसरी तरफ उनके पास जाने को कोई रास्ता नहीं था। वो जानते थे कि कृषि, मत्स्य पालन और पीने के पानी के लिए उपलब्ध, जीवनदायिनी नदी के बिना, वो कहीं भी नई बस्ती नहीं बसा सकते थे। जो यात्री पूर्व में, कई योजन का सफर तय करने गए थे, उन्होंने आकर बताया था कि वहां हर जगह सूखा और धूल ही है। अपनी विकराल नियति से बचकर वो कहीं नहीं जा सकते थे। चीत्कार भरी रातों में माओं ने अपने बच्चों को सीने से लगा लिया था। पिता पागलों की तरह अपने प्रियजनों को बचाने का रास्ता ढूंढने निकलते, लेकिन हताश होकर वापस लौट आते। हड़प्पा के प्रत्येक घर और प्रत्येक मंदिर में अब प्रार्थना और यज्ञ के माध्यम से, ईश्वर से दया और रहम की भीख मांगी जा रही थी।

लेकिन भगवान उनकी सुनने वाला नहीं था। इन पापियों ने अपने सामूहिक पागलपन में, अपने ही सूर्य को तबाह करने की कोशिश की थी।

और वही काला सूर्य अब ऊंची चट्टान से उन्हें घूर रहा था, वो अपने क्रोध की अग्नि में इन सबको झुलसा देने वाला था।

'वो संख्या में कम से कम हजारों हैं,' प्रचंड ने विवास्वन से, तेज हवा के बीच चिल्लाते हुए कहा। 'और यह रात की पारी है। दिन के समय तो ये इससे भी दोगुनी संख्या में काम करते हैं।'

विवास्वन ने हां में सिर हिलाया। उसे प्रचंड के द्वारा बताई गई संख्या की कोई परवाह नहीं थी। उसकी नजर अपने शिकार पर टिकी थी—हड़प्पा के सिपाही, जो निर्माणाधीन ढांचे की सुनियोजित जगह पर, दो सौ मीटर से अधिक की गहराई पर थे। वो जगह, तेज तूफान में भी, मशाल और अलाव से रौशन थी। पिछले तीन दिनों से उसने जानलेवा आघात की अपनी श्रेष्ठता को रोके रख

बड़ी गलती की थी, और अधिक समय मोलतोल में गंवा दिया था। अब वो अपनी यह गलती नहीं दोहराने वाला था। हड़प्पा को अब देवता के युद्ध के ऐलान का वार झेलना ही पड़ेगा।

'मैं ऊपर से सीधा नीचे भंजी छलांग लगाऊंगा,' विवास्वन ने कहा।

प्रचंड और उसके मुट्ठी भर आदमी, एक पल को यह सुनकर स्तब्ध रह गए। उनकी योजना थी कि हड़प्पा के नए राजा, पंडित चंद्रधर के आदेश के तहत बनने वाले, ईंट और कांसे के पर्वत का सामान, उपकरण और कर्मियों को कब्जे में ले लेंगे। वो बदनसीब राजा उसी योजना पर काम कर रहा था, जो मूल रूप से विवास्वन पुजारी ने बनाई थी। इसी के माध्यम से वो रौद्र सरस्वती के प्रवाह को बदलने का प्रयास कर रहा था। लेकिन एक कुशल वास्तुविद के बिना उसकी परियोजना किस काम की?

'तुम्हारे पास जानवरों की खाल से बनी जो सबसे लंबी रस्सी है, वो मुझे दो। हमारे पास समय बहुत कम है,' विवास्वन ने अपने नए साथियों के चेहरे पर आए अविश्वास की अनदेखी करते हुए कहा।

'लेकिन अविवास्वन, यह ढलान बिलकुल खड़ी है। किसी ने भी कभी इतनी ऊंचाई से छलांग नहीं लगाई है। या तो रस्सी साथ छोड़ देगी या तुम तीर की तेजी से सीधे जमीन पर जाकर गिरोगे!'

भंजी या रस्सी बांधकर लगाई जाने वाली छलांग हड़प्पा में, और असुरों के साम्राज्य में भी, एक जाना-माना अभ्यास था। इसका प्रमुखता से इस्तेमाल छिपकर की जाने वाली हत्याओं में किया जाता था। लेकिन जिस ऊंचाई से हमलावर यह छलांग, कमर पर चमड़े की रस्सी बांधकर, लगाता था वो किसी ऊंचे पेड़ या तीन मंजिला इमारत से अधिक ऊंची नहीं होती थी। जो विवास्वन पुजारी कह रहा था, वो कभी सुना नहीं गया था, और बहुत जोखिम भरा था।

वह तैयार था। वो रस्सी जिसे स्वयं उसने सावधानी से जांचकर, फिर स्वयं ही अपनी कमर में बांधा था, उसे ईंट और कांसे की एक विकराल चट्टान में अटकाया गया था। उसकी बाईं जांघ पर तरकश था, जिसमें घातक तीर रखे थे, प्रत्येक तीर के सिरे को, सावधानी से तरकश में चिपकाया गया था—जिससे वो अपने आप ही न गिर जाएं और देवता के निकालने पर ही निकलें।

'जैसे ही मैं अपने तीसरे या चौथे प्रतिघात के बाद जमीन पर उतरूंगा, तभी अपने पैदल सिपाहियों को निर्देश देना कि वो पूरे क्षेत्र को चारों तरफ से घेर लें। जो विरोध करें उन्हें मार देना और बाकियों को बंदी बना लेना। बंदियों से

इस विकराल परियोजना में काम लिया जाएगा।'

प्रचंड और उसके आदमियों ने सहमती में सिर हिलाया।

हड़प्पा के दल के बीचोबीच, चट्टान से छलांग लगाने से पहले, विवास्वन पुजारी ने निर्णय लिया कि दुश्मन दल में कुछ खलबली मचाई जाए। अपने साथ खड़े असुर सैनिकों को हैरानी में डालते हुए, विवास्वन ने एक ही बार में चार तीर खींचे। उसने होशियारी से उन्हें धनुष पर रखा, निशाना लगाया और एक साथ चारों तीर चला दिए। अभी जब तीरों की पहली खेप हवा में ही थी, देवता ने और चार तीर निकालकर, चला दिए। और फिर एक बार और चार। तीरों की तेज गति और उसकी धनुर्धर का सटीक निशाना असुर सिपाहियों और उनके सेनापति, प्रचंड के लिए आश्चर्यजनक था। एक ही झटके में देवता के तीर अपने निशानों पर जा लगे, और हड़प्पा दल के बारह सिपाही जमीन पर ढेर हो गए। वो एक साथ अपने स्थानों से गिरे।

देवता ने कुछ कदम पीछे लिए और फिर तेजी से भागते हुए, चट्टान से छलांग लगा दी, उतनी ही शान से, मानो किसी बाज ने आसमान में अपने पंख खोल दिए हों। धरती के गुरुत्वाकर्षण और अपनी गति से, तेजी से नीचे जाते हुए भी उसने तीरों के दो समूह और निशाने पर पहुंचा दिए। अपने सिपाहियों को जमीन पर गिरता देख, हड़प्पा के दल में अचानक से अफरा-तफरी मच गई। और तभी, उनमें से कुछ ने एक आंख वाले प्रेत को, आसमान से अपने ऊपर गिरता देखा, जो तुरंत ही जाने कहां गायब हो गया! अब तो वहां हडकंप मच गया था। ईंट लेकर जाते और पत्थर की चट्टान खींचने वाले मजदूर, तुरंत ही सब छोड़कर भागने लगे। जाने कहां से तीरों की वर्षा होने लगी और उस समय में काम पर मौजूद हड़प्पा के सिपाहियों के छक्के छूट गए।

प्रचंड इस पूरी प्रक्रिया को उस भय और प्रशंसा से देख रहा था, जो उसने कभी किसी के लिए नहीं महसूस किया था। यहां तक कि अपने शूरवीर राजा सुरा के लिए भी नहीं।

'वो अकेला हजारों के मुकाबले खड़ा है, और फिर भी वो जीत रहा है!' उसने स्वयं से कहा।

'वो वास्तव में आधा-मनुष्य, आधा-भगवान है...'

सूर्य-घड़ी के एक चक्कर से भी कम समय में सब खत्म हो गया। विवास्वन पुजारी जमीन पर उतरकर, अपनी रस्सी काटने से पहले लगभग सौ सिपाहियों को धराशायी कर चुका था। अब वह बीस या उससे अधिक हड़प्पा

सिपाहियों से घिरा हुआ था, जिन्हें उसने पल भर में छितरा दिया। जिस तेजी से देवता अपनी तलवार घुमा रहा था, वो दुश्मनों को धुंधली ही नजर आ रही होगी—उनके द्वारा देखी गई आखरी धुंधली चीज।

सुरा अपने सिपाहियों के साथ, घुड़सवारी करता हुआ वहां पहुंचा और अब वो लोग हड़प्पा सिपाहियों को मारने और बंदी बनाने का काम कर रहे थे। छोटी और सहज लड़ाई जीती जा चुकी थी।

असुर राज अपने घोड़े से उतरा और विवास्वन पुजारी की ओर बढ़ा। विवास्वन एक चट्टान से टिका खड़ा था, उसके हाथ उसकी तलवार पर टिके थे, जो सगर्व उसके सामने खड़ी थी। रत्न-मारू से लहू टपक रहा था।

'आप अतुलनीय हैं, ओ महान अ-देवता!' सुरा ने विवास्वन पुजारी के सम्मुख झुकते हुए कहा। दुनिया में ऐसा कोई नहीं था, जिसके सामने सुरा पहले झुका हो। 'इतिहास कभी आपको भुला नहीं पाएगा।'

'इतिहास को ही तो मैं अभी मिटाने जा रहा हूं, सुरा,' विवास्वन ने जवाब दिया।

सुरा जानता था कि विवास्वन की बात का क्या अर्थ था। उसने देवता को अपनी बात पूरी करने दी।

'कोई मुझे याद नहीं रखेगा। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण...

कोई नहीं जान पाएगा कि हड़प्पा में क्या हुआ था।'

'तो अब क्या योजना है?' प्रचंड ने पूछा। वो दहकती अग्नि के गिर्द इकट्ठा हुए थे।

'इस क्षेत्र के मुख्य अभियंता को मेरे पास लाओ,' विवास्वन ने कहा।

कुछ ही पलों में एक मध्य-आयु के, डरे हुए इंसान को देवता के सामने लाया गया। वो जानता था कि विवास्वन पुजारी कौन था। हड़प्पा में हरेक व्यक्ति विवास्वन पुजारी को जानता था। मुख्य अभियंता को धुंधला सा याद पड़ रहा था कि अभी दो दिन पहले ही, विशाल स्नानागार में, हड़प्पा के सूर्य को सख्त सजा दी गई थी। किसी दूर के सपने की तरह, वो स्वयं को भी उसे पत्थर मारते हुए देख रहा था। उसे याद आ रहा था कि विवास्वन पुजारी को जानवरों की तरह मरता देख, वो पागलों की तरह हंस रहा था। और यहां वो, सूर्य के सम्मुख पूरे सम्मान और पछतावे के साथ खड़ा था। इसमें उस बेचारे की कोई गलती

नहीं थी। ब्रह्मांड के अदृश्य हाथ, जब मानवता की नियति पर बदकिस्मती की स्याही फेरते हैं, तो पवित्र मनुष्य भी अमरता का विष पी लेते हैं।

विवास्वन ने आदमी को डर से कांपते हुए देखा और नरमाई से पूछा, 'इस विशाल कार्य का क्या उद्देश्य है, मित्र?'

अभियंता ने हकलाते हुए जवाब दिया, 'वो... वो... वो रक्त-धारा के प्रवाह को हड़प्पा से दूर करना, प्रभु।'

'सही है,' विवास्वन ने कहा। 'बस योजना में छोटा सा बदलाव है।'

मुख्य अभियंता के साथ, हरेक व्यक्ति ध्यान से सुन रहा था।

'इस पल से, सरस्वती को हड़प्पा से दूर भेजने के बजाय, हम सुनिश्चित करेंगे कि वो इस अधम नगर की ओर ही बढ़े!'

बनारस, 2017

‘हमने उसे दानव बना दिया’

सारनाथ के धामेक स्तूप का सुंदर, स्तंभ जैसा गुंबद उनके सामने खड़ा था। शांति और अध्यात्म का प्रतीक होने के बावजूद, ये किसी तरह से अपने सामने बैठे दो व्यथित मनों और आहत आत्माओं को सांत्वना नहीं दे पा रहा था।

दामिनी शोकाकुल, डरी और घबराई हुई थी। विद्युत जड़ बैठा था, उसका चेहरा मानो पथरा गया था।

‘विद्युत, मुझसे वादा करो कि गुस्से में तुम कोई बेवकूफी नहीं करोगे,’ दामिनी ने जोर दिया। वो देख सकती थी कि विद्युत गुस्से से उबल रहा था।

विद्युत ने कोई जवाब नहीं दिया। दामिनी ने देखा कि गुस्से से विद्युत की दांती भिंच रही थी। वो जानती थी कि देव-राक्षस मठ में घुस, यूं बेरहमी से हत्या करके, त्रिजट ने विद्युत को खुली चुनौती दे डाली थी।

और जितना वो विद्युत को जानती थी, वो कह सकती थी कि विद्युत इसे हल्के में नहीं लेने वाला था।

बोध गया, कुशीनगर और लुम्बिनी के साथ ही सारनाथ उन प्रमुख चार तीर्थस्थलों में से एक है, जिन्हें स्वयं बुद्ध ने स्वीकृति दी थी। वाराणसी से लगभग 13 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ये वो जगह थी, जहां गौतम बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था। विद्युत ने दामिनी से वादा किया था कि वो उसे इस पवित्र स्थल पर ले जाएगा। लेकिन उसने कभी सपने में भी कल्पना नहीं की थी कि वो इतने भयावह हालात में यहां आएंगे।

परिसर के विशाल बगीचे में, वो घास पर पालथी मारकर, खोए-खोए और बेध्यानी से बैठे थे। विद्युत मन से अपने भटके हुए दोस्त का कटा सिर और सफेद आंखें निकाल ही नहीं पा रहा था।

हमने उसे बांधा ही क्यों? कम से कम बाला स्वयं को बचा तो पाता! हमने उसे बांधा क्यों?

उस घटना ने पूरे देव-राक्षस मठ को हिला दिया था। मठ के सैकड़ों सालों के इतिहास में, कभी भी वहां की सुरक्षा में, यूं सरसरी तौर पर और इतने हिंसक तरीके से सेंध नहीं लगी थी। इस वजह से मठवासियों के दिलों में एक डर घर कर गया था, और महान द्वारका शास्त्री के मन में असीम पछतावा। वह हतोत्साहित थे कि उन्होंने न सिर्फ अपने उन अभूतपूर्व पूर्वजों के सम्मान को ठेस पहुंचाई थी, जिन्होंने निर्दयी लूटेरों, धर्मांध सुल्तानों के विकराल हमलों से मठ की रक्षा की थी, बल्कि वो अपने उस कर्तव्य निर्वाह में भी असफल रहे थे, जिसके लिए नियति ने उनका चयन किया था। विद्युत को हर कीमत पर बचाया जाना था! और अगर मठ के नेतृत्व की नाक तले बाला का सिर धड़ से अलग किया जा सकता था, तो फिर विद्युत यहां कैसे सुरक्षित था??

देव-राक्षस मठ अब प्रति-हमले की तैयारी कर रहा था। मठाधीश की तरफ से पहला और सबसे तुरंत आदेश यही था कि जल्दी से जल्दी दामिनी को उसके गुड़गांव वाले जीवन की सुरक्षा में भेज दिया जाए। दामिनी के विरोध को इसलिए भी नजरंदाज कर दिया गया, क्योंकि विद्युत भी दृढ़ता से मठाधीश के निर्णय के पक्ष में था। दामिनी की जानकारी के बिना, मठ का एक प्रशिक्षित योद्धा उसके साथ गुड़गांव जा रहा था। वो दामिनी की सुरक्षा के लिए हर समय वहीं मौजूद रहेगा, लेकिन बिना किसी के सामने आए।

सारनाथ का उनका सफर, वाराणसी में दामिनी का आखरी दिन होने वाला था।

अभी के लिए तो।

विद्युत के परेशान, मनोहर चेहरे को स्नेह से देखते हुए, दामिनी ने अपने हाथ में विद्युत का हाथ लिया। कुछ ही दिनों में उनकी दुनिया क्या से क्या हो गई थी। कुछ सप्ताह पहले तक जोशीले, सफल और प्रसिद्ध व्यक्ति के रूप में विख्यात विद्युत अब कोई मसीहा बन गया था, जिसे किसी ऐसे रहस्य की रक्षा करनी थी जो पूरी मानवजाति के लिए आवश्यक था! वो क़त्ल, जादू-टोने, तांत्रिकों, गोलियों, हत्याओं, आत्माओं और छिपे हुए शत्रुओं के केंद्र में था। ये सब जितनी तेजी से सामने आया था, उसे दामिनी पूरी तरह पचा नहीं पा रही थी। वो सबकुछ किस्मत पर छोड़ चुकी थी। उसका असीम, अनंत, अवर्णनीय विश्वास सिर्फ एक ही आदमी पर था। वो आदमी जो उसका था।

विद्युत।

‘कुछ तो बोलो, विद्युत... कुछ तो कहो न...’ उसने कहा।

विद्युत जानता था कि दामिनी को एयरपोर्ट छोड़ने से पहले, अब उसके पास एक ही घंटा बचा था। उसे दामिनी को बहुत कुछ बताना था। उसका दिल दुख, पछतावे और हताशा से भरा था, और वो जानता था कि सिर्फ दामिनी ही थी, जो उसके हालात को समझ सकती थी। सिर्फ वही थी जो उसकी बात सुनने के साथ-साथ समझती भी थी।

‘हमने उसे दानव बना दिया,’ विद्युत ने सारनाथ के विस्तार में, कहीं दूर देखते हुए कहा।

‘तुम कहना क्या चाहते हो...’ दामिनी ने पूछा।

‘दामिनी, हमने उसे दानव बनाया। मैंने उसकी कहानी सुनी थी। उसके बचपन और उसके परिवार की यातना की सड़ी हुई सचाई...’

दामिनी दुविधा में थी। उसे विद्युत और बाला के बीच हुई आखरी बात का नहीं पता था, तो इसलिए वो समझ नहीं पा रही थी कि विद्युत किसके बारे में, क्या बात कर रहा था।

विद्युत बोलता रहा। दामिनी ने उसे बोलने दिया। वो जानती थी कि इस समय विद्युत को दिल हल्का करने की जरूरत थी।

‘हमारा धर्म विश्व का सबसे प्राचीन धर्म है। वास्तव में तो ये धर्म भी नहीं है। ये तो इस महान राष्ट्र, इस सुंदर उपमहाद्वीप के जीवन की शैली है। हमने जीरो की खोज की, गणितीय पाई का मान निकाला, मार्शल आर्ट, शल्य चिकित्सा, औषधि, शतरंज, राजनीति, योग... हम उस दौर में गूढ़ वेद लिख रहे थे, जब पश्चिमी लोग गुफाओं में रहते हुए, कच्चा मांस खाते थे! हमने वर्ण व्यवस्था या जाति प्रथा की रचना की जिससे श्रम को प्रभावशाली तरीके से बांटा जा सके —अर्थव्यवस्था में विकास के लिए। लेकिन देखो हमने अपनी सबसे पवित्र अवधारणा को कितनी बुरी तरह से भ्रष्ट कर दिया।’

‘सॉरी विद्युत, मैं समझती हूं कि तुम हिंदुत्व और समाज में जाति विभेद की बात कर रहे हो। लेकिन यह प्रभावशाली या पवित्र ढांचा कैसे हुआ? क्या यह असमानता का सबसे विकृत रूप नहीं है?’

‘बिलकुल ये है! बिलकुल है, दामिनी...’ विद्युत ने बेचैनी से कहा। ‘लेकिन इसकी शुरुआत ऐसे नहीं हुई थी। अगर तुमने हमारे ग्रंथ पढ़े हों, चारों प्रमुख जातियों में से प्रत्येक ब्राह्मण (पुजारी व शिक्षक), क्षत्रिय (योद्धा व संरक्षक), वैश्य (व्यापारी व व्यवसायी) और शुद्र (कारीगर व कलाकार) प्रभु विष्णु के शरीर के भिन्न-भिन्न भागों से उत्पन्न हुए थे! तो कोई भी जाति, पंथ या

समुदाय जिसकी उत्पत्ति स्वयं प्रभु विष्णु से हुई हो, वो दूसरे से हीन कैसे हो सकती है?'

'इसे और स्पष्ट कहो, विद्युत। जो तुम कह रहे हो, वो शायद मैं जानती हूं, लेकिन प्लीज इसे थोड़ा और विस्तार से बताओ। और मुझे बिलकुल समझ नहीं आ रहा कि बाला इस सबसे कैसे जुड़ा था।'

विद्युत ने आह भरी। वो दामिनी की तरफ मुड़ा और उसके माथे को चूमा। ये अनायास ही था, लेकिन वो उसके प्रति अपने प्रेम को रोक नहीं पा रहा था। दामिनी ने उसके हाथ पर अपनी पकड़ और मजबूत कर दी, और अपनी प्यारी भंवें उठाकर, उसे बात जारी रखने का संकेत दिया।

वो अब लोकप्रिय मिठाई की दुकान की तरफ बढ़ रहे थे, जो सारनाथ के बाहर ही कुछ दूरी पर थी। कुछ दिन पहले ही विद्युत यहां के स्वादिष्ट गुलाब जामुन की तारीफ कर रहा था, और दामिनी ने जोर दिया था कि वो भी यह मिठाई खाना चाहती थी। दामिनी को मीठा अधिक पसंद नहीं था, लेकिन वो कुछ भी करके विद्युत का मन पिछली शाम की भयावह घटनाओं से हटाना चाहती थी।

'वर्ण व्यवस्था या जाति प्रथा किसी भी प्रकार के क्रम का प्रतिपादन या समर्थन नहीं करता था। समाज का हर वर्ग समान था और उसका वर्गीकरण बस लोगों के संतुलन और विकास के लिए किया गया था,' चमकती दोपहर में चलते हुए विद्युत ने कहा।

'हम्म, ये तो मेरे लिए एक खबर है,' दामिनी ने कहा। 'मैं तो हमेशा सोचती थी कि ब्राह्मणों को सर्वोच्च माना गया था और फिर क्षत्रिय और फिर इसी क्रम में...'

विद्युत हंसा और हैरानी से अपना सिर हिलाया।

यहां तक कि दामिनी जैसे सुविज्ञ लोगों में ये गलत अवधारणा है!

'नहीं, दामिनी, ऐसा कोई भेदभाव नहीं था। वर्गीकरण सिर्फ श्रम के आधार पर किया गया था, जिससे समाज के व्यापक हित के लिए विशेषज्ञता और प्रतिभा को प्रोत्साहित किया जा सके। ऐसे समझो—मेरे जैसी किसी कंपनी का कौन सा विभाग अधिक महत्वपूर्ण होगा? मार्केटिंग? सॉफ्टवेयर प्रोग्रामिंग? ह्यूमन रिसोर्स? या फाइनेंस?'

'ओके बाबा, मैं समझ गई...' दामिनी ने विद्युत की बात को समझते हुए कहा। 'लेकिन फिर समानता और आर्थिक विशेषीकरण पर आधारित यह व्यवस्था

इतनी विस्फोटक स्थिति में कैसे पहुंच गई?'

विद्युत दामिनी की तरफ मुड़ा, उसके भोले सवाल पर अविश्वास से विद्युत की आंखें फैल गईं।

'वैसे ही जैसे एक धर्म की स्थापना करने वाले गड़रिये को अपने प्राणों का बलिदान सर्वव्यापी प्रेम के संदेश के लिए देना पड़ा। उसी महान धर्म का इस्तेमाल बेरहमी और अमानवीय धर्मयुद्ध के लिए किया गया। वैसे ही जैसे एक पैगंबर के प्रेम और मानवता के शब्दों को कुछ लोगों ने हिंसा और नफरत फैलाने के लिए तोड़-मरोड़ दिया, दामिनी। क्या तुम समझ नहीं पा रहीं? धन और सत्ता के लालच में महान प्राचीन अवधारणा को खोखले स्वार्थ के दलदल में धकेल दिया गया?'

दामिनी विद्युत के हर शब्द को ध्यान से सुनते हुए, उसकी बात का अर्थ ग्रहण कर रही थी।

'बाला ने जो किया, मैं उसकी वकालत नहीं कर रहा। लेकिन सिर्फ उसे ही दोष क्यों दिया जाए जबकि वो तो स्वयं समाज के पतन का शिकार था? जाति प्रथा का अंध क्रियान्वयन, जिसमें एक समुदाय को दूसरे समुदाय का शोषण करने का अधिकार मिल जाए, यह हिंदुत्व नहीं है। हिंदुत्व में ऐसा कभी था भी नहीं। किसी जाति या समुदाय पर बेरहमी से यूं आधिपत्य सिर्फ और सिर्फ नैतिक और सामाजिक भ्रष्टता ही है! और इसने न सिर्फ हमारी महान जीवन शैली का नाम खराब किया, बल्कि बहुत से इंसानों का जीना दूभर कर दिया। बाला बस इस विकृति के दूसरे छोर पर था, और इससे बाहर निकलने का जो इकलौता रास्ता उसे दिखाई दिया, वो उस पर चल दिया।'

'मैं समझती हूं, विद्युत,' दामिनी ने कुछ पल ठहरकर कहा। वो शांति से चल रहे थे। 'लेकिन क्या तुम ये पूरा प्रकरण अपने दिमाग से निकालने की कोशिश करोगे? मैं जानती हूं कि यह आसान नहीं होगा। लेकिन तुम्हारे लिए इसे भुला देना बहुत जरूरी है।'

विद्युत रुका और दामिनी की तरफ मुड़ा।

'बात मेरी नहीं है, दामिनी। और बात तो यहां बाला की भी नहीं है। ये एक बड़ा मुद्दा है, जिसे हम देश और व्यक्तिगत स्तर पर झेल रहे हैं। इतिहास में लंबे समय तक ब्राह्मण और क्षत्रिय मिलकर शूद्रों या दलितों को दबाते रहे हैं। वो स्याह व निंदनीय दौर था। लेकिन अब देखो क्या हो रहा है। राजनेता उन्हीं पुराने जख्मों को कुरेद कर, उन पर नमक छिड़कते रहते हैं। परिणामस्वरूप

उन तथाकथित निम्न जातियों का काफी बड़ा वर्ग अब वोट बैंक के रूप में तैयार है, और वो किसी निश्चित जाति के नाम पर, किसी भी भ्रष्ट व्यक्ति को सत्ता में ले आते हैं! लोकतंत्र, जो हमारे महान देश का दिल और आत्मा है, वो अब जाति की इन भ्रष्ट सीमाओं के सामने घुटने टेक रहा है। आज भी जाति के नाम पर बसें जला दी जाती हैं और विशाल रैलियां जुटाई जाती हैं, जबकि हम सभी भारतीयों को मिलकर गरीबी, असाक्षरता, कुपोषण जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। लेकिन नहीं! लेकिन हम सब जाति, धर्म, भाषा, राज्य इत्यादि के नाम पर एक-दूसरे से लड़ने में व्यस्त हैं। और अगर यही होता रहा तो इसके परिणामस्वरूप बाला जैसे और भी उपेक्षित लोगों को हथियार की तरह पाला जाता रहेगा।'

दोपहर के चमकते आसमान के नीचे, दूरी पर सारनाथ का मनोरम तीर्थ दिखाई दे रहा था। विद्युत ने दामिनी का ध्यान उस ओर आकर्षित किया।

'हम वहीं खड़े हैं, जहां हजारों साल पहले, किसी दिन बुद्ध खड़े थे, दामिनी। बौद्ध धर्म के मानने वालों ने उन्हें अपना मानकर अपनाया। दूसरी तरफ, हिंदुओं ने उन्हें भगवान विष्णु का नौवां अवतार माना। दोनों समुदाय बुद्ध को चाहते हैं। दोनों समुदायों ने उन्हें अपने दिव्य विरासत मानकर साझा किया। उनके बीच किसी तरह का कोई संघर्ष नहीं है। यही समावेश, यही संयुक्तता हमें विशिष्ट बनाकर, हमारी विरासत को अमर करती है।

यही जीवन की वो शैली है, दामिनी, जिसकी हमें रक्षा करनी है।'

हड़प्पा के पूर्व में, **1700** ईसापूर्व

काला मंदिर

वह सर्वाधिक भव्य दृश्य था।

धूसर-काले पहाड़ के संकीर्ण कच्चे और गड्ढे वाले रास्ते पर, कई घंटों का सफर तय करके, उनका दल एक खुली जगह पर पहुंचा था। जो सर्पिला रास्ता उन्होंने लिया था, उससे मनु समझ गया था कि न तो इस भव्य इमारत के महान वास्तुकार और न ही काले कपड़े वाले इसके संरक्षक चाहते थे कि कोई भी इस तक पहुंच सके।

जैसे ही मनु का घोड़ा पहाड़ के तंग दर्रे से बाहर निकला, तो उसकी आंखें एक दृश्य पर ठिठककर रह गईं। सामने मौजूद ढांचे की रौबदार उपस्थिति ने एक पल को उसकी सांस थमा दी। विशाल काले पर्वत में, सर्वाधिक भीमकाय द्वार को, बड़ी ही जटिलता से काटकर बनाया गया था। वहां वो शानदार ढंग से, आसमान को छूते हुए खड़ा था।

काला मंदिर।

विशाल पर्वत की सख्त, काली चट्टान में आकर्षक नक्काशी से तैयार किया गया वह द्वार, मनु की अब तक देखी गई हर कलाकृति से अधिक सुंदर था। उसका घोड़ा लक्ष्यहीनता से, काले मंदिर की तरफ दुलकी चाल में चल रहा था, और मनु भी द्वार के वैभव के सम्मुख सम्मोहित सा हो गया था।

‘मेरे साथ आओ, मनु,’ पर्वत संरक्षकों की अग्रेता, रमणीय महिला ने कहा। ‘मैं आपको सबसे पवित्र मंदिर में ले चलती हूं।’

मनु घोड़े से उतरकर, महिला के पीछे चलने लगा। कुछ था जो उसे पवित्र मंदिर के केंद्र से अपनी तरफ खींच रहा था।

जब मनु ने द्वार के अंदर प्रवेश किया, तो उसे अहसास हुआ कि जो उसने बाहर

देखा था वो तो इस सम्मोहक मंदिर की सुंदरता के आगे कुछ भी नहीं था। कुछ कदम अंदर चलकर ही मनु, अपनी आंखों के आगे उपस्थित वास्तविक वास्तुशिल्प की श्रेष्ठता को समझ पाया। मंदिर बनाने की कारीगरी को देख वो स्तब्ध रह गया था कि वास्तुकार ने इसे—पर्वत को अंदर ही अंदर काटकर बनाया था! मनु एक दरबार के द्वार पर खड़ा था, इतने बड़े भवन में उसने इससे पहले कभी कदम नहीं रखा था। और यह काले पर्वत का विकराल उदर था।

मनु को मंदिर की ऊंची दीवारों को देखते हुए, अपना सिर और फिर पूरा बदन भी घुमाना पड़ रहा था, तब भी वो इस विशाल ढांचे को पूरी तरह से नजरों में भर नहीं पा रहा था। उसकी छत इतनी ऊंची थी कि वो कहीं अंधेरे में गुम होती मालूम पड़ रही थी। सैकड़ों मशालों से प्रज्वलित होते उसे मंदिर में अनेकों आकर्षक स्तंभ, वृत-खंड, प्रतिमाएं और प्रार्थना कक्ष बने थे। चट्टान काटकर बनाई गई, सीढ़ियों की श्रृंखला, जो भ्रमित कर देने वाली ऊंचाई तक जाती थी, वो दरबार के एक छोर को दूसरे से जोड़ती थी।

लेकिन मंदिर की सबसे प्रभावशाली और विस्मयकारी आकृति दरबार के केंद्र में स्थापित थी। मनु ने तुरंत, भक्ति और सम्मोहन में, घुटनों के बल गिरकर अपने हाथ जोड़ लिए।

रुद्र या भगवान शिव की एक विशाल प्रतिमा, ध्यानावस्था में, पत्थर के मंदिर में विराजमान थी।

इतने भव्य स्तर के वास्तुशिल्प को न तो मनु ने पहले कभी देखा था, न ही कुछ ऐसा सुना था। रुद्र की जैसी विशाल प्रतिमा उसके सामने थी, उसकी कभी उसने कल्पना तक नहीं की थी। उसके लिए यह सब किसी अद्भुत और विलक्षण सपने से कम नहीं था। अपने कंधे पर किसी के हाथ को महसूस करके, वो तकरीबन घबरा ही गया था।

‘ऐसा प्रतीत होता है मानो आप साक्षात सृष्टि को ही देख रहे हैं!’ जब मनु ने पीछे मुड़कर देखा तो मत्स्य ने परिहास से कहा।

अकथनीय प्रेम और भक्ति के वशीभूत हो, मनु तुरंत मत्स्य के गले लग गया। अपने आसपास की वैभवता से वो अभिभूत हो गया था, और मत्स्य के कंधे उसे नर्म तकिए का अहसास करा रहे थे। रहस्यमयी मत्स्य उसके इस भाव से हैरान रह गया, लेकिन खुशी से हंसते हुए, उसने विवास्वन और संजना के पुत्र को मजबूती से बांहों में भर लिया। कहना मुश्किल था कि किसे किसकी अधिक जरूरत थी। शायद दिव्यता अपने भक्त से अधिक महान नहीं होती है। एक के

बिना दूसरे का अस्तित्व ही नहीं होता।

‘ये कौन सी जगह है, ओ मत्स्य?’ मनु ने स्वयं को नियंत्रित कर पूछा।

वहां की जबरदस्त, रहस्यमयी सुंदरता को सराहते हुए, मत्स्य ने कुछ कदम बढ़ाए।

‘ये इस ग्रह के सर्वाधिक बहुमूल्य रहस्य का संरक्षण-गृह है, मनु,’ उसने कहा। ‘पिछले हजार सालों में बना ये अपनी तरह का सातवां मंदिर है। आने वाली सदियों में ऐसे और भी बहुत से बनेंगे। जो रहस्य यहां छिपाया गया है, उसे समय-समय पर स्थानांतरित करना जरूरी है। जिससे भविष्यवाणी में वर्णित दिन तक उसकी रक्षा की जा सके।’

मनु ध्यान से सुन रहा था, तभी उसने गौर किया कि मत्स्य की तरह ही, मछली की खाल जैसे कपड़े पहने और भी महिला व पुरुष उनके आसपास इकट्ठा होने लगे थे। जिस तरह से वो मत्स्य के सामने सिर झुका रहे थे, उससे साफ था कि वो सब उसके अनुयायी थे। वो सभी देखने में सौम्य और दयालु थे, और उनसे समुद्र की गंध आ रही थी। मनु हैरान था।

सैकड़ों मीलों तक वहां कोई समुद्र नहीं था*!*

‘युगों के प्रत्येक चक्र की समाप्ति पर, सृष्टि अपने और धरती की एकमात्र प्रजाति—जो विधाता का प्रतिनिधित्व करती है—के सम्मिलित कार्यों का मूल्यांकन करती है। इसके बाद ही उस प्रक्रिया का निर्धारण होता है, जिसे हम दीर्घायु कहते हैं। कभी-कभी पूर्ण शुद्धिकरण की आवश्यकता होती है, जिसे प्रकृति की अवर्णनीय शक्ति अंजाम देती है। और कभी आंशिक शुद्धि की ही आवश्यकता होती है। अच्छाई की विजय के साथ बुराई का अंत। इसके लिए किसी अवतार का जन्म होता है।’

अब वो रुद्र के चरणों में घेरा बनाकर बैठे थे—मत्स्य, मत्स्य के अनुयायी, पर्वत-संरक्षकों की धर्म-माता और मनु। काले मंदिर और इसकी महत्ता के बारे में मनु के सवालों का जवाब मत्स्य दे रहा था। हालांकि मनु का ध्यान मत्स्य की बातों की तरफ ही था, लेकिन फिर भी वह देख पा रहा था कि मंदिर में दूर के प्रार्थना कक्षों से एक तरह का नर्म नीला प्रकाश निकल रहा था। ये उस पीले-नारंगी रंग के नियमित प्रकाश से भिन्न था जो दूसरी कोठरियों में जलती अनुष्ठानिक अग्नि से निकलता था। एक, दो... तीन... उसने जल्दी से गिना। वहां सात प्रार्थना गुफाओं से नीला प्रकाश निकल रहा था, जो मंदिर की दीवारों और चट्टान से बनी सीढ़ियों पर पड़ रहा था।

‘लेकिन विधाता के पास इस संसार और इसके निवासियों की नियति निर्धारित करने का क्या अधिकार है? किसने विधाता को अधिकार दिया कि वो इस ग्रह के जीवन को उखाड़ फेंके? और इसका निर्णय भी विधाता के ही हाथ में होगा? जिस शुद्धिकरण की आप बात कर रहे हैं, क्या वो उस शक्तिशाली ईश्वर, जिसे हम पूजते हैं, के लिए अशोभनीय नहीं है?’ मनु ने पूछा।

मत्स्य मुस्कुराए और मनु को स्नेह से देखा। उनकी मुस्कान से मनु को अपने पिता, शक्तिशाली विवास्वन पुजारी की स्नेहभरी मुस्कान की याद हो आई।

‘तो आप बहस करके इस पहेली के पीछे छिपा ब्रह्म-ज्ञान खोजना चाहते हो, मनु?’ मत्स्य ने कहा। ‘क्या आपको नहीं लगता कि इस ब्रह्मांड की जटिलता, अच्छाई और बुराई का कानून, कर्म-बंधन का तानाबाना, सृजन और विनाश की ताकतों को एक ही बार में जान पाना असंभव है?’

‘हां, बिल्कुल मत्स्य। मैं समझता हूं कि मुनि और संन्यासी ब्रह्मांडीय कार्यविधि को समझने के लिए, अपना पूरा जीवन तपस्या में बिता देते हैं, और हम अभी यहीं, इस बारे में चर्चा से नहीं जान सकते। मैं बस यह कह रहा हूं कि मैं इन गहन वेदों और दूसरे ग्रंथों का विद्यार्थी रहा हूं। उनकी विलक्षणता और प्रतिभा के चलते, मेरे लिए यह स्वीकार कर पाना हमेशा मुश्किल रहा कि जिसे हम सर्वशक्तिमान मानते हैं, वो ही मानवता की नियति का निर्धारण करे। क्या यह अनुचित नहीं है?’

मनु के इन शब्दों के बाद सभा में खामोशी छा गई। उनमें अधिकांश की निगाहें अब मत्स्य की ओर जवाब के लिए लगी थीं।

‘तो तुम अपनी प्रजाति के नियति निर्धारण में भूमिका अदा करना चाहते हो, मनु?’ कुछ पलों के विचार-विमर्श के बाद मत्स्य ने कहा। वो अब मुस्कुरा नहीं रहा था।

मनु ने ध्यान दिया कि मत्स्य ने अपनी प्रजाति कहा था, न कि हमारी। उसने इसे जाने दिया। उसने ये भी महसूस किया कि मत्स्य की त्वचा चमक रही थी, उसका नीलापन थोड़ा अधिक गहरा रहा था। उसने इस ख्याल को भी झटक दिया।

‘हां... हां, मुझे लगता है कि मेरे और मेरे लोगों के बारे में निर्णय लेने के लिए, मैं मददगार बनना चाहूंगा।’

मत्स्य अब मनु की आंखों में घूर रहा था, गंभीरता से, लेकिन वो प्रसन्न था। मनु को लगा कि मानो इस रहस्यमयी मत्स्य की नजरें उसके सिर को भेदते हुए, कहीं अनंत क्षितिज में खो रही थीं।

‘तो तैयार हो जाओ, विवास्वन पुजारी के पुत्र!’ अचानक मत्स्य गरजा। ‘तुम्हारा मौका आने को है!’

उसकी आंखें चमक रही थीं और उसने अपना दाहिना हाथ फैलाया, उसकी उंगली मनु की तरफ इशारा कर रही थी, जब उसने ये रक्त जमा देने वाले शब्द कहे।

‘प्रलय... महाप्रलय...!

महाप्रलय... आने वाली है...!’

बनारस, 2017

कांस्टेंटाइन

विद्युत शिकायत कर रहा था। उसके पास इसकी वजह भी थी। और उसके परदादा शायद दुनिया के इकलौते ऐसे इंसान थे जिनसे वो बेझिझक अपनी शंका कह सकता था।

‘आप त्रिकालदर्शी हैं, बाबा, तीनों कालों के बारे में जानने वाले,’ विद्युत ने कहा। ‘मैं नहीं मान सकता कि आप ऐसी अनहोनी को पहले से नहीं भांप पाए। पहली तो कि बाला मुझे धोखा दे रहा था। और दूसरी, कि वो त्रिजट कपालिक बस यूं ही हमारा हाल-चाल जानने यहां नहीं आया था!’

विद्युत महान द्वारका शास्त्री के कमरे में बेचैनी से इधर-उधर चक्कर लगा रहा था, वो साफ तौर पर मठाधीश के सम्मुख अपनी नाराजगी व्यक्त कर रहा था।

‘दामिनी सकुशल दिल्ली पहुंच गई?’ द्वारका शास्त्री ने पूछा।

विद्युत खीझते हुए ग्रैंडमास्टर की तरफ मुड़ा।

‘हां। हां, वो पहुंच गई है!’

‘हम्म...’

विद्युत का सब्र अब छूट रहा था। उसे अपने परदादा से जवाब चाहिए था। उसे

कई सवालों के तुरंत जवाब चाहिए थे।

‘बाबा, आपको बताना ही होगा... आपको मुझसे बात करनी ही होगी!’ विद्युत ने अपने प्यारे परदादा को बेचैनी से देखते हुए कहा।

द्वारका शास्त्री अपनी उंगलियों में रुद्राक्ष माला के मोती फिरा रहे थे। वो अपने नियमित और शक्तिशाली मंत्र हनुमानाष्टक का जाप कर रहे थे। प्रभु हनुमान की आराधना, जो वो पहले भी कई बार मुश्किल परिस्थितियों में करते रहे थे।

वो जानते थे कि अब कुछ रहस्यों से पर्दा उठाने और कुछ सवालों का जवाब देने का समय आ गया था।

‘भगवान राम कौन थे, विद्युत?’

शास्त्री वंश का वंशज, भविष्यवाणी में व्यक्त मसीहा, प्रभावशाली विद्युत अब पहले से शांत था, वो तुलसी की चाय पी रहा था। मठ में रहते हुए अब उसे कुछ दिन बीत चुके थे, और अब अपने एकमात्र जीवित अभिभावक की यह आडंबरहीन लेकिन दबंग कुटीर उसे अपना घर लगने लगी थी।

‘बाबा, सच में? यहां से आप अपनी बात शुरू करना चाहते हैं?’

मठाधीश मुस्कुराए। विद्युत भी हल्के से खिलखिलाया और अपनी चाय को छलकने से बचाया। मठ में पिछले चौबीस घंटे काफी तनावभरे गुजरे थे। शास्त्री पुरुषों के लिए ऐसा कोई हल्का पल इस समय एक बड़ी राहत थी।

‘नहीं, लेकिन मुझे बताओ, विद्युत,’ द्वारका शास्त्री ने जोर दिया, ‘राम कौन थे?’

विद्युत ने अपना चाय का कप कुछ दूर रखा।

‘बाबा, आप सच में मुझसे पूछ रहे हैं कि भगवान राम कौन थे? आप मुझसे मर्यादा-पुरुषोत्तम के बारे में पूछ रहे हैं, नश्वरता का मूर्त रूप, मानवजाति का आदर्श, स्वयं ईश्वर-राजा, राम के बारे में?’

‘मैं तुमसे उनका वर्णन करने या उनका प्रचार करने को नहीं कह रहा। मैं बस जानना चाहता हूं कि राम इंसान थे या भगवान।’

‘वो अवतार थे, बाबा—भगवान विष्णु का मानव शरीर में अवतार। आप उनके बारे में मुझसे कहीं ज्यादा जानते हैं।’

द्वारका शास्त्री ने सिर हिलाकर अपनी बात आगे बढ़ाई, 'अब मुझे बताओ विद्युत, क्या राम ने अपने जीवनकाल में कुछ गलतियां की थीं? वो सच्चरित्र थे, अपने में परिपूर्ण थे... लेकिन क्या उनके फैसलों में कोई गलती नहीं थी?'

'हां, उनसे कुछ गलतियां हुई थीं बाबा। संभवत: धरती के सबसे आदर्श व्यक्ति होने के बावजूद, उनसे भी कुछ गलतियां हुई थीं। लेकिन क्या किसी अवतार के लिए वो सामान्य नहीं है? इस धरती से बुराई का नाश करने के लिए उस सर्वशक्तिमान को मानव के रूप में अवतार लेने की कोई जरूरत नहीं है। अगर हम ईश्वर के पारंपरिक या लोकप्रिय रूप की बात करें तो, ईश्वर महज बिजली की कड़क से दुष्टों का सफाया कर सकते हैं! लेकिन व्यापक लक्ष्य से, अवतार की शिक्षा देने और उसके मानवीय संघर्ष का पाठ पढ़ाने के लिए उन्हें इस नश्वर जगत में अवतार के रूप में उतरना पड़ता है। फिर वो चाहे राम हों, कृष्ण हों या फिर किसी भी अन्य धर्म, आस्था के पैगंबर, गुरु या फिर मसीहा ही क्यों न हों। उन सभी ने एक इंसान की तरह ही जीवन जिया, लेकिन फिर भी समस्त मानवजाति पर अपनी विशेष पहचान छोड़कर गए। यहां पूरी चर्चा और जटिल बन जाती है, क्योंकि कुछ लोग मानते हैं कि ये अवतार यही दर्शाने के लिए आए थे कि कैसे नेक काम करते हुए ईश्वर बना जा सकता है! लेकिन जैसा कि मैंने कहा, अभी के लिए यह बहुत ही गहन चर्चा का विषय है।'

'इतने विस्तृत जवाब के लिए धन्यवाद, विद्युत। तुम बिलकुल सही कह रहे हो। दिव्यता या अध्यात्म होने से ही कोई पूरी तरह सर्वोपरि, या सर्वशक्तिमान नहीं बन जाता। राम जानते थे कि स्वर्ण मृग का कोई अस्तित्व ही नहीं होता। लेकिन फिर भी उन्होंने उसका पीछा किया। क्या राम नहीं देख सकते थे कि हिरन की उस सुनहरी खाल के नीचे शैतान छिपा था?'

विद्युत सुन रहा था। अब वह समझ गया था कि उसके बाबा क्या कहने की कोशिश कर रहे थे। 'नियति के रास्ते में कोई नहीं आ सकता। पूर्व-निर्धारित कर्मों के बल पर कुछ घटनाओं का घटनाक्रम सुनिश्चित होता है, जिन्हें कोई भी घटने से नहीं रोक सकता। अगर प्रभु राम से फैसले लेने में गलती हो सकती थी, तो यह नश्वर द्वारका शास्त्री कौन है? मुझे खेद है कि मैं इस सबको भांप नहीं सका, विद्युत। मुझे बुरी ताकत के होने का आभास तो था, लेकिन वो सब किसी गहन पर्दे के पीछे थीं,' मठाधीश ने कहा, वो बहुत व्यथित दिख रहे थे।

विद्युत को अचानक ही अहसास हुआ कि उसने पहले से पछतावे के बोझ तले दबे अपने परदादा को देव-राक्षस मठ में घटित होने वाली घटनाओं को न भांप पाने का दोषी ठहरा दिया था, और उन्हें कैसे अपनी सफाई देनी पड़ी थी।

'कांस्टेंटिनोपल में क्या हुआ था, बाबा?' विद्युत ने पूछा।

उन्होंने मठ के बगीचे में घुमने का निर्णय लिया। यह एक महान मठाधीश की तरफ से, आश्रमवासियों को यह दिखाने का प्रयास भी था कि जल्द ही सब सामान्य हो जाएगा। ग्रैंडमास्टर बीच-बीच में अपने अनुयायियों और उनके परिवार से इस तरह मिलते रहते थे, मुस्कुराकर उनकी तरफ आशीर्वाद स्वरूप हाथ उठा दिया करते। विद्युत चलते हुए खेल-खेल में कुछ बच्चों को गोद में उठा लेता था।

'विद्युत, कांस्टेंटिनोपल में जो हुआ उसने हमेशा के लिए दुनिया को बदल दिया। और यह ठीक कांस्टेंटिनोपल में नहीं हुआ था। यह वहां से लगभग सौ मील दूर, नाइसिया नगर में हुआ था।'

'नाइसिया...?' विद्युत फुसफुसाया। 'मैंने नाइसिया के बारे में सुना है, बाबा। वहीं तो ईसाई पादरियों की महान परिषद हुई थी, कोई चौथी शताब्दी में। वह बहुत ही महत्वपूर्ण घटना थी, क्योंकि इसमें धर्म को मानने वालों के बीच की कई बड़ी बहसों को हमेशा के लिए खत्म कर लिया गया था।'

द्वारका शास्त्री हमेशा की तरह प्रभावित थे।

'तुमने बहुत अच्छी तरह पढ़ाई की है, विद्युत,' ग्रैंडमास्टर ने कहा। 'कार्तिकेय और पूजा को तुम पर बहुत गर्व होता।'

मठाधीश और उनके परपोते ने एक पल के लिए नम आंखों से एक-दूसरे को देखा। पहली बार विद्युत ने अपने परदादा के मुंह से अपने दिवंगत माता-पिता का नाम सुना था।

'धन्यवाद, बाबा। आप आगे बताइए...' विद्युत ने कहा।

'बहुत से लोग नाइसिया की परिषद के बारे में जानते हैं और कि यह ईसाई पादरियों की कांग्रेस थी। लेकिन बहुत ही कम लोगों को पता है कि कांस्टेंटाइन में अगले ही दिन एक और गुप्त सभा आयोजित की गई थी। गुप्त और ऊंचे स्तर के लोग उस दिन जुटे थे, कुछ ऐसी चर्चा के लिए जिसे शांतिप्रिय, समृद्ध और विवाद-मुक्त दुनिया का भविष्य निर्धारित करना था।'

विद्युत ध्यान से सुन रहा था, वो सोच रहा था कि उसके परदादा को नाइसिया परिषद के इस छिपे हुए अध्याय के बारे में कैसे पता था। उसे इसके लिए ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा।

'और उससे भी कम लोगों को पता था कि उनके सैन्य प्रमुखों, उच्च-पादरियों, रोम और मिस्र के कुछ रहस्यमयी व्यक्तियों और धनी व्यापारियों के अलावा वहां एक खास निमंत्रित व्यक्ति भी मौजूद था। वो व्यक्ति जिस पर कांस्टेंटाइन सबसे ज्यादा भरोसा करता था।'

विद्युत के लिए मठाधीश की कही हर बात समझ पाना मुश्किल हो रहा था। नाइसिया? कांस्टेंटाइन? एक सम्राट का गुप्त रहस्य?

ये सब कहां जा रहा है? कांस्टेंटाइन और दुनिया के प्रति उसके नजरिये से मेरा क्या लेना-देना?

द्वारका शास्त्री विद्युत के चेहरे पर दुविधा साफ देख पा रहे थे। वो जानते थे कि अब समय आ गया था, जब आखरी देवता को सब बता दिया जाना चाहिए।

'जो बात लगभग कोई नहीं जानता था वो थी कि नाइसिया में कांस्टेंटाइन का खास मेहमान, हजारों मील दूर पूर्व से यात्रा करके आया था।'

विद्युत की आंखें हैरानी से फैल गई थीं।

'वो और कोई नहीं बल्कि हमारे तेजस्वी पूर्वज, योद्धा-मुनि, अद्वैत शास्त्री थे।'

हड़प्पा, **1700** ईसापूर्व

उसका जघन्य पाप

वचन पूरा करने का समय आ गया था। सुरा ने अपनी बात रखते हुए, ईंट और कांसे के पर्वत को हथियाने में, विवास्वन पुजारी की मदद की थी। उसकी सेना ने निर्माण स्थल पर अपने हजारों प्रखर योद्धाओं के साथ घेराबंदी भी कर ली थी, जिससे पंडित चंद्रधर और प्रियम्वदा उसे दोबारा से हासिल न कर पाएं। इसलिए अब वचन पूरा करने की बारी विवास्वन की थी। अब वो अपना जघन्य पाप करने जा रहा था।

हड़प्पा का भूतपूर्व सूर्य अब सुरा को उन सप्तऋषियों का जीवन भेंट करने वाला था, जिन्हें वो स्वयं कभी ईश्वर की तरह पूजता था।

अपने शूरवीर पुत्र मनु के जीवित होने से अनजान, विवास्वन पुजारी असीम क्रोध में जल रहा था। वो इस दुनिया को वैसी निर्दयता और घृणा दिखाने वाला था, जो पहले कभी नहीं देखी गई थी। और शायद भविष्य में भी कभी न देखी जाए।

वो सरस्वती पुत्रों को मारने की इजाजत देने वाला था। इसके बाद जो तबाही आने वाली थी उसका अनुमान तो विवास्वन जैसा बुद्धिमान व्यक्ति भी नहीं लगा सकता था।

या शायद उस तबाही के बारे में वो जानता था।

वो अंधेरे में अपना रास्ता बनाते हुए, ठंडी नदी में कमर तक डूबकर, खामोशी से सप्तऋषि के गुप्त निवास तक पहुंच रहे थे। वो छोटा सा दल था, जिसमें सुरा के पचास सर्वोत्कृष्ट, निशाचर सैनिक थे। ये राक्षस-राजा का विचार था कि सप्तऋषि के वन और गुफा तक दबे पांव पहुंचा जाए। विवास्वन जानता था कि ये व्यर्थ प्रयास था। सप्तऋषि पहला कदम उठाने से पहले ही उनकी योजना के बारे में जान जाएंगे। लेकिन विवास्वन पुजारी यह भी जानता था कि सप्तऋषि भागने वालों में से नहीं थे। पवित्र सात या तो विशाल वृक्षों को सर्पों में बदलकर अंधेरे में ही अपने हमलावरों को खत्म कर देंगे, या सैकड़ों भेड़ियों को आदेश देकर उनका मांस नुचवा देंगे। विवास्वन को परवाह नहीं थी। उसकी असुर सेना तेजी से वो विशाल टीला बनाने में लगी थी, जो सरस्वती के प्रवाह को मोड़कर, हड़प्पा का विनाश कर देगा।

उसका काम पहले ही हो चुका था। वो तो अपने साथी को दिया, अपना वचन पूरा करने आया था, और फिर अंत में अपने शरीर की यज्ञ में आहुति दे देने वाला था।

अभी-अभी, पिछले कुछ दिनों में इतना कुछ हो जाने के बावजूद भी, महान देवता सबसे अधिक महत्वपूर्ण सबक नहीं सीख पाया था। अभी भी वो योजना बना रहा था, जो उसके मुताबिक पूरी होने वाली थी।

कैसे एक घृणा से भरा दिल और बदले के जहर से दूषित मन यह सोच सकता था कि ब्रह्मांड उसका साथ देगा? कैसे वो स्याह आत्माएं, जो निरस्त्र और मासूमों पर हिंसक हमले करती हैं, उस विधाता का समर्थन चाह सकती हैं? हिंसा को सबसे पहले सजा मिलती है। सबसे अधिक सजा भी।

वे अब वहीं खड़े थे, जहां विवास्वन पुजारी पिछली बार सप्तऋषियों से मिला था। ये ठंडी रात थी और पिछली बार की तरह कोई भी जादुई घटनाएं वहां नहीं घट रही थीं—न तो धारा का मधुर संगीत था और न ही पक्षी चहचहा रहे थे। न तो वहां नदी में पड़े पत्थर खिलखिला रहे थे और न ही घोड़े हिनहिना कर आपस में बात कर रहे थे। वहां बस ठंडा, काला झुटपुटा था।

‘ढूंढो उन्हें!’ सुरा ने आदेश दिया।

राक्षस-राजा के पचास योद्धा अब अपनी घातक तलवार निकालकर प्रत्येक झाड़ी और प्रत्येक झुरमुट को काटने लगे। सुरा स्वयं अपने आप सप्तऋषि की उपस्थिति के किसी भी दूरस्थ प्रमाण की खोज में लग गया। लेकिन कोई परिणाम न निकला। वो कहीं नहीं थे।

जैसे ही सुरा, प्रचंड और उनके आदमी अपनी तलाश रोककर, गुस्से से विवास्वन पुजारी की तरफ मुड़े, तो उन्होंने देखा कि देवता एक ही दिशा में ताक रहा था। जब उन्होंने उसकी नजरों का पीछा किया, तो उन्हें भी दिखाई दिया। वो जो जाने कहां से प्रकट हो गए थे।

सप्तऋषि!

‘वो अपने शरीर में नहीं हैं,’ हड़प्पा के सूर्य ने कहा, उसकी आंखें अभी भी दूर से सप्तऋषि का निरीक्षण कर रही थीं।

सुरा, प्रचंड और उसके आदमियों को समझ नहीं आया, जो विवास्वन ने अभी कहा था। उन्हें सिर्फ इसी बात से मतलब था कि सप्तऋषि उनके सामने थे। वो सावधानी से आगे बढ़े, उनकी कृपाण दिव्य मुनियों पर हमले के लिए तैयार थी। सुरा की सांसें पूर्वानुमान से भारी हो रही थीं। वो अपने और अपने महान साम्राज्य के बीच की आखरी बाधा को आज खत्म कर देने वाला था!

सप्तऋषि अब कुछ ही कदम दूर थे। एक मुनि ठंडी नदी के किनारे पर पालथी लगाए बैठा था। दूसरा उससे आगे की चट्टान पर समाधि में था। एक और निचली चट्टान पर गहरे चिंतन में दिखाई पड़ रहा था, जबकि दूसरा घने पेड़ के नीचे साधना कर रहा था। सभी सातों मुनि एक-दूसरे से अधिक दूर नहीं बैठे थे। वो सभी शांत और बढ़ते हत्यारों से अनजान मालूम पड़ रहे थे।

‘इसका कोई फायदा नहीं है...!’ विवास्वन ने सुरा और प्रचंड से चिल्लाकर कहा। वो अभी भी वहीं खड़ा था, जहां आज रात उसकी नजर पहली बार मुनियों पर पड़ी थी।

जब विवास्वन पुजारी धीरे-धीरे उनकी तरफ बढ़ने लगा, तो सुरा अधीरता से उसकी तरफ मुड़ा।

‘सुरा, उनके शरीर को नुकसान पहुंचाकर कोई फायदा नहीं होगा। वो अब अपने शरीर में नहीं हैं।’

‘तुम क्या बात कर रहे हो, ओ अ-देवता,’ असुरों के राजा ने क्रोध से कहा। ‘वो सब यहां हैं! वो जीवित हैं... लेकिन कसम से, अधिक समय तक जीवित नहीं रहेंगे!’

राक्षस-राजा अपने आदमियों की तरफ मुड़ा और चिल्लाकर उन्हें वो आदेश दिया, जो उसके लिए तो सामान्य था, लेकिन उसे सुनकर विवास्वन पुजारी स्तब्ध रह गया। इसका तो हड़प्पा के देवता ने अनुमान तक नहीं लगाया था।

‘कल सुबह मैं इनकी राख अपने शरीर पर लगाऊंगा,’ सुरा ने कठोर आवाज में, अधिकारपूर्वक आदेश दिया।

‘उन्हें जिंदा जला दो!’

बनारस **2017**

न्यू वर्ल्ड ऑर्डर

‘जब कोई सम्राट अत्यधिक शक्तिशाली और शायद अत्यधिक आत्मकामी हो जाता है, तो वो स्वयं को ईश्वर का हाथ मानने लगता है। वो मानता है कि वो सर्वशक्तिमान हर काम उसके माध्यम से ही कराना चाहता है, कि वो ही भगवान का माध्यम है। अपनी असमय मृत्यु से पहले तक, एलेग्जेंडर को यही लगता था कि वो दिव्य है। मिस्र के राजा रामेसेस द्वितीय ने अपनी विशाल प्रतिमा बनवाई थी, जिससे उसे ईश्वर के समान पूजा जा सके। उसका मानना था कि उसका संबंध रा, सूर्य देवता से था। बाद के मुगल बादशाहों में भी हम यह दीवानगी देखते हैं। उन्होंने स्वयं को जहांपनाह, मतलब दुनिया को शरण देने वाले की उपाधि दी!’ द्वारका शास्त्री ने आश्रम में घूमते हुए समझाया।

विद्युत शांति से, ध्यान लगाकर सुन रहा था... बीच-बीच में वो समर्थन में अपना सिर हिला देता था। वो द्वारका शास्त्री के प्रवाह को बाधित नहीं करना चाहता था।

‘कांस्टेंटाइन भी इससे भिन्न नहीं था। उसने युद्ध के बाद युद्ध करके विशाल सीमाओं पर कब्जा कर लिया। वो स्वयं को साधारण मनुष्यों से ऊपर समझने लगा। उसका मानना था कि सामाजिक और राजनैतिक आचरण की एक पूर्वानुमेय पद्धति होनी चाहिए। क्योंकि वह अपने आधिपत्य में अनेकों छोटे राज्यों को समाहित कर सकता था, इसलिए उसने एक संगठित दुनिया की कल्पना करनी शुरू कर दी।

उसने लोगों के बीच मतभेद के लिए धर्म को प्रमुख कारण माना। उसने समझा कि जबकि सीमाओं और प्रांतों को आपस में मिलाया और बलपूर्वक उन्हें संगठित भी किया जा सकता है, लेकिन आस्था और धर्म के मामले में ये संभव नहीं था। कांस्टेंटाइन रोमन साम्राज्य की शक्ति और निष्ठुरता के बावजूद, ईसाइयत के उदय को लेकर सजग था। तो संगठित दुनिया के अपने सपने को पूरा करने के लिए, उसने धर्म के साथ ही शुरुआत करने का निर्णय लिया।’

‘इससे मुझे मुगल बादशाह अकबर की याद आई, बाबा,’ विद्युत ने जवाब दिया। ‘यहां तक कि अकबर ने भी अपने विशाल साम्राज्य में शांति और

परस्पर सोहार्द लाने के लिए, किसी भी एक धर्म की श्रेष्ठता से इंकार कर दिया था और सभी धर्मों को बराबरी का दर्जा दिया था। उसने तो एक नए धर्म की भी शुरुआत की थी, जिसे दीन-ए-इलाही कहा गया।'

'तुम सही कह रहे हो। लेकिन दोनों में एक मुख्य अंतर है। अकबर ने किसी पर भी अपना नया स्थापित धर्म मानने के लिए दबाव नहीं डाला था। उसने कभी बल का प्रयोग नहीं किया था। न ही किसी साजिश का। लेकिन कांस्टेंटाइन के मामले में ऐसा नहीं था। पहले तो वो नाइसिया की पहली औपचारिक परिषद में ईसाइयत के दो धड़ों को एक साथ ले आया। यह उसके लिए आसान कार्य था। उस परिषद की आड़ में उसने हमारी प्रजाति के इतिहास के सबसे महत्वाकांक्षी राजनैतिक-धार्मिक अभियान को प्रमाणित किया। उसने न्यू वर्ल्ड ऑर्डर को स्थापित करने के लिए एक खतरनाक और अवास्तविक अभियान शुरू कर दिया।'

अब वो वापस ग्रैंडमास्टर की कुटीर में लौट आए थे। यद्यपि 108 वर्षीय बुजुर्ग और देव-राक्षस मठ के सर्वेसर्वा की सेहत में उल्लेखनीय रूप से सुधार हुआ था, लेकिन उनमें अभी भी कमजोरी थी। अपनी चर्चा फिर से शुरू करने से पहले, उन्होंने अपने शाही बिस्तर पर कुछ देर आराम किया।

'कांस्टेंटाइन में बेशक दूरदृष्टी थी, और उसका उद्देश्य भी भला था। सबसे महत्वपूर्ण, वो पिछले सैकड़ों सालों के, उन कुछ चुनिंदा लोगों में से था जो काले मंदिर के रहस्य में शामिल था। अपनी समझ से वो 'ईश्वर का कार्य' करना चाहता था, और उसने स्वयं को भगवान का प्रतिनिधि घोषित कर लिया था!'

विद्युत ने द्वारका शास्त्री की पूरी बात नहीं सुनी। काले मंदिर के नाम ने उसे दोबारा चौंका दिया था।

'बाबा, इससे पहले कि आप आगे बढ़ें, आपको मुझे बताना होगा कि ये काला मंदिर क्या है! उस दिन घाट पर बलवंत दादा ने भी इसका जिक्र किया था। उन्होंने कहा था कि नैना काले मंदिर के संपर्क में रहने के लिए सेटेलाईट फोन रखती है। फिर रोमी भी पोटेशियम साइनाइड खाने से पहले, इसके बारे में कुछ बड़बड़ा रहा था। अब आप भी इससे जुड़े किसी रहस्य का जिक्र कर रहे हैं, जो सैकड़ों सालों से रहस्य बना रहा है। बाबा, काला मंदिर क्या है? यह हमसे कैसे जुड़ा है? इसमें किस रहस्य को छिपाया गया है?'

'काले मंदिर ने अपने दिल में मानवजाति की आखरी उम्मीद छिपाई हुई है। लेकिन धैर्य रखो, विद्युत। अगर मैंने अब तक तुम्हें इसके बारे में कुछ नहीं

बताया है, तो इसका एक कारण है। अबसे सात दिन बाद तुम न सिर्फ काले मंदिर के रहस्य के बारे में जान जाओगे, बल्कि तुम ही वो हो, जिसे इसकी रक्षा के लिए चुना गया है। तुम ही हम सबकी मुक्ति तक इसकी रक्षा करोगे। और यहां बात सिर्फ मठवासियों की ही नहीं है। न ही सिर्फ पवित्र नगरी काशी के लोगों की। बल्कि वो राज इस ग्रह के सभी प्राणियों से जुड़ा है, विद्युत।'

'अपने अनुचित आत्मविश्वास या शायद घमंड की वजह से, कांस्टेंटाइन ये नहीं समझ सका कि जिस भी अवधारणा को महिला व पुरुष अपने कंधों का बोझ न मानकर, उसे मूल्यवान मानें, वही अवधारणा महान हो सकती थी। स्वयं धन, सत्ता और विजय से तृप्त होने के बाद, वो ऐसा ढांचा तैयार करने की कोशिश कर रहा था, जो शायद कुछ ही सालों तक टिक पाता अगर कोई भी उसकी महान योजनाओं का हिस्सा नहीं बनता। कोई शासक इतना भोला कैसे हो सकता था, जिसने इतने लंबे समय तक शासन किया हो!' द्वारका शास्त्री ने कहा।

'यकीनन वो बेवकूफी भरा प्रयास होगा, बाबा। लेकिन उसकी महान योजना आखिर थी क्या? न्यू वर्ल्ड ऑर्डर आखिर था क्या?' विद्युत ने पूछा वो अब मठाधीश के बिस्तर के सामने ही बैठा था।

'था? क्या तुमने 'था' कहा, विद्युत?' द्वारका शास्त्री ने पूछा, उनकी भंवें हैरानी से चढ़ गई थीं और उनके शब्दों में अपने परपोते के लिए हल्की सी झिड़क थी। 'न्यू वर्ल्ड ऑर्डर पूरी दुनिया में भूत की परछाईं की तरह फैल रहा है, और अब ये पहले से भी कहीं अधिक ताकतवर है। क्या सारे संकेत इसी तरफ नहीं इशारा कर रहे हैं, विद्युत? क्या इसी के बारे में मैंने तुम्हें उस बदकिस्मत दिन नहीं बताया था, जब तुम घाट पर रोमी परेरा से मिले थे?'

विद्युत समझ गया था कि उससे कोई गलती हो गई थी। लेकिन इससे अधिक वो जान गया था कि न्यू वर्ल्ड ऑर्डर का नाम लेते समय उसके बाबा कितने संवेदनशील हो जाते थे, और वो बड़ी सावधानी से इस नाम को लेते थे।

'क्षमा चाहता हूं, बाबा। मेरा वो मतलब नहीं था। चूंकि हम कांस्टेंटाइन के समय की बात कर रहे थे, तो मैं जानना चाह रहा था कि उसका भव्य नजरिया क्या था? वो इस ऑर्डर के माध्यम से क्या हासिल करने की कोशिश कर रहा था?'

द्वारका शास्त्री ने हां में सिर हिलाया और अपनी बात आगे बढ़ाई।

'वो एक विचित्र, आदर्शवादी सपना था। न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के माध्यम से

कांस्टेंटाइन दुनिया का पुनर्निर्माण करना चाहता था, जिसमें कोई सीमा नहीं हो, नफरत नहीं हो, भेदभाव नहीं हो और मनुष्यों के बीच में नस्ल, देश, आस्था, वर्ण या वित्त को लेकर असंतुलन न हो। अपने जीवन के महान और विजयी पलों में जो कुछ वर्ष उसने शांति में गुजारे, उनमें उसके विशाल साम्राज्य के लोग एक ही कानून, एक सम्राट, एक संस्कृति, एक अर्थव्यवस्था और सबसे महत्वपूर्ण एक धर्म के अधीन जिए थे। भगवान का काम करने और अपने जाने के बाद दुनिया को बेहतर जगह बनाने की अपनी चाह में, कांस्टेंटाइन ने दुनिया के सबसे बड़े भूमिगत संगठन की नींव रखी। एक ताकतवर भ्रातृ-संघ जो कांस्टेंटाइन के एक दुनिया के सपने को पूरा करने के लिए मानवता को चूर-चूर कर देगा—एक सरकार, एक अर्थव्यवस्था, एक मुद्रा, एक सेना, एक संस्कृति और एक भगवान!'

दुनिया का सबसे बेहूदा नजरिया था, जो विद्युत ने सुना था। किसी और ने अगर ऐसी चीज करने की कोशिश भी की होती, तो वो या तो पागल कहलाता या सुपरमैन।

महान कांस्टेंटाइन में इन दोनों का थोड़ा-थोड़ा अंश मिलता था।

'कोई इतनी असंगत चीज कैसे सोच सकता था, बाबा? ये तो भारत जैसे महान देश के लिए भी दुसाध्य कार्य है कि इसके सारे निवासियों को एक रंग से रंग दिया जाए, जैसा की कई राजनैतिक अलगाववादी करने की कोशिश भी करते हैं। लेकिन अगर हम राजनीति को हटा भी दें, तो कैसे इंसानों को कृत्रिम एकरूपता में बांधा जा सकता है, जबकि वो नैसर्गिक रूप से एक-दूसरे से अलग हैं? कैसे स्वतंत्र इच्छा, आजादी, विकल्पों, प्राथमिकता, महत्वाकांक्षा और वफादारी के साथ स्थाई रूप से समझौता किया जा सकता है? लोगों को भेड़ों की तरह कैसे हांका जा सकता है?' विद्युत ने खीझते हुए पूछा। उसे यह बहुत ही वाहियात लग रहा था कि कैसे एक सम्राट ने न सिर्फ अपने समय के लोगों की किस्मत को नियंत्रित करने की धृष्टता की, बल्कि उसने आगे की पीढ़ियों के लिए यही एकरूपता स्थापित करने की योजना बनाई!

द्वारका शास्त्री बिना विद्युत को देखे, उदासीनता से मुस्कुरा रहे थे। वो खुश थे कि उनका परपोता भी मध्ययुगीन पागलपन पर उतना ही नाराज है, जितना वो आज तक भी हैं।

'भ्रातृ-संघ के पहले समूह को, जिसे कांस्टेंटाइन ने नाइसिया में संगठित किया था, उसने स्पष्ट निर्देश दिए थे। उसके चुने हुए पहले बीस 'भाइयों' को एक-दुनिया, एक-सरकार के उसके लक्ष्य को पूरा करने के लिए लगातार, बिना रुके और बेरहमी से काम करना था।'

‘अब ये क्या है, बाबा? एक-दुनिया, एक-सरकार...? इस तरह के पागलपन को पूरा करने के लिए उन उन्मादियों ने किस चीज की कल्पना की होगी?’

ग्रैंडमास्टर विद्युत को देखने के लिए मुड़े और मुस्कुराए। लेकिन विद्युत देख सकता था कि उनकी आंखों में कोई खुशी नहीं थी।

द्वारका शास्त्री ने अब विद्युत से कुछ ऐसा पूछा, जो वो लंबे समय से पूछना चाह रहे थे।

‘क्या तुमने नेस्टोरियन क्रिश्चियन के बारे में सुना है, विद्युत?

और नाइट्स टेम्पलर के बारे में?’

हड़प्पा के पूर्व में, **1700** ईसापूर्व

प्रलय

‘आपके पिता सिर्फ काले मंदिर के अस्तित्व और इसकी जगह के बारे में जानते ही नहीं थे, मनु। वो तो इसके प्रमुख संरक्षकों में से एक थे।’

मनु अब मत्स्य के साथ उस विशाल मंदिर में घूम रहा था। नीली रंगत वाला मछली-पुरुष, जिसे बहुत कम समय में मनु बहुत स्नेह करने लगा था, उसने विवास्वन पुजारी के पुत्र, मनु के साथ घूमने का निवेदन किया था। अब जबकि वो विशाल मंदिर के ऊंचे गलियारों में से गुजर रहे थे, जटिलता से बने हुए प्रार्थना मंडप में साधना में लीन बैठे हुए योगियों को देख रहे थे, लेकिन फिर भी मनु के मन से दो बातें निकल नहीं पा रही थीं। पहली, जो अभी कुछ देर पहले, मत्स्य ने अनजान और भयानक लहजे में, आने वाली प्रलय के बारे में बताया था। दूसरी, सात प्रार्थना कक्ष, जो काले पर्वत की सीधी ढलान पर खोद कर बनाए गए थे, उनसे निकलता नीला प्रकाश।

‘उन्होंने कभी इस मंदिर के बारे में कुछ नहीं कहा, ओ मत्स्य,’ मनु ने जवाब दिया। ‘न कभी मां ने कुछ बताया।’

माता-पिता का जिक्र आने पर, एक पल को मनु का गला भर आया, लेकिन फिर उसने स्वयं को संभाल लिया।

‘लेकिन जब मैं रण क्षेत्र से मां को लेकर निकल रहा था, तो सोमदत्त काका ने

इसके बारे में चिल्लाकर कुछ कहा था, और बेहोश हालत में भी, घुड़सवारी करते वक्त, यही बात मेरे मन में अटक गई थी। उन्होंने मुझसे कहा था कि पूर्व दिशा की तरफ चला जाऊं, वहीं मुझे काला मंदिर मिलेगा।'

मत्स्य ने कुछ पल के लिए रुककर, मनु को देखा।

'आपको पता है न कि इस मंदिर को तलाशना आपकी नियति थी, है न मनु? उसी तरह इस मंदिर को भी आपका ही इंतजार था! और अब से, आप ही इसके मुख्य पुजारी, स्वामी और संरक्षक होंगे।'

ये सुन मनु भावुक हो गया। काला मंदिर, इसमें रखी भव्य, चमत्कृत शिव की प्रतिमा, आकर्षक नक्काशी, विशाल गुफा-मंदिर, भीषण बाढ़ की भविष्यवाणी, प्रज्वलित नीली गुफाएं... और अब मत्स्य की यह घोषणा।

उसने गहरी सांस ली, अपना कमरबंद खोला और अपनी तलवार बाहर खींच ली। उसे अपने पास में रखकर वो चट्टान से बनी एक सीढ़ी पर बैठ गया।

उसने बैठकर ऊपर देखा, तो पाया मत्स्य उसे शरारती, प्रसन्नता भरी नजरों से देख रहा था! मछली प्रजाति का अनोखा नेता अब नरमाई से हंस रहा था।

'क्याआअ...?' मनु ने कुछ शर्मिंदा होते हुए पूछा। वो स्वयं भी अब हंसने लगा था, लेकिन नहीं समझ पा रहा था कि मत्स्य को कौन सी बात इतनी हास्यास्पद लगी थी।

'आप बहुत नाटकीय हैं... अपनी तलवार बाहर निकालना, फिर सीढ़ियों पर ढह जाना... हाहाहा' मत्स्य ने ठहाका लगाते हुए कहा। 'और... और... तुम्हारी आह भरना तो... हे भगवान!' मत्स्य अब इतनी जोर से हंस रहा था कि उसकी हंसी से पूरा पर्वत गूंज रहा था।

इससे पहले कि मनु विरोध में कुछ कह पाता, उसने जो देखा, उससे उसके रोंगटे खड़े हो गए। मत्स्य की हंसी की गूंज विशाल मंदिर के प्रत्येक वृत्त-खंड और ऊंची दीवार से सुनाई पड़कर चारों ओर फैल रही थी। पल भर में ही मनु को लगा मानो वो पूरा पर्वत हंस रहा था। ना... सिर्फ समग्र पर्वत ही नहीं, बल्कि पूरा ब्रह्मांड हंस रहा था। गिरता हुआ प्रत्येक पत्ता, प्रत्येक पत्थर, प्रत्येक पक्षी, प्रत्येक पशु, लताओं का प्रत्येक गुच्छ, हवा का प्रत्येक कण, रौशनी की प्रत्येक किरण, प्रत्येक नवजात शिशु... समग्र सृष्टि ही मानो मत्स्य की खिलखिलाहट में शामिल हो गई थी।

बस इतना ही।

मनु धीरे से उठकर मत्स्य की तरफ बढ़ा, जो अब खुशी से नम हो आई अपनी

आंखों को पोंछ रहा था। मनु उसके चरणों में गिर पड़ा।

‘आप विष्णु हैं, हैं न? आप स्वयं भगवान विष्णु के अतिरिक्त कोई और हो ही नहीं सकते, ओ मत्स्य...!’ मनु ने एक स्वर में कहा।

मत्स्य मुस्कुराया, लेकिन उसकी आंखों से कभी भी आंसू बह सकते थे। उसने झुककर मनु को उठाया।

‘आप विष्णु हैं...’ मनु फुसफुसाया, आंखों में असीम भक्ति लिए वो मत्स्य की आंखों में देख रहा था। इस बार वो सवाल नहीं पूछ रहा था।

‘ओ महान राजा, मैं विष्णु नहीं हूं,’ मत्स्य ने जवाब दिया।

वो नहीं था।

वैसे ही जैसे राम और कृष्ण भी यथार्थत: विष्णु नहीं थे।

‘विवास्वन पुजारी, सोमदत्त और यहां तक कि पंडित चंद्रधर भी उन कुछ लोगों में से थे, जिन्हें काले मंदिर के अस्तित्व के बारे में पता था,’ मत्स्य ने कहा। ‘वो सब जानते थे कि इस पवित्र मंदिर में एक ऐसा रहस्य छिपा है, जो मानव जाति के भविष्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन सिर्फ आपके पिता, शक्तिशाली विवास्वन पुजारी और उनकी पत्नी संजना, ही इसके वास्तविक रहस्य को जानते थे।’

मनु को मत्स्य का हमेशा मानवता को तुम्हारी प्रजाति या मानव जाति कहना खटकता था। उसके लहजे में कभी घमंड या पूर्वधारणा नहीं होती थी। उसकी आवाज में कभी दूरी का भी अहसास नहीं होता था। लेकिन उसकी बात से अहसास होता था कि वो इस दुनिया से बाहर का था।

‘ओ महान मत्स्य, इस मंदिर में कौन सा रहस्य छिपा है? सोमदत्त जी ने मुझे इस तरफ क्यों भेजा था? क्या वो जानते थे कि यहां आप मिलेंगे? क्या वो जानते थे कि काले परिधान वाले इसे पर्वत के संरक्षक मुझे बचा लेंगे? और आपका क्या मतलब था जब आपने अचानक भीषण बाढ़ आने की घोषणा कर दी थी? हम सब देख सकते हैं कि हड़प्पा के आसपास भारी वर्षा हो रही है। सरस्वती भी उठान पर है। लेकिन हम हमेशा से मानते आए हैं कि दिव्य सप्तऋषि उनकी संतान हैं और वो ऐसा कुछ नहीं करेंगी, जिससे उन्हें नुकसान पहुंचे। इतने सवाल पूछने के लिए क्षमा चाहता हूं मत्स्य, लेकिन अपने शब्दों से मुझे ज्ञान दीजिए।’ मनु जानता था कि उसने एक साथ ही मछली-पुरुष पर सवालों की झड़ी लगा दी थी, लेकिन उसके पास कोई विकल्प नहीं था।

मत्स्य की आंखें गहराई से मनु को देख रही थीं। लेकिन इससे पहले कि वो जवाब देता, उसने झुककर, सीपियों से बना घड़ा उठाया।

‘मनु, क्या आप मेरे लिए थोड़ा पानी लाएंगे?’ मत्स्य ने मंदिर के कोने पर बनी नदी की तरफ इशारा करते हुए कहा। ‘मेरे लोग प्यासे हैं।’

मनु ने तुरंत आदेश का पालन किया। मत्स्य की सेवा का छोटा सा अवसर भी, उसे बहुत खुशी देता था।

अब वे काले पर्वत के बाहर, धूल भरे समतल पर टहल रहे थे। आसमान में घने बादल घिर आए थे। प्रकृति का विकराल रूप, जो हड़प्पा और उसके आसपास की जगहों पर छाया हुआ था, अब दूर-दराज इलाकों में भी अपने पांव पसारने लगा था। मनु और मत्स्य ने रुककर, ऊपर आसमान में देखा। बहुत से प्रवासी पक्षी, आसमान में गरजते बादलों और चमकती बिजली के बीच, विभिन्न संरचनाएं बनाते हुए उड़ रहे थे।

‘सोमदत्त इस रहस्यमयी मंदिर का उद्देश्य नहीं जानता था, लेकिन वह जानता था कि पर्वत-संरक्षक न्याय के लिए लड़ने वाले योद्धा थे, और वो शिव और हड़प्पा के सूर्य—आपके महान पिता के वफादार थे। उसने आपको इस दिशा में भेजा क्योंकि वो जानता था कि यहीं आपके बचने की इकलौती उम्मीद थी,’ मत्स्य ने असमय आते प्रवासी पक्षियों को देखते हुए कहा।

‘ये लोग मेरे पिता के वफादार थे? दूर तक फैला उनका प्रभाव मेरे लिए नया नहीं था। लेकिन फिर भी वो बिना किसी दोस्त के यूं मरे कि उनके अंतिम सफर में कोई उन्हें कंधा तक देने वाला न था,’ मनु ने कड़वाहट से कहा।

मत्स्य मनु की तरफ मुड़ा और उसके कंधे पर अपनी बांह रखी।

‘आपके पिता का प्रभाव आपकी कल्पना से भी अधिक होगा, मनु। किस्मत का पहिया तो अभी बस घूमना शुरू हुआ है। लेकिन अभी हमें दूसरे महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान देना होगा।’

‘और वो मुद्दे क्या हैं, ओ महान मत्स्य?’

इस बार मछली-पुरुष ने आह भरी। उसकी नजरें दो खड़ी चट्टानों के बीच से दिखते क्षितिज पर टिकी थीं।

‘भीषण बाढ़ सच में आने वाली है, मनु। इतनी विनाशकारी बाढ़ जिसके बारे में न तो मनुष्य ने कभी सुना है, और न ही उसकी कल्पना की है। ऐसी बाढ़

जल्द ही आने वाली है।'

मनु ने ध्यान दिया कि मत्स्य की त्योरियां चढ़ गई थीं। पहली बार उसने इस रहस्यमयी इंसान के उज्ज्वल नीले चेहरे पर उदासी और निराशा देखी थी।

'मैं नहीं जानता था कि आप भविष्यवक्ता भी हैं, मत्स्य,' मनु ने कहा।

मत्स्य ने उसे हैरानी से देखा।

'लेकिन मैं भविष्यवक्ता नहीं हूं, मनु।'

'आप नहीं हैं? तो अगर आप ज्योतिषी नहीं हैं तो आने वाली बाढ़ के बारे में आपको कैसे पता है?'

'वह महत्वपूर्ण नहीं है, मनु। जरूरी है कि आपको मुझ पर भरोसा है या नहीं,' मत्स्य ने कहा। वह सीधा मनु को देख रहा था।

मनु ने मुस्कुराकर कहा, 'आप पर भरोसा न करने का कोई कारण ही नहीं, ओ मत्स्य। हम इन सब लोगों को एकत्र करके ऊंचे इलाकों की ओर बढ़ जाएंगे। इस तरह हम इस बाढ़ को पराजित कर देंगे।'

मत्स्य ने असहमति से सिर हिलाया। मनु के भोले जवाब से वो कुछ परेशान हो गया था।

'क्या आप सुन नहीं रहे हैं, मनु? धरती का कोई पर्वत इतना बड़ा नहीं है जो इस भीषण बाढ़ से बच सके। इस बाढ़ से बचा नहीं जा सकता है!'

मनु अब स्वयं से थोड़ा चिढ़ गया था। हालांकि प्रकृति का प्रवाह बहुत सख्त, बेरहम हो सकता था, लेकिन ऐसी क्या वजह थी कि मनुष्य एक और बाढ़ का सामना नहीं कर सकता था, इससे पहले भी तो अनेकों विनाशकारी बाढ़ का सामना किया गया था न? मानवजाति ने हमेशा ही कोई न कोई रास्ता निकाल लिया है!

'लेकिन आप ऐसा क्यों कह रहे हैं, मत्स्य? हम इस बाढ़ का सामना क्यों नहीं कर सकते?'

इस पल में मत्स्य ने अपना नियंत्रण खो दिया, और वो मनु पर चिल्लाया, जिससे उसे स्थिति की गंभीरता समझ आ सके।

'क्योंकि यह कोई साधारण बाढ़ नहीं है, ओ संजना पुत्र। यह पृथ्वी और इसके वासियों को समाप्त कर देगी। मनुष्य, पशु, वनस्पति, कीट कोई भी इससे नहीं बच पाएगा।

क्योंकि जो आने वाला है वो हमारे प्राचीन ग्रंथों में लिखा वो अंतिम वाक्य है।

जो आने वाला है वो और कुछ नहीं बल्कि स्वयं प्रलय है—दुनिया की समाप्ति!'

बनारस, 2017

स्याह भ्रातृ-संघ

देर रात हो चुकी थी। घड़ी में साढ़े ग्यारह बज रहे थे, और ग्रैंडमास्टर के सोने का समय भी काफी पहले निकल चुका था। लेकिन द्वारका शास्त्री और विद्युत बात खत्म करने के मूड में नहीं थे। उनकी बातें इस समय दुनिया की किसी भी चीज से अधिक महत्वपूर्ण थीं।

'कांस्टेंटाइन ने रहस्यमयी भ्रातृ-संघ को सशक्त किया और निर्णय लिया कि ईसाइयत ही नए संसार का धर्म बनेगा। मुझे नहीं लगता कि उसने इस बारे में अधिक परवाह की थी किस धर्म को सर्वोपरि माना जाए। उसका प्रयोजन तो सिर्फ यह सुनिश्चित करना था कि बस एक धर्म को माना जाए। ये भी माना जा सकता है कि उस समय तक वो ईसाइयत में रम गया और क्योंकि वो उस समय का सबसे तेजी से बढ़ता हुआ धर्म भी था, उसने उसे अपना लिया। लेकिन इस अवधारणा को लागू करने के तरीके विनाशकारी थे। उसने अपने नए भ्रातृ-संघ को मात्र इस नए धर्म को समर्थन देने का आदेश ही नहीं दिया, बल्कि उन्हें आदेश था कि किसी भी माध्यम से उन्हें इसे फैलाना था। फिर इसके लिए युद्ध करना होता, तो उन्हें युद्ध की अनुमति मिल जाती। अगर इसके लिए धर्म परिवर्तन करवाना होता, तो उसके लिए भी मिशनरियों की फौज इकट्ठा कर दी गई। अपने काल्पनिक दृष्टिकोण को लागू करने के लिए, धर्म ही उनका प्रमुख दांव था। राजनीति और अर्थव्यवस्था उसके पीछे थे।'

'तो क्या ईसाइयत एक आध्यात्मिक आदर्श होने के बजाय, हमेशा से ही एक राजनीतिक हथियार था, बाबा?' विद्युत ने पूछा।

'बिलकुल नहीं, विद्युत। ईसाइयत हमेशा से एक विनम्र और उदार धर्म रहा है। मैंने पुराने और नए टेस्टामेंट को पढ़ा है, और इसके पीछे की महान कहानी, ईसा मसीह की कहानी को भी समझा है। इसके आधार में प्रेम, समानता, क्षमा, भक्ति और आत्म-त्याग के अलावा और कुछ नहीं है। जीसस ने तो स्वयं जगत की पीड़ा को अपने ऊपर ले लिया था। तो ऐसा धर्म कैसे राजनीति या साम्राज्यवादी उद्देश्य लिए हो सकता है? इससे भी अधिक, ईसाइयत की उदारता और करुणा तो इसके द्वारा चलाई जाने वाली अनेकों परोपकारी संगठनों में देखी जा सकती है। दूर क्यों जाना? भारत में ही अनेकों ऐसे ईसाई

संस्थान हैं जो बिना थके गरीबों के स्वास्थ्य, शिक्षा, सफाई इत्यादि के लिए काम कर रहे हैं। तो अगर कोई भी धर्म की तरफ उंगली उठाता है, तो ये गलत होगा।'

विद्युत ने पूर्ण सहमति में सिर हिलाया। ये उसके लिए बहुत संतोषजनक था कि उसके रूढ़िवादी ब्राह्मण परदादा, दूसरे धर्मों और आस्था के अस्तित्व के प्रति भी इतने जागरूक और सचेत हैं।

'लेकिन फिर संतुलन कहां गड़बड़ा गया, बाबा? हम सब 11वीं और 13वीं सदी के मध्य में, लैटिन चर्च द्वारा कराए गए हिंसक हमलों के बारे में जानते हैं। उस समय के धर्मयुद्ध कहे जाने वाले अतिक्रमण के बाद, 'विधर्मियों' को ढूंढकर, उन्हें जिंदा जला देना एक सामान्य सजा थी। इन धर्म प्रचार अभियानों के साथ होने वाली हिंसा और क्रूरता के बारे में पढ़कर, किसी की भी रीढ़ में सिहरन हो जाती है। अगर ईसाइयत सिर्फ प्रेम का संदेश देता है, तो ये सब आखिर क्यों हुआ?'

'ये ठीक उसी जगह गलत हुआ, विद्युत। इंसान के लालच के सामने। धन और सत्ता के लालच के सामने सब धरा रह जाता है।'

दरवाजे पर हुई दस्तक से उनकी बातचीत रुकी।

'हम्म...' द्वारका शास्त्री ने अपनी विशिष्ट शैली में जवाब दिया।

दरवाजा खुला और नैना अंदर आई। विद्युत ने ध्यान दिया कि रात के इस समय भी वो फूलों की तरह तरोताजा नजर आ रही थी। जब वो विद्युत के पास से गुजरकर ग्रैंडमास्टर के बिस्तर की तरफ बढ़ी, तो उसमें से घास की भीनी महक आई।

नैना ने मठाधीश के बिस्तर के पास रखी मेज पर, हल्दी वाले गर्म दूध का गिलास रखा।

'धन्यवाद, बेटा,' द्वारका शास्त्री ने कहा। 'लेकिन तुमने क्यों परेशानी उठाई?'

'सारे सेवक आराम करने चले गए हैं, बाबा। आपने इतने समय से कुछ खाया नहीं था,' नैना ने मुस्कुराते हुए कहा। वो स्नेही बेटी के लाड़ से बुजुर्ग से बात कर रही थी। द्वारका शास्त्री ने ही उसका पालन-पोषण किया था।

विद्युत नैना से नजरें नहीं मिला पा रहा था। उसने उस पर सिर्फ स्वयं से ही नहीं, बल्कि पूरे देव-राक्षस मठ से धोखा करने का आरोप लगाया था... उसके

अपने घर से धोखा करने का। और अभी तक उसे माफी मांगने का भी समय नहीं मिल पाया था।

‘शुभ रात्रि, बाबा,’ नैना ने कहा।

नैना ने कमरे से निकलकर, दरवाजा बंद कर दिया। विद्युत ने देखा था कि नैना ने एक बार भी उसकी तरफ नजर नहीं उठाई थी।

मुझे उससे मिलकर, अपने किए की माफी मांगनी होगी।

हे भगवान, वो कितनी सुंदर है!

‘22 मई, 337 ईस्वी को, उसकी मौत के तुरंत बाद ही, उसका गुप्त भ्रातृ-संघ एक भयानक दानव में बदल गया। इसमें इस समय के कुछ धनी और सबसे शक्तिशाली व्यक्ति भी जुड़े थे, और इस वजह से भ्रातृ-संघ का प्रभाव बहुत ही तेजी से बढ़ा। साथ ही अपने आदर्श और लक्ष्य में भी यह विकृत होता चला गया। मानवजाति के कल्याण के लिए संगठित होने वाला न्यू वर्ल्ड ऑर्डर जल्दी ही मानवजाति को नियंत्रित करने वाला बन गया—भ्रातृ-संघ की नजर में यह उनके प्राचीन लक्ष्य से जरा ही भिन्न था।

भ्रातृ-संघ ने सबसे पहले अपने ही धर्म में उठने वाले असंतोष और विरोध के स्वरों को दबाया। 431 ईस्वी में, बाइजेंटाइन के सम्राट थियोडॉसियस द्वितीय ने इफेसस (वर्तमान तुर्की में सेल्कुक के करीब) में एक और पवित्र परिषद बुलाई, जिसने नेस्टोरियन क्रिश्चियन के महत्वपूर्ण संप्रदाय को विधर्मी घोषित कर दिया। परिषद में कोई नहीं जानता था कि थियोडॉसियस गुप्त भ्रातृ-संघ का ही सदस्य था। बल्कि वह संघ का प्रमुख कमांडर था,’ द्वारका शास्त्री ने बताया।

विद्युत अपने परदादा की ऐतिहासिक जानकारी से चकित था। इससे भी अधिक, अब भ्रातृ-संघ का सच जानने की उसकी जिज्ञासा रुक नहीं पा रही थी।

‘आप बताते रहिए, बाबा। उसके बाद क्या हुआ?’

द्वारका शास्त्री ने गर्म दूध से कुछ घूंट भरे, अपनी आंखें बंद करके कुछ पल सोचा और फिर बोलना शुरू किया। वो जानते थे कि उन्हें तकरीबन पंद्रह सौ साल के रक्तिम संघर्ष, कपट, षड्यंत्र, युद्ध, आर्थिक अपराध और नरसंहार का वर्णन कुछ ही घंटों में करना था। इसका अनुक्रम बहुत जटिल था।

‘जैसा कि मैंने कहा, विद्युत, भ्रातृ-संघ के मूल आदर्शों में क्षय बहुत तेजी से हुआ था। उसने जल्द ही धर्म को एकरूपता के मुख्य लक्ष्य से हटा दिया, हालांकि फिर भी वो उसके नकाब के पीछे से ही मानवजाति के इतिहास के सबसे जघन्य पाप करते रहे। फिर वो अधिक प्रबुद्ध, अधिक महत्वाकांक्षी और कई अधिक बेरहम बन गए।’

‘इस भ्रातृ-संघ को किस नाम से पुकारा जाता था, बाबा? या मुझे अपनी भूल सुधारते हुए कहना चाहिए, किस नाम से पुकारा जाता है, बाबा?’

विद्युत तेजी से चीजें सीखता था।

‘अच्छा सवाल है, विद्युत। जब ये सब शुरू हुआ, कोई नहीं जानता था कि भ्रातृ-संघ का क्या नाम था। अद्वैत शास्त्री ने भी मठ के किसी दस्तावेज में इसे दर्ज नहीं किया। लेकिन जल्द ही यह गुप्त सोसाइटी विस्तृत होने लगी और अधिक देशों और द्वीपों में अपना अस्तित्व स्थापित करने लगी। इसके बाद जो हुआ, उसके परिणामस्वरूप यह धार्मिक संगठन, अपने संस्थापक के बिना अपने पैमाने और आकार से बढ़ने लगा।’

‘उनका विभाजन हो गया...’ विद्युत बुदबुदाया। ‘वो आपस में बंट गए, है न बाबा?’

‘हां भी और नहीं भी,’ द्वारका शास्त्री ने जवाब दिया। ‘सटीक क्रम का पता लगाना तो बहुत मुश्किल है, लेकिन सबसे पहले उन्होंने भारी सैन्यीकरण किया। वो इतने ताकतवर थे कि दुनिया में कोई भी उनसे सवाल नहीं कर सकता था कि ईसा का धर्म विशाल सेनाओं को आदेश कैसे दे सकता था—उन्होंने शुरुआत नाइट्स टेम्पलर के साथ की!’

‘वाह...’ हैरानी से विद्युत के मुंह से निकला। उसे नाइट्स टेम्पलर के बारे में पता था।

‘तुम्हारी तरह, बहुत से लोग नाइट्स टेम्पलर के बारे में जानते हैं, विद्युत। लेकिन बहुत कम लोगों को इसकी उत्पत्ति और इसके तथाकथित अंत के इतिहास के बारे में पता है।’

‘मैं उनके बारे में सब कुछ जानना चाहता हूं, बाबा। विशेषकर तब जब वो इस सदियों से चले आ रहे षड्यंत्र का हिस्सा जान पड़ रहे हैं।’

विद्युत ने ध्यान दिया था कि द्वारका शास्त्री ने नाइट्स टेम्पलर के अंत को तथाकथित बताया था।

क्या टेम्पलर अभी भी किसी अनजान और खतरनाक रूप में अस्तित्व में हैं?

‘उन्हें कई नामों से जाना जाता था जैसे टेम्पल ऑफ सोलोमन और ईसा के सिपाही। और टेम्पल ऑफ सोलोमन का ऑर्डर। लेकिन अधिकांशत: उन्हें नाइट्स टेम्पलर या फिर टेम्पलर के नाम से ही जाना जाता था। इसकी शुरुआत में यह कैथोलिक सैन्य अनुशासन था, जिसे 1139 ईस्वी में चर्च का औपचारिक आशीर्वाद प्राप्त हो गया था।

दिल दहला देने वाली जुझारू प्रवृति से दुश्मनों के पसीने छुड़ा देने वाले, टेम्पलर जल्द ही एक जीती जागती किंवदंती बन गए। सफेद अंगरखे और उस पर लाल रंग से बने बड़े से क्रॉस, और उस पर बंधे कवच की वजह से वो मीलों दूर से दिखाई देते, टेम्पलर इतिहास में पहली बार सिर्फ धर्म की स्थापना करने वाली सेना के रूप में नजर आए थे। भारी हथियारों से सुसज्जित यह सेना किसी राजा या रानी को जवाबदेह नहीं थी। आम भाषा में कहा जाए तो ये सेना उच्च पुजारी के आदेशों का पालन करती थी!

पादरियों और सिपाहियों ने साथ में हाथ मिला लिया था। फिर, धार्मिक साम्राज्यवाद कैसे पीछे रह सकता था?

कांस्टेंटाइन की विशाल योजना अब आकार ले रही थी।’

विद्युत ने सिर हिलाकर अपनी बात आगे बढ़ाई, ‘आप बिलकुल सही कह रहे हैं, बाबा। नाइट्स टेम्पलर ने उस धर्मयुद्ध में निर्णायक भूमिका निभाई थी, जिसे उस समय के पादरियों ने पवित्र युद्ध माना था! आज के समय में अगर इन धर्मयुद्धों को सिर्फ धर्म प्रचार के रूप में देखें तो इनका वर्णन अकथनीय और अजीब होगा। शांति और बलिदान का एक धर्म, जिसका उपदेश स्वयं ईसा मसीह ने दिया था, क्यों ऐसे रक्त संघर्ष में परिवर्तित हुआ। ईसाई, जो स्वयं, लंबे समय तक, रोमन साम्राज्य के शोषण और हिंसा का शिकार रहे, वो कैसे ऐसे हिंसक दमनकर्ता बन गए!’

द्वारका शास्त्री ने असहमति में अपना सिर हिलाया।

‘अपनी भूल सुधारो, विद्युत। ईसाइयत या ईसाइयों ने यह युद्ध नहीं छेड़ा था। ये कुछ मुट्ठीभर सिरफिरे होते हैं, जो आम जन को भटकाते हैं। प्रत्येक युग के पुजारियों ने धर्म युद्ध का बिगुल बजाया है। एक नियम याद रखो विद्युत। कोई भी देवदूत जो हिंसा की बात करे, वो ईश्वर का प्रतिनिधि हो ही नहीं सकता! उस ईश्वर के सच्चे भक्त, चाहे वो किसी भी धर्म के हों, वही हैं जो शांति, प्रेम और सह-अस्तित्व का संदेश पहुंचाएं। वही सच्चे पुजारी हैं।’

महान मठाधीश की मान्यताएं और सिद्धांत लगातार उनके परपोते को प्रेरित

कर रहे थे। विद्युत ये याद करने से स्वयं को रोक नहीं पा रहा था कि इस मनुष्य और उसके पूर्वजों ने कितनी लड़ाइयां लड़ी थीं। और फिर भी, वो बता रहे थे कि मात्र प्यार और भाईचारा ही भगवान तक पहुंचने का सच्चा मार्ग है। आखरी देवता को याद था कि मठ और इसके नेताओं द्वारा लड़ी गई सारी लड़ाइयां इस पवित्र आश्रम की रक्षा, या बुरी ताकतों को रोकने की ही थीं।

'फिर क्या हुआ, बाबा? टेम्पलर के इतिहास का अगला अध्याय क्या था? और न्यू वर्ल्ड ऑर्डर का?' विद्युत ने द्वारका शास्त्री को वापस से मुख्य विषय पर लाते हुए, जानने की कोशिश की।

'तो अब हमारे पास धर्म के ऐसे नेता थे जो टेम्पलर की तलवार के दम पर डींगें हांकते थे। ऐसे अधम प्रबंधों की परिणति और क्या हो सकती थी—सिवाय पैसे के!' वृद्ध ग्रैंडमास्टर ने कहा।

'पैसा?!' विद्युत चौंका।

द्वारका शास्त्री ने मुस्कुराकर अपनी बात आगे बढ़ाई।

'क्या तुम यकीन करोगे, अगर मैं तुम्हें बताऊं कि सोलोमन टेम्पल के अनुयायी या नाइट्स टेम्पलर ने ही दुनिया का सबसे पहला मल्टीनेशनल बैंक कॉर्पोरेशन शुरू किया था?'

मैनहटन, न्यूयॉर्क सिटी, 2017

‘मौत भी व्हाइट मास्क से भय खाती है’

वो उन कुछ चुनिंदा व्यक्तियों में से था जो न्यूयॉर्क के प्रसिद्ध वाल्डोर्फ एस्टोरिया होटल में कई हफ्तों के लिए प्रेसीडेंशियल सुइट में रहने का खर्च उठा सकता था। उसके फ्लोर का लगभग प्रत्येक कमरा उसी के लिए बुक था। पूरा कॉरिडोर, जो होटल के ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण मेहमानों की ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीरों से भरा था—जिनमें अमेरिकी राष्ट्रपतियों से लेकर भारतीय क्रांतिकारियों तक की तस्वीरें शामिल थीं—उनके सामने उसके हथियारबद्ध अंगरक्षक खड़े थे।

अपने आलीशान सुइट की खिड़की के पास खड़ा होकर, मास्केरा बिआंका मैनहटन के भव्य आसमान को देखते हुए, अपनी पसंदीदा भारतीय सिगरेट पी रहा था।

बस आज वो इसका मजा नहीं ले पा रहा था।

‘देखने में वो भगवान का स्नेही दूत नजर आता है, है न? लेकिन ये सब उस पद की वजह से है, जिस पर वो आसीन है। उसी पद से मानवजाति के लगभग हजारों सालों के इतिहास के सबसे बदतर विनाश के आदेश दिए गए।’

रेग मारिनी अपनी स्कॉच से घूंट भरते हुए सोच रहा था कि मास्केरा किसे वो सब सुना रहा था। सिर्फ वो ही बिग मैन की वास्तविकता जानता था। वो ही उसके कार्यों का साक्षी और असल में कई खूंखार कार्यों का साझेदार भी था।

'तो अब क्या, मास्केरा? वो जानना चाहते हैं। और आप जानते हैं कि वो असफलता को हल्के में नहीं लेंगे। न मेरी। न ही आपकी।'

मास्केरा के जबड़े भिंच गए। उसने जलती हुई सिगरेट अपनी हथेली में मसल ली और रेग की तरफ मुड़ा। जलते तंबाकू के त्वचा से लगने पर वो जरा भी ठिठका नहीं था। मास्केरा जिस सफर से गुजर कर यहां तक पहुंचा था, उसके सामने तो यह जलन कुछ भी नहीं थी। मिलान की गलियों में मारे गए मछुआरे के अनाथ बच्चे से, यूरोपियन माफिया के अविवादित सरताज बनने तक का सफर उसने पूरा किया था।

एक लंबे पेचकस को उसने एक आदमी में सत्रह बार घोंप दिया था। पहले दस वार तो पेट और अंतड़ियों पर किए, बाकी के सात से आंखों, कनपटी और उरुमूल को गोद दिया था। फिर उसने उस पर थूकते हुए, उसे पैर से ठोकर मारकर गटर में गिरा दिया।

उसने ग्यारह साल की उम्र में ही अपनी मां का बदला ले लिया था।

उदासीन नजर और लड़की जैसे नैन-नक्श वाला वो लड़का, सोलह साल का होते-होते ही, अपने कुख्यात हथियार के आतंक से, मिलान और उसके आसपास की जगहों पर राज करने लगा था। यद्यपि मुश्किल से मुश्किल हालात में भी वो अकेले ही लड़ना पसंद करता था, लेकिन फिर भी उसके बहुत से अनुयायी बन गए थे। उसका गैंग बड़ा होने लगा था। उसका नाम और अधिक भयावह बन गया था।

और फिर एक सर्द रात में, पूरे मिलान को अविश्वास और सदमे में डालते हुए, उसने दो पुलिसवालों की, उन्हीं की गाड़ी में बेरहमी से हत्या कर दी। उनमें से एक के मुंह में लंबा पेचकस घुसाकर, उसकी खोपड़ी से पार करते हुए, उसे कार सीट के हेडरेस्ट से बींध दिया था। इन खौफनाक हत्याओं ने पूरे शहर और प्रशासन को भयभीत कर दिया था।

हरी आंखों वाले उस लड़के को मिलान छोड़ना पड़ा था। लेकिन उससे पहले वो उस संगठन की नजरों में आ चुका था, जिसके लिए पैसा, रक्त और नियंत्रण ही सबकुछ था।

उस पर कोसा नोस्त्रा—सिसिलियाई माफिया का भयानक चेहरा—की नजर पड़ चुकी थी।

तीन माफिया भाइयों ने उसे, जेनेवा से बाहर, अपना कोकीन नेटवर्क चलाने के लिए नियुक्त किया था। लेकिन उन्होंने बड़ी गलती कर दी थी। पंद्रह सालों में, वो हरी आंखों वाला लड़का आदमी बन चुका था—एक बहुत खतरनाक आदमी। उसने बड़े आराम से अपने तीनों मालिकों को ठिकाने लगा दिया था, जिनकी लाश तक कभी जेनेवा झील की तली से नहीं मिली थी। 35 की उम्र तक, वो न सिर्फ सिसिलियाई माफिया का अविवादित राजा था, बल्कि वो पूरे यूरोप में अपराध को प्रबंधित करने लगा था।

जबकि उसकी निर्दयी प्रतिभा पर किसी को शक नहीं था, लेकिन फिर भी उसके यूं तेजी से उबरने को लेकर कुछ फुसफुसाहट थी। कोई बहुत ताकतवर शक्ति, पर्दे के पीछे से उसे मदद कर रही थी। कोई ऐसा जो सरकार से भी अधिक ताकतवर था, जो सीआईए और एमआई6 से साथ में लोहा ले सकता था। इसी तरह, अनेकों कहानियां इस बारे में भी थीं कि क्यों उसे मास्केरा बिआंका या व्हाइट मास्क कहा जाने लगा था। कुछ लोग उसके अजीब और डरावने नाम को उसके कोकीन के बिजनेस से जोड़ते थे। तो कुछ दूसरे इसकी वजह उसके चेहरे की सर्द रंगत को मानते थे, जो हर शिकार के बाद और सफेद हो जाता था।

सिर्फ कुछ ही लोगों को कुछ और भयावह का अंदाजा था। वो सच में एक मास्क था, एक नकाब, जिसके पीछे कोई बहुत भयानक चीज छिपने की कोशिश कर रही थी। वो दुनिया के सबसे स्याह संगठन का सफेद नकाब था।

मास्केरा बिआंका की हरी आंखें निडरता से चमक रही थीं, जब वो रेग की तरफ चलकर आया, और अपने आलीशान सोफे पर बैठ गया।

‘क्या तुम जानते हो, रेग, मुझ पर कितनी बार जानलेवा हमला किया गया है?’

रेग ने कंधे उचकाए। वो जानता था कि मास्केरा की दुनिया में, सिर्फ बंदूक का ही राज चलता था।

‘एक सौ चार बार,’ मास्केरा ने अपनी शालीन आवाज में कहा, उसकी मुस्कान उसके चेहरे पर वापस आ गई थी। लेकिन उसकी आंखें रेग की आत्मा को भेद रही थीं, जो स्वयं मौत या हिंसा से अनजान नहीं था।

‘क्या तुम जानते हो कि मुझे कितनी बार चाकू मारा गया, गोली लगी या गला घोंटने की कोशिश हुई?’

‘हम इस सबके बारे में क्यों बात कर रहे हैं, मास्केरा?’ रेग ने कहा। यकीनन मास्केरा की बात से उसे घबराहट हो रही थी, लेकिन रेग मारिअनी ने बहुत समय पहले ही ऐसी घबराहट से उबरना सीख लिया था।

‘सत्तावन बार,’ मास्केरा ने भाव शून्यता से कहा। ‘तो सोचना भी मत कि दुनिया की कोई ताकत मुझे डरा सकती है।’

वो एक-दो पल रुका और फिर आगे झुककर, डरावनी फुसफुसाहट में कहा।

‘यहां तक कि मौत भी व्हाइट मास्क से डरती है, रेग।’

हड़प्पा, **1700** ईसापूर्व

नीली अग्नि का अनुष्ठान

विवास्वन पुजारी ने सप्तऋषियों के चेहरे और शरीर में भयावह परिवर्तन देखे। वो अचानक ही अपनी उम्र से अधिक वृद्ध दिखाई दे रहे थे। जैसे ही सुरा के नीच और रक्तपिपासु सिपाही दिव्य मुनियों के करीब पहुंचे, तो वो सातों दिल दहला देने वाली गति से जीर्ण होने लगे। उनके माथों और गालों पर झुर्रियां पड़ने लगीं, उनका हमेशा शांत और पावन रहने वाला चेहरा अब भयानक भावों में बदल रहा था। उनके बाल अचानक ही सफेद हो गए, और सातों मुनियों की उम्र अचानक ही सौ साल बढ़ गई!

क्या यह वास्तव में हो रहा है या मुझे भ्रम हो रहा है?

अपनी सारी निर्दयता और बहादुरी के बाद भी, सुरा, मुनियों में आए इस भीषण परिवर्तन को देखकर, ठंडे पसीने से तर हो गया।

उसके बर्बर सिपाहियों ने भी सप्तऋषियों के पिघलते हुए मांस को देखा और वो भी डर से सहम गए। प्रचंड ने सवालिया नजरों से अपने मालिक को देखा। क्या वो संहार को रोकना चाहता था?

सुरा को अपने गले में गांठ सी महसूस हुई। वो डर को बहुत पहले ही भुला चुका था। तुरंत ही उसने स्वयं को धिक्कारा और नए पागलपन से अपने साथियों को आदेश दिया। पूरी दुनिया का शासक बनने की उसकी महत्वाकांक्षा उसे अंदर ही अंदर खाए जा रही थी। अब उसके रास्ते में कोई नहीं आ सकता था। कुछ भी नहीं!

‘ओ साहसी असुरों, कौन तुम्हें रोक रहा है? इन्हें जला दो! इन मायावी जीवों को जलाकर, अपने सम्राट सुरा को प्रसन्न करो!’

अपने राक्षस-राजा के उत्तेजित आदेश से आवेश में आ, सुरा के सिपाही अपना डर निगलकर, ऋषियों पर हमला करने के लिए बढ़े।

अब लकड़ी का बड़ा सा अग्नि-कुंड जला दिया गया था। सप्तऋषि जल्द ही आग

में जलकर भस्म हो जाने वाले थे।

या कम से कम ये मूर्ख तो यही मान रहे थे।

‘ये पागलपन बंद करो, सुरा!’ विवास्वन पुजारी ने कहा। ‘यहां कुछ गड़बड़ है। ये सप्तऋषि नहीं हैं। मैं उनकी पवित्र उपस्थिति यहां महसूस नहीं कर पा रहा। दिव्य सातों ने पहले ही समाधि ले ली है, और उनकी आत्मा कहीं और चली गई है। तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा कि उनका शरीर क्यों इतनी जल्दी क्षय होकर पृथ्वी में मिल रहा है? उन दिव्य मुनियों की आत्मा के बिना ये नश्वर शरीर किसी खाली बर्तन से अधिक कुछ नहीं हैं!’

‘हार्रघ!’ सुरा अपनी तलवार हिलाते हुए गुर्राया। ‘वो मेरे सामने हैं! और मैं उन्हें इस धरती से मिटाने का सुनहरा मौका नहीं छोड़ने वाला, जहां मुझे शासन करना है। वो सब सुरा के क्रोध की अग्नि में भस्म हो जाएंगे!’

प्रचंड की मुस्तैद टुकड़ी के सिपाही ने, एक मुनि के बाल पकड़े। जैसे ही उसके हाथों ने क्षय होते ऋषि की लटों को अपने हाथों में पकड़ा, दूर से एक धमाके की आवाज आई। ठंडी हवा का एक तेज झोंका उस जगह से गुजरा और असुर दल डर से मानो जम गया।

उपस्थित जनों को स्तब्ध करते हुए, सारे मुनियों ने एक साथ अपनी आंखें खोल दीं। लेकिन उनकी पलकों के पीछे मनुष्यों की आंखें नहीं थीं। वहां सिर्फ बेरंग से सफेद पत्थर थे। या तो ऋषियों की पुतलियां ऊपर चढ़ गई थीं, या फिर अब उन हजार साल पुराने ऋषियों के चेहरों के पीछे से कोई भयावह शक्ति उन सफेद पत्थरों के रूप में झांक रही थी।

सुरा के सिपाही अब पत्थर की प्रतिमा की तरह जड़ हो गए। उनमें से कोई भी हिलने की हिम्मत नहीं कर सका। रात के उस अंधेरे में, सिर्फ सप्तऋषियों के मुड़े हुए शरीर ही दिखाई दे रहे थे, जो अब पांच हजार साल पुरानी तवचा के कुम्हलाए हुए ढेले प्रतीत हो रहे थे। उनके सभी अंगों पर झुर्रियां पड़ रही थीं, खाल मुड़ गई थी, लेकिन उनकी आंखें कब्र पर चढ़ाई सफेद चादर के समान चमक रही थीं।

अपने अध्यक्ष प्रचंड के आदेश पर, टुकड़ी ने फिर से अपनी हिम्मत इकट्ठा कर, पहले मुनि को विकराल अग्नि की तरफ घसीटा। उसने ऋषि के बाल खींचे, उसके करीब गया और जलती अग्नि की तरफ उसे लात मार दी। जैसे ही मुनि का शरीर अग्नि की लपटों में गिरा, कुछ ऐसा हुआ जो कोई सोच भी नहीं सकता था।

निर्दयी पीली अग्नि अचानक से चमकदार, नीली अग्नि में बदल गई, जिसमें जलता हुआ मुनि बमुश्किल दिखाई पड़ रहा था।

दूर से आती धमाके की आवाज अब नजदीक जान पड़ रही थी।

'सावधान... ओ हड़प्पा के देवता...' नीली अग्नि के केंद्र से, एक भयंकर आवाज ने भविष्यवाणी की। लेकिन उसकी गूंज ऐसी थी मानो पूरा पर्वत दर्द से कराह रहा हो।

'सावधान विवास्वन पुजारी... जिसकी आत्मा नफरत और बदले की आग में अपना मार्ग भटक गई है। सावधान...'

पहले सप्तऋषि के अंतिम शब्दों को सुन, उसकी धुंधली आकृति को राख बनता देख हड़प्पा का देवता स्तब्ध खड़ा था, अपने दुख से सिकुड़ा हुआ।

इससे पहले की वो कुछ कह पाता, असुर सिपाही ने दूसरे मुनि को नीली अग्नि में धकेल दिया।

'विवास्वन... ओ बदकिस्मत देवता, मुझे तुम पर दया आ रही है। देखो, तुम क्या बन गए हो! हम जल रहे हैं और तुम कुछ नहीं कर रहे हो। तो ऐसा ही सही... तुम्हारी प्रलयकारी नियति तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है...'

इन भयानक शब्दों के साथ, दूसरे सप्तऋषि का अपरिचित शरीर नीली अग्नि में जलकर भस्म हो गया।

पल भर में ही एक विनाशकारी गर्जना से मानो आसमान फट गया, बिजली की तेज चमक और बादलों की बहरा कर देने वाली गड़गड़ाहट से समग्र आर्यवर्त दहल गया। मानो मां सरस्वती स्वयं ही अपने प्रिय पुत्रों की नृशंस हत्या पर विरोध कर रही थी।

रक्त पिपासु नदी, अब हड़प्पा और समग्र मानवजाति से सबसे निष्ठुर और कठोर बदला लेने के लिए तैयार हो रही थी।

विवास्वन पुजारी ने प्रचंड की टुकड़ी के अग्रणी सैनिक का छिपा हुआ हथियार निकालकर, उस भारी-भरकम सिपाही को पत्थरीली जमीन पर गिरा दिया। इस नरसंहार को वो अब और नहीं चलने दे सकता था।

‘ओ राक्षस राजा, इस रक्त-संहार को बंद करो!’ देवता चिल्लाया।

‘मार्ग से हट जाओ अ-देवता,’ सुरा ने जवाब दिया, उसकी आंखें नीली अग्नि के अलौकिक प्रकाश पर लगी थीं। उस पर अब तक वहशीपन और महत्वाकांक्षा सवार हो चुकी थी। ऊंचे पहाड़ों की गर्जना, तूफानी ठंडी हवा, रंग बदलता आसमान और कोड़े मारते बादल... कुछ भी अब असुर राजा का मार्ग नहीं रोक सकते थे। यह उसका दिन था, और वो जंग छेड़ने के लिए तैयार था—फिर भले ही उसे अपने रास्ते में आने वाले परमेश्वर से ही क्यों न लड़ना पड़े।

इससे पहले कि विवास्वन कुछ बोल पाता, उसे अपने कंधे पर प्रचंड का हाथ महसूस हुआ।

‘आपने हमें जबान दी थी, ओ महान अ-देवता,’ प्रचंड ने कहा। ‘आपने हमें अपनी जबान दी थी!’

अब तक सिपाही ने उठकर दो और मुनियों को आग की तरफ धकेल दिया था। बचे हुए सप्तऋषि अब और भी भयानक तरीके से जीर्ण होते जा रहे थे, वो इतने हल्के हो चुके थे कि अभी खींचे गए मुनियों का भार किसी नवजात शिशु की भांति मालूम पड़ रहा था। पागलों की तरह हंसते हुए, सिपाहियों ने उन मुनियों को गर्दन पकड़कर उठाया और उन्हें बिना प्रयास के ही अग्नि की तरफ उछाल दिया।

जलती अग्नि की लपटें अब और ऊंची उठ रही थीं, मानो वो कोई तेजी से बढ़ता हुआ दानव हों जो सबको लपकने को तैयार हो। तभी अचानक अदृश्य जिन्न की ठंडी आहों की तरह, मूसलाधार बारिश मानो सप्तऋषियों का गृह बहाने आई। बौछार इतनी तेज थी कि उसने राक्षस-राजा के साथ पतित देवता को भी अपनी आंखें बंद करने के लिए मजबूर कर दिया। विवास्वन पुजारी भांप रहा था कि अचानक आई ये बरसात कुछ और नहीं, बल्कि सरस्वती के अश्रु थे। बरसात का वेग इतना अधिक था कि उन लोगों को अपने पैरों पर खड़े रहने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा था। अपने चेहरे को अपनी बांह और कोहनी से बचाते हुए, हड़प्पा का सूर्य अग्नि में झांकने की कोशिश कर रहा था।

अग्नि में जलती दो विकृत आकृतियों ने अपना और क्रोध व्यक्त नहीं किया। पापों का घड़ा अब भर चुका था।

अब समय आ गया था।

उस श्राप का समय, जिससे समग्र मानवजाति की किस्मत हमेशा के लिए बदल जाने वाली थी।

अब समय आ गया था।

प्रलय अब बस आने ही वाली थी।

बनारस, 2017

विद्युत

विद्युत ने मठ के खूबसूरत बगीचे में घूमने का निर्णय लिया। गेंदे के फूलों और अगरबत्ती की सुगंध से भरी ठंडी हवा, वातावरण में गूंजता मंत्रोच्चार और दूर मंदिर से आती घंटियों की आवाज, सब देव-राक्षस मठ की उस छोटी सी सैर को अतुलनीय बना रहे थे। बीच-बीच में रुककर विद्युत, मठ के वरिष्ठों के पैर छूता, वृद्ध माताओं के हाथ चूमता, शर्माती लड़कियों की तरफ मुस्कुरा देता या क्रिकेट खेलते युवाओं की गेंद कैच कर लेता। मठ के हर कोने से विद्युत अपने लिए जरूरी प्राण-वायु ले रहा था।

अब तक, सब जान गए थे कि वो स्मोक करता था। सिर्फ उसे ही यूं सबके सामने स्मोक करने की आज्ञा थी। उसने काले रंग की साधारण स्लीव-लेस टी-शर्ट और स्लेटी रंग की ट्रैक पैंट पहनी हुई थी। इन साधारण कपड़ों में भी वो आकर्षक दिख रहा था। उसकी असामान्य रूप से चमकती त्वचा और बादामी आंखें और निखरकर आ रही थीं। हवा उसके चेहरे पर आते लंबे भूरे बालों को सहला रही थी, जिन्हें वो अपने दाहिने हाथ की उंगलियों से पीछे कर रहा था।

क्या विद्युत परिपूर्ण था? शायद। या उसमें कुछ त्रुटियां भी थीं? संभवत: थीं। बस उन कमियों को ढूंढ़ पाना मुश्किल था, और वो देवता पर महज कुछ ही पलों तक हावी रह पाती थीं।

विद्युत को अपने आसपास के लोगों से हमेशा अत्यधिक तीव्र भावनात्मक और सामाजिक प्रतिक्रिया मिलती। जो उसे समझते थे, उसे प्यार करते थे। और वो उसे पूर्ण समर्पण से चाहते थे। जो उसे करीब से नहीं जानते थे, वो भी उसके

ईमानदार आकर्षण और लड़कपन भरे सौष्ठव को सराहते थे। जो उस पर दूर से नजर रखते थे, वो उससे ईर्ष्या करते थे। उनकी ईर्ष्या का कारण यह नहीं था कि विद्युत ने उन्हें कभी किसी प्रकार की क्षति पहुंचाई हो। वो तो अपने आप में ही इतना व्यस्त रहता था कि उसके पास उनके बारे में सोचने का समय नहीं था। शायद वो लोग विद्युत को इसीलिए नापसंद करते थे कि वो उनसे भिन्न था। वो भीड़ में से एक नहीं था। वो किसी औसत ढांचे में नहीं ढला था। वो असाधारण रूप से प्रतिभाशाली था, और कभी-कभी उत्तेजना की हद तक स्वच्छंद। वो विनम्र था, लेकिन असभ्य लोगों को जवाब देना उसे आता था। वो संपन्न और स्वयं अपने पैरों पर खड़ा हुआ था, लेकिन व्यवहार और आचरण से वो कॉलेज के किसी युवक की तरह लगता था, जो अपनी जेब में सौ रुपए का नोट लेकर निकला हो। वो जितना समय शारीरिक अभ्यास में लगाता था, उतनी ही लगन से कर्नाटक संगीत का अभ्यास करता था। लेकिन उसके आलोचकों को उसकी जो बात सबसे अधिक अखरती थी, वो उसका आकर्षण, उसकी सफलता, उसकी संपन्नता, प्रतिभा या व्यक्तित्व नहीं थी, बल्कि उसकी विनम्रता थी। उसके इस गुण का उनके पास कोई जवाब नहीं था।

विद्युत की अपनी कुछ कमियां भी थीं। क्या यह गलत था कि वो स्मोक करता था, जबकि वो एक बेहतरीन खिलाड़ी और मार्शल आर्ट का अभ्यस्त था? क्या कभी-कभी क्रोधित हो जाना गलत था? या कभी संदेह करना? क्या आखरी देवता के लिए यह सब अक्षम्य था?

क्या ये सब आधे-मनुष्य के लिए भी इतना ही गलत होता?

तंबाकू से हुई खुश्की को दूर करने के लिए जब उसने मिट्टी के कुल्हड़ या पूर्वा से मसालेदार चाय का घूंट भरा, तभी उसके कानों में तबले और पायल की जुगलबंदी सुनाई पड़ी। साथ ही शास्त्रीय संगीत का अभ्यास करते, किसी पुरुष का मखमली स्वर भी सुनाई दिया। स्वयं प्रशिक्षित गायक और गिटारिस्ट, विद्युत इन सुरीली तानों को सुनकर मुग्ध हो गया। वह उठकर इस स्वरलहरी के पीछे चल दिया।

वो जानता था कि यह क्या था।

बस वो ये नहीं जानता था कि ये अभ्यास कर कौन रहा था।

विद्युत अपनी बची हुई सिगरेट के ठूंठ को कूड़ेदान में फेंककर, सीढ़ियां चढ़ते हुए, मार्बल के विशाल बरामदे में पहुंचा, तो उसे एक कमरे का आधा खुला दरवाजा दिखा। वहीं से वो मधुर संगीत सुनाई पड़ रहा था। वो दबे कदमों से उस दरवाजे की ओर बढ़ा, क्योंकि वो कलाकारों के अभ्यास में विघ्न डाले

बिना, बस एक नजर उन्हें देखना चाहता था।

जो उसने देखा, उससे उसका दिल एक पल को धड़कना भूल गया।

नैना ने पारंपरिक उत्तर भारतीय परिधान, सफेद रंग का चूड़ीदार और कुर्ता पहन रखा था। वो मनोहर ढंग से तबले की ताल पर थिरक रही थी, और वृद्ध, सफेद बालों वाले उस्ताद मनमोहक आवाज में गा रहे थे। विद्युत देखते ही समझ गया था कि ये आकर्षक नृत्य क्या था।

कथक!

कथक की उत्पत्ति वैदिक संस्कृत के कथा शब्द से हुई है। 400 ईसापूर्व से भी पहले और यहां तक की महाभारत में भी इस नृत्य शैली का वर्णन हुआ है, कथक को भारत की सबसे प्रमुख पारंपरिक नृत्य शैली माना गया है। इसकी लोकप्रियता बढ़ाने का श्रेय बाहर से आए आर्यवर्तों के प्राचीन भाट समूहों को दिया जा सकता है, जो महा आख्यानों का वर्णन कला की इस आकर्षक शैली के साथ करते थे। कथक विशेष रूप से भक्ति आंदोलन के दौरान उभरकर आया, जहां भगवान कृष्ण की कथा को इस नाटकीय शैली के साथ प्रस्तुत किया गया। कथक के बनारस घराने का स्थान इस स्वर्णिम संस्कृति में सबसे ऊपर आता है।

विद्युत नैना से अपनी नजरें नहीं हटा पा रहा था। वो किसी देवी की भांति भंगिमाएं कर रही थी, अपनी भव्य सुंदरता और कोमलता का प्रदर्शन करते हुए। विद्युत उसके प्रज्वलित मस्तक पर पसीने की बूंदे देख पा रहा था, और उसके बालों की रेशमी लट नृत्य करते हुए उसके आकर्षक चेहरे को चूम रही थी। भारतीय शास्त्रीय संगीत पर नृत्य करते हुए, वो पूर्णतया अलौकिक लग रही थी और नृत्य की थकान के बावजूद भी उसके चेहरे की मोहक मुस्कान फीकी नहीं हुई थी। उसकी आंखें ध्रुव तारे की तरह चमक रही थीं।

क्या एक बार ऐसे समर्पित प्यार के आगे घुटने टेकना देवता के लिए भी गलत होता?

विद्युत ने वहां से चले जाने का निर्णय लिया।

‘विडियो!’

विद्युत जम गया।

त्रिजट कपालिक के दुर्भाग्यपूर्ण आगमन के बाद से अब पहली बार किसी ने विद्युत को इस बचकाने, लेकिन प्यारे नाम से पुकारा था। विडियो! उसके सबसे प्यारे मित्र, बाला के आलावा कोई भी उसे इस नाम से नहीं पुकारता था। यह नाम सुनकर विद्युत भावनात्मक रूप से हिल गया।

वो मुड़ा, तो कुछ कदम दूर नैना को खड़े पाया। कुछ पल पहले के गहन अभ्यास की वजह से वो अभी भी हांफ रही थी। विद्युत को लगा कि वो इस अतुलनीय सौंदर्य के सामने ढह जाएगा। लेकिन शारीरिक आकर्षण से अधिक, नैना की निष्काम परवाह थी, जिसके सामने विद्युत बेबस हो गया था। उसे उम्मीद थी कि नैना कुछ दिन मुंह फुला कर रखेगी, जब तक कि विद्युत गिड़गिड़ाकर उससे माफी न मांग ले। विद्युत ने उसे समझने में भूल की थी, और ये वाकई में अक्षम्य अपराध था। लेकिन अभी वो सामने खड़ी थी—उसके मन को पढ़ते हुए, उसकी ग्लानि को समझते हुए। एक तरफ तो वो युद्ध में देवी काली का रूप धारण कर लेती थी, लेकिन अपने विनम्र रूप में वो इतनी मनोहर लगती थी, जितना विद्युत ने कभी किसी को नहीं देखा था।

वो जाने के लिए मुड़ा। वो भावुक हो गया था। एक तरफ तो, उसे अच्छा लगा था कि नैना अपना सघन अभ्यास छोड़कर उसके पीछे दौड़ी चली आई थी। दूसरी तरफ उसे बुरा लग रहा था कि नैना ने उसे विडियो कहकर पुकारा था। वो नाम अब उसके लिए मर चुका था। जो आदमी उसे इस नाम से पुकारता था, वो भी मर गया था। वो हर चीज, जिसके लिए युवा, लापरवाह विडियो जाना जाता था, वो सब मठ की उस कोठरी में, खून से भरी मेज पर मर चुकी थी। जिस दिन विद्युत ने अपना पहला कदम काशी में रखा था, तब से उसकी जिंदगी हमेशा के लिए बदल गई थी।

'रुको, विद्युत...' नैना चिल्लाई।

विद्युत रुक गया। वो जानता था कि अब नैना का सामना करने का समय आ गया था। इससे भी अधिक, वो जानता था कि अब समय आ गया था, जब वो इस कथक नृत्यांगना के प्रति अपनी सच्ची भावनाओं को व्यक्त करे।

तुलसी घाट की तरफ बढ़ते हुए, उसने अपनी कलात्मक और कोमल उंगलियों से विद्युत की कलाई और बांह पकड़ रखी थी। दिन काफी चढ़ आया था और बनारस में यह सामान्य बात नहीं थी कि कोई लड़की अपनी बांह किसी मर्द की बांह में डालकर, यूं खुलेआम चले। लेकिन नैना कोई सामान्य लड़की नहीं थी। और विद्युत भी महज मनुष्य नहीं था।

विद्युत अपनी कलाई पर नैना की सुनहरी त्वचा की छुअन महसूस कर रहा था। वो बस इस उस बात पर खिलखिलाए जा रही थी, जैसा कि अधिकतर मजबूत लड़कियां तब करती हैं, जब वो स्वयं को किसी सुरक्षित पनाह में पाती हैं। उसकी हंसी मंदिर की घंटी की तरह सुनाई पड़ रही थी, यकीनन उसकी आंखें भी चमक रही होंगी, लेकिन वो विद्युत को तब दिखाई पड़तीं, जब विद्युत नैना को मुड़कर देखने की हिम्मत करता।

‘तुम कहां थे अब तक, विद्युत?’ नैना ने अपना सिर झुकाकर पूछा। ‘तुम कहां थे?’

उसकी नजरें देवता की नजरों पर टिकी थीं। वो ऐसे बोल रही थी मानो वो विद्युत की स्वामिनी थी।

लेकिन देवता का स्वामी कौन हो सकता है?

सिवाय उसके जिसे उसने स्वयं अधिकार दिया हो।

‘मुझे माफ कर दो नैना...’ विद्युत ने अचानक कहा।

नैना ने उसकी बात पर ध्यान भी नहीं दिया। वो उसके साथ घाट की चमकदार सीढ़ियां उतरती रही, बिना रुके बातें करती हुई।

‘मुझे माफ कर दो, यार, नैना... मैं बहुत शर्मिंदा हूं। मैं बेवकूफ था जो मैंने तुम पर यूं शक किया। मुझे स्वयं से नफरत हो रही है!’

अब वह रुकी। उसने गहरी सांस ली और देवता की तरफ मुड़ी। उसने अपनी भंवें उठाकर देवता को यूं देखा, मानो उसे याद दिला रही हो कि वो उसका ऋणी है।

वो सफल रही।

‘मुझे माफ कर दो, नैनू...’

हड़प्पा के पूर्व में, **1700** ईसापूर्व

ऋण

मनु बादलों की तेज गरज के साथ उठा था, जो हर बीतते समय के साथ और विकराल होती जा रही थी। वो पिछली रात को काले मंदिर से वापस आ गया था और उसने काले परिधान वाले सिपाहियों के साथ आराम करने का निर्णय लिया था। उन्हीं की तरह, मनु ने उठकर अपनी चटाई मोड़कर रख दी थी।

जब वो अपने खुरदुरे बिस्तर से उठा, तो उसने ध्यान दिया कि उसके साथी भी जाग चुके थे। आसमान में होती इतनी गरज के बीच कोई भी नहीं सो सकता था। कुछ समय बाद ही वो जान पाए कि सूरज निकलने का समय तो कब का बीत चुका था। लेकिन अभी भी विकराल अंधेरे ने उन्हें चारों तरफ से घेर रखा था।

प्रलय की अशुभ भविष्यवाणी सच होती जान पड़ रही थी। दानवीय बादलों ने सुबह के सूरज को निगल लिया था।

आर्यवर्त अपने बचे-खुचे दिन अंधकार में ही बिताने वाला था।

मत्स्य अपने लगभग सौ सैनिकों के साथ आ रहा था। मूसलाधार बारिश के बीच से मनु दूर से आते हुए मत्स्य दल को मुश्किल से देख पा रहा था। मत्स्य का ध्यान उस दल में एक विशेष बात पर गया। मनु और उसके आदमी एक ताल, एक गति और एक लय से चल रहे थे, मानो वो एक ही शरीर के अंग हों। वो निडर और अपराजित लग रहे थे। उनमें से कुछ ने विशाल गोलाकार ढाल भी ले रखी थी, जो किसी विशेष मिश्रित धातु से बनी थी। बिजली की चमक पड़ने पर ढाल अजगर की आंखों की तरह चमक रही थी। मत्स्य अपनी टुकड़ी के बीच में चल रहा था, जो चमकती बिजली के बीच ही दिखाई पड़ रहा था।

समीप आने पर, मनु और उसके आदमी एक ही लय से अपने घोड़ों से उतरे। एक ताल से उतरते हुए, उन सबका दाहिना पैर एक ही साथ, हवा में उनके

घोड़ों के सिर पर था।

इस स्तर का तालमेल बिठाने के लिए उन्होंने जरूर सालों तक प्रशिक्षण लिया होगा!

'प्रणाम, मत्स्य,' मनु ने अभिवादन किया।

'प्रणाम, राजन,' मत्स्य ने अपने आकर्षक चेहरे से, लंबे बालों को हटाते हुए जवाब दिया। 'क्या आप मेरे साथियों और घोड़ों के लिए थोड़ा गर्म पानी ला सकते हैं? वो सब ठंडी और गीली रात में सफर करके आए हैं।'

'बिलकुल, मत्स्य,' मत्स्य की हरसंभव सहायता को तत्पर, मनु ने कहा।

हालांकि, एक अजीब से संयोग ने उसका ध्यान आकर्षित किया। जितनी बार वो मत्स्य से मिला था, उतनी बार उसने उसे पानी दिया था। पहली बार मिलने पर कुछ बूंदें, उसके बाद एक थैली पानी, फिर एक सुराही और शायद अब कुछ बड़े बर्तन। हर बार मिलने पर, मत्स्य ने मनु से पहले से अधिक पानी की मांग की थी।

मनु स्वयं पर मुस्कुराया और इस अजीब से संयोग को अपने मन से छिटक दिया।

यह संयोग नहीं था। ये वो ऋण था, जिसकी भरपाई मत्स्य एक दिन करने वाला था।

मनु और काले परिधान वाले संरक्षकों के दिए गुनगुने पानी से जब मत्स्य और उसके आदमियों ने स्वयं को साफ कर लिया, तो वो सब अग्नि के गिर्द जलपान करने के लिए बैठ गए।

हर बार की तरह, इस बार भी मत्स्य के पास मनु को बताने के लिए एक हैरानी भरी बात थी। लेकिन इस बार वो बात हैरानी के साथ सुखद भी थी।

'आपको अपने साथ सोमदत्त की आवश्यकता होगी,' मत्स्य ने अपने मुंह में मसालेदार पोहे का निवाला रखते हुए कहा।

मनु ने खाना बंद करके, आश्चर्य से ऊपर देखा।

'क्षमा कीजिए... क्या आपने अभी सोमदत्त का नाम लिया, मत्स्य? क्या सोमदत्त जी जीवित हैं??'

मत्स्य ने पल भर को उसे देखा, फिर मुस्कुराकर, हां में सिर हिला दिया और वापस से अपना भोजन शुरू कर दिया।

मनु ने अपनी थाली एक तरफ सरकाकर, हाथों को जोड़ एक छोटी से प्रार्थना बुदबुदाई। तुरंत ही वो खुशी से खिलखिलाने लगा।

'ईश्वर बहुत कृपालु हैं! ईश्वर बहुत कृपालु हैं! इतना शुभ समाचार लाने के लिए, आपका हार्दिक आभार मत्स्य! आपने मुझे यह पहले क्यों नहीं बताया?'

मत्स्य ने उसके प्रश्न का जवाब नहीं दिया। अब उसने अपनी थाली एक ओर सरका दी।

'ओ सूर्य पुत्र, आपको एक और मित्र की भी आवश्यकता होगी,' उसने कहा। वो शरारत से मुस्कुरा रहा था। लेकिन वो जानता था कि जो बात अब वो मनु को बताने जा रहा था, उससे मनु की जिंदगी हमेशा के लिए बदल जाएगी।

'कौन सा मित्र, मत्स्य?' मनु ने सावधानी से पूछा। उसका दिल आशा और उम्मीद से धड़क रहा था। वो जानता था कि उस भयानक रात में सोमदत्त के साथ कौन था। अगर सोमदत्त जी उस रात बच निकले थे, तो शायद वो भी बच निकली हो।

'वो बच निकली थी, मनु,' मत्स्य ने स्नेह से कहा। 'तारा भी जीवित है...'

मनु जम गया। उसने अपनी आंखें बंद कर लीं और खुशी के आंसू उसके गालों पर लुढ़क आए।

कुछ पल बाद उसने मत्स्य को देखा और फिर से हंसने लगा। मत्स्य ने भी बड़ी सी मुस्कान से उसका जवाब दिया। मनु एक झटके से उठा और मत्स्य की तरफ लपका। वो मत्स्य के हाथ पकड़कर उन्हें बार-बार चूमने लगा।

'तारा जीवित है! तारा जीवित है! मेरी तारा जीवित है, मत्स्य!' वो इतना ही कह पा रहा था।

'ओह अब समझा... आपकी तारा, हुह?' मत्स्य ने शरारत से कहा। 'ये तो मैं नहीं जानता था!'

दुनिया में ऐसा कुछ नहीं था, जो मत्स्य नहीं जानता था।

मनु शरमाया।

मत्स्य ने उसकी तरफ आंख मारी और वो दोनों उस प्रेम भरे पल में डूब गए।

बनारस, 2017

स्याह भ्रातृसंघ – भाग 2

उनका समूह अब थोड़ा बड़ा हो गया था। महान द्वारका शास्त्री अपने कक्ष से बाहर निकलकर कुछ ताजी हवा खाना चाहते थे। विद्युत और नैना प्रसिद्ध तुलसीघाट की अपनी सुहानी सैर से वापस आ चुके थे। ये वही घाट था, जहां पूजनीय संत-कवि तुलसीदास 16वीं सदी में रहे थे, और वहीं उन्होंने प्रभु राम के जीवन पर महाकाव्य 'रामचरितमानस' की रचना की थी।

नैना ने विद्युत को माफ कर दिया था। वो कैसे माफ नहीं करती? वो उसे बहुत प्यार करती थी, और उन परिस्थितियों को समझती थी, जिनमें विद्युत ने ऐसी प्रतिक्रिया दी थी। गोलियों और रक्त के बीच, किसी से भी ऐसी गलती हो सकती थी। उन दोनों को ही लग रहा था मानो उनके सीने से कोई भारी बोझ हट गया था।

पिछले दिन, मठ के वरिष्ठों ने बाला का अंतिम संस्कार भी कर दिया था। उसका दाह संस्कार सनातन धर्म के हिसाब से, हरिश्चंद्र घाट पर किया गया था। मठ का प्रत्येक व्यक्ति यह समझता था कि उसकी हत्या की कोई भी रिपोर्ट पुलिस में नहीं लिखवानी थी। देव-राक्षस मठ ने सदैव अपनी लड़ाइयां स्वयं ही लड़ी थीं। और न्याय भी सदैव ही हुआ था।

और अब तो उनके साथ वो संरक्षक भी था, जिसका वर्णन भविष्यवाणी में किया गया था।

उनके पास विद्युत था।

विशाल बागीचे के एक प्रकाशित कोने में कुर्सियां बिछाकर, चाय परोस दी गई थी। विद्युत अपने परदादा के ठीक सामने बैठा था, जबकि बलवंत, पुरोहित जी और नैना भी अपनी कुर्सियां उसी घेरे में लगाए बैठे थे।

बातचीत शुरू हो गई थी। विद्युत को समझ आया कि बातचीत में शामिल होने वाले तीनों नए प्रवेशक, वास्तव में नए नहीं थे। वो इस तरह बात सुन रहे थे मानो वो पहले से ही वो बात जानते थे, जिसे द्वारका शास्त्री बताने वाले थे। वहां विद्युत ही नया था।

क्यों पा, महान कार्तिकेय शास्त्री, और फिर बाबा ने मुझे इतने सालों तक काशी से दूर रखा?

‘नाइट्स टेम्पलर निसंदेह युद्धरत बल था। लेकिन ऑर्डर में प्रत्येक व्यक्ति योद्धा नहीं था। वास्तव में, टेम्पलर में गैर-योद्धाओं का अनुपात अधिक था। जब ऑर्डर तेजी से ताकत और सदस्यता में बढ़ा, तो यह समग्र ईसाई जगत में सर्वाधिक वरीयता प्राप्त परोपकारी संस्थान बन गया। ऑर्डर का प्रत्येक सिपाही यह शपथ लेता था कि वो अपने लिए कोई जमीन या संपत्ति नहीं बनाएगा, और अपना पूरा जीवन लक्ष्य के लिए समर्पित करेगा। टेम्पलर की शुरुआती छवियों में एक घोड़े पर दो टेम्पलर बैठे दिखाई पड़ते थे, जो ऑर्डर की तंगहाली का प्रतीक था।

हालांकि, जल्द ही टेम्पलर के सितारे बुलंद होने लगे। 1099 ईस्वी में हुए पहले धर्मयुद्ध में येरुशलम की जीत के बाद, ऑर्डर ने स्वयं को ईसाई तीर्थों पर आने वाले श्रद्धालुओं का संरक्षक घोषित कर दिया। वो पवित्र समाधि सहित दूसरी जगहों पर आने वाले तीर्थयात्रियों की रक्षा करने लगे। जफा के समुद्री तट से येरुशलम की तरफ बढ़ते इन दीन तीर्थयात्रियों को मार्ग में डाकू और लुटेरे लूट लेते थे। इन्हें बचाते हुए पहली बार नाइट्स टेम्पलर दुनिया की नजर में आने लगे।’

विद्युत हर शब्द को सुनकर सकते में था। कांस्टेंटाइन, न्यू वर्ल्ड ऑर्डर, लबादा पहने उसका रहस्यमयी पूर्वज अद्वैत शास्त्री, थियोडोसियस द्वितीय और नाइट्स टेम्पलर...

ये सब कहां जा रहा था?

‘जल्द ही सब एक सूत में आ जाएगा, विद्युत,’ द्वारका शास्त्री ने मानो विद्युत

का मन पढ़ते हुए कहा।

वो शायद मन पढ़ सकते थे।

‘क्लैरवॉ के सेंट बर्नार्ड चर्च के शक्तिशाली नेता और फ्रांसिसी मठाधीश ने नाइट्स टेम्पलर की मदद करने का निर्णय लिया। उसने उनके पक्ष में बहुत लिखा और जल्द ही ईसाई तीर्थस्थलों के संरक्षक के रूप में उन्हें औपचारिक मदद दिलवा दी। यहीं से सारी बाजी पलट गई। संपन्न परिवारों ने ऑर्डर को बहुत सा दान, स्वर्ण, संपत्ति और यहां तक कि मानव श्रम भी उपलब्ध कराया। ऑर्डर को इतना धन मिला कि जल्द ही वो ईसाई वित्त संभालने लगे और तीर्थयात्रियों को पैसे देने लगे। जैसा कि बहुत से लोग ये नहीं जानते हैं कि जल्द ही नाइट्स टेम्पलर में गैर-योद्धा तेजी से बढ़ने लगे।’

विद्युत अब थोड़े संदेह में था।

‘बाबा नाइट्स टेम्पलर के बारे में ये सारी सूचनाएं आंखें खोलने वाली हैं। लेकिन मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं कि यह सब न्यू वर्ल्ड ऑर्डर से कैसे जुड़ा हुआ है...’ हैरान विद्युत ने पूछा।

इससे पहले कि द्वारका शास्त्री कुछ जवाब दे पाते, नैना बोल पड़ी।

‘तुम समझ नहीं पा रहे विद्युत कि क्या हो रहा था? पहले तो, स्वीकृत लक्ष्य के हिसाब से एक धर्म की श्रेष्ठता का प्रचार किया गया। फिर उनकी उस योजना को भारी सैन्यबल से समृद्ध किया गया। फिर तीर्थयात्रियों की हालत को आखरी कड़ी के रूप में इस्तेमाल किया गया—चर्च की संपत्ति, राजा और समग्र जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए।’

विद्युत ध्यान से सुन रहा था, लेकिन वो पूरी तरह सहमत नहीं हो पा रहा था।

‘तुम समझ नहीं पा रहे हो, विद्युत... एक धर्म, एक सेना, एक बैंक... एक सरकार! नाइट्स टेम्पलर जानते हुए या न जानते हुए न्यू वर्ल्ड ऑर्डर का सबसे बड़ा हथियार बन गए थे!’ नैना ने कहा।

‘न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के खतरनाक आदमियों और औरतों के बारे में यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि वो महीनों या सालों की योजना नहीं बनाते हैं। अपनी दूरदृष्टि से वो ऐसी रणनीतियां बनाते हैं, जो सदियों में जाकर लागू हों, और भ्रातृसंघ की कई पीढ़ियां उसे पूरा करने में लगी रहें। तो नाइट्स टेम्पलर इस गुप्त ऑर्डर का शुरुआती दौर था,’ इस बार पुरोहित जी ने समझाया।

‘एक मिनट रुकिए, पुरोहित जी। क्षमा चाहता हूं, लेकिन यह सब बहुत ही गूढ़ रहस्य लग रहा है। नाइट्स टेम्पलर का इतिहास तो दर्ज है। अगर वो किसी गुप्त भ्रातृसंघ के लिए काम कर रहे थे, तो फिर वो दुनिया के सामने उजागर क्यों हैं?’

कुछ पल खामोशी रही। विद्युत अपने पास बैठे चारों लोगों के चेहरे देख रहा था, जिन्हें देख मालूम पड़ रहा था कि उन्होंने सूचनाओं का समुद्र दबा रखा था। आखिरकार, मठाधीश ने बोलने का निर्णय लिया।

‘जबसे कांस्टेंटाइन ने इसे नियुक्त किया, न्यू वर्ल्ड ऑर्डर में दुनिया के कुछ ताकतवर लोग शामिल थे—शक्तिशाली उद्योगपति, अरबपति उद्यमी, देशों के अध्यक्ष, तानाशाह, बैंकर, ड्रग-माफिया, वैज्ञानिक और दूसरे लोग। अपनी सामाजिक, वित्तीय और राजनीतिक ताकत के अलावा भी इनके पास बुद्धिमत्ता और प्रतिभा की काबिलियत थी। भ्रातृसंघ का हिस्सा बनने की यह सबसे बड़ी योग्यता थी। क्या तुम्हें उम्मीद है कि इतने शक्तिशाली और क्रूर लोग खुले में आएंगे? वो हमेशा कमजोर, लाचार आदमियों के विरुद्ध मजबूत, असंदिग्ध लोगों का इस्तेमाल करते हैं। तुम नहीं जानते कि इस भ्रातृसंघ का हिस्सा कौन है। वो किसी बड़े देश का अगला प्रेजिडेंट भी हो सकता है! वो सिलिकोन वैली का कोई इंटरनेट टायकून भी हो सकता है। वो स्विस ऐल्प्स की किसी गुप्त लेबोरेटरी में जीनोम और क्लोनिंग पर शोध करने वाला कोई वैज्ञानिक भी हो सकता है। वो हर जगह हैं, विद्युत। और फिर भी वो अदृश्य हैं।’

विद्युत को खबर समझने का समय देते हुए, मठाधीश ने अपनी हर्बल चाय का घूंट भरा और फिर बात आगे शुरू की।

‘अगर नाइट्स टेम्पलर योद्धा मुनियों की एक साधारण टुकड़ी थी, तो उनका दीक्षा संस्कार इतना गुप्त और भयावह क्यों होता है? और फिर क्यों उन्हें बाद में ढूंढ़-ढूंढ़कर, लोगों के सामने जला दिया गया?’

विद्युत को ये सब परेशान कर देने वाले वर्णन नहीं पता थे।

‘उन्हें जला दिया गया... जिंदा?’ उसने पूछा।

द्वारका शास्त्री ने एक पल रुककर, फिर शांति से कहा।

‘हां उन्हें जला दिया था। 13 तारीख के शुक्रवार को।’

हड़प्पा, **1700** ईसापूर्व

रक्त-धारा का श्राप

वो आवाजें, सप्तऋषियों की आवाजों की तरह सौम्य नहीं थीं, जिनसे विवास्वन पुजारी परिचित था। दो भयानक आवाजें अब नीली अग्नि के केंद्र से आ रही थीं। देवता निर्जीव सा खड़ा, अग्नि की उन लपटों को, डर से फैली अपनी एकमात्र आंख से देख रहा था। अगर कोई वास्तव में सप्तऋषियों के क्रोध को समझ सकता था, तो वो हड़प्पा का सूर्य ही था।

भयावह आवाजें अब ऊंचे पहाड़ों के घर्षण से गूंज रही थीं, और ऐसी प्रतीत हो रही थीं मानो पर्वत दुख से कराह रहा हो। विवास्वन पुजारी को विश्वास हो चला था कि तड़पते मुनियों का रुदन अब सौ मील दूर तक सुनाई पड़ रहा होगा।

‘सुन लो पतित देवता... तुम्हारे पाप माफ नहीं किए जाएंगे! तुम... और इस पाप में तुम्हारे भागीदार... जल्द ही तुम्हारे काले दिल की करनी भोगेंगे! अगली बार चांद निकलने से पहले, तुम सब तबाह हो जाओगे!

तुम सब मारे जाओगे!’

बारिश की बौछारें विवास्वन पुजारी के चेहरे और बदन पर यूं पड़ रही थीं मानो प्रकृति स्वयं उस पतित आत्मा को प्रताड़ित कर रही हो। मौत के डर ने कभी देवता को नहीं सताया था। उसे अपने जीने या मरने की परवाह नहीं थी। संजना और मनु के बिना, उसके जीवन का वैसे भी कोई अर्थ नहीं था। वो वहीं खड़ा रहकर, शून्य में घूरते हुए तूफान और बारिश के वार को सह रहा था। वह जानता था कि मरने के बाद उसकी आत्मा अंधेरे में खोकर बार-बार जन्म मरण के बंधन में झूलती रहेगी। इस अंतिम प्रहर के कर्म को उतारने के लिए उसे हजारों जीवन जीना होगा।

बदले की उसकी प्यास अब और बढ़ गई थी। जिन्होंने उसे नर्क की इस अग्नि में झुलसने को मजबूर किया था, उन्हें अपनी करनी का फल भुगतना होगा।

हड़प्पा को तबाह होना होगा... उसके हर व्यक्ति को मरना होगा!

हिंसक विध्वंस ज्यों का त्यों जारी रहा। पांचवें सप्तऋषि को अग्नि में फेंकने से पहले, ऊबड़-खाबड़ जमीन पर, बाल पकड़कर घसीटा गया। इस बार स्वयं राक्षस-राजा हत्यारे का काम कर रहा था। यद्यपि इससे पूर्व के दो सप्तऋषियों द्वारा की गई विनाश की भविष्यवाणी ने सुरा को भी व्यथित कर दिया था, लेकिन उसे अपने आदमियों के सामने अपनी निडरता का प्रदर्शन करना था।

जलते ऋषि की चीत्कार पिछले दो ऋषियों से भी अधिक भयानक थी। विवास्वन को यकीन नहीं आ रहा था कि यह आवाज किसी महिला की थी। ये एक दुखी और क्रोधित मां की चीत्कार थी, जो अपने बच्चों के वध पर शोक जता रही थी। जबकि दूसरे लोग इस अनपेक्षित घटना से स्तब्ध और भयभीत थे, वहीं हड़प्पा का सूर्य तुरंत ही इस अलौकिक आवाज को पहचान गया था। उसने पहले कभी इस आवाज को नहीं सुना था। लेकिन फिर भी वो निश्चित था कि यह आवाज किसकी थी।

सारा मां...

राक्षस-राजा और उसके वहशी हत्यारों तक का रक्त उस आवाज को सुनकर जम गया, जिसकी गर्जना आसमान के बादलों से भी अधिक थी। यह भय, दुर्भाग्य और विनाश की आवाज थी। यह उस अभिशाप की आवाज थी जो हमेशा के लिए मानवजाति को मिलने वाला था!

‘सप्तऋषियों ने तुम्हें अपने भाई की तरह स्नेह किया। मैंने तुम्हें अपना पुत्र ही माना। ईश्वर ने तुम्हें दिव्यता प्रदान की और तुमने भी हमेशा उसका मान रखा —जब तक कि घृणा ने तुम्हारे सारे सुकर्मों पर पानी नहीं फेर दिया, ओ देवता! और तुम्हारी पतितता तुम्हें शून्य पर ले आई! असुरों ने अनगिनत पाप किए। समग्र हड़प्पा ने पाप किए। राजाओं ने पाप किए और पुजारियों ने भी पाप किए। दानवों ने पाप किए और देवता ने भी पाप किए। मानवजाति ने ब्रह्मांड को विवश कर दिया कि अब वो इस पाप का सफाया कर दे! मैं पापों की इस नगरी को हमेशा के लिए त्यागकर, वापस मां पृथ्वी की पावन कोक में समा जाऊंगी। सरस्वती, ज्ञान की नदी अब से सिर्फ कहानियों का हिस्सा बनकर रह जाएगी। लेकिन उससे पहले मैं अपने अपराधियों को उनके किए की सजा देकर जाऊंगी।

ध्यान रहे... प्रलय... आ रही है...!

विकराल प्रलय... अवश्यंभावी है...!’

विवास्वन पुजारी अब अपने घुटनों पर था, उसकी आंखें बंद थीं और उसने

हाथ जोड़कर, समर्पण में सिर झुका रखा था। उसने प्रलय के विषय में प्राचीन ग्रंथों में पढ़ा था और जानता था कि यह कोई ऐसी चीज थी जो प्रत्येक युग की समाप्ति पर होती थी—सृष्टि के पुनरुद्धार के लिए। वो नहीं जानता था कि यह इतनी जल्दी आ जाएगी, या वो स्वयं इस विकराल विध्वंस के केंद्र में होगा। लेकिन फिर, उसे इसकी चिंता नहीं थी। जहां तक उसका मामला था, उसके जीवन में तो प्रलय पहले ही आ चुकी थी—जिसने उसका सबकुछ खत्म कर दिया था।

रक्त-धारा की बात अभी पूरी नहीं हुई थी। वो शक्तिशाली आवाज फिर से गूंजी।

'प्रत्येक व्यक्ति के दिल में स्थित मानवता में उसे ईश्वर बनाने की क्षमता होती है। लेकिन फिर भी, अध्यात्म से निर्वाण की राह तलाशने के बजाय, मानवजाति धोखे, वध, लूटपाट और बदले को अपनाती है। ये वो नियति है जिसका चुनाव तुम्हारी प्रजाति ने स्वयं किया है! तो यही सही! ईश्वर कभी तुम्हें तुम्हारी नफरत भरी नियति से मुक्त नहीं करेंगे। हिंसा और रक्त-संघर्ष का सांप कभी भी मानवजाति को अपनी पकड़ से निकलने नहीं देगा, जो उसी ईश्वर के नाम पर ही एक-दूसरे का वध करते रहेंगे, जिसे उन्होंने आज धोखा दिया है! कभी भी विध्वंस और मार-काट तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेगी। यह मेरा अभिशाप है, ओ पतित देवता! मानवजाति अपने अंत तक असीमित वेदनाओं को झेलेगी!

मैं तुम्हें अभिशाप देती हूं! मैं तुम सबको अभिशाप देती हूं!'

विवास्वन पुजारी की आंखों से आंसू बह रहे थे। उसकी दुनिया को अचानक यह क्या हो गया था? कैसे सबकुछ, जो अभी कुछ दिनों तक सही था, अब अचानक यूं गलत हो गया था? वो सूर्य जिसे हड़प्पा के मुख्य पुजारी के पद पर बैठना था, अब वो एक-आंख वाला दानव बन गया था। उसका घर जो कभी उसकी प्रिय पत्नी और पुत्र की विश्वस्त हंसी से गूंजा करता था, वो अब भस्म हो गया था। सप्तऋषि, जिन्हें वो मार्गदर्शक और भाईयों का सा स्नेह करता था, उनका स्वयं उसकी सुविधा के लिए संहार कर दिया गया था। हड़प्पा की सुनहरी नगरी जल्द ही विकराल प्रलय में डूबने वाली थी। और ज्ञान की नदी, जिसे वो एक मां की तरह पूजता था, वो अब रक्त-धारा बन समस्त मानवजाति को अभिशाप दे रही थी।

उसके मौन अश्रु जल्द ही भारी सिसकियों में बदल गए, और वो फूट-फूटकर रोने लगा, उसके आंसू मृत मुनियों के स्थल पर गिर रहे थे।

तब देवता नहीं जानता था कि अपनी जिंदगी का आखरी भयावह अध्याय पूरा करने में ये आंसू भी कम पड़ जाने वाले थे।

और अब जब वो मरकर अपने सर्जक से मिलने को व्याकुल था, वो नहीं जानता था कि उसकी नियति में वापस आना लिखा था... सदियों बाद।

उस समय वास्तव में वो इस धरती पर आने वाला आखरी देवता होगा।

बनारस, 2017
प्रतिशोध

‘मैं उसे ढूंढ़कर मारने जा रहा हूं।’

विद्युत ने तय कर लिया था कि त्रिजट कपालिक के साथ क्या किया जाना चाहिए था। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि मसान राजा के पीछे कौन था। उस कठपुतली के पीछे छिपे मालिक का चेहरा बाद में सामने आता रहेगा। अभी के लिए देवता ने ठान लिया था। उसने कभी किसी मनुष्य का वध करने की कल्पना तक नहीं की थी। यहां तक कि दशाश्वमेध घाट पर कुछ दिन पहले हुई चुनौतीपूर्ण लड़ाई के समय भी, उसने किसी के प्राण नहीं लिए थे।

लेकिन वो तब की बात थी। मठ के पवित्र परिसर में हुए, बाला की अमानवीय हत्या ने विद्युत को मानने के लिए विवश कर दिया था कि उनका सामना सबसे बेरहम और क्रूर सेना से था। और यह दुश्मनी कभी खत्म नहीं होने वाली थी। रोमी परेरा और किराए के हत्यारों की असफलता ने उसके दुश्मन के हौसले पस्त नहीं किए थे। इसलिए एक चीज तो साफ थी। इस शत्रुता को आधी-अधूरी परिणति पर नहीं छोड़ा जा सकता था।

इस लड़ाई का अंत जरूरी था। ऐसी लड़ाई जिसमें त्रिजट कपालिक और इस खेल के पीछे छिपी भयावह परछाइयों का अंत होना था।

‘अजीब बात है कि त्रिजट कहीं छिपा भी नहीं है। हमारी गुप्तचर सेना ने खबर दी है कि वो शहर के बाहर अपनी तांत्रिक यज्ञशाला में ही है। वो ऐसी जगह है, जहां नाममात्र के लिए रीति-रिवाज होते हैं। वास्तव में तो वो एक गढ़ है। वो मसान-राजा की अध्यात्मिक और सैन्य ताकत का ठिकाना है। वो जानता है कि आप उसके पीछे जाएंगे। वो चाहता भी है कि आप उसके पीछे जाएं,’ मठ के युद्ध-प्रमुख, बलवंत ने चेतावनी दी।

‘हमें उसे पकड़ना ही होगा, बलवंत दादा, फिर भले ही उसके लिए हमें उसे

नर्क की गहराइयों से ही क्यों न बाहर निकालना पड़े!’

‘हां विद्युत। हमें उसे पकड़ना होगा। लेकिन इसके लिए हमें बेहतर योजना बनानी होगी। हम काशी के सबसे खतरनाक आदमी का सामना कर रहे हैं। हम उसे हल्के में नहीं ले सकते। इस जवाबी हमले के लिए साहस और बहादुरी दोनों की आवश्यकता होगी। लेकिन उससे भी बढ़कर, इसके लिए सटीक योजना बनानी होगी।’

विद्युत ने सहमति में सिर हिलाया। दूसरों की तुलना में, बलवंत के पास युद्ध का अधिक अनुभव था।

‘क्यों न हम अपने सारे आदमियों को लेकर उसकी नकली यज्ञशाला पर चढ़ाई कर दें, बलवंत दादा?’ अधीर सोनू ने प्रश्न किया। ‘हमारे सौ आदमी ही उसके नशे में धुत्त 666 अनुयायियों को पकड़ने के लिए पर्याप्त रहेंगे।’

‘नहीं, सोनू। एक खुले आक्रमण से अत्यधिक रक्त बहेगा और इससे अधिक लोगों का ध्यान भी आकर्षित होगा। हालांकि, यह निश्चित है कि इस संघर्ष में रक्त तो बहेगा, और हमारे पक्ष से भी योद्धा बलिदान देंगे, लेकिन फिर भी हमें कम से कम रक्त-संघर्ष को वरीयता देनी चाहिए। अंत में, याद रखना कि जब हमारा सामना स्वयं महा-तांत्रिक से होगा, तो उसकी तरफ से लड़ाई में सिर्फ मनुष्य ही नहीं आएंगे,’ बलवंत ने कहा।

विद्युत के बोलने से पहले वहां एक मिनट तक सन्नाटा रहा।

‘तो हमें क्या करना चाहिए, दादा? अगर हम उस पर खुला आक्रमण नहीं कर सकते, तो हमारे पास दूसरा विकल्प क्या है?’

बलवंत विचार-मग्न था।

‘पूरे बनारस में एक ही आदमी है, जो हमारी मदद कर सकता है,’ उसने कहा।

वो प्रतिष्ठित बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बी.एच.यू.) के विशाल परिसर में चल रहे थे। 1916 में पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित बी.एच.यू. को एशिया की सबसे बड़ी रेजिडेंशियल यूनिवर्सिटी माना जाता है, जहां 75 से अधिक छात्रावासों में 12,000 से अधिक छात्र रहते हैं। 1,300 एकड़ के सघन क्षेत्र में फैले इस अकादमिक केंद्र में 40 से अधिक देशों के 35,000 छात्र शिक्षा ग्रहण करते हैं।

बलवंत ने आग्रह किया था कि विद्युत उसके साथ किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने

चले, जो त्रिजट कपालिक के अभेद्य किले को भेद सकता था।

‘प्रोफेसर प्रभात त्रिपाठी संस्कृत के विद्वान हैं, जो इस विश्वविद्यालय में पिछले एक दशक से अधिक समय से पढ़ा रहे हैं। वो वेदों, उपनिषदों और दूसरे प्राचीन भारतीय ग्रंथों के समर्थ ज्ञाता हैं। उनके पास हमेशा एक दर्जन से अधिक छात्र पीएच.डी. की तैयारी कर रहे होते हैं। बहुत ही नेक मनुष्य हैं, जो द्वारका शास्त्री जी को पूजते हैं। दुर्भाग्य से उनकी एक आंख खराब है, इसलिए आप उन्हें हमेशा काला चश्मा लगाए देखेंगे,’ बलवंत ने बताया।

‘इस सब जानकारी के लिए धन्यवाद, दादा। लेकिन हमारी वर्तमान समस्या में वो हमारे लिए कैसे मददगार हो सकते हैं?’

बलवंत ने सपाट जवाब दिया।

‘क्योंकि अकादमिक का शांत जीवन जीने से पहले, प्रोफेसर त्रिपाठी त्रिजट कपालिक के साथी व उसके कार्यों में साझेदार थे।’

विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर के बगीचे में वो कैंटीन की चाय के छोटे कप पकड़े बैठे थे। सादगी प्रिय प्रोफेसर त्रिपाठी घास पर ही पालथी मारकर बैठा था। अपने अतिथियों को भी, अपने सामने घास पर बैठने का निमंत्रण देने में उसे कोई झिझक नहीं हुई थी। शुरुआती अभिवादन के बाद, बलवंत ने बड़ी सतर्कता से मुख्य विषय उठाया।

‘त्रिपाठी जी, हम यहां आपकी सहायता और आशीर्वाद लेने आए हैं। सिर्फ आप ही हमारे अभियान में हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं।’

प्रोफेसर ने उदारता से मुस्कुराते हुए कहा, ‘आपके जैसे योद्धा के लिए क्या मुश्किल है, बलवंत? और किताबों और कक्षा में खोया रहने वाला भला आपकी क्या सहायता कर सकता है?’

विद्युत को प्रोफेसर त्रिपाठी स्वाभाविक, जमीनी और दयालु लगा था। विद्युत के लिए यह कल्पना तक कर पाना मुश्किल था कि कभी वो एक निर्दयी महा-तांत्रिक का सहयोगी रहा था!

झिझक के साथ अपने अगले शब्द कहने से पहले, बलवंत कुछ पल के लिए रुका।

‘हमें त्रिजट कपालिक की यज्ञशाला पर चढ़ाई करने के लिए आपकी मदद चाहिए...’

प्रोफेसर का चेहरा पथरा गया। पल भर में विद्युत ने उसे क्रोध से कांपते हुए देखा। वो अपना क्रोध भड़ककर नहीं दिखा सकता था, लेकिन विनम्र प्रोफेसर ने नमस्ते में अपने हाथ जोड़े और वहां से उठने लगा।

'त्रिपाठी जी... मैं विनती करता हूं... कृपया रुक जाइए...' बलवंत ने आग्रह किया।

वो प्रोफेसर की बांह पकड़कर उन्हें बिठाने का प्रयत्न कर रहा था। जब प्रोफेसर ने उसकी विनती मान ली, तो उसे बड़ी राहत महसूस हुई।

'मेरी उपस्थिति में उस शैतान का नाम लेकर आपने मेरा अपमान किया है। वो जीवन मैं बहुत पहले ही पीछे छोड़ चुका हूं। उसने मेरा सब कुछ छीन लिया था। सबकुछ...

और ये मत सोचना कि आपके यहां आने की खबर उसे नहीं लगेगी। उसकी नजर हर चीज पर है। वो सबकुछ जानता है!' प्रोफेसर की आवाज में डर था।

'मैंने अघोरी तांत्रिक के रूप में नौ साल बिताए हैं। त्रिजट मेरे भाई सामान था। या कम से कम मैं तो यही मानता था। यह उसके मसान-राजा और महा-तांत्रिक बनने से बहुत पहले की बात थी। हम युवा थे। हमारी साधना रंग ला रही थी और सिद्धी हमें ताकत का नशा करा रही थी। हम किसी भी राह चलते पर, भयावह प्राचीन जादू, जैसे बगलामुखी इत्यादि कर सकते थे। लेकिन जैसे महीने और साल गुजरे, त्रिजट कुछ बदलने लगा।'

प्रोफेसर अब अपने पुराने भयावह दिनों को याद कर रहा था।

'हर दिन वो पहले से और अधिक क्रूर होने लगा। अब उसकी साधना रुद्र की पूजा तक नहीं, बल्कि डाकिनी, पिशाचों और चुड़ैलों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए थी। वो कब्रों पर जाकर अकेले, सघन साधना करने लगा, और अपने काले कारनामों के लिए मृत आत्माओं का सहारा लेने लगा। कोई नहीं जानता था कि वो क्या हासिल करने की कोशिश कर रहा था। लेकिन हम समझ सकते थे कि वो कुछ ऐसा करने की कोशिश कर रहा था, जो कभी नहीं करना चाहिए था।'

प्रोफेसर अब परेशान दिखाई दे रहा था। इन पुरानी यादों की वजह से वो पसीने से तर हो गया। विद्युत ने उसे पीने के लिए पानी की बोतल दी, जिसे उसने साभार ले लिया।

'लेकिन अपने सारे प्रयासों के बावजूद, वो कभी श्मशान तारा का आह्वान

नहीं कर पाया। मां उसे अपने दर्शन दे ही नहीं रही थीं। इससे मुझे हैरानी हुई। उससे कम समर्थ तांत्रिक भी श्मशान तारा को देखने का दावा करते हैं। इससे मुझे कुछ संदेह हुआ। और पहली बार, मैंने त्रिजट की कुंडली तैयार की।'

प्रभात त्रिपाठी अब डर से पीला पड़ रहा था। स्पष्टत: वो समय में पीछे जा रहा था।

'आपने उसकी कुंडली में क्या पढ़ा, त्रिपाठी जी?' विद्युत ने पूछा। 'मुझे यकीन है कि आपने देखा होगा कि वो कितना बुरा इंसान है और आगे क्या बन जाने वाला था...'

प्रोफेसर ने न में अपना सिर हिलाया।

'उसकी कुंडली ने यह नहीं बताया कि वो अच्छा इंसान है या बुरा। वो ऐसा भविष्यफल था जिसे हजारों सालों में किसी तांत्रिक ने नहीं देखा होगा। मैंने उसे बार-बार पढ़ा, और मैं अपनी आंखों पर भरोसा नहीं कर पा रहा था। अच्छे और बुरे की बात तो जाने दीजिए, वो कुंडली किसी मनुष्य की थी ही नहीं!'

बलवंत और विद्युत हैरान थे। वो प्रोफेसर की बात को पूरी तरह नहीं समझ पा रहे थे।

'क्षमा कीजिए त्रिपाठी जी... मुझे आपकी बात समझ नहीं आई,' विद्युत ने नम्रता से कहा।

प्रोफेसर अब बेचैनी से, पसीने से तर हो गया था। वो घबराहट से फुसफुसाया।

'शायद मां तारा उसे इसलिए दर्शन नहीं दे रही थीं... क्योंकि...

त्रिजट का जन्म राक्षस योनि में हुआ था।

वह वो राक्षस था जो सदियों बाद धरती पर उतरा था।'

हड़प्पा के पूर्व में, **1700** ईसापूर्व

‘इसकी कहानी सदियों तक याद की जाएगी’

‘आप एक विशाल नाव बनाओगे, मनु। ऐसी किश्ती जो बहुत विशाल होगी, जिसका परिमाण मानव के सामर्थ्य की सीमाओं से बाहर होगा। ऐसा जहाज जो इतना भव्य होगा कि उसका शीर्ष बादलों के ऊपर उदय होगा। कोई भी, समय के अंत तक, उस नाव की चौड़ाई का अनुमान भी न लगा सके। यह पोत अपनी नियति को पूर्ण करेगी और समय के साथ स्वाभाविक रूप से नष्ट हो जाएगी। लेकिन इसकी कहानी सदियों तक याद की जाएगी।

और आपका नाम भी, सत्यव्रत मनु।’

मनु मत्स्य की कही हर बात सुनकर स्तब्ध था।

अगर उस नाव का परिमाण मनुष्य की कल्पना से परे होगा, तो मैं उसे कैसे बना पाऊंगा? कोई ऐसी चीज कैसे बना सकता है, जिसके लिए वो स्वयं ही विश्वस्त न हो? और मैं ही उसे क्यों बनाऊंगा? इस किश्ती को नियति का कौन सा लक्ष्य पूर्ण करना था? और मत्स्य मुझे सत्यव्रत मनु क्यों कह रहे हैं?

मत्स्य मनु के चेहरे पर हैरानी के भाव देख सकता था। वो मुस्कुराया और मनु को अपने साथ चलने का संकेत दिया। जैसे ही वो काले पर्वत की ऊंची गुफा से बाहर निकले, वो फिर से तेज हवाओं और धुआंधार बरसात से तर हो गए। आसमान उतना ही अक्षम्य दिख रहा था, जितना वो पिछले कुछ दिनों से था। वो अब हमेशा के लिए स्याह हो चुका था।

इससे पहले कि मनु मत्स्य से पूछ पाता कि वो इस तूफान में बाहर क्यों निकले थे, उसने देखा कि कुछ थके हुए घोड़े, हवा से संघर्ष करते हुए, उनकी गुफा की ओर बढ़ रहे थे। सूर्य पुत्र को उन घुड़सवारों में से एक को पहचानने में अधिक समय नहीं लगा, जब वो कपास के धागे से बनी एक पारभासी मशाल को, हवा से बचाते हुए ला रहा था।

वो पंडित सोमदत्त था, हड़प्पा का मुख्य अभियंता और उसके पिता का अंतिम मित्र।

पंडित सोमदत्त के आंसू अभी भी बह रहे थे। वो विवास्वन पुजारी के पुत्र को जीवित, स्वस्थ और प्रसन्न देखकर खुश था। उसने अब प्रत्यक्ष सत्य को स्वीकार लिया था।

अपने पिता की ही तरह, मनु भी कोई साधारण नश्वर प्राणी नहीं है। सिर्फ एक देवता ही उन घावों को सह सकता है, जो मनु को लगे थे।

मनु सोमदत्त की तरफ दौड़ा और उसे घोड़े की काठी से लगभग खींचते हुए, उसके गले लग गया। उसने हड़प्पा के बुद्धिमान निर्माता के पैर छुए और उसे एक बार फिर से बांहों में भर लिया। उसकी आंखें अपने अभिभावकों की स्मृति में नम हो गई थीं। सोमदत्त बार-बार मनु को आशीर्वाद दे रहा था, और देख सकता था कि संजना जहां भी होगी, उसे आज अपने पुत्र पर गर्व होगा।

हालांकि, वो निश्चित नहीं था कि आज वो अपने पति के बारे में क्या कहती।

लेकिन अभी सोमदत्त को इसकी चिंता नहीं थी। विवास्वन और संजना की आत्मा समय की शुरुआत के साथ एक-दूसरे से जुड़ी थीं, और सृष्टि के अंत तक एक साथ ही रहने वाली थीं। वो अपने देवता को देख रही थी। और वो जानती थी कि वो अभी भी वही मनुष्य था जिसे वो प्रेम करती थी, अपने समय का महानतम मनुष्य। वो जानती थी कि नियति ने विवास्वन पुजारी की ऐसी परीक्षा ली थी, जिससे किसी भी मनुष्य को नहीं गुजरना चाहिए। वो ये भी जानती थी कि अब उसकी आत्मा को निर्वाण प्राप्ति के लिए अनेकों जीवन से गुजरना होगा।

वो भी उसके साथ बार-बार पृथ्वी पर आएगी। वो हर जन्म में उसका साथ निभाएगी।

वो अगली दुनिया में साथ ही जाएंगे।

‘मैं आपका ऋण कभी उतार नहीं पाऊंगा, सोमदत्त जी,’ मनु ने हाथ जोड़कर कहा। ‘मेरे पिता के अंतिम पलों में आप ही उनके साथ थे।’

सोमदत्त को समझ नहीं आया कि मनु क्या कह रहा था।

मनु क्यों अपने पिता के अंतिम पलों की बात कर रहा है, जबकि विवास्वन पुजारी तो अभी जीवित हैं?

जैसे ही वो कुछ कहने को हुआ, मत्स्य बीच में आ गया। उसके नेत्रों ने सोमदत्त को कुछ पल के लिए शांत रहने का संकेत दिया।

'कृपया हमारी विनम्र कुटी में आइए, सोमदत्त,' उसने कहा। 'आपको और आपके साथियों को कुछ गर्म भोजन और आराम की आवश्यकता है।'

सोमदत्त ने हां में सिर हिलाया, और मनु की तरफ मुस्कुराकर, ऊंची गुफा के द्वार की ओर बढ़ गया।

मनु सोमदत्त को जाते हुए देख रहा था कि तभी मत्स्य ने उसके कंधे को थपथपाया। मनु मत्स्य की तरफ मुड़ा, जिसने अपनी भवें हिलाकर, मनु को अपने पीछे कुछ देखने का संकेत दिया।

कुछ नहीं।

कोई।

तारा।

बनारस, 2017

लुप्त सभ्यता

विद्युत कुछ समय तक गहरी चिंता में बैठा रहा, और फिर वो प्रश्न पूछा जो उसे अब तक खाए जा रहा था।

‘बाबा, वो हमसे इतना क्यों डरे हुए हैं? उन्हें ऐसा क्यों लगता है कि हम उनके विशाल और संगठित अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क को पराजित कर देंगे? सबसे महत्वपूर्ण, उन्हें शुरू से ही हम से क्या डर था? कांस्टेंटाइन को महान अद्वैत शास्त्री पर इतना विश्वास क्यों था?’

द्वारका शास्त्री मुस्कुराए।

‘वो हमसे भयभीत नहीं हैं, विद्युत। वो उससे भयभीत हैं, जो काले मंदिर में छिपा है।’

विद्युत ने आह भरी, और अपना सिर हिलाकर, हंसने लगा।

‘मैं जानता हूं कि आप मुझे काले मंदिर के रहस्य के बारे में तभी बताएंगे, जब आपको लगेगा कि सही समय आ गया है, बाबा। तो मैं अपनी उत्सुकता को बचाकर रखूंगा और आपसे उसके बारे में नहीं पूछूंगा!’

द्वारका शास्त्री ने प्रत्युत्तर में जोरदार ठहाका लगाया। विद्युत अपने परदादा को यूं खुलकर हंसता देख खुश हुआ।

‘ये देखकर अच्छा लगा कि तुम मुझे इतनी अच्छी तरह समझने लगे, विद्युत,’ उन्होंने कहा।

‘लेकिन बाबा फिर भी, हम क्यों? बनारस में, भारतीय योगियों का आश्रम इतना अहम कैसे हो गया? एक गुप्त संस्था का दैत्य, जो दुनिया के सबसे ताकतवर लोगों के नियंत्रण में है, उसे हम इतना बड़ा खतरा क्यों लग रहे हैं?’

‘क्योंकि हम सबसे प्राचीन ज्ञान के प्राप्तकर्ता और संरक्षक हैं, विद्युत,’

ग्रैंडमास्टर ने सपाट कहा।

विद्युत ने मुस्कुराकर, संदेह से अपने परदादा को देखा। वो मठाधीश की बात से पूरी तरह सहमत नहीं था।

‘क्या तुम्हें मनु की नाव की कहानी या मिथक पर भरोसा है, विद्युत?’ द्वारका शास्त्री ने पूछा।

वो अभी विद्युत को मनु और उसकी नाव से स्वयं उसके गहरे संबंध की वास्तविकता के बारे में नहीं बताने वाले थे।

कम से कम अभी तो नहीं।

‘हमारे आसपास हजारों उदाहरण हैं, विद्युत, जो लुप्त सभ्यता का संकेत देते हैं। उस प्राचीन ज्ञान का, जो समय की रेत में गुम हो गया... या मुझे कहना चाहिए कि विशाल सागर की गहराई में डूब गया,’ द्वारका शास्त्री ने कहा।

विद्युत ध्यान से सुन रहा था।

‘इस पर सोचो और सावधानी से निरीक्षण करो, पुत्र। तुम्हें उस लुप्त सभ्यता के चिह्न हर जगह दिखाई देंगे। मैं कुछ सर्वव्यापक मिथकों और कहानियों से शुरू करता हूं। तुमने काफी अध्ययन किया है। तुम्हें तुम्हारे आख्यानों और ग्रंथों की गहन जानकारी है। तो मुझे बताओ, वो कौन से लोग या चरित्र थे जो रामायण और महाभारत दोनों में उपस्थित थे, जबकि ये दोनों आख्यान दो अलग युगों में घटित हुए थे?’

महान आख्यानों पर कुछ पल दिमाग दौड़ाने के बाद, विद्युत ने जवाब दिया, ‘निश्चित रूप से, प्रभु हनुमान—हम उन्हें रामायण और महाभारत, दोनों आख्यानों में उपस्थित पाते हैं। वो प्रभु राम के परम भक्त थे और उनके साहस और चातुर्य की कहानी के बिना रामायण अधूरी ही रहती। फिर वो चाहे स्वर्ण नगरी लंका को जलाने की बात हो या विशाल समुद्र को छलांग लगाकर पार करना, हनुमान रामायण में पूरी तरह से छाए रहे। बाद में महाभारत में भी, उनका जिक्र अनेकों बार आया, जहां उन्होंने एक छोटे से वानर के रूप में महान भीम का गर्व चकनाचूर किया। बाद में वो कुरुक्षेत्र के महान युद्ध के दौरान, अर्जुन के रथ की पताका पर भी शोभित थे।’

‘सही, लेकिन ये सबसे आसान था। और कौन था?’ द्वारका शास्त्री ने इस चर्चा का आनंद लेते हुए पूछा।

‘फिर शक्तिशाली पक्षी गरुड़—स्वयं भगवान विष्णु का वाहन। गरुड़ रामायण में राम और लक्ष्मण की सहायता के लिए आया, जब राक्षस राजकुमार मेघनाद या इंद्रजीत ने उन पर अपने जहरीले हथियार, नागपाश से वार किया था। गरुड़ को तुरंत हथियार में से सापों का जहर दूर करने के लिए बुलाया गया था। फिर महाभारत, या कृष्णावतार में गरुड़ फिर से प्रकट होते हैं, जब कृष्ण राक्षस राजा नरकासुर के साथ युद्धरत थे।’

मठाधीश मुस्कुरा रहे थे। ‘मैं प्रभावित हुआ, विद्युत। अब मुझे एक अंतिम उदाहरण और दो।’

‘बाबा, फिर महान योद्धा-संत परशुराम थे। भगवान विष्णु के दसवें अवतार माने गए, परशुराम सीता के स्वयंवर में उपस्थित थे, जहां वो भगवान शिव का धनुष पिनाका टूटने के बाद, राम पर क्रोधित होकर आए थे। बाद में, वो महाभारत में विकट योद्धाओं—भीष्म, द्रोणाचार्य और कर्ण को युद्ध कौशल सिखा रहे थे।’

‘बहुत बढ़िया!’ द्वारका शास्त्री चहके। ‘अब मुझे ये बताओ विद्युत—जो तीन नाम तुमने लिए, उनकी एक साझी विशेषता क्या है? ऐसी क्या विशेषता है जो हनुमान, गरुड़ और परशुराम तीनों में मौजूद है?’

विद्युत को इसकी सही जानकारी नहीं थी। उसने कुछ पल सोचा, लेकिन फिर भी प्रभु हनुमान, शक्तिशाली पक्षी गरुड़ और बुराई के विनाशक, परशुराम को आपस में जोड़ने वाली कड़ी नहीं ढूंढ़ पाया।

‘क्षमा करें बाबा, लेकिन मैं इन महान व्यक्तित्वों में कोई साझा विशेषता नहीं खोज पाया। वो सब तो आपस में बहुत भिन्न हैं!’

‘हां, वो अलग हैं। लेकिन एक खूबी है, जो उन्हें आपस में जोड़ती है। और वो खूबी है गति। अगर तुम्हें तुम्हारे आख्यान अच्छी तरह याद हों, विद्युत, तो ये तीनों व्यक्तित्व अपनी गति के लिए जाने जाते थे, और ये तो मन की गति से भी कहीं तीव्र थे। हनुमान यूं बिजली की सी तेजी से चले थे कि उन्होंने सूरज को निगल लिया था। गरुड़ को भगवान विष्णु ने अपना वाहन इसीलिए चुना था, क्योंकि गरुड़ की रफ्तार सबसे तेज थी। परशुराम को वरदान था कि वो कहीं भी बस सोचने भर से पहुंच सकते थे!’

बुजुर्ग ने कुछ पल रुककर अपने परपोते को अपनी कही बात समझने का अवसर दिया। कुछ देर रुककर, उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ाई।

‘अब तुम इसे अजीब संयोग कह सकते हो कि जो तीन किरदार युगों की सीमा के पार भी उपस्थित रहे, वो वही तीन थे जो प्रकाश की गति के बराबर या शायद उससे भी तेज चल सकते थे।’

‘हे भगवान!’ विद्युत झटके से चौंका। ‘क्या आप कह रहे हैं कि वो सैकड़ों और हजारों सालों तक भी अपनी प्रकाश से तेज गति की वजह से ही चिर युवा रह सके?! और आइंस्टाइन के सापेक्षता सिद्धांत के परिणामस्वरूप, कोई भी जो प्रकाश की गति से तेज सफर कर सके, उसके लिए समय उसके समकक्षियों की तुलना में धीमी गति से बीतता है?’

‘बिलकुल सही, विद्युत!’ ग्रैंडमास्टर ने जवाब दिया। ‘लेकिन वास्तविक प्रश्न है —अगर आइंस्टाइन ने 20वीं सदी में सापेक्षिकता सिद्धांत दिया था, तो फिर प्राचीन ऋषियों ने कैसे हजारों साल पहले आख्यानों और ग्रंथों में आधुनिक वैज्ञानिक विचार को लिख दिया? वो कैसे जानते थे कि सिर्फ दिव्य व्यक्तित्व ही प्रकाश की गति से युगों युगांतर में सफर कर सकते थे?’

अब तक परदादा और परपोते की जोड़ी प्राचीन ग्रंथों के उन अनेकों संकेतों, इशारों और घटनाओं पर चर्चा कर चुकी थी, जिनमें आधुनिक वैज्ञानिकता के चिह्न थे, जो बता रहे थे कि वो पीढ़ी वर्तमान मानवजाति से कहीं अधिक आधुनिक थी।

‘जब तक टेलीस्कोप का अविष्कार नहीं किया गया था, तब तक तारों और ग्रहों के बीच अंतर बता पाना असंभव था। फिर कैसे प्राचीन मुनि जानते थे कि सौर प्रणाली में नौ ग्रह या नवग्रह थे? रामायण में, राजा जनक के यह कहने पर कि आर्यवर्त में कोई वीर नहीं है, लक्ष्मण बहुत क्रोधित हो गए थे और उन्होंने कहा था कि कैसे वो इस धरती को एक गेंद के समान उछाल सकते थे। भगवान विष्णु के वाराह अवतार ने भीषण बाढ़ के बीच धरती को अपने दांतों के बीच किसी ग्लोब की तरह दबाकर निकाला था। सबसे पहले छठी सदी ईसापूर्व में, ग्रीक पाठ में धरती के गोल होने का जिक्र हुआ था। और तीसरी सदी ईसापूर्व के अंत तक भी यह सर्वमान्य नहीं था, जब तक कि 500 ईसापूर्व में पाइथागोरस ने इस विषय में दक्षता हासिल नहीं की। फिर कैसे प्राचीन भारतीयों को हजारों वर्ष पूर्व पता था और उन्होंने अपने ग्रंथों में वर्णित किया कि पृथ्वी गोल थी?’ विद्युत ने भी अपने परदादा की बात में भारतीय मिथक से कुछ सटीक उदाहरण जोड़े।

द्वारका शास्त्री प्रसन्न थे कि उनका प्रिय विद्युत भी उस बात को स्वीकार कर रहा था और उसमें योगदान दे रहा था, जो वो उसे बताने की कोशिश कर रहे थे। वो किताबों की अलमारी तक गए और कोई लाखों साल पुराना संग्रह निकालने लगे। मठाधीश ने इस प्रागैतिहासिक काल की सी लगने वाली किताब को खोला और किसी संदर्भ के लिए उसके पन्ने पलटे।

‘आयुर्वेद, या आदिकालीन भारतीय ‘जीवन का विज्ञान’ तुम्हें और चकित कर

देगा, विद्युत। दो प्राचीन ऋषियों, सुश्रुत और चरक, ने औषधि और शल्य चिकित्सा पर खासा लिखा है। वो लोग, जिनकी तकनीकी उपकरणों तक कोई पहुंच नहीं थी, चिकित्सा के विविध स्तरों और शल्य चिकित्सा पर इतनी बारीकी से कैसे लिख सकते थे? सुश्रुत संहिता में 700 से अधिक चिकित्सीय पौधों का वर्णन है। लेकिन शानदार लेबोरेट्री और या आधारभूत माइक्रोस्कोप के बिना, उन्हें कैसे पता चला कि इन पौधों में उपचारात्मक गुण थे? कैसे वो जटिल सर्जरी तक कर पाते थे, जिनमें सी सेक्शन, पुरस्थ ग्रंथि को हटाना, कृत्रिम जोड़ लगाना... शामिल थे। ये सब आधुनिक बेहोश करने वाली दवाइयों के बिना वो कैसे कर पाते थे?'

'ये सच है, बाबा। और क्या आप जानते हैं कि ग्रंथों में ब्रह्मास्त्र के घातक प्रभाव का जो वर्णन किया गया है, वो हिरोशिमा और नागासाकी के परमाणु बम विस्फोट के प्रभाव से कितना मिलता है?'

'हां, मैंने वो पढ़ा था, विद्युत। हमारे आदिकालीन पूर्वजों के पास निश्चित रूप से ज्ञान और विज्ञान का बाहुल्य था, जो सदियां गुजरने पर कहीं लुप्त हो गया। एक तारा, जिसे अब एंटीरिज कहा जाता है, और रात्रिकालीन आकाश की 15वीं सबसे चमकती हुई चीज घोषित किया गया। लेकिन प्राचीन मुनियों ने इसे ज्येष्ठ कहा। वो ऐसा क्यों करते, अगर वो नहीं जानते कि एंटीरिज वास्तव में सबसे बड़ा तारा है, जो सूर्य से आकार में लगभग, 40,000 गुणा बड़ा है? हबल जैसे विशाल टेलीस्कोप के बिना यह जानकारी संभव ही नहीं थी!'

बुजुर्ग और उसका अद्भुत अनुयायी, दोनों मठाधीश के बड़े से कक्ष में बैठे थे। प्राचीन ज्ञान के साथ उनका गहन और रहस्यमयी संबंध था, जिसे वो अब परत दर परत उतार रहे थे।

जैसा कि ग्रीक दार्शनिक हेराक्लिट्स ने कहा था, ब्रह्मांड में मात्र एक ही चीज नियत है, और वो है परिवर्तन। भारत या आर्यवर्त का वैभव, जो कभी ब्रह्मांड के अपूर्व ज्ञान का स्रोत केंद्र हुआ करता था, समय के साथ क्षीण होता गया और यह विदेशी ताकतों की मिलीभगत का भी हिस्सा था।

अद्वितीय भारत ने हमेशा से अपने ही लोगों से धोखा खाया है। फिर वो चाहे आम्भी हो, जिसने सिकंदर का महान उप-महाद्वीप की सीमाओं पर स्वागत किया या जयचंद, जिसने राजपूत राजा पृथ्वीराज के विरुद्ध षड्यंत्र किया; या फिर प्लासी का मीर जाफर, या 1857 के विद्रोह का इलाही बक्श; या फिर वो जमींदार, जो अंग्रेजों के वफादार रहे या वो जिसने पश्चिमी साम्राज्यवाद, गैर-राष्ट्रवादी मसले को बढ़ावा दिया—यह शानदार देश, असीमित ज्ञान का केंद्र, हद से अधिक बदकिस्मत रहा है।

हड़प्पा, **1700** ईसापूर्व

पुत्र दर पुत्र, पीढ़ी दर पीढ़ी

सुरा ने छठे सप्तऋषि के जीर्ण अवशेष को आग की तरफ धकेला। बर्फीली हवा और प्रताड़ित ओला वृष्टि असुरों की हिम्मत पर प्रहार कर रही थी। अभिशाप और प्रलय के आगमन की भविष्यवाणी ने उन्हें और उनके राजा को अंदर तक हिला दिया था। अब सिर्फ वो अपने पागलपन भरे हठ की वजह से ही इस बेतुके संहार को अंजाम दे रहे थे। ऊंचे पर्वत के ढहने की आवाज अब तेज गति से समीप आ रही थी।

‘रुक जाओ, सुरा! क्या तुमने सारा मां की प्रलय की भविष्यवाणी नहीं सुनी?’ विवास्वन पुजारी नीली अग्नि की तरफ इशारा करके चिल्लाया, जो पांच मुनियों को निगल चुकी थी।

‘क्या तुम्हारे कानों को अभिशाप सुनाई नहीं दिया? अब और तुम क्या चाह रहे हो, ओ असुरों?’

सुरा उतना ही क्रोधित था, जितना वो डरा हुआ था। जिस पल से वो सप्तऋषि की शरण स्थली पर पहुंचे थे, कुछ भी उसकी योजना के अनुसार नहीं हुआ था। असीमित आकांक्षाओं और जीत की कगार तक पहुंचने के नशे में, उसने उम्मीद की थी कि वो बिना किसी कठिनाई के मुनियों को मार देगा, और समग्र आर्यवर्त का निर्विवादित शासक बन जाएगा। लेकिन रात तो किसी की कल्पना से भी अधिक भयानक होती जा रही थी। तेजी से वृद्ध और जीर्ण होते सप्तऋषि, उनकी मृत सफेद आंखें, लपकती नीली अग्नि, दिल दहला देने वाली धमक और अब यह भयानक अभिशाप!

क्या धरती के सिंहासन पर मेरे बैठने के रास्ते में स्वयं ब्रह्मांड षड्यंत्र रच रहा था?

‘पीछे हट जाओ, ओ अ-देवता!’ राक्षस राजा चिल्लाया।

वो विवास्वन पुजारी की तरफ बढ़ा, अर्थपूर्ण ढंग से पथरीली जमीन पर पैर पटकते हुए, जिससे अपनी आज्ञा उल्लंघन की चेतावनी दे सके।

'तुम जानते थे, है न?' उसने अधिकार पूर्वक देवता से पूछा।

'मैंने तुम्हें बताया था सुरा, ये बस सप्तऋषि के अवशेष थे। और तुम्हें क्या लगता है कि ये इतनी तेजी से जीर्ण क्यों हो रहे हैं? क्योंकि उनकी अनश्वर आत्मा जा चुकी है। वे योगिक विज्ञान के ज्ञाता हैं। अपनी सिद्धियों का इस्तेमाल करके उन्होंने पहले ही अपने शरीर को छोड़ दिया। जब हम बात कर रहे थे, तभी उनकी आत्मा कहीं और जा चुकी थी... और शायद मैं जानता हूं कहां...' विवास्वन पुजारी ने तर्क देने की कोशिश की।

सुरा ने देवता की कही हर बात को अनसुना कर दिया।

'तुम जानते थे कि ये मायावी अ-ऋषि हम पर कोई काला जादू कर देंगे...' वो स्वयं से बुदबुदाया, उसकी आंखों में तेज और पागलपन था।

अचानक ही सुरा अपने असुरों की तरफ मुड़ा और ढिटाई से कहा, ऐसे घोषणा करते हुए मानो वो अभी से हर चीज और हर किसी का स्वामी था।

'इन जादूगरों की चाल में मत आना, मेरे साहसी योद्धाओं! कोई अभिशाप-वभिशाप नहीं है! ये चालाक मुनि बहुत मायावी हैं। यह सब इन जादूगरों के माया जाल के अतिरिक्त कुछ और नहीं है!'

राक्षस राजा ने अपनी विकराल तलवार निकालकर, उसे भयानक आसमान में ऊंचा उठाया।

'असुर साम्राज्य की जय हो!' वो चिल्लाया।

उसके विकराल सिपाहियों ने भी अपनी परिचित बहादुरी से प्रतिक्रिया दी। प्रत्येक अपने विकराल हथियार के साथ, ईश्वर को चुनौती देने वाले अपने राजा के समर्थन में आ गया!

'असुर साम्राज्य की जय हो!'

वो सभी एक लय से चिल्लाए।

सुरा अपनी टुकड़ी के निर्दयी सेनाध्यक्ष की तरफ मुड़ा, जो तुरंत समझ गया कि उसका रक्तपिपासु राजा क्या चाहता था। उसने अब छठे ऋषि की कमर में

अपना विशाल भाला घोंप दिया और उसे यूं उठा लिया मानो कोई शिकारी अपने मृत शिकार को उठाता है। कुम्हलाया हुआ ऋषि दर्द से कराहा, उसे अग्नि में फेंकने से पहले उसे आग के ऊपर लटकाकर, मांस की तरह भूना गया। वो तब भी जीवित था।

सेनाध्यक्ष और पचास सैनिक जंगलियों की तरह हंसने लगे।

सरस्वती के पांचों पुत्रों की तरह, झुलसते हुए मुनि ने, आग के नीले अंगारों के बीच से कहा।

'तुमने महज अपने शब्दों से इन कसाइयों को रोकने का सतही प्रयास किया, ओ देवता! और वो भी तब जब तुम्हारे पास ईश्वर का दिया, ब्रह्मांड का सबसे शक्तिशाली हथियार है! तब जब तुम्हारे पास विशाल रत्न-मारू है! तो ये ही सही।

जिस तरह से, इस अभागी रात में, तुमने दिव्य मुनियों को एक-एक कर जलता देखा, नियति भी तुम्हारे वंश को ऐसी ही हिंसा में खत्म होते देखेगी। पुत्र दर पुत्र, पीढ़ी दर पीढ़ी। मैं तुम्हें और तुम्हारे समग्र वंश को अभिशाप देता हूं, ओ पतित देवता...

तुम्हारे वंश का प्रत्येक पुत्र वही हिंसक मौत मरेगा, जो आज भयानक रात में तुमने देखी है!

मैं तुम्हें अभिशाप देता हूं! और तुम्हारे समग्र वंश को!

यह अभिशाप समय के अंत तक रहेगा!'

पहले की तरह ही, विवास्वन पुजारी बिलकुल भी नहीं हिचका। लेकिन दर्द में भी वो हैरान था।

ऐसा कैसे हो सकता है कि त्रिकाल-दर्शी सप्तऋषि न जानते हों?

उसने अपने हाथ जोड़े, और पहले से ही शर्मिंदा और खिन्न हो, उस जलते ऋषि के सम्मुख अपना समर्पण किया।

'मैं आपका अभिशाप स्वीकार करता हूं, वैसे ही जैसे मैंने आपका आशीर्वाद स्वीकारा था। मेरा अंत हिंसक और यातना भरा ही होना चाहिए। लेकिन शायद आप भूल गए हैं, ओ महान ऋषि... मेरा कोई वंश होगा ही नहीं। मेरा एकमात्र पुत्र, दुनिया का श्रेष्ठ पुत्र... मेरा मनु तो पहले ही मर चुका है।'

आह भरकर वो एक पल को रुका, और अपने आंसू और दर्द को पीने लगा।

‘और हां, वो शायद बहुत ही निर्ममता से मरा था... आपके अभिशाप की तरह ही, ओ ऋषि... मेरे मनु को जहरीले बाणों से भेद दिया गया था!’

इससे पहले कि छठा सप्तऋषि राख में भस्म हो जाता, उसकी आवाज एक आखरी बार सुनाई दी... इस बार उसमें क्रोध से अधिक दया थी।

‘तुम सच में अंधे हो गए हो, विवास्वन। एक श्रेष्ठ मनुष्य, जो एक समय में आदमियों की आत्मा और समय की धुरी के अंदर झांक सकता था, आज उसे अपने पुत्र के विषय में ही ज्ञात नहीं है।

ओ मलिन सूर्य, तुम्हारा पुत्र जीवित है! और वो ही भीषण बाढ़ के बाद, सुबह की पहली किरण देखेगा।

मनु पुजारी... समस्त सृष्टि का संरक्षक होगा!

और सत्यव्रत मनु के नाम से अमर हो जाएगा... परम सत्य का संरक्षक!

हमें तुम पर दया आ रही है, बदकिस्मत पिता, पतित आधे-भगवान!’

बनारस, 2017

स्याह भ्रातृसंघ – भाग **III**

‘यूएस प्रेजीडेंट वूड्रो विल्सन ने ही सबसे पहले सार्वजानिक रूप से न्यू वर्ल्ड ऑर्डर शब्द का इस्तेमाल किया था,’ द्वारका शास्त्री ने कहा। ‘यद्यपि वो पहले विश्व युद्ध के बाद स्थापित राष्ट्र संघ के संदर्भ में था, लेकिन बहुत से लोगों का मानना था कि उसी दिन से ऑर्डर ने धीरे-धीरे अपनी उपस्थिति और स्थापना दुनिया के सामने दिखाने का निर्णय लिया था।’

‘बाबा, इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, क्या आप नाइट्स टेम्पलर के समय से ऑर्डर के सफर के बारे में बता सकते हैं?’ विद्युत ने पूछा।

मठाधीश ने हां में सिर हिलाया और अपनी कमर बड़ी से आराम कुर्सी पर टिकाकर, एक पल इसके बारे में सोचा।

‘नाइट्स टेम्पलर के पास इतनी संपत्ति थी कि ये कहा जाता था कि उन्होंने पूरा सायप्रस द्वीप खरीद लिया था। उनके हथियार और युद्ध सामग्री बहुत महंगी थी। और सिर्फ उनकी सेना ही, बल्कि स्वयं नाइट्स टेम्पलर को कानून से ऊपर साबित कर दिया गया था, जैसा कि स्वयं पोप इनोसेंट II ने आदेश दिया था।’

‘इसका क्या मतलब है, बाबा? सारे कानून से ऊपर...?’

‘इसका आधारभूत मतलब यह था कि टेम्पलर को किसी स्थानीय कानून का

पालन नहीं करना था, वो बिना रोके या बिना किसी प्रश्न के साम्राज्यों में सफर कर सकते थे, उन्हें कोई कर नहीं देना था और वो जिसे चाहते मार सकते थे।'

'तो यह राजा और चर्च का संगठित प्रयास था कि नाइट्स टेम्पलर को दुनिया के सबसे ताकतवर भ्रातृसंघ में बदल दिया जाए...' विद्युत ने सोचते हुए कहा।

'बिलकुल। लेकिन टेम्पलर का उदय इतना नाटकीय नहीं था, जितना उनका दर्दनाक अंत। 1307 ईस्वी में, 13 अक्टूबर, शुक्रवार की सुबह, फ्रांस के राजा फिलिप चतुर्थ ने सैकड़ों टेम्पलर को बंदी बनाने, पीड़ित करने और फांसी देने का हुक्म दे दिया। उन पर झूठे आरोप लगा दिए गए, अमानवीय तरीकों से उनसे स्वीकार करा लिया गया और फिर बड़ी सहजता से उनकी हत्या कर दी गई। एक भ्रातृसंघ जो सदियों से यूरोप और मध्य पूर्व पर राज कर रहा था, उसे कुछ ही दिनों में कुचल दिया गया।'

'वाह... यह वास्तव में बहुत नाटकीय रहा होगा! और घिनौना भी। यह जानना दिलचस्प है कि क्यों आज भी कुछ लोग 13 तारीख के शुक्रवार को अशुभ मानते हैं।'

'वो कहते हैं कि राजा फिलिप ने नाइट्स टेम्पलर से अत्यधिक पैसा ले लिया था, इसलिए उसने झूठे आरोप लगवाकर टेम्पलर को खत्म करवा दिया, और इस तरह वो उस बड़े ऋण से बच गया, जो उस पर इंग्लैंड से हुए युद्ध के दौरान चढ़ा। लेकिन बात मात्र इतनी नहीं थी। एक बार फिर से मामला चर्च से जुड़ा था, और जो आरोप लगाए गए थे वो पूरी तरह धार्मिक थे। तो इस बार राजा और पादरी उस भ्रातृसंघ पर आरोप लगाने के लिए संगठित हो गए, जिसने सैकड़ों सालों तक ईसाइयत की रक्षा की! स्पष्ट है, एक समय तक टेम्पलर मूल्यवान थे। फिर दुनिया के नजरिये या गुप्त सोसाइटी की मुख्य योजना में कुछ बदलाव आया, और टेम्पलर भार बन गए। इसके पीछे ताकतें वही थीं। टेम्पलर को बनाने और खत्म करने वाले पर्दे के पीछे छिपे वही खिलाड़ी थे, और उन्होंने अपना काम पूर्ण हो जाने के बाद एक ही झटके में उन्हें समाप्त भी कर दिया।'

'आपको क्या लगता है, इस निर्मम संहार के पीछे कारण क्या हो सकता है, बाबा?'

'विश्वास से कौन कह सकता है, विद्युत? जैसा कि मैंने समझाया, गुप्त भ्रातृसंघ की योजना सैकड़ों सालों तक के विस्तार में फैली है। दुनिया के एक हिस्से में आए छोटे से सामाजिक-राजनीतिक बदलाव की वजह से उन्हें अपनी मुख्य योजना में भी बड़े बदलाव करने पड़ते हैं, जिससे वो अपने दृष्टिकोण पर टिके रह सकें। क्या तुम जानते हो कि नाइट्स टेम्पलर को आत्मसमर्पण तक कि आज्ञा नहीं थी? कोई केस नहीं चला। कोई जन सुनवाई नहीं। जिस तेजी से उस सारी घटना को अंजाम दिया गया, वो एक ही सचाई की तरफ इशारा करती है

—

कि टेम्पलर कुछ ऐसा सच जान गए थे, जिसे गुप्त समाज सामने नहीं आने दे सकता था।'

'तो नाइट्स टेम्पलर के अंत के साथ, गुप्त भ्रातृसंघ का क्या हुआ, बाबा?'

'किसी शक्तिशाली मिथकीय दैत्य की तरह, दुनिया के सबसे शक्तिशाली महिला-पुरुषों का गुप्त समाज अपना रंग बदलता रहा। वो समय के साथ अपनी पहचान बदल लेता। वो धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से, दुनिया के कुछ बड़े उद्योग और बैंक संस्थान स्थापित कर रहे थे। वो दुनिया की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने लगे, जिसमें सभी जरूरी चीजें शामिल थीं—दवाइयां, तेल, शेयर बाजार, हथियार, तकनीक और राजनीति।

उनकी भ्रष्ट योजना अब सामने आने लगी थी। दशक दर दशक, सदी दर सदी वो क्रांतियों और नागरिक अशांति को हवा देते रहे। दुनिया के कुछ बड़े युद्ध में तो दोनों पक्षों को गुप्त ऑर्डर ने ही पैसे दिए थे। मानव जीवन का उनकी नजरों में कोई मोल नहीं है। उन्हें लगता है कि वो श्रेष्ठ प्रजाति से हैं, जो मानवता पर शासन करने के लिए ही बने हैं।'

विद्युत बहुत ध्यान से सुन रहा था। वो इस रहस्यमयी और निर्मम शक्ति के बारे में कहे हर शब्द, हर तथ्य और हर बारीकी को ग्रहण कर लेना चाहता था। उसे धीरे-धीरे इसका अहसास हो रहा था।

न्यू वर्ल्ड ऑर्डर को रोका जाना चाहिए था।

'और किन-किन चेहरों और पहचान के पीछे ऑर्डर ने स्वयं को छिपाया था, बाबा? आपने कहा था कि वो हमेशा अपनी पहचान बदलते रहते थे।'

'हां विद्युत। टेम्पलर के बाद ऑर्डर की सबसे शक्तिशाली पहचान इल्युमिनाती थी।'

इल्युमिनाती... मैंने इस बारे में सुना है।

'और इल्युमिनाती अकेले नहीं थे—और भी बहुत से थे। रोजीक्रुशियन ग्रुप, स्कल एंड बोंस सोसाइटी, फ्रीमेसंस... भ्रातृसंघ की कुछ मुख्य पहचान थी।'

द्वारका शास्त्री ने आह भरी। वो थके हुए लग रहे थे।

‘उन सबके बारे में मैं तुम्हें और किसी दिन बताऊंगा, विद्युत,’ उन्होंने कहा। ‘इसमें बहुत ऊर्जा लगेगी।’

विद्युत समझ गया। अपने परदादा पर इतना दबाव डालने के लिए उसने स्वयं को दुत्कारा। उसे याद आया कि द्वारका शास्त्री अभी गंभीर बीमारी से उठे थे।

‘बिलकुल, बाबा। बस एक अंतिम प्रश्न... फिर से,’ उसने जोर दिया।

द्वारका शास्त्री ने मुस्कुराकर, सहमति में सिर हिलाकर विद्युत को प्रश्न पूछने की अनुमति दी।

‘अगर यह ऑर्डर इतना ताकतवर है जो दुनिया के युद्धों को प्रभावित कर सके, अगर ये दुनिया की अर्थव्यवस्था नियंत्रित कर सकता है, अगर इसके सदस्यों में प्रेजिडेंट और करोड़पति शामिल हैं, तो उन्हें हमारे होने या न होने से क्या फर्क पड़ता है? वो मेरे जैसे महत्वहीन मनुष्य को क्यों मारना चाहते हैं? अगर वो सदियों से दुनिया को नियंत्रित कर रहे हैं और भविष्य में शासन करने के लिए पूर्ण अधिकारवादी सत्ता स्थापित करने जा रहे हैं, तो फिर हम उनके लिए कौन हैं?’

‘यह एक प्रश्न नहीं है, विद्युत। इसमें बहुत से प्रश्न हैं। इतने सवालों के विस्तृत जवाब देने में बहुत समय लगेगा। अभी के लिए बस इतना जान लो—ये खासतौर पर प्रतिभाशाली और भटके हुए बुद्धिजीवियों के पास इस धरती पर दिव्यता के प्रभाव को समझने की शक्ति है। वो प्राचीन रहस्यों के ज्ञाता हैं और साधारण मनुष्यों से भिन्न, वो जानते हैं कि दुनिया पर राज करने वाली एक दिव्य ताकत भिन्न है। जैसा कि मैंने पहले भी कहा, उन्हें हमारा भय नहीं है। वो उस रहस्य से डरते हैं, जो काले मंदिर में छिपा है।’

मठाधीश विद्युत के चेहरे पर हल्की सी खीझ देख सकते थे। काले मंदिर का रहस्य विद्युत को नहीं बताया गया था, और ये उसके साथ अन्याय था। लेकिन अभी सही समय नहीं आया था। इस पल अपने परपोते को शांत करने के लिए, द्वारका शास्त्री ने उसे एक और जानकारी देने का फैसला किया।

‘विद्युत, एक प्राचीन भविष्यवाणी तुम्हें काले मंदिर से जोड़ती है। वहां सदियों से जो राज दबा है, वो मानवजाति के लिए बहुत मूल्यवान है। उसके बारे में सुना तो बहुत से लोगों ने है, लेकिन वास्तव में उसके होने का किसी को भी भरोसा नहीं है। लेकिन वो सच है। और ऑर्डर को यह पता है।

अगर वो तुम्हें मार देंगे, तो वो भविष्य बदल सकते हैं।’

हड़प्पा, **1700** ईसापूर्व

मोहन जोदड़ो की अंतिम राजकुमारी

वो अपने भव्य झरोखे पर खड़ी, क्रंदन करती, भयावह रात को देख रही थी। उसकी बड़ी, आकर्षक आंखें उदासी की पीड़ा, ग्लानि और भय से नम थीं। जब से सूर्य को प्रताड़ित किया गया था, जब हड़प्पा की मिट्टी संजना के पवित्र रक्त से कलंकित हुई थी, जब एक शूरवीर पुत्र को जहरीले तीरों से मार दिया गया था—तब से मानो ब्रह्मांड भी क्रोध से जल रहा था। पूरी सृष्टि ही मानो रोते हुए, आर्यवर्त को अपने प्रकोप का भागी बना रही थी। आसमान दैवीय दैत्य की तरह दहाड़ मारते हुए, पृथ्वी को निगलने को तैयार था। पक्षी हड़प्पा के आसमान से उड़ गए थे और कुत्ते पूरी रात भेड़ियों की तरह रो रहे थे। नींद रहित, भयभीत बच्चों के रोने और उनके लाचार अभिभावकों की प्रार्थना की आवाजें प्रत्येक घर से आ रही थीं।

बारिश की फुहार से उसका चेहरा पूरी तरह तर था। उसके सम्मोहक लाल होंठ और आकर्षक तीखे नैन-नक्श पर जब भी चमकती बिजली की चौंध पड़ती, तो वो किसी सफेद प्रतिमा सी जान पड़ती। लेकिन उसे ऐसा नहीं लग रहा था। हर बार बिजली चमकने पर, वो अपने चेहरे को किसी भयानक डाकिनी के समान मान रही थी। उसकी आत्मग्लानि का यह भ्रम और कुछ नहीं अपितु उसके किए कार्यों का प्रतिबिंब था।

यही तो मैं बन गई हूं। एक डाकिनी।

ईंट और कांसे के पर्वत पर असुरों के कब्जे की खबर उसके कानों तक पहुंच गई थी। वह जानती थी कि भूत जैसे दिखने वाले देवता ने ही वो आक्रमण किया था। उसे रक्त-वर्षा में होने वाली घटनाओं की खबर भी मिल गई थी।

मुझे मेरे पापों की सजा मिल रही है। मेरे सज्जन पति भी मेरी करनी का परिणाम भोगेंगे। हड़प्पा के लोग भी मेरे कृत्यों तले दब जाएंगे। जिस साम्राज्य की मुझे चाह थी, वो इस बवंडर में बह जाएगा।

मैं हड़प्पा की अंतिम दयनीय रानी बनकर रह जाऊंगी।

मैं ही मोहन जोदड़ो की अंतिम राजकुमारी रहूंगी।

‘मुझे मत छूना, मेरे स्वामी!’ प्रियम्वदा ने प्रतिक्रिया दी, जब उसके पति पंडित चंद्रधर ने उसे झरोखे से परे खींचने की कोशिश की। वो घंटों से वहां खड़ी बरसात में भीग रही थी, बरसात को पूरी तरह नकारते हुए। उसके लंबे, रेशमी बाल भीग चुके थे, जो पीछे उसकी कमर से भी नीचे जा रहे थे। उसके हाथ लगातार कांप रहे थे।

‘अंदर चलो, प्रियम्वदा। तुम बीमार पड़ जाओगी। वहां कुछ नहीं है...’ चंद्रधर ने कहा।

वो जड़ खड़ी थी, मानो उसने चंद्रधर की कही बात सुनी ही नहीं थी। फिर वो धीरे से उसे देखने के लिए मुड़ी।

‘वो हमें मारने आएगा, है न स्वामी? मैंने सुना कि अब वो एक भूत बन गया है। विवास्वन पुजारी हम दोनों को मारने आएगा...’

अपने भय से लड़ते हुए, चंद्रधर ने अपने दांत भींच लिए। प्रियम्वदा सही कह रही थी।

‘वो नहीं आएगा, प्रिय। उसकी एक आंख चली गई है, वो गंभीर रूप से घायल है और हमारे घर की सुरक्षा पांच सौ सैनिक कर रहे हैं।’

प्रियम्वदा कुटिलता से मुस्कुराई और फिर भयानक रूप से हंसने लगी। वो लगातार कई पलों तक हंसती रही, मानो कोई आकर्षक लेकिन पागल चुड़ैल हंस रही हो। उसकी हंसी बार-बार कड़कती बिजली तले दब कर रह जाती, और अपना सिर पीछे करके हंसते हुए वो भयानक नजर आ रही थी।

‘तुम जानते हो पंडित चंद्रधर कि हम दोनों मारे जाएंगे! तुम जानते हो कि ये सैनिक उसका पल भर भी सामना नहीं कर पाएंगे। हम तो पहले ही मर चुके हैं, चंद्रधर!’ पागलपन की हंसी के बीच वो चिल्लाई।

चंद्रधर जानता था कि प्रियम्वदा गलत नहीं कह रही थी। उसकी सेना का कोई भी सिपाही विवास्वन पुजारी को नहीं रोक सकता था।

सिवाय एक के।

स्वयं चंद्रधर।

जबकि वो जानता था कि उसकी देवता से कोई तुलना नहीं थी, तब भी उसे पता था कि वो उसे इतनी देर तो रोक ही सकता था कि अपनी पत्नी को सुरक्षित जगह पर पहुंचा सके। पूरी दुनिया में उसकी प्रिय पत्नी के सिवाय अब उसका कोई नहीं था।

लेकिन पंडित चंद्रधर नहीं जानता था कि विवास्वन पुजारी उसके और उसकी रानी के पीछे नहीं आने वाला था। महान स्नानागार में यातना के दौरान कहे गए अपने शब्दों को पूरा करने के लिए वो हड़प्पा के प्रत्येक आदमी, औरत, बच्चे, पशु, पक्षी और कीट के प्राण लेने वाला था।

और ये लड़ाई तलवार से नहीं लड़ी जानी थी।

बनारस, 2017

‘त्रिजट मृतकों को जगा देगा’

एक दिन बाद बलवंत और विद्युत प्रोफेसर त्रिपाठी को मनाकर देव-राक्षस मठ में लाने में सफल हो गए। यद्यपि शुरू में प्रोफेसर ने विरोध किया था, लेकिन महान द्वारका शास्त्री से मिलने के दुर्लभ प्रलोभन ने उसे आने पर मजबूर कर दिया।

उसके स्तर का कोई भी तांत्रिक इस अवसर को हाथ से नहीं जाने देने वाला था। द्वारका शास्त्री की उपस्थिति में मौजूद होना ही अपने आप में एक साधना थी। मठाधीश का तेज किसी भी योगी की ऊर्जा बढ़ाने के लिए पर्याप्त था, उससे किसी तांत्रिक या नागा साधू या अघोरी तक का आध्यात्मिक कमंडल भर सकता था।

प्रभात त्रिपाठी ग्रैंडमास्टर के चरणों में गिर पड़ा। असामान्य स्नेह का प्रदर्शन करते हुए, मठाधीश ने भी प्रोफेसर को उठाकर, स्नेह से बांहों में भर लिया। विद्युत देख सकता था कि वो दोनों लोग एक-दूसरे को प्यार और सम्मान दे रहे थे। यकीनन प्रोफेसर का आचरण ऐसा था मानो मंदिर में किसी देवता के सामने भक्त खड़ा हो।

‘मैंने उन्हें इसके विरुद्ध सलाह दी, गुरुजी,’ बी.एच.यू. के अकादमिक ने कहा।

द्वारका शास्त्री ने सहमति में सिर हिलाया, और नैना को प्रोफेसर त्रिपाठी के लिए चिवड़ा-मटर परोसने का संकेत दिया।

‘तो तुम्हारे मत से हमें क्या करना चाहिए, ब्रह्मानंद?’ द्वारका शास्त्री ने पूछा।

विद्युत, नैना और सोनू ने एक-दूसरे को देखा। उनमें से किसी को भी समझ नहीं आया कि मठाधीश ने प्रोफेसर को ब्रह्मानंद क्यों कहा था। और उससे भी खराब, प्रोफेसर को इस नाम से कोई आपत्ति नहीं हुई थी और वो ऐसे जवाब दे

रहा था मानो सबकुछ सामान्य हो।

‘गुरुजी, त्रिजट को आपसे बेहतर कौन जान सकता है? आप जानते हैं कि वो समर्थ है। और आप ये भी जानते हैं कि वो हर चीज में समर्थ है। हालांकि, इससे पहले मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि वो आपकी उपस्थिति में देव-राक्षस मठ में घुसकर, ऐसा अनुष्ठानिक शिरश्छेदन कर सकता है! यकीनन, उसके पीछे किसी का हाथ है। कोई इतना ताकतवर कि मसान-राजा को लगने लगा है कि अब वो आपका भी सामना कर सकता है। यह सामान्य नहीं है, गुरुजी। यहां कुछ तो गड़बड़ है!’

विद्युत हर शब्द और हर वाक्य पर गौर कर रहा था।

गुरुजी, त्रिजट को आपसे बेहतर कौन जान सकता है?

वह क्या था? बाबा त्रिजट को दूसरों से बेहतर क्यों जानेंगे?

अनुष्ठानिक शिरश्छेदन?

ब्रह्मानंद?

‘उसकी कोई तो कमजोरी होगी, त्रिपाठी जी,’ बलवंत ने पूछा। ‘सबकी कोई न कोई होती है! आपको बस वो हमें बतानी है और बाकी काम हम कर लेंगे। हम उन पिशाचों के गढ़ पर हमला कर देंगे!’

विद्युत ने ध्यान दिया कि विनम्र प्रोफेसर, भूतपूर्व अघोरी तांत्रिक, प्रश्नों की इस झड़ी से तनाव में दिखाई दे रहा था। उसने बातचीत के माध्यम से, इस एक-आंख वाले आदमी को सहज करने का निर्णय लिया।

वो अपने परदादा से जुड़ी पहेली के लिए भी परेशान था। इस प्राचीन आश्रम के कोने-कोने से जुड़े हर रहस्य और राज से पर्दा उठने में जाने और कितना समय लगेगा?

‘त्रिपाठी जी, आप टी.के. से अलग क्यों हुए?’

प्रोफेसर के चेहरे पर नफरत दिखाई दी, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। धूप से भरे उस बरामदे में एक अजीब सी खामोशी थी। ग्रैंडमास्टर के आंगन में बैठे आधे लोगों को तो समझ ही नहीं आया कि विद्युत क्या पूछ रहा था। जो आधे लोग समझ पाए, वो यकीन नहीं कर पा रहे थे कि विद्युत कैसे उस भयानक आदमी, त्रिजट कपालिक के लिए टी.के. जैसे नाम का इस्तेमाल कर

सकता था।

उनमें से किसी को भी विद्युत के सीने में जलती बदले के आग का अनुमान नहीं था।

सिर्फ द्वारका शास्त्री ये बात जानते थे।

और ब्रह्मानंद।

ग्रैंडमास्टर की अधूरी इच्छा के साथ, प्रोफेसर के लिए भांग ठंडाई प्रस्तुत की गई, जिससे प्रोफेसर लाइब्रेरी में रखी किताब की तरह सब बता दे।

देव-राक्षस मठ के ग्रैंडमास्टर, द्वारका शास्त्री आम प्रचलन के विरुद्ध लौकिक आनंद जैसे चरस, भांग या शराब के प्रति कोई आकर्षण नहीं रखते। वो जानते थे कि किसी भी समर्थ योगी की आत्मा ऐसे क्षणभंगुर सार से परे थी। सच्चा मुनि तो हमेशा एक नियत आनंद में रहता था।

‘आप जानते होंगे कि त्रिजट की यज्ञ शाला एक प्राचीन कब्रिस्तान पर बनी थी? यह एक बड़ा सा श्मशान और कब्रिस्तान था, जो इस प्रागैतिहासिक नगर पर नियंत्रण स्थापित करने वाली लड़ाइयों में बना था। यह अजीब ही बात है कि क्यों प्राचीन राजाओं अजातशत्रु से लेकर मध्यकालीन सम्राट कुतुब-उद-दिन ऐबक और रजिया सुल्तान तक, सबका बनारस के प्रति एक आकर्षण था। कुछ इसे संरक्षित कर, इसका विस्तार करना चाहते थे। तो दूसरे जमीन से इसका नामोनिशान तक मिटा देना चाहते थे।’

इस शहर के बारे में ऐसा क्या था?

‘जो कुछ भी हो,’ प्रोफेसर ने अपनी बात आगे बढ़ाई, ‘त्रिजट ने इस जगह का चुनाव इसलिए किया कि यहां पिशाचों और डायनों का कब्जा था—वो क्रोधित आत्माएं जो असमय मृत्यु को प्राप्त हो जाती थीं या युद्ध के दौरान गहन दर्द से मरी हों। वो उन्हें बुलाकर, उनके माध्यम से पाताल की असीमित काली शक्ति को प्राप्त करता। तो जब आप उसके परिसर पर हमला करने की सोचेंगे, तो याद रखिए कि यह इंसानों के बीच होने वाले युद्ध से अधिक होगा।

त्रिजट मृतकों को जगाएगा!’

विद्युत और उसके वफादार अनुयायी शांत थे। एक ही साथ उन लोगों ने उस इंसान को देखा जो यकीनन इस धरती की सभी ताकतों से श्रेष्ठ था। दुनिया का इकलौता आदमी जो अपनी मदद के लिए ब्रह्म राक्षस तक को बुला सकता था।

ऐसा गंभीर योगी जो अंधियारी रात में सैकड़ों पवित्र आत्माओं की फौज खड़ी कर सकता था।

एकमात्र परम-तांत्रिक, जो महा-तांत्रिक त्रिजट कपालिक को मिटा सकता था।

वो सब बुजुर्ग—द्वारका शास्त्री की तरफ मुड़े।

मठाधीश ने अपनी आंखें बंद कर रखी थीं। वो गहन ध्यान में थे। एक समर्थ योगी तुरंत ही गहन ध्यान में जा सकता था। तांत्रिक विद्या का आधुनिक साधक, स्वयं विद्युत देख सकता था कि उसके परदादा क्या करने की कोशिश कर रहे थे।

वो मन ही मन नक्षत्र और तारों की गणना कर रहे थे।

वो अपने आक्रमण के लिए सही समय का चुनाव कर रहे थे।

हड़प्पा के पूर्व में, **1700** ईसापूर्व

सतरूपा

‘इस बारे में मैंने वेदों में पढ़ा है, ओ मत्स्य—विशेषकर प्राचीन शतपथ ब्राह्मण में,’ मनु ने कहा।

‘और अभी भी आपको लगता है कि प्रलय कोई काल्पनिक अवधारणा है, बताओ सत्यव्रत?’ मत्स्य ने पूछा।

मनु मत्स्य के दिए इस नए नाम से थोड़ा परेशान था, जो जाने कहां से उसके मुंह पर आ गया था।

‘मत्स्य, मेरे मित्र, मेरे भाई, मेरे मार्गदर्शक... जब से इस अंधियारी रात में नीली रौशनी चमक रही है, तब से आपने मुझे सत्यव्रत कहना क्यों शुरू कर दिया?’

मत्स्य ने मनु की आंखों में गहराई से देखा।

क्योंकि अभिशाप की शुरुआत हो चुकी है। छठे सप्तऋषि ने नीली अग्नि के केंद्र से भविष्यवाणी कर दी है। विधि का विधान लिखा जा चुका है।

‘यह महत्वपूर्ण नहीं है, मनु। क्या आपको वाकई लगता है कि प्रलय मिथक है?’

‘बिलकुल नहीं, मत्स्य। शतपथ ब्राह्मण जैसा वेद कैसे गलत हो सकता है?’

अपने मनु को देख तारा स्तब्ध खड़ी रह गई। उसने अभी भी भारी युद्ध शस्त्र पहने हुए थे। उसके घावों से अभी भी रक्त प्रवाहित हो रहा था। वो मछली की तरह गीली थी, और ठंडी, तूफानी रात में ठिठुर रही थी। लेकिन उसके नेत्र हमेशा की तरह चमक रहे थे—मानो आकर्षक, तराशे हुए चेहरे में कोई चमकते हुए रत्न लगा दिए गए हों। यकीनन वो रो रही थी, लेकिन फूट-फूटकर नहीं।

तारा एक मजबूत इंसान थी।

बचपन में मनु और तारा प्रतिस्पर्धी थे। वो एक-दूसरे के साथ हर चीज के लिए स्पर्धा करते थे—धनुर्विद्या, घुड़सवारी, वैदिक गणित, मल्लयुद्ध, ग्रंथ... और यहां तक कि उन बाहरी क्रीड़ाओं के लिए भी जो वो पड़ोस के दूसरे बच्चों के साथ खेलते थे। तारा हमेशा जीतती थी। दूसरे आठ अनाथ बच्चों के साथ, उसका भी चयन स्वयं संजना ने किया था, और उन सबको शास्त्री गृह में ही छात्रावास की तरह पाला था। उसका लालन-पालन परिवार की तरह ही किया गया, और उनका अध्ययन और प्रशिक्षण स्वयं महान विवास्वन पुजारी ने किया था। वो सब जल्द ही प्रतिभाशाली युवक और युवती बने, और उन सबमें देवता की सिखाई प्रतिभा लक्षित हुई।

आपस में लड़ते बच्चों से बढ़कर, जब वो शर्मीले किशोर बने, तो मनु और तारा ने एक-दूसरे को चुन लिया। उन्होंने कभी ये कहा नहीं, लेकिन फिर भी कभी पल दो पल के लिए उनकी नजरें मिल जातीं। उन्होंने कभी एक-दूसरे को छुआ नहीं था। लेकिन फिर भी वो जानते थे। और विवास्वन व संजना भी। वो भी उन दो युवाओं में एक मधुर सा आकर्षण महसूस करते थे, और कल्पना करते थे कि एक दिन तारा आकर्षक दुल्हन बनकर, उनके पवित्र गृह में प्रवेश करके, चावल का पारंपरिक बर्तन गिराएगी। मनु की पत्नी के रूप में वो उसकी साथी और आत्मीय बनेगी।

‘तुमने कर दिखाया, मनु...’ उसने अपने जीवन के प्यार से कहा। ‘तुमने कर दिखाया!’

पहले पहल मनु, धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ा... और फिर उमंग से दौड़ पड़ा। उसने भागकर उसे बांहों में उठा लिया। उसने उसे कसकर गले से लगा लिया, और मन ही मन कसम ली कि अब वो उसे स्वयं से दूर नहीं जाने देगा। कभी भी नहीं!

‘मेरी तारा...’ वो इतना ही फुसफुसा पाया।

तारा भी अब अपने आंसू और नहीं रोक पाई। अपने साथी को जीवित देख, उसकी बांहों में समां और उसके मुंह से इतने प्यार से अपना नाम सुनकर, जो उसने पहले कभी नहीं सुना था, वो भी स्वयं को संभाल नहीं पाई। उसने अपना चेहरा मनु के सीने में छिपा लिया और उसके गिर्द बांहें लपेटकर, रोने लगी।

और रोने लगी।

तारा एक मजबूत इंसान थी।

लेकिन वो थी तो महज उन्नीस साल की युवती ही, जिसे वही चाहिए था, जो दुनिया के हर इंसान को चाहिए। प्यार।

तारा और मनु एक स्याह और सुनसान चट्टान पर खड़े थे, और ऊपर से निर्दयी आसमान बरसात रूपी तलवार चला रहा था। वो बस वहां खड़े थे, एक-दूसरे की उपस्थिति को महसूस करते हुए।

मत्स्य के लिए यह एक विचित्र दृश्य था, जो गुफा की एक दरार से उन्हें देख रहा था। वो पहले भी इसका साक्षी रहा था, किसी दूसरे युग में, किसी दूसरे ग्रह पर, जो इस सामानांतर ब्रह्मांड का ही मिलता हुआ सा ग्रह था। सारे ब्रह्मांडों में मनु और तारा हैं। और सब जगह विष्णु उन्हें देख रहे हैं।

ब्रह्मांड में प्रेम सबसे सक्षम और अथक ताकत के रूप में उपस्थित है। सारे विनाश और आसपास खड़ी मौत के मध्य वो खड़े हैं। भले ही कितनी नफरत हो, हिंसा हो, देवताओं का पतन हो या शहरों का विनाश हो, लेकिन प्रेम खड़ा है। एक-दूसरे के प्यार में खोए हुए।

तब मत्स्य को याद आया कि कैसे और क्यों सृष्टा ने मानवजाति की रचना की थी। क्यों वो भगवान की श्रेष्ठ कृति थे, और क्यों उसे स्वयं ईश्वर का ही विस्तार कहा गया था। वो इस श्रेष्ठ कृति पर मुस्कुराया, जो स्वयं में ईश्वर की दिव्यता के अंश संजोए हुए थी। इसलिए तुम उनसे उनके घर ले सकते हो, उनकी जमीन ले सकते हो, उनके प्रिय ले सकते हो, उनका धन, उनका सबकुछ ले सकते हो। लेकिन आप इंसानों से उनकी एक चीज नहीं ले सकते।

आशा।

मत्स्य जलती अग्नि के गिर्द जुटी सभा के शीर्ष पर बैठा था। तारा और उनके दूसरे बहादुर साथी, अब तक खा-पीकर आराम कर चुके थे।

अब समय आ गया था कि उन्हें आने वाली सचाई से अवगत कराया जाए।

और उस भूमिका से जो उन्हें निभानी है।

कक्ष पूरा भरा हुआ था। पर्वत-संरक्षक और उनके नेता, मत्स्य के समूह से अनेकों मत्स्य-प्रजाति के लोग, सोमदत्त, तारा और उनके योद्धा—सभी प्रस्तुत थे। मत्स्य चाहता था कि सभी उपस्थित हों। और तेजस्वी नीले पुरुष की उम्मीद के अनुसार ही, उसकी घोषणा की प्रतिक्रिया स्वरूप बहुत से अविश्वास

और भय की आवाजें सुनाई दीं।

‘इसे टाला नहीं जा सकता, सोमदत्त। जैसा कि हम जानते हैं प्रलय सबकुछ खत्म कर देगी। अपने मन में कोई संदेह न रखो।’

मत्स्य ने सपाट कहा। वह जानता था कि यह समय चिकनी-चुपड़ी बातें करने का नहीं था।

सोमदत्त ने खड़े होकर, सभा से शांत होने की विनती की। जबकि वो इस मत्स्य नाम के व्यक्ति से, अपने जीवन के सबसे अशुभ शब्द सुन चुका था, लेकिन फिर भी महान अभियंता मत्स्य की मछली की खाल के परिधान के नीचे से चमकती दैदीप्यमान त्वचा से अपनी नजर नहीं हटा पा रहा था। सोमदत्त ने दुनिया देखी थी। वो हड़प्पा, मोहन जोदड़ो और लोथल से लेकर काशी, मैसोपोटामिया और यहां तक कि मिस्र के भी श्रेष्ठ व्यक्तियों से मिला था और उसने उनके साथ काम भी किया था। खुशकिस्मती से वो हड़प्पा के देवता का भी नजदीकी मित्र रहा था। लेकिन फिर भी इस रहस्यमयी व्यक्ति के तेज की तुलना विवास्वन पुजारी से नहीं की जा सकती थी। उसमें कुछ तो विशेष था। मत्स्य उसके अब तक के देखे गए सभी व्यक्तियों से श्रेष्ठ था। नहीं... वो तो देवता से भी महान था!

‘मेरी बात सुनिए, ओ मत्स्य, मैं इस गुफा में मौजूद सभी लोगों की तरफ से बोल रहा हूं।’

मत्स्य ने सोमदत्त को बोलने के लिए प्रेरित करके, नम्रता से उसकी तरफ सिर हिलाया।

‘इससे पहले कि मैं कुछ कहूं मत्स्य, मैं अपने हाथ जोड़कर, आपके सम्मुख सिर झुकाता हूं। आप कोई साधारण मनुष्य नहीं हैं। मेरी वृद्ध आंखें ये देख सकती हैं। और अगर मैं सही हूं, तो मुझे क्षमादान दीजिए कि मैं आपसे सवाल पूछ सकूं।’

मत्स्य तुरंत ही उस बेहतरीन अभियंता और योद्धा के प्रति प्रशंसा से भर गया, जो अंतिम समय तक विवास्वन और संजना के साथ खड़ा था। उसे यकीन हो चला था कि उसने सही चयन किया था।

दुनिया का सबसे बड़ा जहाज बनाने में अभियांतिकीय और शिल्पीय विशेषता से अधिक की जरूरत पड़ने वाली थी। इसके लिए उच्च चरित्र की भी आवश्यकता थी।

इससे पहले कि मत्स्य कुछ कह पाता, एक और हाथ उठा।

‘मेरा भी एक सवाल है!’ एक नारी स्वर ने विश्वास से कहा।

मत्स्य ने कक्ष में मुड़कर उसे देखने की कोशिश की, लेकिन वो नहीं देख पाया।

‘कौन बोल रहा है?’ उसने पूछा।

‘मैं, मैं तारा,’ उसने धीरे से उठते हुए कहा।

मत्स्य ने ध्यान दिया कि वो कक्ष में बिलकुल पीछे की तरफ बैठी थी, उसके प्रिय अनुयायी... सत्यव्रत मनु के पास।

‘तारा... कितना सुंदर नाम है,’ मत्स्य ने कहा। ‘ये तुम्हारी तरह ही सुंदर हैं, प्रिय।’

मनु गर्व से भर उठा। उसकी तारा की प्रशंसा किसी और ने नहीं, बल्कि मत्स्य ने की थी!

‘इस नाम से तो हम इसे घर पर पुकारते हैं, मत्स्य। इसका वास्तविक नाम कुछ और है,’ कुछ शर्माते हुए, मनु ने पीछे से ही कहा।

‘सच में?’ मत्स्य ने ऐसे पूछा, मानो वास्तव में ही वो कुछ नहीं जानता था। ‘तो इनका वास्तविक नाम क्या है?’

मनु ने तारा को देखा। वो चाहता था कि तारा स्वयं अपना नाम मत्स्य को बताए।

तारा मनु का संकेत समझ गई। उसकी तरफ हल्का सा मुस्कुराकर, वो मत्स्य की तरफ मुड़ी।

‘सतरूपा।’

बनारस, 2017

रक्तबीज अनुष्ठान

‘एक रास्ता है... एक रास्ता जो शायद हमारे पक्ष में साबित हो, गुरुदेव,’ प्रोफेसर त्रिपाठी ने कहा।

ये तय हो गया था कि बलवंत सशस्त्र आक्रमण का नेतृत्व करेगा। यकीनन द्वारका शास्त्री जी अलौकिक और काली शक्तियों का सामना करने के लिए जाने वाले थे।

अपने परदादा के आशीर्वाद और आज्ञा से, विद्युत स्वयं मसान राजा और उसकी दो पिशाचनियों से लोहा लेने वाला था। जो दरांती उस दिन मठ में आने के समय उनकी कमर से बंधी थी, वो अभी भी विद्युत को भयभीत कर रही थी। वो जानता था कि किस हथियार से बाला का सिर कलम किया गया था। शक्ति के रूप में महिलाओं का सम्मान करने के बावजूद, विद्युत इन हत्यारिनों के साथ कोई नरमी नहीं बरतने वाला था।

वो नारी थीं ही नहीं। वो ऐसी जघन्य पापिन थीं, जिनकी दुनिया में कोई जगह नहीं थी। विद्युत उन्हें वैसे ही सजा देने वाला था, जैसे वो किसी निर्मम हत्यारे को देता।

बुराई और निर्ममता का कोई लिंग नहीं होता।

‘वो रास्ता क्या है, त्रिपाठी जी?’ सोनू ने जानना चाहा। युवक एकदम से बस जंग के मैदान में कूद जाना चाहता था। दशाश्वमेध घाट पर मिले घाव का वो उनसे बदला लेना चाहता था। वो उनके गढ़ में वैसे ही घुस जाना चाहता था, जैसे वो उसके मठ में, उसके घर में घुस आए थे। लेकिन इससे भी अधिक, वो अपनी पूरी जान लगाकर अपने प्रिय देवता, अपने विद्युत दादा को बचाना चाहता था!

अब भी, जब वो त्रिजट की यज्ञशाला के संरक्षकों को भेदकर अंदर जाने की योजना बना रहे थे, वो अपनी तरफ से कम से कम नुकसान को सुनिश्चित करना चाहते थे। वो प्रोफेसर त्रिपाठी, या ब्रह्मानंद पर भरोसा कर रहे थे कि वो उन्हें कोई मार्ग सुझाएगा। वो सालों तक अंदर का आदमी रहा था।

‘ये सिर्फ अमावस्या की रात को ही किया जा सकता है...’ प्रोफेसर त्रिपाठी ने अचानक उछलते हुए कहा।

दूसरे लोग सुन रहे थे।

इससे पहले कि ब्रह्मानंद अपनी बात पूरी कर पाता, द्वारका शास्त्री ने असहमति में अपना सिर हिलाया।

कोई तो कारण था जिस वजह से बुरी ताकतों को निशाचर कहा जाता था।

अमावस्या की रात ही वो समय था, जब मृतकों को पराजित नहीं किया जा सकता था।

‘इसका एक कारण है, गुरुदेव। प्रत्येक अमावस्या को, त्रिजट एक विशेष यज्ञ करता था, जिसमें वो इस काम के लिए बनाए गए गड्ढे में अग्नि प्रज्वलित करता था। ताजी लाश को इस गड्ढे में लिटाकर, मानव और पशुओं का रक्त चढ़ाया जाता था, प्राचीन समय की तरह और दूसरी चीजों जैसे कफन, सड़े हुए मांस और केतकी के फूल के साथ, एक शक्तिशाली तांत्रिक का कपाल भी अर्पित किया जाता है। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण, प्रत्येक अमावस्या को त्रिजट उस आनुष्ठानिक अग्नि में अपना भी रक्त अर्पित करता था...’

विद्युत बरामदे में इधर-उधर चक्कर लगा रहा था। वो अथर्ववेद, गरुड़ पुराण और साधना और तंत्र के दूसरे प्राचीन ग्रंथों का समर्पित छात्र रहा था। लेकिन उसने कभी उस घिनौने अनुष्ठान के बारे में नहीं सुना था, जिसका वर्णन अभी प्रोफेसर त्रिपाठी ने किया था।

त्रिजट हासिल क्या करना चाहता था?

वो अपने परदादा की तरफ मुड़ा। वो जानता था कि उसके बाबा इस अजीब और घिनौने अनुष्ठान के बारे में जानते होंगे।

‘बाबा, यह आदमी क्या कर रहा है? मैंने कभी ऐसी तांत्रिक क्रिया के बारे में नहीं सुना। कृपया हमें बताएं...’

‘रक्तबीज अनुष्ठान,’ इससे पहले कि विद्युत अपनी बात खत्म कर पाता, ग्रैंडमास्टर ने उदासी से कहा।

विद्युत जानता था कि रक्तबीज कौन था। द्वारका शास्त्री के कहे अगले शब्दों को सुनकर वो जड़ रह गया।

‘वो धरती पर राक्षसों की सेना बुलाने की कोशिश कर रहा है।’

‘रक्तबीज एक शक्तिशाली दानव था, जिसे मां दुर्गा और मां काली ने राक्षस-राजा महिषासुर से हुए भीषण संग्राम के दौरान मारा था। रक्तबीज महिषासुर का युद्ध प्रमुख था। रक्तबीज को एक विशेष वरदान मिला था कि वो धरती पर गिरी अपने रक्त की हर बूंद से, अपने अनेकों समरूप बना सकता था। जब भी उसके किसी समरूप की हत्या होती, और उसका रक्त धरती पर गिरता, तो और भी बहुत से रक्तबीज उत्पन्न हो जाते। यह अंतहीन लड़ाई थी—और रक्तबीज को पराजित नहीं किया जा सकता था!’ नैना ने सोनू को समझाया, क्योंकि वही था, जिसे यह मिथकीय कहानी नहीं पता थी।

‘फिर क्या हुआ, नैना दी?’ सोनू ने पूछा। ‘जो आपने बताया, उससे तो इस राक्षस को मारना असंभव लग रहा है। वास्तव में, उसे मारने का कोई भी प्रयास सिर्फ उसकी संख्या को और बढ़ा ही देता था!’

‘बिलकुल। इसीलिए मां दुर्गा ने मां काली को बुलाया, जो स्वयं में भयंकर देवी हैं। वो रक्तबीज से एक टीम बनाकर लड़े, जहां दुर्गा दानव और उसके समरूपों का सिर कलम करतीं, वहीं काली धरती पर गिरने से पहले ही सारा रक्त पी जातीं। इसीलिए तुमने मां काली को खून से सनी, अपनी जीभ बाहर निकाले देखा होगा? धीरे-धीरे सारे समरूपों को मां दुर्गा ने समाप्त कर दिया और अकेला रक्तबीज रह गया, स्वयं ही स्वयं को मारने के लिए।’

सोनू हैरानी से सुन रहा था।

‘मैं हमेशा सोचा करता था कि मां काली को अपनी लाल जीभ बाहर निकाले

क्यों दिखाया गया है। अब पता चला!' उसने गर्व से कहा।

जब तक नैना ने अपना वर्णन पूरा किया, विद्युत खामोश रहा। वो वास्तव में चिंतित था।

'बाबा, ये रक्तबीज अनुष्ठान क्या है? सुनने में कुछ सही नहीं लग रहा।'

'रक्तबीज अनुष्ठान एक दुर्लभतम साधना है, जिसमें सफल साधक को काली ताकतों, विशेषकर आदिकालीन राक्षसों की आत्मा पर असीमित नियंत्रण प्राप्त होता है। सभी प्राचीन मुनियों, जैसे भृगु, भारद्वाज, अगस्त्य, दुर्वासा और यहां तक कि पवित्र शास्त्रों के रचयिता, सत्यव्रत मनु ने भी सदियों पहले इस सिद्धी को, सिर्फ एक वजह से, पूरी तरह ठुकरा दिया था।'

पुरोहित जी, नैना, सोनू, बलवंत, प्रोफेसर त्रिपाठी और विद्युत द्वारका शास्त्री के कहे हर शब्द को बहुत ध्यान से सुन रहे थे।

'किस कारण से... बाबा?' नैना ने घबराते हुए पूछा।

द्वारका शास्त्री समय बर्बाद करने के मूड में नहीं थे।

'कोई भी तांत्रिक, भले ही वो कितना ही समर्थ क्यों न हो, इस अनुष्ठान से बच नहीं पाया है। वो सब न सिर्फ मरे, बल्कि इतनी भयानक मौत मरे कि इस साधना को हमेशा के लिए दफना दिया गया।

अगर त्रिजट इस प्रतिबंधित साधना को करने जा रहा था, तो यकीनन वो कुछ ऐसा जानता है, जो हम नहीं जानते।'

विद्युत की रीढ़ में सिहरन दौड़ गई। अगर उसके परदादा इस विषय में जानते ही नहीं थे, तो वो इसका सामना कैसे करेंगे? वो इस पर विजय हासिल कैसे करेंगे?

'मैं यहां और अभी रक्तबीज अनुष्ठान के बारे में और कुछ नहीं बता सकता, विद्युत। बस हमें इतना ही जानना है कि अगर त्रिजट ऐसा करने जा रहा है, तो हमें हर हाल में उसे रोकना होगा। फिर भले ही इसके लिए हमें अमावस्या को ही क्यों न जाना पड़े।'

जब से विद्युत महान मठाधीश से मिला था, उसने उन्हें एक बार ही यूं घबराते हुए देखा था। तब जब मठाधीश को विद्युत की जेब से, रोमी का दिया हुआ जिप्पो लाइटर मिला था। वो विद्युत को मारने के लिए था। और अगर अब

बाबा दोबारा परेशान हो रहे थे, तो यकीनन कुछ बुरा होने वाला था।

विद्युत एक-दो पल शांत रहा। उसका दिमाग फाइटर जेट से भी तेज चल रहा था। नैना ने ध्यान दिया कि उसने अपना सिर हल्का सा दीवार से टिका लिया था; उसकी आंखें बंद थीं, मुट्ठियां भिंची हुई थीं और जबड़े सख्त। वो नहीं जानती थी कि विद्युत के प्यार में पड़ने से स्वयं को कैसे रोके। वो जितना ही भव्य था, उतना ही आधारभूत भी। नैना ने अपना ध्यान वहां से हटाया।

यह समय उसकी निजी आकांक्षाओं का नहीं था।

'त्रिपाठी जी, आप हमें बताने वाले थे न कि अमावस्या का समय ही प्रहार के लिए क्यों सही है। कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालिए,' विद्युत ने वापस से मोर्चा संभालते हुए पूछा।

'क्योंकि अनुष्ठान पूर्ण होने के बाद, त्रिजट अगले सूर्योदय तक पूरी तरह थक गया होगा। हालांकि यह अनुष्ठान असीमित शक्ति देता है, लेकिन साधना के बाद कुछ समय के लिए साधक की सारी शक्ति क्षीण हो जाती है। और इतना ही नहीं, इसके बाद वो अपने अघोरी साधुओं को चरस भी प्रसाद में देता है।'

प्रोफेसर त्रिपाठी ये देखने के लिए रुका कि उसके श्रोता उसकी बात समझ भी पा रहे हैं या नहीं।

'अमावस्या की काली रात को, त्रिजट कपालिक सबसे कमजोर होगा।'

हड़प्पा, **1700** ईसापूर्व

वीराने का सम्राट

हड़प्पा का अंतिम देवता शायद पूरी तरह विक्षिप्त हो गया था। वो एक ही साथ हंस और रो रहा था। वो जमीन पर अपनी मुट्ठी पटककर, आसमान की तरफ चिल्ला रहा था... सब एक ही साथ। मानो उसके अंदर का देवता और राक्षस आपस में भी भिड़ गए थे, अंतिम संघर्ष के लिए।

उसके पुत्र, मनु के जीवित रहने के विषय में की गई, छठे ऋषि की घोषणा ने अब विवास्वन पुजारी के लिए सबकुछ बदल दिया था। पिछले कुछ रक्तिम दिनों में वो अपनी दिव्यता भुलाकर हत्या कर रहा था, दानवों से हाथ मिला रहा था, और भयानक हिंसा को अंजाम दे रहा था—ये सब उसकी मान्यताओं और नेक नियत के विरुद्ध था। उसने उद्देश्यपूर्ण ढंग से अपने अंदर के देवता का गला घोंटकर, पिशाच का पोषण किया था। काश तब वो जान पाता कि उसका प्रिय पुत्र मनु जीवित था!

काश वो जान पाता!

यहां तक कि ईश्वर ने भी मुझसे यह छिपाया*!*

विवास्वन पुजारी अब और नहीं संभाल सकता था। बदले की उसकी आग ने हड़प्पा के हजारों सिपाहियों को मार डाला था। उनमें से अधिकांश को तो, इस शापित नगरी के अच्छे दिनों में, स्वयं देवता ने प्रशिक्षित किया था। लेकिन उसके बचाव की लड़ाई में और पर्वत पर किए गए अप्रत्याशित हमले में, अनेकों लोग मृत्यु को प्राप्त हुए थे। उसने अपनी प्रिय पत्नी और अपने सुख-दुख की साथी, संजना को खो दिया था। उसके मनोहर, आज्ञाकारी और वीर पुत्र ने जिस दिन पृथ्वी पर अपनी आंखें खोली थीं, तभी से ये तय हो गया था कि उसका जन्म किसी महान लक्ष्य हेतु हुआ था। लेकिन इसके बजाय उसे अपनी मां की मृत्यु की पीड़ा और अपने पिता का अपमान सहना पड़ा, और भरी जवानी में जहरीले बाणों से घायल हो, दर-दर भटकने को मजबूर होना पड़ा।

अलौकिक नीली अग्नि उसके प्रिय सप्तऋषियों में से छह को निगल चुकी थी। सारा मां, प्रिय सरस्वती, ज्ञान की नदी निर्मम रक्त-धारा में बदल चुकी थी, और स्वयं समस्त मानवजाति को शाश्वत पीड़ा और तकलीफ का श्राप दे चुकी थी।

अब प्रतिशोध के लिए कुछ बचा ही नहीं था।

प्रलय प्रत्येक चीज, और प्रत्येक मनुष्य को निगलने के लिए आने वाली थी...

नीले अंधेरे में, रत्न-मारू पर हुआ प्राचीन गोदना चमका। देवता ने अपनी भयानक तलवार निकाल ली थी और अब सुरा और धधकती अग्नि के मध्य में खड़ा था। उसने अपने समस्त हाड़-मांस के ढांचे को एक घुटने पर टिका लिया, जबकि दूसरे घुटने को उठाकर, अपने दोनों हाथों से, अपनी विख्यात तलवार के हत्थे को पकड़ लिया। उसका सिर झुका, उसके आधे मुंडे सिर पर अग्नि प्रतिबिंबित हुई। वो एक नीले प्रेत की तरह दिखाई पड़ रहा था।

असुरों की इस चुनिंदा टुकड़ी का सेनाध्यक्ष अब तक इस एक-तरफा संहार और क्रूरता के दंभ में चूर हो चुका था। अपने राजा को प्रसन्न करने के प्रयास में, उसने दखल देने का निर्णय लिया।

ताकत के नशे में अक्सर छोटे आदमी बड़ी गलतियां कर बैठते हैं।

'तुमने राक्षस-राजा सुरा की बात सुनी न, ओ अविवास्व...'

इससे पहले कि वो अपनी बात पूरी कर पाता, रत्न-मारू ने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। उसका सिर रात के अंधेरे में उड़ा और बाकी का शरीर घुटनों पर ढह गया, उसकी गर्दन से रक्त प्रवाहित होकर नीली अग्नि में जा रहा था—मानो पछतावे की पहली किस्त चुकाई गई हो।

यह बलि चढ़ाने में विवास्वन को एक पल से अधिक का समय नहीं लगा। और यह तो अनुभवी, उन्मादी सेनाध्यक्ष था! बाकी असुरों को स्पष्ट हो चुका था कि अगर देवता ने मौत के इस तांडव को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया, तो उनका क्या अंजाम होगा।

लेकिन सुरा वीराने का सम्राट बस यूं ही नहीं बन गया था। उसने बिना एक शब्द कहे, धीरे से अपनी तलवार निकाली। तुरंत ही पचास और तलवारें भी म्यान से बाहर आ गईं। सुरा की सेना एक आत्मघाती दस्ता हुआ करती थी। ऐसे अभियानों में मृत्यु को प्राप्त होने पर, उनकी भयंकर प्रजाति उन्हें शहीद का दर्जा प्रदान करती थी। उन्हें यह कहकर मूर्ख बनाया जाता था कि अपनी

प्रजाति के लिए जान देने पर उन्हें जन्नत नसीब होगी। उन्हें किसी और ने नहीं, बल्कि राक्षस-राजा सुरा ने ही मूर्ख बनाया था, जिसने आर्यवर्त के सिंहासन पर बैठने के रक्त-रंजित सफर में, उन्हें अपना बलिदान देने के लिए तैयार किया था।

सुरा के नेतृत्व में, जुझारू योद्धा विवास्वन पुजारी के समीप आने लगे। देवता जरा भी नहीं हिचका, और अपनी उसी मुद्रा में बैठा रहा। ये वो शांत मुद्रा थी, जिसमें एक तेंदुआ अपने शिकार पर मौत की भांति झपटने से पहले बैठता है।

जब सुरा वार करने की दूरी तक पहुंचा, तो कोई उस पर चिल्लाया।

'राजन, अब हमें रुक जाना चाहिए!'

वो प्रचंड था।

प्रचंड भी कोई सुरा से कम दानवीय नहीं था। वो कम निर्दयी नहीं था और उसने अपने राजा के साथ, कंधे से कंधा मिलाकर, सारे युद्ध लड़े थे। दूर-दूर तक शत्रु उसके नाम से कांपता था। वो बिना किसी झिझक या अफसोस के पूरे गांव के गांव जला देता था। वो षड्यंत्र रचता और मार डालता। वो वास्तव में दिल से असुर था।

लेकिन आज कुछ बदल गया था। उसने आज मौन रहकर देवता की परीक्षा देखी थी। उसने जब मुनियों की आंखें और तेजी से जीर्ण होती उनकी काया देखी, तो उसके दिल में हूक उठी। लपकती नीली अग्नि ने तो उसे लगभग सम्मोहित कर दिया था और उसने सारा और छह सप्तऋषियों का अभिशाप भी सुना था। कड़कती बिजली, काटती हवा, धुआंधार बरसात को वो देख सकता था... वो समझ सकता था कि ये सब बेमौसम और अप्राकृतिक थे।

कुछ ऐसा जो कभी सुना नहीं गया था, कुछ ऐसा जो पूरी तरह से विध्वंसकारी था... वास्तव में आ रहा था। उन सबके लिए।

सुरा एक बार फिर, धीरे से प्रचंड को देखने के लिए मुड़ा, उसके नेत्र क्रोध से दहक रहे थे।

'तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, प्रचंड? तुम सुरा की तलवार के क्रोध को रोकने की कोशिश कर रहे हो?!'

'क्षमा करें, स्वामी। लेकिन क्या हमने पर्याप्त नहीं कर लिया है? हमने इन छह मायावी अ-ऋषियों को राख बना दिया। लेकिन इनमें से कोई भी मनुष्यों की

तरह नहीं जला। और कि... कि नीली अग्नि कोई जादू का हिस्सा नहीं है। हमने वो आवाजें सुनीं जो विस्फोटक सूर्य से भी तीव्र थीं। कोई भी काला जादूगर या मायावी ये सब नहीं कर सकता... ये तो मनुष्य की कल्पना से भी परे है!'

'अपना मुंह बंद रखो, प्रचंड!' गुस्से से उबलता हुआ, सुरा चिल्लाया।

प्रचंड पीछे हटने वाला नहीं था।

'चलो, चलते हैं, राजन। हमारे पास समग्र पश्चिमी आर्यवर्त है। ऐसी जगह पर क्यों रहना जो शायद मनुष्य और प्रकृति के क्रोध से समाप्त हो जाने वाली है? चलिए, वापस चलते हैं! हमें इसकी आवश्यकता नहीं है! हम पश्चिमी हिंदुकुश के निर्विवादित शासक हैं...'

'हम? हम... निर्विवादित शासक हैं, प्रचंड?'

'क्षमा करें, ओ महान सुरा। आप निर्विवादित शासक हैं।'

'पीछे खड़े रहो, प्रचंड, इससे पहले कि मैं तुम्हारा ही वध कर दूं,' राक्षस-राजा ने कहा।

ये ग्रंथों में लिखा है। जब ईश्वर किसी को नष्ट करने की ठान लेता है, तो वो सबसे पहले उसके निर्णय लेने की क्षमता छीन लेता है।

बनारस, 2017

महान द्वारका शास्त्री

विद्युत ने अपने परदादा को उस किताब में डूबे हुए देखा, जो देव-राक्षस मठ के 800 वर्ष पुराने द्वार से भी अधिक पुरानी जान पड़ रही थी। वो तेजी से पन्ने पलट रहे थे, एक पाठ से दूसरे पर जाते हुए। अधिकतर किताबें संस्कृत में लिखी थीं, और कुछ प्राचीन मिस्र की भाषा, अवधी, लैटिन, अंग्रेजी और हिंदी में।

'आप क्या ढूंढ़ रहे हैं, बाबा?' विद्युत ने विनम्रता से पूछा। 'क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूं?'

'मैं रक्तबीज अनुष्ठान का संदर्भ तलाश रहा हूं, विद्युत। मुझे तो उसका कोई जिक्र कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा।'

'लेकिन बाबा, आप तो पहले ही उसके बारे में सब जानते हैं, है न?'

मठाधीश ने नजरें उठाईं, पढ़ने के भारी चश्मे उतारे और वापस से अपनी पीठ कुर्सी पर टिका ली।

'नहीं, मैं नहीं जानता, विद्युत। एक बार जब अनुष्ठान को प्रतिबंधित कर दिया गया, तो उससे जुड़े हर पाठ को सावधानी से हटा दिया गया। इसके बारे में मुझे और दूसरे लोगों को जो जानकारी है, वो मौखिक रूप से प्राप्त है।'

'लेकिन आप इसके बारे में क्या पढ़ना चाहते हैं, बाबा?'

द्वारका शास्त्री ने गहरी सांस ली।

'कुछ विशेष नहीं। बस इस प्राचीन, त्यागे गए अनुष्ठान के बारे में पूर्ण जानकारी के बिना, मैं अमावस्या को जाने के पक्ष में नहीं हूं। यकीनन अगर ब्रह्मानंद इसकी सलाह दे रहा है, तो वो सही कह रहा होगा। उसे प्राचीन ग्रंथों के साथ ही काले विज्ञान का भी अच्छा ज्ञान है।'

इससे विद्युत को विचार आया।

‘बाबा, क्यों न हम प्रोफेसर त्रिपाठी से ही अपने साथ मसान-राजा की गुफा में चलने की विनती करें? उनका ज्ञान और अंदर की खबर, हमारे काम आएगी।’

ग्रैंडमास्टर ने सहमति में सिर हिलाया, इस सलाह के बारे में सोचते हुए उनकी आंखें सिकुड़ गईं।

‘हां, वो काम आ सकता है। लेकिन वो हमारे साथ उस जहन्नुम में क्यों आना चाहेगा? और जबकि वो स्वयं महा-तांत्रिक से कुछ कम नहीं है, लेकिन अब वो इस सबसे आगे निकल गया है। वैसे भी यह उसकी लड़ाई नहीं है,’ द्वारका शास्त्री ने कहा।

आधे पल की खामोशी के बाद, मठाधीश ने अपनी सिकुड़ी हुई आंखें अचानक खोल दीं।

‘या शायद उसकी हो,’ वो बुदबुदाए।

‘आप क्या बात कर रहे हैं, बाबा?’ विद्युत ने पूछा।

‘शायद यह उसकी लड़ाई हो!’

विद्युत दुविधा में था।

‘आप ऐसा क्यों कह रहे हैं, बाबा? प्रोफेसर त्रिपाठी तो त्रिजट और उसके साथ बीते समय तक के बारे में बताने को तैयार नहीं थे। वो किसी कीमत पर हमारे साथ नहीं चलेंगे। मुझे समझ नहीं आ रहा कि आप इसे उनकी लड़ाई क्यों कह रहे हैं।’

द्वारका शास्त्री विद्युत की तरफ मुड़े।

‘तुम्हें क्या लगता है, ब्रह्मानंद की आंख कैसे गई, विद्युत?’

विद्युत जवाब सुनना नहीं चाहता था।

‘जब ब्रह्मानंद दया और रहम की भीख मांग रहा था, तब बड़ी ही बेरहमी से दरांती से उसकी आंख निकाल ली गई।’

आखरी देवता बहुत परेशान दिखाई दे रहा था। वो अपनी आंखें बंद किए और

अपना माथा अपने हाथों पर टिकाए बैठा था।

पुरोहित जी और द्वारका शास्त्री समझ सकते थे कि विद्युत अपने आसपास की घटनाओं के साथ सहज नहीं था। यकीनन रक्त और हिंसा की कभी खत्म न होने वाली सचाई उस पर हावी हो रही थी।

‘क्या हुआ, बेटा?’ पुरोहित जी ने विद्युत के मजबूत कंधे पर अपना हाथ रखते हुए पूछा।

विद्युत न में अपना सिर हिलाकर, पुरोहित जी को देखकर मुस्कुराया। भले ही वो कितना ही तनाव में क्यों न हो, विद्युत अपने प्रियजनों को, अपनी वजह से परेशान नहीं देख सकता था।

‘कुछ नहीं, पुरोहित जी। बस इतने सारे कपट, साजिश और हिंसा से परेशान था। बचपन से ही मैं जानता था कि हमारा मठ और हमारा परिवार कोई साधारण नहीं था, लेकिन मुझे कोई अनुमान नहीं था कि इसके हर मोड़ पर इतना धोखा, षड्यंत्र और रक्तपात था।’

पुरोहित जी सहानुभूति से मुस्कुराकर बोले, ‘अर्जुन को महाभारत के युद्ध की शुरुआत में ऐसी ही दुविधा हुई थी, विद्युत। इसमें कुछ गलत नहीं है।’

विद्युत ने मुस्कुराकर, विश्वास से पुरोहित जी का हाथ थपथपाया।

द्वारका शास्त्री अप्रभावित थे। वो अपने परपोते को मजबूत, और आगे आने वाली लड़ाइयों के लिए तैयार देखना चाहते थे। उसे तब तक खड़े रहना था, जब तक कि भविष्यवाणी में वर्णित समय न आ जाए।

सिर्फ छह दिन और रह गए थे। दर्द, संघर्ष और त्याग की सदियां बीत गई थीं। सिर्फ इस दिन के इंतजार में।

सब सिर्फ इस सुनहरे दिन के लिए।

‘इसी वजह से मैंने तुम्हें और पुरोहित, दोनों को एक साथ बुलाया है, विद्युत,’ ग्रैंडमास्टर ने कहना शुरू किया।

‘जी, बाबा...?’ विद्युत ने अपने अनुशासित स्वर में कहा।

‘मेरा समय आ गया है, विद्युत। पुरोहित और मैं, सालों से मेरी कुंडली पढ़ रहे हैं और हम दोनों ही इस पर सहमत हैं। मेरा अंत नजदीक है, पुत्र। बहुत

नजदीक।'

विद्युत ने जो अभी सुना, वो उस पर भरोसा नहीं करना चाहता था। वो पुरोहित जी को देखने के लिए मुड़ा, इस उम्मीद से कि यह कोई बड़ा मजाक होगा। लेकिन पुरोहित जी उसे उदास नजरों से देख रहे थे।

'लेकिन बाबा, आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? आप इतनी तेजी से स्वस्थ हो रहे हैं। आप एकदम हृष्ट-पुष्ट हैं। मैंने आपको त्रिजट के आने वाले दिन देखा था। आप एक योद्धा की तरह खड़े थे! आपको अचानक कैसे कुछ हो सकता है? मैं आपके पास हूं, बाबा। मैं आपके और मृत्यु के बीच में दीवार बनकर खड़ा रहूंगा। पापा भी इसी तरह मुझे छोड़कर चले गए! अब आप मुझे ऐसे छोड़कर नहीं जा सकते, बाबा...' विद्युत किसी बच्चे की तरह सुबकने को तैयार था। बताए गए सच से मुंह मोड़ने के लिए, वो बार-बार अपना सिर हिला रहा था।

महान मठाधीश के नेत्रों से अश्रु बह आए। वो थोड़ा प्रयास करके अपनी कुर्सी से उठे, और कुछ कदम चलकर वहां पहुंचे, जहां विद्युत बैठा था। बुजुर्ग ने अपने प्रतीक्षित वंशज को उसके कंधे पकड़कर उठाया, और मजबूती से पकड़ा।

विद्युत फूट-फूटकर रोने लगा। उसने लगभग अपनी पूरी जिंदगी अकेले बितायी थी, बिना परिवार के प्यार और साथ के। वो बाला जैसे मित्रों के भरोसे रहा था। भाई जैसा वो प्यार भी उससे उसी नियति के हाथों छीन लिया गया, जो उसके नसीब में बदी थी। पिछले कुछ दिनों में, उसे अपने बाबा से वो सारा प्यार मिला था, जिसकी उसने इच्छा की थी। वो भी अब खोने वाला था!

'बाबा, आप समर्थ हैं। आप कुछ भी कर सकते हैं। आप स्थान और समय की गति नियंत्रित कर सकते हैं। स्वयं को बचा लें, बाबा। आप एक देवता हैं!'

द्वारका शास्त्री ने अपने विशाल हाथों में विद्युत का चेहरा यूं लिया, जैसे स्नेही अभिभावक अपने छोटे बच्चों को लेते हैं।

'मैं देवता नहीं हूं, विद्युत। जबकि सदियों तक लोग मानते रहे हैं कि हमारे वंश का हर पुत्र और पुत्री देवता या देवी थी, लेकिन सच कुछ और है। हमारे परिवार में, इतनी पीढ़ियों में सिर्फ दो वास्तविक देवता हुए हैं। एक था महान विवास्वन पुजारी, जिसकी कहानी मैंने तुम्हें सुनाई थी।'

मठाधीश ने एक पल रुककर, विद्युत के ईश्वरीय चेहरे को देखा। उनकी आंखें नम थीं और उनमें वो तड़प थी, जो जल्द ही अपने प्रिय से जुदा होने पर होती है।

'और दूसरे तुम हो, विद्युत। तुम ही आखरी देवता हो।

तुम्हारे बाद, ये दुनिया किसी और देवता को फिर नहीं देख पाएगी।'

हड़प्पा के पूर्व में, **1700** ईसापूर्व

‘तुमने परीक्षा उत्तीर्ण की’

सभा ने चर्चा से कुछ विराम लिया, प्रत्येक समूह को मत्स्य की कही बात का अर्थ समझना था।

मनु और तारा, या सत्यव्रत मनु और सतरूपा, पर्वत-संरक्षकों की दयामयी देवी के साथ चल रहे थे।

‘देवी, मत्स्य कौन हैं? और आप उन्हें कैसे जानती हैं?’ मनु ने पूछा।

वो मुस्कुराई लेकिन मनु की तरफ नहीं मुड़ी। मानो वो मनु से इसी सवाल की उम्मीद कर रही थी, और इसे सुनकर वो हैरान नहीं थी।

‘तुम जानना क्या चाहते हो, मनु?’ उसने चलते-चलते ही पूछा।

‘वो असाधारण हैं, देवी। उनकी उपस्थिति मात्र से ही तन-मन को एक राहत मिलती है। एक तरफ तो वो शूरवीर योद्धा प्रतीत होते हैं। और दूसरी तरफ वो एक विनम्र पिता लगते हैं। उनका एक रौब है, जबकि दूसरी तरफ वो उतने ही स्नेही भी हैं। जब वो मुझे देखते हैं, तो ऐसा लगता है मानो वो मेरी आत्मा के ही साथ, इस जन्म और पूर्व जन्मों को भी देख रहे हों। वास्तव में... मुझे संदेह होता है कि वो प्रभु विष्णु के ही अवतार हैं।’

‘ये जल्दी ही प्रभावित हो जाते हैं,’ तारा ने तुरंत कहा। वो अपने मनु को जानती थी, और जानती थी की उसका योद्धा-राजकुमार कितना भावुक और सीधा था।

विनम्र महिला तारा के कहे शब्दों पर हंस दी। वो मनु और तारा के बीच प्रेम और दोस्ती के संबंध से आनंदित थी।

‘तुमने उन्हें बस एक ही बार देखा है... वो भी भीड़ में, दूर से, तारा,’ उसने कहा। ‘उनसे आमने-सामने मिलने की प्रतीक्षा करो। वैसे भी यह मत्स्य का ही निर्णय होता है कि किसे वो दिव्य लगें और किसे साधारण। वो स्वयं उसके लिए

समय चुनते हैं। उनकी योजना के अनुकूल हो, तो वो आपको स्वयं से घृणा करने के लिए विवश कर सकते हैं। कोई नहीं जान सकता कि उनके मन में क्या चल रहा है। मैं तुम्हें बस इतना ही बता सकती हूं कि वो इतने ही समीप हैं, जितने धरती पर चलते ईश्वर।'

मनु उसकी बात से हैरान नहीं था। उसने यह सब स्वयं अनुभव किया था। तारा थोड़ी शंकालु थी, उसे यह सब अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन लग रहा था।

'कृपया मुझे इस विषय में बताइए,' मनु ने पूछा, 'अगर वो वही हैं, जो आपने बताया, और मुझे भी ऐसा ही लगता है, तो वो उस दिन मुझे मूर्च्छित क्यों मिले थे, पानी की कुछ बूंदों के लिए तड़पते? उनके जैसा समर्थ व्यक्तित्व ऐसे बेबस हालात में कैसे हो सकता था?'

'उस दिन वो नहीं मर रहे थे, मनु। तुम मर रहे थे! वो समयातीत हैं, जीवन और मृत्यु की परिधि से परे। वो उनकी तुम्हारे लिए अंतिम परीक्षा थी। वो देखना चाहते थे कि क्या वास्तव में धरती को बचाने के लिए उन्होंने सही मनुष्य का चुनाव किया था। अपनी जगह पर किसी दूसरे मनुष्य के प्राण बचाकर, तुमने उन्हें सही साबित कर दिया। तुमने परीक्षा उत्तीर्ण की।'

'लेकिन फिर भी, देवी, आपका उनसे परिचय कैसे हुआ? वो यहां नहीं रहते हैं, लेकिन फिर भी प्रत्येक जगह पर उनका शासन दिखाई देता है। वो राजा नहीं हैं, लेकिन फिर भी उनमें अनेकों सम्राटों का तेज है। जब वो हंसते हैं, तो पूरा ब्रह्मांड उनके साथ हंसता है। जब वो नाराज होते हैं, तो आसमान भी उदास होकर, उनके साथ रोता है। वो कौन हैं?'

देवी ने कुछ पल सोचा और फिर बोली।

'कोई नहीं जानता, मनु, कि मत्स्य कहां से आते हैं। कोई नहीं जानता कि उनके अनुयायी कौन हैं। कहा जाता है कि उनके पास हजारों अनुयायी हैं, सब जल के निवासी हैं। कुछ कहते हैं कि मिथकीय समुद्री-दैत्य, लोक-नास, जो सैकड़ों जहाजों से भी बड़ा अजगर है, वो भी उनका पालतू सेवक है। मत्स्य ने एक बार इस पर्वत की विशाल सेना से रक्षा की थी। जब अनेकों घुड़सवार उनकी तरफ लपके, तो वे युद्ध क्षेत्र में अकेले खड़े रहे थे, उनके लंबे बाल और मछली सा परिधान हवा में फड़फड़ा रहे थे। मत्स्य ने बस मुस्कुराकर अपने दोनों हाथ हवा में उठा दिए थे। मैंने यह अपनी आंखों से देखा था। सैकड़ों घोड़े हिनहिना कर रुक गए, अपने सवार को हवा में फेंकते हुए, जो रणक्षेत्र में जमीन पर जाकर गिरे। वापस लौटने से पहले, घोड़ों ने अपना सिर मत्स्य के सामने झुका दिया।'

मनु और तारा वहां स्तब्ध और हैरान खड़े थे। दयालु देवी कभी असत्य नहीं बोलेगी। उसके जैसे आध्यात्मिक व्यक्तित्व पर किसी जादूगर का कोई जादू काम नहीं कर सकता था।

'मुझे यह बताने के लिए आपका हार्दिक आभार देवी। मुझे मत्स्य के पक्ष में और कुछ नहीं जानना है। मुझे लगता है कि मैं उन्हें जानता हूं,' मनु ने मद्धम मुस्कान से कहा।

देवी ने सहमति में सिर हिला दिया। वो भी ये जानती थी।

'बस अंतिम प्रश्न, देवी... मत्स्य में से हमेशा समुद्र की गंध क्यों आती है? यहां तो मीलों तक कोई समुद्र नहीं है।'

'तुम समझ नहीं पाए, मनु...' उसने जवाब दिया।

'मत्स्य ही समुद्र हैं।'

उनकी आवाजें तेज हो रही थीं।

तारा समझ नहीं पा रही थी कि सबकुछ हो जाने के बाद भी, अवश्यंभावी प्रलय की चेतावनी के बावजूद भी मनु वापस हड़प्पा जाकर अपना बदला लेना चाहता था।

मत्स्य के समझाने के बाद, सोमदत्त ने तारा को सलाह दी थी कि वो मनु को न बताए कि देवता जीवित था, और कि अब क्या बन गया था। तारा ने इसका कड़ा विरोध किया था। वो अपने मनु से कुछ नहीं छिपाने वाली थी—उसके पिता के जीवित होने की खबर तो बिलकुल भी नहीं। वो बस मनु की सुरक्षा की वजह से बेमन से इस बात के लिए सहमत हो पाई थी। वो जानती थी कि अगर मनु को विवास्वन पुजारी के जीवित होने की खबर मिलेगी, तो वो तुरंत अपने पिता की सहायता के लिए दौड़ पड़ेगा—जिनकी अब कोई सहायता नहीं की जा सकती थी। वो बस इतना जानती थी कि हड़प्पा का सूर्य हमेशा के लिए मृत हो चुका था। जो बचा था वो कातिल राक्षस था... और अगर मनु भी अपने सीने में बदले की आग लिए घूमेगा, तो वो भी वही बन जाएगा। मनु से यह सच छिपाने के लिए उसने स्वयं को प्रताड़ित किया, लेकिन उसके पास कोई विकल्प नहीं था।

'तुम्हें या तो एक या दूसरी बात पर भरोसा करना ही होगा, मनु,' तारा ने तनावपूर्ण आवाज में कहा। वो उसे काफी देर से समझाने की कोशिश कर रही थी। 'तुम मानते हो कि प्रलय आने वाली है। तो ऐसे में प्रियम्वदा, चंद्रधर, गुन,

शा, अप, और वो सब लोग जिन्होंने देवता पर पत्थर फेंके, और वो नीच जिन्होंने उन पर थूका... वो सब तो वैसे भी मारे जाएंगे न! और अगर तुम्हें नहीं लगता कि प्रलय आने वाली है, तो हम इस काले पर्वत पर क्या कर रहे हैं?'

उसकी बातों में तर्क था। उसकी बातों में हमेशा तर्क होता था।

'अगर प्रलय ने उन लोगों को मारा, जिन्होंने मेरे परिवार को नष्ट किया, मेरी मां को मारा और मेरे पिता से सबकुछ छीन लिया, तो मनु पुजारी के अस्तित्व पर ही शर्मिंदगी होगी! इस दुनिया से जाते समय प्रियम्वदा, चंद्रधर और उन काले जादूगरों को मेरी तलवार के वार से मिली पीड़ा को झेलना होगा,' मनु ने क्रोध से कहा।

'और आपको लगता है कि इससे आपकी सौम्य मां, संजना को आप पर गर्व होगा, सत्यव्रत?'

मनु और तारा ने ध्यान दिया कि मत्स्य उनकी तरफ ही आ रहा था। नीले मछली रूपी आदमी ने तारा को देखा और मुस्कुराया। तारा की सांस वहीं रुक गई, जहां थी और वो वैसे ही सम्मोहन में खड़ी रही, जैसे मत्स्य को पहली बार देखकर मनु को हुआ था। उसे वैसी शांति का अनुभव हुआ जो दिव्य मंदिर के प्रांगन में होता है। वैसी शांति जो बचपन में उसने संजना की बांहों में महसूस की थी। वो खुशी जो मनु के लिए उसका प्यार उसे देता था। उसे महसूस हुआ कि उसने पहले भी कहीं मत्स्य को देखा था। या शायद हर जगह।

मनु सही कह रहा था... वो भगवान विष्णु था।

मनु ने सिर झुकाकर और हाथ जोड़कर सम्मान से मत्स्य का अभिवादन किया, जो अब उसके लिए सबकुछ था। उसने मत्स्य के पूछे सवाल को अनसुना किया।

'मेरे प्रश्न का जवाब दो, मनु। तो क्या आपको लगता है कि आपके अपने सगे मामा और तीन अंधे आदमियों के साथ, एक महिला को मारने से, आपके अभिभावक और पूर्वज आप पर और आपकी बहादुरी पर बहुत गर्व करेंगे?'

'वो सब मैं नहीं जानता, मत्स्य। उन्हें मेरे पिता और माता को सताने की सजा भुगतनी ही होगी। मैं आपसे विनती करता हूं, कृपया मुझे मत रोकिएगा।'

मत्स्य ने आह भरी और मनु के पास गया। तारा अभी भी मत्स्य की दिव्यता में बुत बनी खड़ी थी।

‘मैसोपोटामियाई जादूगरों की चिंता मत करो, मनु। मोहन जोदड़ो की राजकुमारी ने पहले ही उन्हें मृत-कारावास में सड़कर मरने के लिए छोड़ दिया है। वो प्रलय से नहीं बच पाएंगे। लेकिन उनके बुरे नाम याद रखे जाएंगे। मैं तुम्हें भरोसा दिलाता हूं कि उन पापियों की काली आत्मा को कभी शांति नहीं मिलेगी और उनके काले कारनामों के लिए, बाढ़ से बचने वाले लोग और उनकी पीढ़ियां हमेशा उन्हें याद रखेंगी। अप-शा-गुन से लोग सदियों तक नफरत करेंगे।’

मनु सहमत नहीं लग रहा था।

‘मुझे बताएं सत्यव्रत, आपकी मां आपसे क्या करने को कहतीं... जिंदगी बचाने को या जिंदगी लेने को?’ मत्स्य ने पूछा।

‘बिलकुल जिंदगी बचाने के लिए, मत्स्य, लेकिन बात यह नहीं है...’

‘और अगर प्रश्न आपके प्रतिशोध या सृष्टि को बचाने के आपके दायित्व के बीच होता... तो वो क्या सुझाव देतीं?’

बनारस, 2017

‘वो उनके अनुयायी थे’

लगभग एक घंटा बीत गया था और अभी तक भी विद्युत स्वयं को संभाल नहीं पाया था। उसने जीवन-रक्षक यज्ञ से लेकर ग्रैंडमास्टर को लॉस एंजेल्स के श्रेष्ठ अस्पताल में भर्ती कराने तक, सब चीज का सुझाव दिया था। वो किसी भी कीमत पर अपने परिवार के अंतिम सदस्य को बचा लेना चाहता था।

लेकिन जैसे समय गुजरा और विद्युत ने स्वयं अपने बाबा का भविष्य पढ़ा, तो उसने भी वास्तविकता को स्वीकार कर लिया। उसके परदादा की कुंडली में गंभीर मारकेश स्पष्ट रूप से अपनी काली परछाईं दिखा रहा था।

अगर ज्योतिष पर भरोसा किया जाए, तो कोई भी द्वारका शास्त्री को बचा नहीं सकता था।

कुंडली पढ़ने में विद्युत की योग्यता उससे कहीं बेहतर थी, जितना कि मठाधीश और द्वारका शास्त्री उम्मीद कर रहे थे। देवता का ध्यान किसी ऐसी चीज पर भी गया था, जिसने उसके दिल की धड़कन रोक दी थी।

द्वारका शास्त्री की कुंडली सिर्फ यही नहीं बता रही थी कि उनका अंत नजदीक था।

बल्कि वो उनके लिए तकलीफदेह और क्रूरतापूर्ण मौत की भी भविष्यवाणी कर रही थी।

‘मुझे तुम्हें और भी कुछ बताना है। मेरी सिद्धियां भी शायद उस समय से प्रभावहीन हो गई थीं, जब मैंने पश्चिम के तांत्रिक से युद्ध किया था। ब्रह्म राक्षस ने निश्चित रूप से मेरी सहायता की थी, क्योंकि इसका वचन उसने मुझे आधी सदी पहले ही दिया था, लेकिन उस अध्यात्मिक परिश्रम ने अपना प्रभाव डाला। मैं बाला की काली आत्मा को नहीं देख सका, जबकि वो मेरे सामने ही

था। मेरी त्रिकाल-शक्ति तब कहां चली गई थी, जब त्रिजट की पिशाचनी ने हमारा ध्यान भटकाकर, बाला का वध कर दिया? और अब, जब शायद हम मेरे जीवन का आखरी युद्ध लड़ने जा रहे हैं, तो मैं भविष्य देख ही नहीं पा रहा हूं। मैं रक्तबीज अनुष्ठान की विस्तृत जानकारी याद ही नहीं कर पा रहा हूं। मैं नहीं जानता कि मैं तुम्हारे किसी काम आ भी पाऊंगा या नहीं, विद्युत।'

विद्युत उठा, और द्वारका शास्त्री की कुर्सी तक चलकर गया और वहीं जमीन पर बैठ गया। उसने मठाधीश का एक पैर अपने हाथों में लिया और उसे नरमाई से दबाने लगा—वो अपने बाबा के प्रति अपने असीम प्रेम और समर्पण को दर्शा रहा था।

'आपके होने भर से ही वो बुरी शक्तियां सहम जाएंगी, बाबा। आपका तेज ही उनकी काली ताकतों को काटकर आधा कर देगा। हम नहीं जानते कि त्रिजट हम पर क्या वार करने वाला है। वो कुछ भी हो सकता है। अगर कोई हमें उसके अनपेक्षित हमले से बचा सकता है, तो वो आप हो बाबा। लेकिन यह कहकर भी, मैं आपसे विनती करूंगा कि आप हमारे साथ मत आइएगा, बाबा। आप कृपया यहीं रुकिएगा।'

ऐसा कभी नहीं होने वाला था। द्वारका शास्त्री अपने प्रिय विद्युत को कभी अकेले नहीं जाने दे सकते थे।

फिर भले ही इसका मतलब उनकी शानदार, लेकिन क्रूर कुंडली में लिखे अंतिम अध्याय का पूर्ण होना ही क्यों न हो।

'बिलकुल नहीं, नैना!' विद्युत चिल्लाया, जब वो नैना को अमावस्या की रात को होने वाले खतरे के बारे में समझाने की कोशिश कर रहा था।

'देखो, नैना, इस बार हम सीधे उस राक्षस की गुफा पर हमला करने जा रहे हैं। उनकी संख्या अधिक होगी, और इस बार यह जंग सिर्फ हाथों या हथियारों से नहीं लड़ी जाएगी। ये ऐसी लड़ाई होगी, जो न तो तुमने, न मैंने ही कभी पहले लड़ी है।'

'तो फिर तुम क्यों जा रहे हो?' उसने पूछा।

'क्योंकि मैं एक तांत्रिक हूं, नैना। मेरे इन आधुनिक कपड़ों और महंगी घड़ी के नीचे, मैं एक समर्थ साधक ही तो हूं। मैंने बीस साल प्रशिक्षण लिया है... पहले पापा ने मुझे सिखाया, फिर हिमालय के आश्रम के मेरे संन्यासी मित्र, गोपाल ने। भले ही मैं त्रिजट को पराजित न कर पाऊं, लेकिन मैं कम से कम कुछ समय

तक उसके वार को सह तो पाऊंगा।'

नैना ने न में सिर हिलाया। वो सुनने नहीं वाली थी।

'तुम मुझसे मजाक कर रहे हो, विद्युत!' उसने खिन्नता से जवाब दिया। 'यह मठ मेरा घर है! मैं किसी भी ऐसी लड़ाई से बाहर नहीं रही हूं, जो मेरे परिवार, मेरे बाबा... और तुमसे जुड़ी हो। तुम से... विद्युत।'

विद्युत सीधे उसकी बड़ी-बड़ी और बोलती सी आंखों में देख रहा था।

'नैना, तुम नहीं...' उसने बोलना शुरू किया।

'तुम अब भी नहीं समझ पा रहे, है न?' नैना ने बीच में टोका।

वो विद्युत की आंखों में ढूंढ़ रही थी... जवाब, पहचान, कोई ऐसी बात जो वो देखना चाहती थी।

'मैं तुमसे प्यार करती हूं,' उसने नरमाई से कहा।

विद्युत सुन्न हो गया। वो नहीं जानता था कि उस पर किस चीज का असर हुआ था। वो कभी इतनी कोमल, जुनूनी, अवर्णनीय मनोहर नहीं लगी थी।

'क्य...?' वो इतना ही कह पाया।

'हां, हां, हजारों बार हां... मैं तुमसे प्यार करती हूं विद्युत,' उसने फिर से कहा, मानो वो उससे अपने दिल की कहानी सुनने के लिए विनती कर रही हो। मानो वो उससे वो कहलवाना चाहती थी, जो वो पिछले दो दशकों से सुनना चाह रही थी।

उनके बीच एक खामोशी भरा पल गुजरा—वो पल, जिसमें एक लड़का और एक लड़की एक दूसरे की उपस्थिति को इतनी सघनता से अनुभव करते हैं कि कोई उसे संभव न समझ सके। एक जो प्यार में डूबा हुआ और बेबस हो। और दूसरा, जो किसी भी तरह सीमा से पार न जाने के लिए दृढ़ हो।

वो नहीं कह सकता था कि वो भी उसे प्यार करता था। लेकिन वो उसका दिल भी नहीं तोड़ सकता था। इतना सबकुछ हो जाने के बाद तो बिलकुल नहीं। वो कौन थी यह जानने के बाद तो बिलकुल नहीं।

पल भर में, विद्युत के हाथ नैना की छरहरी कमर को पकड़कर अपनी तरफ खींच रहे थे। जैसे ही उनके बदन करीब आए और नैना को अहसास हुआ कि क्या होने जा रहा था, उसने अपनी आंखें बंद करके, स्वयं को देवता को समर्पित कर दिया।

विद्युत ने अपने होंठ उसके होंठों से सटाए, जिन्हें नैना ने बहुत प्यार से अपनाया। और पल भर में ही वो दोनों एक लंबे और जुनूनी चुंबन में खो गए।

जब वो मठ के भोज-कक्ष से बाहर आए, तो विद्युत को एक पल पुरोहित जी से अकेले बात करने का मौका मिला। वो अभी भी हैरान था कि अभी कुछ घंटे पहले ही उसके और नैना के बीच क्या हो गया था।

मैं कभी उस चुंबन को नहीं भूल पाऊंगा। कभी नहीं।

‘पुरोहित जी, मुझे एक बात समझ नहीं आई। जब त्रिजट और बाबा बात कर रहे थे, ऐसा लग रहा था कि वो एक-दूसरे को पहले से जानते थे। ऐसा ही प्रोफेसर त्रिपाठी के साथ भी लगा, जिसे बाबा ब्रह्मानंद कहकर पुकार रहे थे। ये सब क्या है?’

‘तुम अभी तक नहीं समझ पाए, विद्युत?’ पुरोहित जी ने अंतिम देवता के प्रश्न से कुछ हैरान होकर पूछा।

विद्युत ने हल्के से कंधे उचकाकर, भावहीन प्रतिक्रिया दी।

‘नादान बच्चे, त्रिजट और ब्रह्मानंद, दोनों महान द्वारका शास्त्री के अनुयायी थे। वो मठ में ही रहते थे, और यहीं उन्होंने प्रशिक्षण लिया था। और कैसे उसकी पिशाचनी को आश्रम की कोठरी का रास्ता पता था?

इस दुनिया में कोई भी उन तांत्रिक ताकतों को, जो उन दोनों के पास हैं, परम तांत्रिक के मार्गदर्शन के बिना प्राप्त नहीं कर सकता।’

हड़प्पा, **1700** ईसापूर्व

अंतिम सप्तऋषि

विवास्वन पुजारी ने पहले असुर को, रत्न-मारू से उसके उदर से लेकर सीने तक तिरछा चीर दिया। फिर बिजली की सी तेजी से वो मुड़ा और दूसरे असुर का सिर धड़ से अलग कर दिया, जबकि तीसरे के सीने में पैर से जोरदार प्रहार करते हुए, उसे कई फुट दूर पथरीली जमीन पर फेंक दिया।

ये सिपाही देवता के रणकौशल के सम्मुख कुछ नहीं थे। उनमें से कोई भी उसका मुकाबला नहीं कर सकता था।

लेकिन वो पचास थे, और उनके साथ उनका शक्तिशाली योद्धा-राजा सुरा भी था।

अगले कुछ मिनट और चलने वाली लड़ाई में, देवता ने स्वयं पर हमला करते दस और सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया, लेकिन युद्ध में देवता भी उनके वारों से घायल हो रहा था। पहले से ही घायल और खाल उतरे शरीर के साथ, देवता और घाव सहन नहीं कर सकता था।

और फिर सुरा ने अपने श्रेष्ठ योद्धाओं में से सात के नाम पुकारकर, स्वयं भी अपनी विशाल तलवार निकाल ली।

सुरा कोई सामान्य अश्वरोही नहीं था। अतीत में देवता के हाथों पराजित हो चुका था, लेकिन वो आपस में हुए संघर्ष की बात थी। न ही उस समय देवता शारीरिक रूप से इतना घायल था। ये दोनों बातें विवास्वन पुजारी के विरुद्ध जा रही थीं और उसे हर दिशा से स्वयं पर हुए तलवार और भालों के वार को झेलना था।

देवता अचानक अपने आसपास मौजूद कठिनाइयों के घेरे को तोड़ते हुए पास की चट्टान की तरफ दौड़ा। एक बेहतरीन और कुशल चाल के साथ, उसने एक

पैर से बड़े से पत्थर पर छलांग लगाई, वहां से मुड़ा और चट्टान का उपयोग स्वयं को उछालने के लिए करते हुए, उसने आकाशीय वार किया। वो छलांग काम आई और रत्न-मारू ने एक और असुर का सिर फाड़ दिया, जो दर्द से चिल्लाता हुआ तुरंत मृत्यु को प्राप्त हो गया।

लेकिन देवता के पास समय कम था। सुरा अब उस पर अपनी भारी तलवार से बार-बार, पागलों की तरह, जंगली पशुओं के समान गुर्राते हुए वार कर रहा था।

जब देवता सुरा के घातक वारों और दूसरी बहुत सी तलवारों और भालों के वार से बचने की कोशिश कर रहा था, तो उसने एक तेज, लंबी तलवार को अपनी तरफ आते देखा। उसके पास उस तलवार की नोंक पकड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, नहीं तो वो उसकी पसलियों के पार हो चुकी होती।

जब देवता ने उस तेज तलवार को अपने हाथ में पकड़ा, तो उसने उसकी हथेली और उंगलियों को बड़े से घाव के साथ चीर दिया। विवास्वन पुजारी दर्द से चिल्लाया। अपनी शूरवीरता और आसपास पड़े चौदह असुरों की लाशों के बावजूद भी, यह साफ हो रहा था कि वो जंग देवता की पकड़ से फिसलती जा रही थी।

फिर अचानक, भारी ओलावृष्टि के बीच, ढहते पर्वत की गर्जना तले और देवता व असुरों के मध्य हो रहे संग्राम से ऊपर, सातवें सप्तऋषि की कड़क और तेज आवाज सुनाई दी। ऐसी आवाज जिसकी उम्मीद उसके क्षीण होते शरीर से नहीं की जा सकती थी।

सबको भयभीत करते हुए, उसने एक बार फिर से अपनी आंखें खोलीं, इस बार आंखों से वैसी ही नीली चमक निकल रही थी, जैसी विकराल अग्नि में थी।

‘रत्न-मारू को नीली अग्नि में परिष्कृत कर लाओ, ओ देवता—और बुराई के इन अपराधियों का सफाया कर दो।

इसे उस अग्नि की भट्टी में तपा लाओ, जो सप्तऋषियों के पवित्र अवशेष से धन्य हुई है—

और फिर इस ताकतवर तलवार को इसकी अंतिम नियति के लिए तैयार करो!’

विवास्वन पुजारी ने अभी भी अपने रक्त-रंजित बाएं हाथ से उस तलवार की धार को पकड़ रोक रखा था और दाहिने हाथ में स्वयं अपनी तलवार थामे वो

जवाबी कार्यवाही कर रहा था, जब उसने अंतिम सप्तऋषि की घोषणा सुनी। तेज गरजती और दहाड़ती आवाज के बीच में आए दखल से उसे वो अवसर मिल गया था, जिसकी उसे आवश्यकता थी। वो उस अलौकिक अग्नि से मात्र बीस फुट की दूरी पर था।

असुर किसी भी तरह से देवता को यह छोटी सी दूरी पार करने से नहीं रोक सकते थे।

वो ऐसा दृश्य था, जिसे शायद धरती मां भी कभी भुला नहीं पाएंगी। पृथ्वी मनुष्य और दिव्यता का समागम कैसे भूल सकती थी? नियति को उसके अंजाम तक पहुंचाने में ईश्वरीय सहायता को कोई कैसे भुला सकता था?

जैसे ही देवता ने अपनी तलवार अग्नि में घुसाई, तो लपटें पहले तो बुझती सी प्रतीत हुईं। अगले ही पल, चौंकाने वाली तीव्रता के साथ वो नीली लपटें आसमान की ओर लपकीं! सुरा और उसके आदमियों के क्रूर हृदय में, वो दृश्य देखकर भय का अहसास हुआ। पहले उन्होंने ठंडी नजरों से एक-दूसरे को देखा और फिर अपनी आंखें और सिर उठाकर उन लपटों का विकराल आकार देखा —ऐसा लग रहा था मानो उन नीली लपटों का उद्गम स्थल स्वर्ग ही था।

कोई अलौकिक शक्ति बीच में दखल दे रही थी।

कोई था, जो आसमान से इस अतिप्राकृतिक घटना में घी डाल रहा था।

विवास्वन पुजारी उन लपटों के सामने आदिम योद्धा की तरह खड़ा था, अपने सिर को पीछे झटका दिए हुए, पैरों को खोले और अपनी बलिष्ठ बांहों को अग्नि स्तंभ में घुसाए हुए। उसकी आंखें बंद थीं और होंठ प्रार्थना बुदबुदा रहे थे, शक्ति का आह्वान करते हुए। तूफानी रात के अंधेरे में, वो स्वयं अग्नि की भांति नीला दिखाई पड़ रहा था।

धीरे-धीरे उस अग्नि स्तंभ का आकार घटने लगा। पहले तो वो विकराल नीली अग्नि बना, और फिर सामान्य पीली अग्नि। बारिश और तूफान जल्द ही इस साधारण, दुनियावी अग्नि को बुझा देने वाले थे।

लेकिन कुछ था जो अभी भी नीले प्रकाश से दीप्त था।

वो देवता की तलवार थी।

बनारस की बाह्य सीमा, **2017**

कालचक्र

ब्रह्मानंद भयभीत था।

विद्युत और बलवंत के बहुत आग्रह, मठाधीश द्वारा दिए सख्त निर्देशों की वजह से ही प्रोफेसर त्रिपाठी उनके साथ त्रिजट की गुफा तक चलने के लिए तैयार हो पाया था। विद्युत ने महसूस किया था कि अपने सारे विरोध के बावजूद, कहीं न कहीं एक आंख वाले प्रोफेसर की प्रतिशोध की चाह ने उसे आने के लिए राजी किया था। वो मृतक-नाथ से अपने दम पर प्रतिशोध नहीं ले सकता था। लेकिन द्वारका शास्त्री, विद्युत और बलवंत की सहायता से वो इसे वास्तव में बदला चुकाने के अवसर के रूप में देख रहा था।

दल तैयार था। इसका नेतृत्व स्वयं ग्रैंडमास्टर कर रहे थे। इस दल में बलवंत, सोनू, ब्रह्मानंद और मठ के कुछ चुनिंदा सौ योद्धा थे...

...और विद्युत।

वो गहरे नशे में लग रहे थे। यज्ञशाला के बाहर, काली, अमावस्या की रात में, पहरे पर खड़े हुए तांत्रिक सुरक्षाकर्मियों को बड़ी सहजता से हटा दिया गया।

प्रोफेसर त्रिपाठी सही कह रहा था। वो लोग वास्तव में किसी गहरे नशे में लग रहे थे।

त्रिजट कपालिक की यज्ञशाला बनारस के मुख्य नगर से लगभग चालीस किलोमीटर बाहर थी। यह ऐसे असामान्य दूरस्थ क्षेत्र में स्थित थी, जिसे आमतौर पर स्थानीय पुलिस अनदेखा कर देती थी। इस क्षेत्र से जहां पुलिस वालों को कुछ अतिरिक्त आय मिल जाती थी, वहीं वो मसान-राजा के काले कामों की वजह से उसके पास जाने से डरते भी थे। स्थानीय लोग भी उस क्षेत्र से गुजरने से परहेज करते थे, क्योंकि वो जानते थे कि वो मध्यकालीन श्मशान घाट हुआ करता था। वो मानते थे कि वो समस्त क्षेत्र और वो रहस्यमयी गुफा सब भूतिया थे।

गांववालों का सोचना गलत नहीं था।

त्रिजट कपालिक की यज्ञशाला सैकड़ों मीटर तक वृक्षों की मोटी परिधि से घिरी थी। रात के अंधेरे में, जब द्वारका शास्त्री अपने कमंडल से शुद्ध जल उस यज्ञशाला की काली धरती पर छिड़कते चल रहे थे, तो विद्युत व दूसरे लोगों ने अजीब-अजीब सी चीखें सुनीं। वो चीखें थीं तो इंसानों की ही। लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों धरती के गर्भ से आ रही थीं।

सामंती श्मशान जीवंत होने लगा।

जब वो दबे पांव आगे बढ़ रहे थे, उस काले मठ की ऊंची दीवारों के समीप, तो किसी अवर्णनीय चीज ने उन्हें रोक लिया। उन्हें जोर से रोने की आवाज सुनाई दी, जो सुनने में तो महिलाओं की कराह और पीड़ा का स्वर लग रहा था। लेकिन आसपास कोई नहीं दिखाई दिया।

सोनू विद्युत की तरफ मुड़ा, उसके नेत्र भय से फैल गए थे।

'डाकिनी,' विद्युत ने शांति से कहा।

जैसे ही उसने ये शब्द कहे, द्वारका शास्त्री ने कई ज्योतों वाला अपना भव्य दीप जला लिया—ये वैसा ही था, जैसा गंगा आरती के समय पुजारी लिए रखते हैं। उसके कपूर का धुआं ऊपर अंधेरे में जा रहा था। जैसे ही यह पवित्र दीपक प्रज्वलित हुआ, रोने ही आवाजें फुफकारने, गुर्राने और चिंघाड़ने की आवाजों में बदल गईं। जैसे ही मठाधीश ने मंत्रोच्चार शुरू किया, हवा से जमीन पर पड़ी सूखी पत्तियां उड़ने लगीं और पेड़ हिलने लगे—मानो उस प्राचीन श्मशान में रहने वाली और मसान-राजा की सेवा करने वाली दूसरी दुनिया की ताकतों में

कोहराम मच गया हो।

विद्युत सही कह रहा था। अपने थके और कुम्लाहे हुए रूप में भी, देव-राक्षस मठ के ग्रैंडमास्टर अपराजित थे। केवल यह परम-तांत्रिक ही प्रेत-आत्माओं की पूरी फौज को उनके गढ़ में आकर मार भगा सकता था।

अब वो उस बड़े से काले दरवाजे के काफी नजदीक थे, जो त्रिजट कपालिक की यज्ञशाला का प्रवेश द्वार था। विद्युत अपने बाबा को गहन तनाव में देख सकता था। उस भूतिया पनाह की ओर उठता प्रत्येक कदम क्रोधित आत्माओं को अधिक मजबूत और द्वारका शास्त्री को और दुर्बल बना रहा था। वृक्षों में अदृश्य छायाएं घात लगाए बैठी प्रतीत हो रही थीं, मानो वे प्रतीक्षा में हों कि जैसे ही मंत्रों का तेज खत्म हो, वो आक्रमण कर दें।

'बाबा क्या मुझे और प्रोफेसर त्रिपाठी को आपके साथ मंत्रोच्चार करना चाहिए? आपके अकेले की अपेक्षा हम तीनों साथ मिलकर अधिक ताकतवर हो जाएंगे!' विद्युत ने अपने परदादा के प्रति चिंता से पूछा।

द्वारका शास्त्री ने मना कर दिया और काले दरवाजे पर आक्रमण का इशारा किया।

विद्युत बलवंत की ओर मुड़ा, जिसने अपनी दोनों तलवारें बाहर निकाल लीं। यह मुकाबला तलवारों, भालों और मुक्कों से लड़ा जाना था। दोनों पक्ष गोलियों की आवाज से पुलिस का ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहते थे, जबकि वो जानते थे कि इस संग्राम में काफी रक्तपात होने वाला था। मठ के योद्धा अब काली ताकतों से लोहा लेने को तैयार थे।

जैसे ही विद्युत यज्ञशाला की तरफ बढ़ने वाला था, द्वारका शास्त्री उसकी तरफ मुड़े, वो अत्यधिक बेचैन दिखाई पड़ रहे थे।

'कुछ तो गड़बड़ है, विद्युत। पिशाच और डायन उतने ही भयावह हैं, जितना कि मैंने उनके अमावस्या पर होने की उम्मीद की थी। लेकिन यहां कुछ और भी है... कुछ ऐसा जो हमारी कल्पना से भी अधिक भयानक है। इस रात काम हमारी योजना के मुताबिक नहीं होने वाले।'

विद्युत नहीं जानता था कि क्या प्रतिक्रिया दे। इस समय का चुनाव प्रोफेसर त्रिपाठी ने किया था और अभी यहां से वापस जाने का मतलब होगा, अगली

अमावस्या तक इंतजार।

द्वारका शास्त्री विद्युत की दुविधा समझ गए।

‘चलो, आगे बढ़ते हैं, विद्युत। मृतक तो वैसे भी जाग गए हैं और अब वापसी का समय नहीं है। बस अपना ध्यान रखना, मेरे बच्चे...’

देवता को ग्रैंडमास्टर की आंखों में दर्द दिखाई दिया। उनका कहा अंतिम वाक्य एक किस्म की विदाई प्रतीत हो रहा था।

अब तक त्रिजट के प्रहरियों ने मठ की सेना को देखकर, खतरे की घंटी बजा दी थी।

‘हमें चलना होगा... अभी!’ बलवंत विद्युत की तरफ चिल्लाया।

विद्युत अपने परदादा को छोड़कर नहीं जाना चाहता था। अभी बहुत कुछ अनकहा रह गया था, बहुत सा स्नेह और सम्मान अभी साझा नहीं किया गया था।

‘मैं आपके पास वापस आऊंगा, बाबा... मैं वादा करता हूं! मैं आपके पास वापस आऊंगा!’

द्वारका शास्त्री ने मुस्कुराकर, हां में सिर हिलाया। उनके पवित्र नेत्रों से अश्रु बह आए। उन्हें दूसरा समय याद आ रहा था, किसी और रण-क्षेत्र का, जहां एक प्रिय पुत्र ने अपनी मां से यही वादा किया था। कर्मों का चक्र किसी के नियंत्रण में नहीं था। समय का पहिया हमेशा घूमता रहा, और मनुष्य की आत्माओं को उसी घटना क्रम का साक्षी बनाता गया।

कालचक्र अनवरत था।

हड़प्पा के पूर्व में, **1700** ईसापूर्व

सत्यव्रत मनु

‘विकराल प्रलय में सबसे पहले हड़प्पा का विनाश होगा,’ मत्स्य ने कहा।

वे अब वापस गुफा में थे जहां मत्स्य बड़ी सी सभा को संबोधित कर रहा था। हर कोई मछली-प्रजाति के प्रमुख की भयानक घोषणा सुनकर घबराया हुआ प्रतीत हो रहा था।

इस सभा से पहली सामूहिक सभा में तारा ने मत्स्य से प्रश्न पूछने का निर्णय लिया था कि वो कौन था, और वो कैसे ऐसी विचित्र, परिवर्तनकारी भविष्यवाणी कर सकता था। लेकिन यह तब की बात थी। तारा ने कभी मत्स्य जैसा इंसान नहीं देखा था। उसे एक झलक नजदीक से देखने के बाद वो मान गई थी कि मत्स्य कोई साधारण मनुष्य नहीं था। वह कोई और था।

जैसा कि पर्वत-संरक्षकों की नेता ने कहा था कि यह मत्स्य का ही चुनाव होता है कि आप कब उसे किसी अपने की तरह अपनाओगे, ईश्वर की तरह उसकी प्रशंसा करोगे और अपने बालक के समान स्नेह प्रदान करोगे।

वो उससे प्रश्न नहीं पूछने वाली थी। उसके तन, मन और आत्मा का हर कण इस नीले व्यक्तित्व के प्रति समर्पण को तत्पर था। उसका मनु और वो मत्स्य का अनुसरण करने वाले थे।

अंध अनुसरण।

‘हड़प्पा का अस्तित्व अब कुछ घंटों से अधिक नहीं रहेगा। कल, रात के अंधेरे में, रक्त-धारा समग्र नगर को निगल जाएगी।’

गुफा में पूरी तरह सन्नाटा था, जो मशाल की मद्धम प्रकाश से प्रकाशित थी। ठंडी और गीली रात के बावजूद, सभी को पसीने आ रहे थे।

हड़प्पा में बाढ़ आने का मतलब था सैकड़ों, हजारों लोगों की निश्चित मृत्यु।

‘कुछ तो ऐसा होगा, मत्स्य, जो हम कर सकते होंगे,’ सोमदत्त ने कहा, उसकी आवाज में तात्कालिकता थी। ‘हमारे पास कुछ ही समय है। हम हड़प्पा जाकर वहां के नागरिकों को चेतावनी दे सकते हैं। वो अपने बच्चों को बचा सकते हैं, मत्स्य! वो स्वयं को बचा सकते हैं...’

मत्स्य ने जवाब नहीं दिया। वह सोमदत्त को देख रहा था, मानो उसके मन में उठने वाले बवंडर की तस्वीर देख पा रहा हो।

‘कुछ तो कहो, ओ महान मत्स्य,’ सोमदत्त ने विनती की। वह भी दिव्य मछली-पुरुष के सम्मोहन में था। हालांकि उसे मन ही मन यकीन था कि यह सब मत्स्य के नियंत्रण में था। कि मत्स्य अकेले ही दुनिया को आने वाली मौत और तबाही से बचा सकता था।

अब मनु के उठने और बोलने की बारी थी।

‘आपकी अनुमति से, हम कुछ ही घंटों में हड़प्पा पहुंच जाएंगे। वास्तव में वह वो नगर और वो लोग हैं, जिन्होंने मुझसे और मेरे परिवार से सबकुछ छीन लिया। वो हड़प्पा के ही सिपाही थे, जिनके बाणों ने मेरी मां का हृदय छलनी कर दिया था। वो इसी नगर के नागरिक थे, जिन्होंने मेरे पिता पर पत्थर बरसाए, उनकी पीड़ा पर हंसे और उनके रक्तरंजित होने पर थूका। और फिर भी, मैं कहता हूं कि हमें जाना चाहिए। हमें इसलिए जाना चाहिए कि अगर हम अभी लोगों को बचाने में असफल रहे, तो उन काले दिल वाले घृणित लोगों और हममें क्या अंतर रह जाएगा। हम जाएंगे क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के प्राण उतने ही बहुमूल्य हैं, जितने मेरी माता और पिता के हैं।’

मत्स्य की आंखों में इस चरित्रवान युवा के लिए प्रशंसा उतर आई। वो अपने चयन पर संतुष्ट था।

केवल विवास्वन और संजना ही ऐसे पुत्र का पालन कर सकते थे, जो दूसरे मनुष्यों में श्रेष्ठ है।

‘क्या आप दोनों ध्यान से मेरी बात नहीं सुन रहे हैं, सत्यव्रत, सोमदत्त...?’ मत्स्य ने दोनों आदमियों को देखते हुए पूछा, जिन्होंने अभी-अभी दूसरों की जान बचाने के लिए अपने प्राण दांव पर लगाने का प्रस्ताव दिया था। हड़प्पा जाने का मतलब था कि उन दोनों को तुरंत ही कैद करके, फांसी पर लटका दिया जाएगा, लेकिन फिर भी वो दूसरों की जान बचाने के लिए तत्पर थे।

‘उन लोगों को बचाने की कोशिश करने का क्या मतलब, जिन्हें नियति ने शुद्धि के लिए चुना है? प्रलय प्रत्येक चीज और प्रत्येक इंसान को खत्म कर देगी!’ उसने आगे कहा।

‘जो होना है वो होने दें, महान मत्स्य, लेकिन हम हार नहीं मान सकते,’ मनु ने सम्मान से कहा। ‘अगर प्रलय सबकुछ खत्म करने ही आ रही है, तो हम प्रकृति की इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकते। लेकिन जब तक मुझमें एक भी सांस बाकी है, मैं यूं ही बैठकर, अपने लोगों को मरते हुए नहीं देख सकता।’

मत्स्य ने सिर हिलाया, मनु की दृढ़ता के सम्मुख वो बेबस था।

‘तो आपको लगता है कि उन लोगों के लिए अपनी जान जोखिम में डालना सही है, जो कुछ महीनों बाद वैसे भी मरने वाले हैं?’ उसने पूछा।

‘हां, मत्स्य।’ इस बार तारा ने कहा।

‘भले ही इसका मतलब इतने लोगों को एक दिन की जिंदगी देना हो, तो भी ये जोखिम लेना चाहिए,’ तारा ने दृढ़ता और नेकी से अपनी बात रखी।

मत्स्य अब मुस्कुरा रहा था, और कक्ष में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति मत्स्य की मुस्कुराहट से राहत में था। उसकी मुस्कुराहट में सहमति थी।

मनुष्य की अबाध इच्छा।

तय हो गया था, मनु, सोमदत्त, तारा और पर्वत-संरक्षकों में से कुछ चुनिंदा तुरंत हड़प्पा के लिए प्रस्थान करने वाले थे। अगर वे बिना रुके बढ़ते रहे, तो वो कुछ ही घंटों में शापित महानगर के द्वार तक पहुंच जाएंगे। अगर वे तुरंत ही नगर खाली करवाने में कामयाब रहे, तो कुछ जिंदगियों को बचाया जा सकता था।

कम से कम अभी के लिए तो।

लेकिन इससे पहले कि वो अपने विनाशक सफर पर निकल पाते, मत्स्य ने एक छोटे समूह से मुलाकात की। उसने पर्वत-संरक्षकों की सौम्य नेत्री, सोमदत्त, तारा, मनु और अपनी प्रजाति के कुछ सदस्यों को एक छोटी गुफा में बुलवाया।

‘आप बहुत जिद्दी हो, सत्यव्रत,’ मत्स्य ने कहा, जब वो सभा कक्ष की ओर बढ़ रहे थे।

मनु ने रुककर मत्स्य की बांह पकड़कर, उसे रोकने की कोशिश की। मत्स्य मनु को देखने के लिए मुड़ा, वो उसके इस आचरण से हैरान था।

'आप मुझे सत्यव्रत क्यों पुकारते हैं, ओ मत्स्य? मेरा नाम मनु है।'

मत्स्य हंसा और चलने की कोशिश करने लगा, लेकिन मनु की मजबूत पकड़ ने उसे वापस खींच लिया।

'जब तक आप मेरे प्रश्न का जवाब नहीं देंगे, आप कहीं नहीं जा सकते!' मनु ने उत्साह से कहा, लेकिन फिर भी उसने अपने मित्र और मार्गदर्शक की बांह नहीं छोड़ी। अब उनके बीच इतना मजबूत संबंध हो गया था कि मनु ऐसी छूट ले लेता था।

'देखो, मैंने कहा ही था कि आप कितने जिद्दी हो!' मत्स्य ने मनु की तरफ मुड़ते हुए जवाब दिया।

उसने अपनी बांहें फैलाईं और मनु के कंधे पकड़े।

'मुझे बताओ, मनु... सत्यव्रत का क्या अर्थ है?'

मनु को सोचना नहीं पड़ा।

'मतलब वो मनुष्य, जिसने सत्य बोलने की प्रतिज्ञा ली हो, मत्स्य। जो सत्य का संरक्षक हो।'

मत्स्य मुस्कुराया और उसके नेत्रों ने प्रशंसा से मनु के चेहरे को देखा।

'बिलकुल सही। आप ही हो जो प्रलय के उस पार, अपने साथ सत्य को लेकर जाओगे, मनु।

आप ही अकेले सत्यव्रत होंगे।'

बनारस की बाह्य सीमा, **2017**

सैकड़ों हवन कुंड

विद्युत की लात उस अघोरी की पसली पर तोप के गोले की तरह पड़ी, जो उस पर त्रिशूल से हमला करने वाला था। आदमी तेज दर्द से कराह गया। उसकी पसलियां टूट गई थीं।

देवता किसी को क्षमा करने की मनोस्थिति में नहीं था, जो विद्युत जैसे सुनहरे दिल वाले मनुष्य के लिए सामान्य नहीं था।

अगले दो आदमी भी उतने ही बदकिस्मत निकले। विद्युत के मुक्के ने उनमें से एक के चेहरे को पिचका दिया। दूसरा विद्युत पर कसाई के चाकू से प्रहार करने चला था। देवता ने वार को चकमा दिया, एक हाथ से अघोरी की हमले वाली कलाई पकड़ी और दूसरे हाथ से उसका गला दबा दिया। फिर विद्युत ने अपना माथा अघोरी की खोपड़ी में मारा, जो इस निर्मम वार से कुलबुला के रह गया।

उस किले के काले दरवाजे की राह में बढ़ने पर, विद्युत के सामने आने वाले, त्रिजट के पक्ष के और भी बहुत से आदमियों को ऐसी ही किस्मत से गुजरना पड़ा। हालांकि, उन अघोरियों से लड़ते हुए अब देवता को एक बात परेशान कर रही थी।

ये आदमी तो नशे में नहीं लग रहे, जैसा कि आज रात उन्हें होना चाहिए था।

मसान-राजा की यज्ञशाला के आंगन में प्रवेश करते ही विद्युत और बलवंत को अपनी आंखों पर भरोसा नहीं हुआ। इससे अधिक रुग्ण जगह पर वो दोनों कभी पहले नहीं गए थे या ऐसा भयानक स्वप्न उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। उन्होंने एक पल को एक-दूसरे को देखा और फिर प्रोफेसर त्रिपाठी को, जो एक जीवित लाश लग रहा था।

आंगन के केंद्र में तांत्रिक अनुष्ठानों के लिए सौ से अधिक हवन कुंड बने थे, सभी

के इर्दगिर्द बैठने के लिए सीमेंट का निचला चबूतरा बना था। कुंड सालों के अनुष्ठान से काले हो गए थे। त्रिजट के अघोरी किसी भी समय सौ संस्कार कर सकते थे... एक ही साथ। विद्युत तो उस अपराजित अशारीरिक खिंचाव की सिर्फ कल्पना भर कर सकता था, जो वहां होता होगा। उस आंगन के चारों कोनों पर काले मार्बल की विकराल प्रतिमाएं लगी थीं। विद्युत उन्हें देखते ही पहचान गया था कि वो प्रतिमाएं क्या थीं। या अधिक महत्वपूर्ण, वो बुत किसके थे। पूरे परिसर में मांस, रक्त के धब्बे, पशुओं के कटे हुए अंग, देसी शराब और हड्डियां इत्यादि पड़ी हुई थीं। लेकिन एक खास चीज की उपस्थिति ने उनके अनुष्ठान को अधिक भयावह बना दिया था।

लाशें।

कुछ तो अभी भी सफेद कफन और जूट के रस्सी से बंधी हुई थीं। कुछ पर मृत्यु के बाद होने वाली अकड़न दिखने लगी थी, उनकी आंखें चढ़ने लगी थीं और जबड़े भिंच गए थे। बहुत से मृत शरीर बड़े-बड़े कुंडों में बिछे पड़े थे।

मृत्यु और मानव अपक्षय की गंध राक्षस मठ की हवा को बोझिल बना रही थी।

लड़ाई जारी थी। देव-राक्षस मठ के युवा योद्धा-संत अपने देवता का अनुसरण करते हुए, बड़ी बहादुरी से त्रिजट कपालिक के पक्ष के तलवार, मुक्कों और रक्त-संघर्ष का सामना कर रहे थे।

विद्युत के नेत्र उस राक्षस की तलाश में पूरे परिसर को छान रहे थे, जो देव-राक्षस मठ की परिधि में घुस आया था। वो उस काले जादूगर को ढूंढ़ रहा था, जिसने बाला के वध की पृष्ठभूमि तैयार की थी। वो अनुष्ठानिक क्षेत्र में उस राक्षस को खोज रहा था जो वैश्विक काले संगठन से हाथ मिलाकर, उन्हें मठ, उसके घर तक ले आया था।

उसकी आंखें मृतक नाथ—त्रिजट कपालिक को तलाश रही थीं।

जब वो अपने लक्ष्य की एक झलक देखने को व्याकुल था, तब विद्युत ने बलवंत को काले मार्बल की प्रतिमा का निरीक्षण करते हुए पाया। वह एक बलिष्ठ आदमी की प्रतिमा थी, जिसके प्रागैतिहासिक अजगर के समान पंख थे। प्रतिमा का चेहरा सुंदर था, लेकिन मनोहर नहीं।

‘बलवंत दादा, हमें त्रिजट को खोजना है,’ विद्युत ने मठ के युद्ध-प्रमुख को उसके सम्मोहन से बाहर निकालते हुए कहा।

बलवंत ने वर्तमान में वापस आने, और युद्ध में अपना मोर्चा संभालने में एक

पल लिया।

जब वो कंधे से कंधा मिलाकर, अनुष्ठानिक भूमि, वहां के बरामदे और साथ बने कमरों का निरीक्षण कर रहे थे, तो बलवंत देवता से पूछे बिना नहीं रह पाया।

'ये किसकी प्रतिमाएं हैं, विद्युत? ये शक्तिशाली, लेकिन भयावह बुत किस जीव के हैं? अपने ग्रंथों में मैंने कभी इसके बारे में नहीं पढ़ा है।'

विद्युत खामोश रहा।

आपने इनके बारे में नहीं सुना है क्योंकि ये हमारे ग्रंथों में है ही नहीं।

'मुझे बताइए, विद्युत...' बलवंत ने जोर दिया।

विद्युत युद्ध-प्रमुख की ओर मुड़ा।

'मैं नहीं जानता कि यहां क्या चल रहा है, बलवंत दादा। मैं नहीं जानता कि ये लोग कौन हैं और क्या पाने की कोशिश कर रहे हैं। मैं हमेशा सोचता था कि त्रिजट काशी का तांत्रिक है। लेकिन ये प्रतिमाएं तो कुछ अलग ही कहानी कह रही हैं। इन्हें यहां नहीं होना चाहिए था!'

बलवंत अपने देवता की बात पूरी तरह समझ नहीं पा रहा था।

'ये कौन है, विद्युत?' उसने फिर से पूछा।

देवता ने केवल एक नाम लिया। शायद पश्चिमी दुनिया का सबसे भयानक नाम।

'ये वो है, दादा। ये शैतान है।'

बलवंत को कुछ समझ नहीं आया। उसने बिना कुछ सोचे-समझे विद्युत की बात दोहरा दी।

'यह शैतान है?'

'हां, दादा,' विद्युत ने जवाब दिया।

'यह लूसिफर है!'

आखिरकार, विद्युत ने उसे देखा। वह भयानक और परेशान करने की हद तक भव्य लग रहा था।

लोग ऐसे ही उसे मसान-राजा नहीं पुकारते थे। अपने काले साम्राज्य में वो सम्राट की तरह खड़ा था, उसके आसपास चेहरे पर राख और होंठों पर रक्त लगाए उसके अनुयायी थे।

और फिर विद्युत ने उन्हें देखा।

दो पिशाचिनी। उनकी नजरें देवता पर टिकी थीं। वो उसी तरह भारी सांसें ले रही थीं, जैसे विद्युत ने पहली बार उन्हें देखा था।

ले लो सांस। क्योंकि ये आज तुम्हारी अंतिम सांस बनने वाली है।

मसान-राजा ने अपने नेत्र विद्युत से मिला लिए। उसने निडरता से देवता को अपने पीछे आने का संकेत दिया, और मुड़कर उन सीढ़ियों पर गुम हो गया, जो किसी भूमिगत परिसर की तरफ जाती प्रतीत हो रही थीं। उसके अनुयायी और दोनों पिशाचिनी भी उसके साथ चली गईं।

विद्युत ने गुस्से से अपने दांत भींचे और मसान-राजा की तरफ बढ़ा। तभी प्रोफेसर त्रिपाठी ने देवता की बांह पकड़कर, उसे रोक लिया।

‘नहीं विद्युत! वो आपको अधोलोक के केंद्र में बुला रहा है। वहीं वह रक्तबीज अनुष्ठान करता है।

वो आपको प्रागैतिहासिक रसातल में आमंत्रित कर रहा है।

वो आपको पाताल में बुला रहा है।’

हड़प्पा, **1700** ईसापूर्व

हड़प्पा का देवता

सुरा अपने घुटनों के बल बैठा था। उसका सिर लटक गया था जब वो अविश्वास से विकराल, चमकती तलवार को देख रहा था, जो उसके सीने को भेदते हुए पार निकल गई थी, जो राक्षस-राजा के रक्त में भीगी हुई थी।

पूरी जिंदगी सुरा विवास्वन पुजारी से नफरत करता रहा था। वह सप्तऋषियों से नफरत करता था और उसने आर्यवर्त का अपमान किया था।

लेकिन असुरों के सम्राट को यह नहीं पता था कि आर्यवर्त के मध्य ही, अंतिम सप्तऋषि के संहार के आदेश और विवास्वन पुजारी की तलवार से ही उसका अंत होगा।

कुख्यात राक्षस-राजा की नियति उसे हिंदुकुश की कंदराओं से बाहर खींच लाई थी।

मरने के लिए।

विवास्वन पुजारी की तलवार की श्रेष्ठता की धरती पर कोई तुलना नहीं थी। देवता को राक्षस-राजा और उसके सिपाहियों को मारने में कुछ ही पल लगे।

सिर्फ एक ही असुर अभी तक खड़ा था, वो था प्रचंड, जिसने सुरा की क्रूरता को भी रोकने की कोशिश की थी।

अंतिम सप्तऋषि पथरीली भूमि पर लेटा था, तेजी से वयोवृद्ध होते हुए, अब वो अपनी बची-खुची सांसें ले रहा था। विवास्वन ने सम्मान से उसे अपनी बांहों में उठाया और एक चट्टान के सहारे से उसे बिठाया।

व्याकुल देवता अब अंतिम सप्तऋषि के चरणों में गिर गया। उसने बहुत सह लिया था। उसकी आत्मा अपने पुत्र के विचार से प्रसन्न थी। उसकी चेतना उसके वीभत्स रूप पर रो रही थी। अब विवास्वन पुजारी को बस निर्वाण चाहिए था —और वो अपनी संजना से मिल जाना चाहता था, वो जहां भी थी।

'मुझे क्षमा कर दीजिए, ओ पावन मुनि! मुझे क्षमा कर दीजिए, अगर आप कर सकें तो...' देवता ने कहा, उसकी आंखों से दर्द और पछतावे के आंसू निकलकर, मुनियों के पुन्य स्थल पर गिर रहे थे।

मुनि ने कोई जवाब नहीं दिया। उसकी आंखें ध्यानावस्था में बंद थीं।

देवता ने आह भरकर, हां में सिर हिलाया।

मेरी आत्मा क्षमा से परे है, उद्धार से परे।

विवास्वन ने रत्न-जड़ित मूंठ वाली अपनी कृपाण निकाली।

'मेरी बात सुनियेगा, ओ महान मुनि। आपका पतित सेवक जानता है कि आत्मघात मनुष्यों द्वारा किया जाने वाला सबसे जघन्य अपराध है। यह ब्रह्मांड के जन्म-मरण के चक्र को बदल कर रख देता है। ये उस सृष्टि का अपमान है, जिसने हमें जिंदगी का बहुमूल्य उपहार दिया। लेकिन मेरी मुक्ति का और कोई मार्ग नहीं है। इसके लिए कोई कम सजा नहीं दी जा सकती। अगर हो सके तो मुझे क्षमा कर देना, ओ दिव्य ऋषि।

मैं, विवास्वन पुजारी, अपना जीवन आपको प्रस्तुत करता हूं। शायद इस कलंकित देवता की मृत्यु ही आपके लिए और उस ईश्वर के लिए उसका अंतिम समर्पण हो, जिसे इसने शर्मसार कर दिया!'

इसके साथ हड़प्पा के व्याकुल सूर्य ने अपनी कृपाण की नोक अपने पेट पर लगा दी। प्रचंड इस पूरे घटनाकर्म का साक्षी था। वो सम्मोहन और भावनाओं में इतना जड़ हो गया था कि कुछ भी कहने या करने लायक नहीं बचा था।

देवता ने अपनी आंखें बंद कीं और अपने हाथ कृपाण के मूंठ पर रखे। उसने प्रभु रुद्र के सम्मुख अंतिम प्रार्थना बुदबुदाई।

लेकिन युग के महान व्यक्ति का अंत इस तरह नहीं हो सकता था। इससे पहले कि वो कृपाण को अपने पेट में उतारता, अंतिम ऋषि की आवाज सुनाई दी।

'ओ हड़प्पा के सूर्य, विलाप मत करो! यकीनन तुमने पाप किया है, लेकिन तुम्हारी आत्मा उद्धार से परे नहीं है। उसका कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है। तुम लौटोगे, ओ देवता... किसी दूसरे युग में, किसी दूसरे समय में।'

विवास्वन पुजारी अपने घुटनों पर ढह गया और उसने अपने हाथ अपनी जंघाओं पर रखे। उसने अपनी आंखें बंद करके आभार जताया। इस भयानक रात में ये पहली बार हुआ था, जब उसने सप्तऋषि की वही पहले वाली परिचित, सौम्य आवाज सुनी थी।

'मुझे जाने दीजिए, ऋषि। आप मेरे साथ इतने स्नेही कैसे रह सकते हैं, जबकि मैं आपके छह भाइयों की मृत्यु का कारण बना! मैं सिर्फ आपकी क्षमा के बदले, अपना जीवन आपको प्रस्तुत कर सकता हूं,' देवता ने अपने हाथ जोड़कर कहा।

'तुमने सप्तऋषियों को नहीं मारा है, विवास्वन। कोई उन्हें नुकसान कैसे पहुंचा सकता है, जो स्वयं सृष्टि में से ही एक हों? जैसे ही तुमने यहां कदम रखे, तुम्हारे अंदर के देवता ने भांप लिया था कि हमारे जीर्ण होते शरीर में हम नहीं थे। तुम सही थे। सप्तऋषि अनादि, अनश्वर हैं... और अब हम काले मंदिर के कक्षों में रहेंगे, जो हमारी साधना से नीले प्रकाश से प्रज्वलित होंगे। अब हमारी आत्माएं नए, दिव्य शरीरों में रहेंगी। और तुम्हारा पुत्र, सत्यव्रत मनु, अब हमारे साथ रहेगा।'

विवास्वन पुजारी को लगा कि मानो उसकी व्यथित आत्मा अचानक शांति के सागर में समा गई हो। उसके पीड़ित मन से मानो कोई भारी बोझ उतर गया हो। वह जानता था कि काले मंदिर के हृदय में क्या था। वह जानता था कि अगर मनु और सप्तऋषि वहां थे, तो वो सब सुरक्षित थे। इस ब्रह्मांड की किसी भी दूसरी जगह से अधिक सुरक्षित।

देवता ने अब सप्तऋषि से विनती करने का साहस बटोरा। उससे अंतिम अनुनय करने का।

'ओ उदार मुनि, मेरे पुत्र को अभिशाप से मुक्त कर दें। उसके वंशजों को इससे मुक्त कर दें। और उनकी भी पीढ़ियों को। मेरे पापों की सजा मुझे दीजिए। मुझे

ऐसा दर्द दीजिए जो मनुष्य की सहन शक्ति से परे हो। मेरे नश्वर शरीर के टुकड़े कर दें। लेकिन मेरे पुत्र को छोड़ दें। कृपया... मेरे बच्चों को छोड़ दें।'

पहाड़ से आती गरज की आवाज अब दिखाई देने लगी थी। एक विराट भू-स्खलन नदी की तरफ बढ़ रहा था। छोटे-छोटे पत्थर पहले ही भारी वर्षा के साथ सब जगह बरस रहे थे।

पल भर में ही वो रणक्षेत्र, जहां देवता और असुरों के बीच युद्ध हुआ था, वो उस गरजते पर्वत के नीचे दब जाने वाला था।

'जो कहा जा चुका है, उसे वापस नहीं लिया जा सकता, ओ देवता! अभिशाप वापस नहीं होता। लेकिन मुझे, अंतिम मुनि को बचाकर तुमने अपने हृदय की नेकी, अपनी आत्मा की अच्छाई का परिचय दिया है। तो मैं इस ऋण को चुकाऊंगा, हड़प्पा के सूर्य। तुम्हारा पुत्र, सत्यव्रत मनु, अभिशाप से अछूता रहेगा।

और तुम्हारे वंशज भी महानता हासिल करेंगे, लेकिन अभिशाप की वजह से— उन सबकी मौत बहुत हिंसक होगी! वो तब तक काले मंदिर के संरक्षक रहेंगे, जब तक तुम्हारा वापस पृथ्वी पर आने का समय नहीं हो जाएगा।

ओ देवता, इसी अंतिम असुर के हाथों रत्न-मारू को काले मंदिर भेज दो। प्रचंड सुरा के साम्राज्य में लौट जाएगा और एक नई सुबह के साथ अपनी समझ से शासन करेगा। अब चले जाओ, विवास्वन पुजारी, इससे पहले कि यह पर्वत इस धरती को हमेशा के लिए दफ्न कर दे!'

हड़प्पा के देवता ने अंतिम मुनि के सामने सिर झुकाया। सप्तऋषि ने उसे वो सब दे दिया था, जिसकी इच्छा एक व्यथित आत्मा कर सकती थी। उसने अपनी तलवार राक्षस-राजा के शरीर से निकाली और उसे सम्मान से नदी के जल और वर्षा की बूंदों से धोया।

'प्रचंड, इसे काले मंदिर ले जाना। मैं रास्ते में तुम्हें वहां पहुंचने का मार्ग समझा दूंगा। इस शानदार तलवार को इसकी सही जगह पर पहुंचा देना,' देवता ने आग्रह किया।

प्रचंड ने सम्मान से तलवार ली और विवास्वन पुजारी को भरोसा दिलाया।

'ये हो जाएगा, ओ महान देवता। मैं सारा की दंतकथा के साथ हिंदुकुश लौट जाऊंगा, और असुरों की आने वाली पीढ़ियों को ज्ञान और पूजा सिखाऊंगा। आपके साथ आज रात यहां होना, मेरे जीवन का निर्णायक पल है। आप वास्तव

में आधे-मनुष्य, आधे-भगवान हैं।'

इससे पहले कि सप्तऋषियों का पुन्य स्थल पत्थर और धूल के गुबार के नीचे दब जाता, अंतिम ऋषि की आवाज, बाकी सब आवाजों के ऊपर सुनाई दी।

'तुम्हारा नाम अमर हो जाएगा, विवास्वन पुजारी। अब से हजारों साल बाद, तुम फिर से जन्म लोगे—उस महान नियति को पूरा करने के लिए, जो इस ग्रह पर आने वाले किसी भी दूसरे से अधिक महान होगी।

तुम इस काले मंदिर के राज की रक्षा इसके अंतिम समय में करोगे। तुम ही होगे जो अब से सदियों बाद, रोहिणी नक्षत्र की पावन पूर्णिमा को इस रहस्य का उद्घाटन करोगे।

ओ महान देवता, इसके लिए तुम्हारा ही चयन किया गया है।'

बनारस की बाह्य सीमा, **2017**

पाताल

यहां तक कि विद्युत का दिल भी एक पल को धड़कना भूल गया, जब वो सीढ़ियों से उतरकर, भूतल में स्थित त्रिजट की यज्ञशाला में पहुंचा।

यह एक विशाल कक्ष था, जिसमें सूरज की एक भी किरण नहीं पहुंचती थी। यह एक किस्म की मध्यकालीन गुफा प्रतीत हो रही थी, जिसमें प्रकाश के नाम पर बस मशालों की रौशनी थी, जो दीवार में बने फ्रेम में लगी हुई थीं। कक्ष में पंक्ति से लगे, लोहे के अनेकों भालों पर, बहुत सी इंसानी खोपड़ियां लगी हुई थीं। उन खोपड़ियों के मुंह खुले थे, आंखों की खाली कोटर अंधेरी दुनिया का आभास दे रहे थे। विद्युत उनका उद्देश्य जानता था। तांत्रिकों की प्राचीन तांत्रिकों और योगियों के अवशेषों में गहन रुचि होती थी, विशेषकर खोपड़ी में। वो मानते थे कि उनके माध्यम से वो रहस्यमयी शक्तियों को आकर्षित कर सकते थे।

गुफा के दूसरे कोने में देवियों—मां काली, मां बगलामुखी, मां श्मशान तारा और अन्यों—की विशाल प्रतिमाएं लगी थीं। मसान-राजा जानता था कि मौत की परिधि में कोई भी अनुष्ठान शक्ति के इन अवतारों के आशीर्वाद के बिना नहीं हो सकता। विद्युत को तुरंत महसूस हो गया कि त्रिजट क्या बड़ी गलती कर रहा था।

देवी की सतर्क नजरों के नीचे बुराई की कोई भी ताकत अच्छाई का अंत नहीं कर सकती है। आज रात त्रिजट नहीं जीतेगा।

लेकिन देवता को जिस चीज ने सबसे अधिक चकित किया, वो था गुफा के बीचोंबीच बना बड़ा सा गड्ढा। वो शायद पचास फुट लंबा और बीस फुट चौड़ा था। विद्युत ने ऐसे अनुष्ठानिक कुंड के बारे न तो कभी पढ़ा था, न ही देखा था। गड्ढा लगभग पांच फुट गहरा था, और वो जलते हुए कोयलों से भरा था। अग्नि से निकलती गर्मी असहनीय थी, और वहां का समग्र क्षेत्र ही तप रहा था। विद्युत ने ध्यान दिया कि गड्ढे में केवल कोयले ही नहीं भरे थे। जैसे ही उसे उस गड्ढे में मानव अंग और हड्डियां दिखाई दीं, तो उसे उबकाई आने को हुई। उसे अहसास हुआ कि वहां की हवा वास्तव में इंसानी मांस के जलने की बू से गमक

रही थी।

अगर पृथ्वी पर कोई नर्क था, कोई पाताल था, तो विद्युत वहां कदम रख चुका था।

‘मेरी गरीब यज्ञशाला में तुम्हारा स्वागत है, ओ देवता!’ विद्युत को देखे बिना ही, गड्ढे के दूसरी तरफ से त्रिजट चिल्लाया। वो मिट्टी के एक बर्तन से गड्ढे में रक्त डाल रहा था। अंगारों के ऊपर से चमकते लाल प्रकाश की वजह से मसान-राजा अपने सामान्य भयावह रूप से भी अधिक विकराल नजर आ रहा था। वो विद्युत से बहुत दूर थे, लेकिन विद्युत ने महा-तांत्रिक के चरणों में, जिंदा लाश की तरह बैठी दो आकृतियों को पहचान लिया था।

पिशाचिनी।

धीरे-धीरे त्रिजट के विकराल अघोरी प्रहरी भी गुफा के अंधेरे कोनों से निकलकर, नारंगी गड्ढे के गिर्द जमा होने लगे। वहां गर्मी जबरदस्त थी और विद्युत पसीने से पूरी तरह तर हो गया। उसे घेरने के लिए आते सशस्त्र अघोरियों पर ही नजरें टिकाए, उसने आहिस्ता से अपनी काली शर्ट के बटन खोले, और उसे उतारकर अपनी कमर पर बांध लिया। देवता की तराशी हुई, बलिष्ठ कदकाठी इस मद्धम लेकिन तीव्र प्रकाश में चमक रही थी।

अब तक बलवंत, प्रोफेसर त्रिपाठी और सोनू भी सीढ़ियों से नीचे आकर, विद्युत के पास खड़े हो गए थे।

जंग शुरू होने को ही थी।

विद्युत हल्के से दौड़ता हुआ आगे बढ़ा। जिस गति से वो आगे बढ़ा, उससे अघोरी एकदम हैरान रह गए। सैकंड से पहले ही देवता ने छलांग लगाकर, एक भारी-भरकम प्रहरी के सीने पर वार किया। इससे पहले की दूसरे अघोरी अपने हथियार उठा पाते, विद्युत ने दूसरे प्रहरी के सिर पर एरियल किक लगाईं। दोनों आदमी तड़पते हुए धरती पर जा गिरे।

जब वो बाकियों की तरफ मुड़ा, तो विद्युत ने आंखों के कोने से देखा कि त्रिजट अब उसी बर्तन से अपनी दो पिशाचानियों पर रक्त उंडेल रहा था। वो दोनों किसी तरह की ध्यानावस्था में प्रतीत हो रही थीं। अब तक बलवंत और सोनू भी शत्रु पक्ष पर टूट पड़े थे, और मठ के युद्ध-प्रमुख ने पहला रक्त भी निकाल

लिया था। उसने एक हमलावर की बांह काट डाली थी।

यह लड़ाई अधिक देर तक नहीं चलने वाली थी। और यही बात विद्युत को परेशान कर रही थी।

ये तो बहुत आसान है। क्या मसान-राजा इस तरह से हमारा मुकाबला करने वाला है?

और फिर उसने उसे देखा।

विद्युत ने अपना अंदेशा साफ करने के लिए, सिर हिलाकर वापस देखा। उस गड्ढे से दो भूतिया प्रकाश उभरकर आ रहे थे। देखने में तो वो स्लेटी धुएं के दो गुबार जान पड़ रहे थे, लेकिन देवता उनमें छिपी आकृति देख सकता था। दो भयानक आकृतियां। जैसे ही वो विद्युत को देखने के लिए मुड़ीं, तो विद्युत के पसीने छूट गए। वो विद्युत के देखे हुए अब तक के सबसे भयानक, सबसे भद्दे और सबसे घिनौने चेहरे थे। उनका आतंक इंसानी कल्पना से परे था। वो आदिकालीन डाकिनी थीं, जिन्हें त्रिजट ने मौत की गहराइयों से बुलवाया था।

दोनों पिशाचनियां गड्ढे के किनारे पर बैठी थीं, उनकी आंखें चढ़ी हुई थीं, मुंह खुला था, और वो बुरी तरह से हांफ रही थीं। त्रिजट कपालिक लगातार काले मंत्रों का उच्चारण करते हुए क्रोधित डाकिनियों से बात कर रहा था। धुंए की भयावह आकृतियां धीरे-धीरे पिशाचानियों की तरफ बढ़ रही थीं।

विद्युत अब जान गया था कि महा-तांत्रिक क्या कर रहा था। वो दोनों हत्यारिनों के शरीर में डाकिनियों को बुला रहा था। अगर वो सफल रहा, तो विद्युत भी उनके दानवीय प्रहार का सामना नहीं कर पाएगा।

'ॐ बीजं;

नमः शक्ति;

शिवायेति कील्कम...'

विद्युत, बलवंत, सोनू, ब्रह्मानंद... सभी द्वारका शास्त्री के विशाल व्यक्तित्व को देखने के लिए मुड़े, जो भूतल की सीढ़ियों से नीचे की ओर आ रहे थे। विद्युत और प्रोफेसर त्रिपाठी जानते थे कि ग्रैंडमास्टर क्या उच्चारण कर रहे थे।

समय की शुरुआत से ही यह काली अलौकिक शक्तियों के विरुद्ध सर्वाधिक सक्षम और प्रभावशाली मंत्र रहा था।

वह प्रभु शिव के दिव्य शास्त्र, अबाध्य—शिव कवच का उच्चारण कर रहे थे!

दोनों भयावह पुंज विरोध में चिल्लाने लगे। उनकी चीख इतनी कर्कश थी कि सोनू डर से कांपते हुए अपने घुटनों पर बैठ गया। उसने अपनी हथेलियों से अपने कान ढंक लिए और डाकिनियों पर से नजर हटा ली।

उनका बदन अकड़ रहा था, वो कराहते हुए चिल्ला रही थीं... लेकिन सब बेकार था। यह स्पष्ट था कि वो पीछे हट रही थीं। वो वापस उसी अंधेरे में जा रही थीं, जहां से आई थीं।

कोई भी डाकिनी या प्रेत-आत्मा शिव कवच का सामना नहीं कर सकती थी।

लेकिन शिव का दिव्य कवच किसी इंसान को दूसरे मनुष्य के धोखे से नहीं बचा सकता था।

विद्युत को अपना सिर दो भागों में बंटता हुआ महसूस हुआ। दर्द असहनीय था और उसे धुंधला सा दिख रहा था। देवता ने अपने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ा हुआ था। उसकी उंगलियां तुरंत ही उसके अपने रक्त में भीगने लगीं, जो उसके सिर पर हुए गहरे जख्म से निकल रहा था। बेहोश होकर गिरने से पहले वो ये देखने के लिए मुड़ा कि उसके सिर पर लगा क्या था।

तेजी से धुंधलाती नजर से वो बस एक आंख वाले दानव को देख पाया, जिसे उसने तुरंत ही पहचान लिया। किसी पागल की तरह हंसते हुए प्रोफेसर त्रिपाठी का चश्मा उतर गया था। उसकी अंधी आंख की जगह गुलाबी रंग के मांस का खाली कोटर था। वो डाकिनी के जितना ही भयानक लग रहा था।

बेहोश होकर गिरते हुए विद्युत को ब्रह्मानंद के कहे आखरी शब्द सुनाई दिए।

‘पाताल में तुम्हारा स्वागत है, देवता!’

हड़प्पा के पूर्व में, **1700** ईसापूर्व

मनु की नाव

‘लेकिन आप हमसे किस प्रकार की नाव बनवाना चाहते हैं, मत्स्य? और हमें नई नाव बनाने की क्या आवश्यकता है? तट पर पहले ही अनेकों बड़े-बड़े जहाज खड़े हैं। अगर हम समय रहते वहां पहुंच जाएं, तो हम उन्हें हासिल कर सकते हैं।’

सोमदत्त हैरान हुआ जब मत्स्य ने उससे विशाल नाव का मुख्य शिल्पकार बनने को कहा था।

कक्ष में खामोशी थी। मनु, तारा और पर्वत-संरक्षक की नेत्री और वहां उपस्थित सभी जन सोमदत्त की बात से सहमत थे। जब आसमान फट रहा हो, जब तेज हवा के चलते आंखें खुली तक रख पाना संभव न हो, जब मनुष्य और पशु दोनों के हृदय भय से जमे हों तो ऐसे में किसी ऐसे काम में क्यों जुटना, जिसे पूरा न किया जा सके।

मत्स्य उठा और चट्टानी दीवार में बने प्राकृतिक झरोखे से बाहर देखने लगा। वो गरजते हुए आसमान को देख सकता था, जो तेजी से लाल होता जा रहा था। उसके आकर्षक नीले चेहरे पर पानी की बूंदें तेजी से गिर रही थीं।

समय आ पहुंचा था।

‘जहां तक आर्यवर्त का प्रश्न है, यह दुनिया का अंत है।’

मत्स्य जानता था कि अब सबको वो बताने का समय आ गया था, जो वो पहले ही संक्षिप्त रूप से मनु को बता चुका था।

‘क्षमा कीजिए, लेकिन दुनिया के अंत से आपका क्या तात्पर्य है, मत्स्य? पृथ्वी हममें से किसी की भी कल्पना से अधिक विशाल है। यकीनन ऐसे कुछ क्षेत्र होंगे जो इस प्रलय की पकड़ से बाहर होंगे?’ सोमदत्त ने तर्क देते हुए अपनी बात

रखी।

वह भूल गया था कि ब्रह्मांड की रचना लाखों साल पहले हुई थी, तब तक मनुष्य को तर्क करना नहीं आया था। कि उस सृजक का तर्क जो करोड़ों आकाशगंगा और पृथ्वी जैसे खरबों ग्रहों का कर्ता-धर्ता है, उसके तर्क सोमदत्त के तर्क से अधिक विस्तारपूर्ण और सह-संयोजक होंगे।

मत्स्य झरोखे से वापस मुड़ा। दिन के प्रकाश में भी आसमान कड़कती बिजली से चमक रहा था, मानो मत्स्य के सम्मुख झुककर, उसके द्वारा कहे जाने वाले शब्दों को स्वीकार रहा हो।

'ऐसी प्रलय आर्यवर्त ने पहले कभी नहीं देखी होगी। या यूं कहें कि इस समस्त संसार ने। कुछ नहीं बचेगा। न कोई मनुष्य, न वनस्पति, न पशु, न पक्षी, न कीट, न घर, न मंदिर, न पर्वत, न वन...

प्रलय ब्रह्मांडीय शक्ति है जो आर्यवर्त की शुद्धी के लिए आ रही है। इसकी लहरें पर्वतों से ऊंची होंगी और रास्ते में आने वाली हर वस्तु को निगल जाएंगी।

हां कुछ प्रांत बच जाएंगे। लेकिन आर्यवर्त से कोई भी व्यक्ति इतने दूरस्थ कोनों तक नहीं पहुंच पाएगा।

आसमान रक्तिम लाल हो जाएगा। यातनामयी बरसात कई महीनों तक नहीं रुकेगी, और महासागरों में इतना जल होगा कि वो समस्त पृथ्वी को निगल जाएंगे।

नगर पल भर में तबाह हो जाएंगे, और लाखों जिंदगियां कुछ ही घंटों में अपना चक्र पूर्ण कर लेंगी।

प्रलय—भीषण बाढ़... आ रही है।'

उन्हें देखकर मनु अवाक रह गया।

मत्स्य अपनी गुफा के ऊपर ऊंची चट्टान की तरफ इशारा कर रहा था।

सात संन्यासी इस मूसलाधार बरसात में, बिना हिले, ऊंचे पर्वत पर ध्यान में बैठे थे। उनसे नर्म नीला प्रकाश निकल रहा था। चट्टान पर पड़ती बिजली की चमक में मनु इतना तो देख सकता था कि ये मुनि युवा प्रशिक्षुओं से अधिक नहीं थे, वो शायद उससे भी कम उम्र के थे! वो बेहद शांत और सुकून में थे। उनकी त्वचा इतनी तेजमयी थी, मानो उनकी उत्पत्ति किसी दिव्य कोख से हुई

हो।

वो दिव्य थे।

‘ये सप्तऋषि हैं, मनु। ये आगे के तुम्हारे कठिन सफर में आपके साथी होंगे। ये आपका मार्गदर्शन करेंगे, आपको संभालेंगे। आप भी इनके लिए यही करना। साथ में आप लोग सृष्टि की नई सुबह का स्वागत करोगे... उस युग का, जब मनुष्य सागर की गहराइयों को जीत लेगा, रजत रथ में बैठ आसमान में उड़ान भरेगा और चांद पर कदम रखेगा। सुनहरा युग।’

मनु मत्स्य की ओर मुड़ा।

‘सप्तऋषि मेरा मार्गदर्शन करेंगे से आपका क्या मतलब है? क्या आप मेरे साथ नहीं होंगे, मत्स्य?’

मत्स्य हंसा। लेकिन इस हंसी में आनंद नहीं था। ये वो हंसी थी, जो बता रही थी कि जल्द ही उनके रास्ते अलग हो जाने वाले थे।

‘मैं हमेशा आपके साथ रहूंगा, सत्यव्रत। मैं हमेशा इस धरती को संचालित करने वाले लोगों के साथ रहूंगा। भले ही मेरा नाम अलग हो, व्यक्तित्व अलग हो, किसी दूसरी जमीन पर...

लेकिन मैं हमेशा रहूंगा।’

मत्स्य अब एक तीव्र, ऊंची चट्टान पर खड़ा था। उसकी पृष्ठभूमि में निर्मम आसमान दिखाई पड़ रहा था। मनु, तारा, सोमदत्त और दूसरे बहुत से लोग वहां उसकी बात सुनने के लिए एकत्र थे।

हवा हिंसक तरीके से मछली-प्रजाति के प्रमुख को हिला रही थी। उसके खुले केश और ढीले कपड़े हवा में लहरा रहे थे। बारिश में भीगा हुआ, रहस्यमयी व्यक्ति अपनी बांहें, अपने दोनों तरफ फैलाए खड़ा था। उसने अपना चेहरा उठाकर ऊपर आसमान में देखा, और चमकती बिजली ने एक बार फिर इस दिव्य व्यक्तित्व का अभिवादन किया। बिजली की सफेद चमक के बीच मत्स्य का नीला प्रकाश अद्भुत जान पड़ रहा था।

‘वह मसीहा है...’ तारा ने मनु से फुसफुसाया।

लेकिन मनु बेहतर जानता था।

‘नहीं, वह नहीं है, तारा। वह वो है, जो मसीहाओं को भेजता है।’

‘हड़प्पा, मोहन जोदड़ो और दूसरी व्यवस्थाओं से दसियों हजार पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को एकत्र करो। पर्वतों और वन्य प्रजाति के लोगों को भी लाओ।

प्रलय से पूर्व के कुछ महीनों में सब कुछ एकत्र कर लो, सबसे बड़ी नाव बनाओ, इतनी बड़ी जो इस ग्रह रूपी समुद्र पर चल सके।

ऐसी नाव जिसका शीर्ष ऊपर स्वर्ग तक जाए। इतना विशाल जहाज कि दसियों हजार आदमी उसमें शरण ले पाएं। ऐसी पोत जिसमें बहुत सी वनस्पति, पक्षियों, पशुओं और बीजों को ले जाया जा सके।

रसायनशास्त्रियों, वैद्यों, शिल्पकारों, किसानों, संगीतकारों, लेखकों, व्यापारियों, शिक्षकों और पुजारियों को एकत्र करो।

अपने साथ वेदों, ग्रंथों, धातुओं, सूत, औषधीय बूटी, उपकरण और रत्नों को रखो।

तुम इस संसार का पुनर्निर्माण करोगे, सभ्यता को फिर से बसाओगे और कालचक्र को चालित रखोगे।

यह नाव, मनु की नाव... समय के अंत तक याद रखी जाएगी!

विशाल अमर नाव ब्रह्मांड की सबसे बड़ी विपदा को सहेगी।

यह प्रलय का सामना करेगी।

यह सृष्टि को बचाएगी!’

हड़प्पा, **1700** ईसापूर्व

विवास्वन पुजारी

मीलों तक फैले निर्जन प्रदेश में वो अकेला इंसान था। उस तूफानी और असामान्य रूप से डरावनी रात के अंधेरे में वो मुश्किल से ही कुछ देख पा रहा था। खासकर उसके बहते रक्त, आंसू और पसीने के साथ इस बेमौसम की मूसलाधार बरसात ने उसके लिए कुछ भी देख पाना बहुत मुश्किल बना दिया था। इस स्याह काली रात में मुंडे सिर और नंगी छाती वाला वो ब्राह्मण किसी उन्मादी की तरह अपनी कुल्हाड़ी से धड़ाधड़ वार किए जा रहा था। वो उन मोटी रस्सियों में से एक को काटने की कोशिश कर रहा था, जिन्होंने हाल ही में बने मानव-निर्मित, पर्वत-समान बांध को थामा हुआ था। हालांकि पत्थर, ईंट, धातु और लकड़ी से बने वो विशाल भारी खंड नदी की धारा मोड़ने के उद्देश्य से बनाए गए थे, लेकिन सच पूछो तो वो उद्दंड समुद्र में बड़ी सूनामी को भी रोक सकते थे। लेकिन ये नदी भी अपनी रवानगी में, किसी समुद्र से कम नहीं थी।

मूसलाधार बरसात के बीच वो इंसान स्वयं से ही कुछ बड़बड़ाए जा रहा था, मानो उस पर कोई दैवीय शक्ति का प्रभाव हो, और सालों की साधना और वैदिक अनुशासन से प्राप्त की शक्ति के हर कण को वो इस कार्य में झोंक रहा था। मोटी रस्सी पर वो तीव्रता से प्रहार किए जा रहा था, इसमें उसकी उंगलियां भी बुरी तरह से छिल गई थीं और उनसे रक्त बह रहा था। जब वो और सांस नहीं ले पाया तो अपना सिर पीछे कर आसमान की तरफ देखने लगा। बारिश की मोटी बूंदें उसके चेहरे पर थपेड़े की तरह पड़ रही थीं। जब बेरहमी से गिरते उस पानी ने उसकी पलकों से कीचड़ हटा दी तो लंबी आह भरकर वो आसमान चीर देने वाली आवाज में चिल्लाया। शायद यह उसकी हाल में कलंकित हुई आत्मा की भगवान के सामने अपनी पीड़ा रखने की कोशिश थी। लेकिन वह जानता था कि बहुत देर हो चुकी थी। भगवान भी उसके कृत्यों से आतंकित थे और उसे माफ नहीं करने वाले थे। ना ही कोई और उसे माफ करने वाला था।

उसने अपनी छोटी कुल्हाड़ी से वापस से रस्सी को काटना शुरू कर दिया, पहले से भी अधिक उत्तेजना से। वह जानता था कि पिछले एक घंटे से भी अधिक समय से वो एक संयुक्त गांठ को काटने की कोशिश कर रहा था। वो रस्सियां

विशेष तौर पर तैयार की गई थीं, कभी स्वयं उसी के निर्देशों पर। वह जानता था की ऐसी ही हजारों गांठों के माध्यम से, ईंट, कांसे और पत्थर से बने ऐसे 998 स्तंभ और खड़े थे जिन्होंने इस अटूट विशाल बांध को सहारा दिया हुआ था। और कि अगर हजारों आदमी भी दिन-रात काम करें तो भी इसे खोलने में कई सप्ताह लग जाएंगे। 999 के आंकड़े की ये अद्भुत कारीगरी स्वयं उसी की सावधान नजरों, अभियांत्रिकी दक्षता और ज्योतिषीय मार्गदर्शन के अनुसार संपन्न हुई थी। वह कर क्या रहा था? क्या वो पागल हो गया था? वह जानता था कि वह इस विशाल बांध का कुछ नहीं बिगाड़ सकता था। लेकिन फिर भी वो बेतहाशा अपनी कुल्हाड़ी से वार किए जा रहा था।

मीलों तक फैले इस निर्जन में, गरजते बादलों के बीच खड़ा यह आदमी, विवास्वन पुजारी, स्वयं दशकों तक एक देवता के रूप में पूजा जाता रहा था। कभी हड़प्पा का सूरज माना जाने वाला यह आदमी, आज किसी भूत की तरह दिखाई दे रहा था। अपने कृत्य के भयानक परिणाम के बारे में सोचकर वह अत्यधिक पीड़ा और पछतावे से गुजर रहा था, वह ऐसा पाप करने जा रहा था, जिसकी भरपाई कभी संभव नहीं थी। वह रोते हुए, बुदबुदाते हुए, रस्सी काटे ही जा रहा था। और फिर उसे वो सुनाई दिया।

शुरुआत हो चुकी थी।

शक्तिशाली नदी की असामान्य हुंकार, कहीं दूर से आती हुई, लेकिन उस आवाज ने उसके रक्त को जमा दिया। कभी पोषण और स्नेह देने वाली, दया की प्रतिमान, मातृस्वरूप नदी एक प्यासी रक्त-धारा की तरह मानो अपने ही बच्चों को निगलने के लिए व्याकुल हो उठी थी। ज्ञान की उस नदी को उसके अपने प्यारे बच्चों द्वारा ही छला गया था। उसके देवता बेटे, विवास्वन पुजारी ने ही उसको छला था।

कभी सदाचारी और अजय रहे विवास्वन पुजारी ने कुल्हाड़ी को अपने हाथ से फिसल जाने दिया और वह गीली जमीन पर थप्प की आवाज के साथ गिर गई। वो जड़ खड़ा हुआ उसी दिशा में देख रहा था, जहां से विकराल रूप धरे हुए उसकी मां प्रकट होने वाली थी। वो जान गया था। वो जानता था कि उस हवन कुंड में पहली आहुति उसी के रक्त की गिरने वाली थी। अचानक, वह उसके प्रति सहज हो गया।

उसे स्वयं में आराम और राहत का अहसास हुआ। उसे कुछ आस बंधी। शायद उसकी मां उसकी जिंदगी लेकर बाकियों को क्षमा कर दे। वह घुटनों के बल गिर गया, अपनी तरफ से समर्पण में हाथों को खोलते हुए, हथेलियों को पसारे। बरसात ने उसके तने हुए और घायल शरीर को साफ करते हुए उसकी दागदार चेतना को भी निर्मल कर दिया। मानो प्रकृति विवास्वन पुजारी को उसका अंतिम स्नान करा रही थी।

‘हे मां, मेरे प्राण हर लो! मैं आपके क्रोध का भागी हूं। और मैं स्वयं को आपके चरणों में समर्पित कर रहा हूं!’ वह चिल्लाया और आसमान में चमकती बिजली ने मानो नाराज होकर उसे तमाचा लगाया। मानो भगवान ने इस गिरे हुए देवता की अर्जी ठुकरा दी।

वह फिर से चिल्लाया, और इस बार उसकी आवाज निराशा और सुबकियों के बीच टूटकर रह गई, ‘अपने हताश बच्चे की विनती नहीं सुनोगी मां?! मेरे प्राण ले लो लेकिन दूसरों को माफ कर दो! उन्होंने ऐसे पाप नहीं किए हैं, जैसे तुम्हारे बेटे ने किए हैं। मुझे मार दो!!!’

आसमान फिर से रौशन हुआ। कुछ पल के लिए ऐसा लगा मानो दिन निकल आया हो। खामोश रौशनी विवास्वन पुजारी के रक्त, पसीने से सने, विक्षिप्त चेहरे पर पड़ी। और फिर वही हुआ। बादल की गरज सूरज फटने के समान तीक्ष्ण थी।

भगवान इंकार कर रहे थे!

विवास्वन पुजारी को चेहरे पर हवा का तेज झोंका महसूस हुआ और उसने बांध के दूर कोने से जल के बड़े से पहाड़ को प्रकट होते देखा, उसी दिशा में जहां वो अपने घुटने टिकाए बैठा था। जल की वो धारा ऐसी प्रतीत हो रही थी, मानो कई सिरों वाला अजगर अपने शिकार की तरफ बढ़ रहा हो। नदी का कोलाहल, अभी कुछ पल पहले गरजते बादल से भी तेज था। विवास्वन पुजारी वहां स्तब्ध बैठा था, इस अंधेरे में भी वो जल के उस विशाल पर्वत की छाया देख पा रहा था। वो उस सुमेरु पर्वत के सामने एक छोटी सी चींटी की तरह महसूस कर रहा था, मातृस्वरूप नदी की आसमान जितनी ऊंची, सूनामी की लहर उसे निगलने से बस कुछ ही पल दूर थी।

विवास्वन पुजारी पिछले कुछ दिनों में अपने मार्ग से भटक गया था। प्रतिशोध की अंधी आग में उसने जीवन भर की चमक को गंवा दिया था। लेकिन वह था तो विवास्वन पुजारी ही। एक देवता! दूसरे विद्वत योगियों की तरह ही उसने तुरंत अपनी आत्मा को अपनी कुंडलिनी में एकाग्र किया, अपनी धड़कनों को थामा और अपने नश्वर शरीर को मृत्यु के लिए तैयार किया। जल में हमेशा के लिए समा जाने से पहले उसने अपने मन में, शांति से अंतिम प्रार्थना बुदबुदाई।

‘हे मां, उन्हें क्षमा कर देना। उन्हें मेरे पापों की सजा मत देना। उन्हें माफ कर देना मां!’

पानी की विनाशकारी लहर ने देवता विवास्वन पुजारी को निगल लिया, जैसे कोई विशालकाय हाथी पैरों तले मसलकर सूखी टहनी का अस्तित्व ही खत्म कर देता है। भगवान, रक्तरंजित नदी, काली रात, इंद्र की गर्जना, निर्जन भूमि का विस्तार और बेरहमी से पड़ती बारिश उस महान आदमी के अंत के मूक

साक्षी बने। लेकिन विवास्वन पुजारी की मौत का प्रभाव इस धरती से यूं ही नहीं मिटने वाला था। यह तो शुरुआत थी। वह नफरत, छल, षड्यंत्र और हिंसक झड़पों में हजारों सालों तक जीवित रहने वाला था। सिर्फ आर्यवर्त ही नहीं, बल्कि संपूर्ण पृथ्वी पर ईश्वर के नाम पर चलने वाली मार-काट में उसका भय लक्षित होना था। उसकी मौत या इंसानी रूप भी उसे इस अभिशाप से मुक्त नहीं करने वाला था।

नदी ने अपना निर्मम प्रवाह जारी रखा। विवास्वन पुजारी की अंतिम विनती के बावजूद, रक्तरंजित नदी ने उन्हें क्षमा नहीं किया।

शक्तिशाली नगर हड़प्पा को सरस्वती उसके प्रत्येक निवासी के साथ हड़पने जा रही थी। वहां कुछ नहीं बचने वाला था।

बनारस की बाहरी सीमा, **2017**

देव-बलि

गर्मी असहनीय थी, मानो वो आग के ऊपर ही हो। उसकी बांह और टांग ऐसे खिंच रहे थे, मानो वो टूटकर अलग हो जाने वाले हों। उसका सिर तेज दर्द से घूम रहा था। उसकी कलाई और टखने ऐसे महसूस हो रहे थे, मानो कोई धातु उन्हें काट रही हो।

वापस होश में आने की कोशिश करते हुए, विद्युत असहनीय पीड़ा और बेख्याली के से हालात में था। जब उसने अपनी आंखें खोलीं, तो कई पलों तक तो वो समझ ही नहीं पाया कि वो कहां था और उसके साथ क्या हो रहा था।

उसे ऐसा लग रहा था मानो वो हवा में तैर रहा था, नीचे दिखती अग्नि उसकी त्वचा को झुलसा रही थी।

वह सही था। पल भर में ही विद्युत को याद आ गया कि वो कहां था, और फिर उसे हालात की गंभीरता का अहसास हुआ।

वह त्रिजट कपालिक के बड़े से गड्ढे के दस फुट ऊपर क्षितिज की समानांतर दिशा में लटका हुआ था। उसका चेहरा और त्वचा का हिस्सा, जहां कपड़े नहीं थे, नीचे जलती आग की गर्मी से झुलस रहे थे। उसके हाथ और पैर चारों दिशाओं में फैले हुए थे, और उसे लोहे की जंजीरों से गुफा की दीवार में लगे हुकों पर बांधा गया था। उसकी बेहोश अवस्था में, मसान-राजा, दानवीय ब्रह्मानंद, पिशाचिनी और महा-तांत्रिक के बचे हुए साथियों ने देवता को जंजीरों से बांधकर, जलते हुए कोयलों और मांस के ऊपर लटका दिया था।

‘देखो... इस देवता को देखो!’ उस गड्ढे के आसपास घूमते हुए, त्रिजट कपालिक ने विद्युत का मजाक बनाते हुए कहा। ‘क्या इसी देवता से वो गोरी-चमड़ी वाले लोग इतना डर रहे थे?’

ब्रह्मानंद भी शैतान की तरह हंसा। 'हमने कर दिखाया, त्रिजट! काम हो गया! वो जिससे सदियों तक लोग डरते रहे, वो हमारे सामने भुने हुए बकरे की तरह लटका पड़ा है!'

बलवंत और सोनू को भी रस्सी से बांधकर, उन्हें जमीन पर घुटनों के बल बैठा दिया था। विद्युत को गहन पीड़ा में देखकर सोनू रोने लगा। लेकिन यह सबसे भयानक बात नहीं थी। द्वारका शास्त्री के हाथ भी बंधे हुए थे, और एक दरांती उनके गले पर लगी हुई थी। रक्त की प्यासी पिशाचिनी वैसे ही भारी सांसें ले रही थी।

'उन्हें जाने दो, त्रिजट...' विद्युत ने कहा, उसकी आवाज दर्द से कांप रही थी। 'तुम प्राचीन अघोरियों के नाम पर धब्बा हो। तुम अध्यात्मिक दर्शन अघोर का अपमान हो। सच्चे अघोरी तांत्रिक प्रभु रुद्र के साधक होते हैं, दत्तात्रेय के भक्त, और वो आशीर्वाद देते हैं। वो दुनियावी माया का त्याग करके, सत्य की खोज में रत होते हैं। मसान-राजा, तुम तो अघोरी हो ही नहीं! तुम सच्चे तांत्रिक नहीं हो! तुम मुझे ही चाहते थे न। तो अब मुझे मार दो... लेकिन उन्हें जाने दो।'

'तुम्हें मार दें?' मसान-राजा ने पूछा, उस पर विद्युत की दुत्कार का कोई असर नहीं हुआ था। 'तब तो तुम सच में कुछ नहीं जानते, है न?' विद्युत को दोबारा देखने से पहले, उसने सवालिया नजरों से द्वारका शास्त्री को देखा।

'तुम्हें तो सालों से जीवित रखा गया है, ओ देवता। रोहिणी नक्षत्र अब अधिक दूर नहीं है। काले मंदिर का उदय होगा! उसी के बाद तुम्हें मारा जाएगा... पक्का।'

महा-तांत्रिक ने धीरे-धीरे अपनी आंखें बंद करके, सिर ऊपर उठाया, मानो काली ताकत के सम्मुख कोई प्रार्थना बुदबुदा रहा हो। कुछ पल बाद उसने अचानक अपनी आंखें खोल दीं। उसके राख पुते चेहरे से विक्षिप्त क्रूरता और सत्ता की ललक टपक रही थी। उसने विद्युत की ओर संकेत किया।

'उस प्रहर इसी अनुष्ठान-अग्नि में देव-बलि चढ़ेगी!'

'त्रिजट... यही सुनहरा अवसर है,' ब्रह्मानंद ने कहा। 'हमारे अनुष्ठान में अभूतपूर्व ताकत जोड़ने का।'

त्रिजट ब्रह्मानंद की तरफ पलटा, वो यह जानने के लिए उत्सुक था कि एक-आंख वाले प्रोफेसर के दिमाग में क्या चल रहा था। वो अपने अघोरी भाई को अच्छी तरह जानता था। उसके मन में जरूर कोई शैतानी, कोई संहारक बात

चल रही होगी।

‘अपने आसपास देखो, त्रिजट... हमने सक्षम तांत्रिकों की खोपड़ियां एकत्र करने में सालों बिताए हैं। प्रत्येक कपाल ने काले साम्राज्य तक हमारी पहुंच को और सक्षम किया है। उनमें से कुछ तो महा-तांत्रिक भी थे।’

मसान-राजा पूरे मनोयोग से सुन रहा था, लेकिन अभी भी वह अपने साथी की बात समझ नहीं पाया था।

ब्रह्मानंद की आंखें चमक रही थीं। वो त्रिजट की तरफ झुका, लेकिन बात उसने इतनी जोर से कही कि हर कोई सुन सके, विद्युत भी। वो महान मठाधीश की दिशा में संकेत कर रहा था।

‘कल्पना करो त्रिजट... दुनिया के इकलौते परम-तांत्रिक की खोपड़ी में कितनी शक्ति होगी!’

त्रिजट ने पिशाचिनी की तरफ सिर हिलाया। उसने अपने सिर को पीछे की तरफ झटका और धीरे से उसे घुमाया, वो आदेश का पालन करने के लिए तैयार थी।

‘नहीं...! रुक जाओ...’ अपने हाथ-पैर में बंधी जंजीरों को खींचते हुए विद्युत चिल्लाया। लेकिन जंजीरें बहुत मजबूत थीं।

विद्युत जानता था कि उसके पास समय कम था। उसने फिर से जंजीर खींची, इस बार अपना पूरा बल लगाकर। उसके सीने की मांसपेशियां लोहे के तारों के समान खिंच रही थीं और उसके ताकतवर हाथों की नसें फटने को तैयार थीं। देवता के अधीर संघर्ष को देख सोनू और बलवंत सम्मोहित थे, जो इस पराक्रम को अपने नम और आशावान नेत्रों से देख रहे थे।

विद्युत वास्तव में देवता था।

त्रिजट और ब्रह्मानंद को भयभीत करते हुए, विद्युत के दाहिने हाथ की जंजीर का हुक हिलने लगा। पहले तो गुफा की दीवार में दरार पड़ी। और फिर पल भर में चट्टानी सतह भरभराकर गिरने लगी।

जैसे ही उसने जंजीर खींचकर, गिरती दीवार से अपने दाहिने हाथ को आजाद कराया, विद्युत ने अंगारों सी लाल आंखों से त्रिजट कपालिक को घूरा। महा-तांत्रिक अब अविश्वास से कांप रहा था।

‘तुमने बड़ी गलती कर दी, ओ मसान-राजा!’ विद्युत चिल्लाया, उसकी आवाज दर्द, क्रोध और नफरत से फट रही थी।

इसी के साथ देवता ने अपने दाहिने पैर को भी छुड़वा लिया, और अब वो अग्नि के बिस्तर के ऊपर उड़ान भरते देवता की तरह लग रहा था।

‘तुम भूल गए, त्रिजट!

मैं आधा-मनुष्य, आधा-भगवान हूं!’

क्रमश:...

क्रमशः...

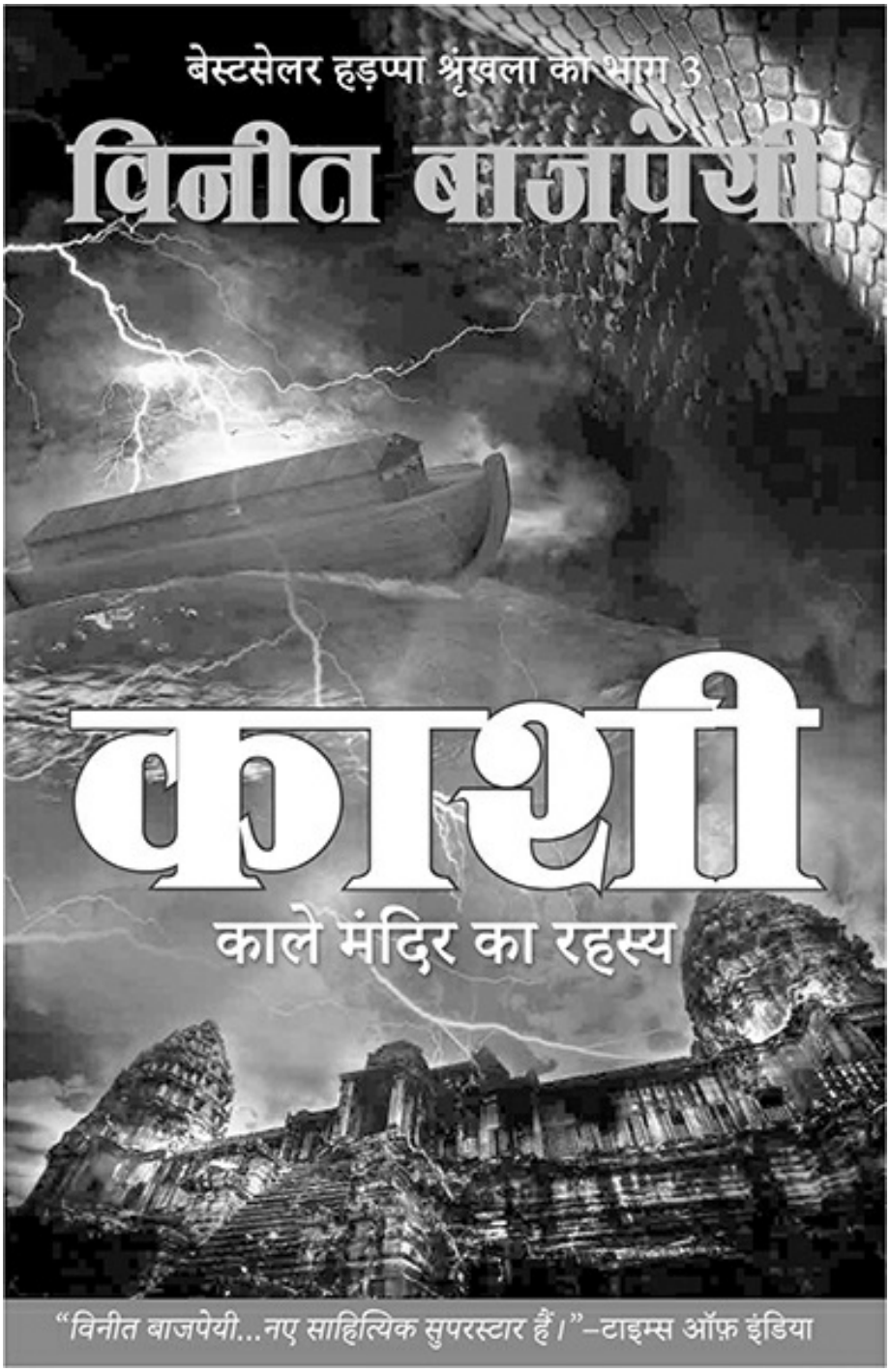

सभी प्रमुख स्टोर्स और ऑनलाइन प्लेटफार्म पर उपलब्ध।

लेखक के बारे में

विनीत युवा उद्यमी हैं। महज 22 साल की उम्र में ही उन्होंने छोटे स्तर पर अपनी कंपनी मेग्नॉन की शुरुआत की। आज मेग्नॉन उपमहाद्वीप की सबसे बड़ी डिजिटल एजेंसियों में से एक है, और फॉर्च्यून 500 ओमनिकोम ग्रुप का हिस्सा है।

आप विश्व की टॉप-10 एडवर्टाइजिंग एजेंसी टीबीडब्ल्यू का नेतृत्व इसके भारत के सीईओ के रूप में करते हैं। आप देश की मल्टीनेशनल एडवर्टाइजिंग नेटवर्क कंपनी के सबसे युवा सीईओ हैं।

आपने उद्यमिता और कॉर्पोरेट दक्षता में अनेकों अवार्ड हासिल किए, जिनमें आंत्रप्रेन्योर ऑफ द ईयर *2016* भी शामिल है। आपको अभी हाल में इंडिया'स डिजिटल इकोसिस्टम के 100 सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में भी शामिल किया गया।

आपकी दूसरी कंपनी टेलेंटट्रेक इंडिया मीडिया, मनोरंजन और क्रिएटिव इंडस्ट्री के लिए प्रतिभा की पहचान करती है। यह इस क्षेत्र का तेजी से बढ़ता हुआ हायरिंग और नेटवर्किंग प्लेटफार्म है।

आप प्रबंधन और प्रेरक विषयों पर तीन बेस्टसेलिंग किताबें लिख चुके हैं—बिल्ड फ्रॉम स्क्रेच, द स्ट्रीट टू द हाईवे और द *30* समथिंग सीईओ।

आपका पहला उपन्यास हड़प्पा—रक्त धारा का श्राप नेशनल बेस्टसेलर रहा। उसे आलोचकों और साहित्यकारों की प्रशंसा भी प्राप्त हुई।

www.VineetBajpai.com

facebook.com/vineet.bajpai

twitter/Vineet_Bajpao

instagram/vineet.bajpai

विनीत को मेल लिखने के लिए vb@vineetbajpai.com

"मृत्यु भी व्हाइट मास्क से भय खाती है..."

1700 ईसापूर्व, हड़प्पा – हड़प्पा का देवता पथभ्रष्ट हो चुका है... पीड़ित और मृत कारावास का बंदी। उसकी मृत पत्नी के पावन रक्त ने महानगर की धरती को, हमेशा के लिए दुर्भाग्य का भागी बना दिया।

2017, बनारस – एक माहिर हत्यारा सायनाइड खा लेता है, लेकिन इससे पहले वो काली शक्ति के आगमन की चेतावनी दे जाता है। एक महा-तांत्रिक भयावह बलिदान को प्रस्तुत है।

325 ईस्वी, बिथिनियां शहर (वर्तमान तुर्की) – ये जाने बिना कि वो किस दैत्य का पोषण कर रहा था, एक असाधारण सम्राट ने दुनिया के लिए एक ऐसे मिशन की नींव रखी, जिसका प्रभाव सदियों बाद तक पड़ने वाला था।

1700 ईसापूर्व, पूर्वी हड़प्पा – एक रहस्यमयी मत्स्य ने प्रलय की भविष्यवाणी की, ऐसी प्रलय जो मानवजाति ने देखी न हो। रक्त-धारा अपने दिव्य पुत्रों की मौत का बदला लेने आएगी।

हड़प्पा के देवता का क्या हुआ? क्या विद्युत वास्तव में भविष्यवाणी में व्यक्त मसीहा था? जघन्य *वर्ल्ड ऑर्डर* के पीछे छिपी ताकतें कौन थीं? बिथिनियां नगर के रहस्यमयी सम्राट की भयावह योजना क्या थी? दुनिया के सबसे बड़े षड्यंत्र से पर्दा उठाने के लिए और लुप्त सभ्यता की भयावह कहानी जानने के लिए पढ़िए—'प्रलय'।

विनीत... भारतीय डैन ब्राउन हैं। —**हिन्दुस्तान टाइम्स**

विनीत बाजपेयी... ने देश को हिलाकर रख दिया। —**डी एन ए**

HINDI
ISBN 978-93-89237-02-3
9 789389 237023
₹200
TreeShade Books
www.TreeShadeBooks.com